Wiener Stadt-Bibliothek.
41945 B

# WIRTHSCHAFTS KALENDER

auf das Jahr

1830

Einnahme Grundzehed.

Mandlach
1. Zehnt Katze . . 12.
2. Einzelnen . . 2.
3. Aufsätze — . 5.

Lohau
1. Zehnt Katze . . 13.
2. Aufsätze . . 2.

Rayelsdorf.
1. Zehnt Katz . — " 25.
2. Aufsätze . — "

Verkauft.

1. 828 = " N° 13 x 21 " — 103.
2. 827 = " N° 6. Gesetz. 62.
N° 10 . — . 60.
16 . — . 53.
à 15 f 45 x " W. W.
Cz. Zollamt.
4480 fl — . W. W.

830. 60.
829. 80.
828. 60.
827. 160.
822. 100.
1000 Cz.

Nov.

Anderhalbe Kaiser . 830.

830 " bei . . 600. f.
829 " — 50 . 80. —
3 6 .
828 " N° 1 . 62 .
2 ~~Cz~~
~~13~~ " ~~53~~ . 223. —
~~21~~ " ~~50~~ .
827 " N° 6. Gesetz. — . 60. —
827. Gesetz.
N° 2 . 62 . } nicht Eleu.
8 . 50 }
~~12~~ . ~~60~~ .
~~10~~ . ~~59~~ . 225. —
12 . . 53 . nicht Eleu.

# Allgemeiner Schreib-, Haus- und Wirthschafts-Kalender

J. N. 63405.

auf das gemeine Jahr

## 1830.

SW 0-K 46350 WIEN

Für Pfarrer, Stadt- und Landbeamte, Land- und Hauswirthe, Gärtner, Handelsleute, Fabrikanten, Professionisten, und überhaupt für alle Liebhaber ländlicher und städtischer Wirthschaft.

---

Wer Güter mit Recht zu erwerben, und mit Ehren zu gebrauchen weiß, dem halte ich, in Ansehung des Reichthums, für den Glücklichsten.

---

Enthaltend nebst den vorzüglichsten Kalenderangaben und dem sehr verbesserten fünffachen Kalender für Katholiken, Protestanten, Griechen, Juden und Türken, die Angaben der wahrscheinlichen Witterung für jeden Monath, nebst Knauers Wetterprophezeihung, die jedem Monathe beygefügt sind; dann viele interessante und nützliche Aufsätze aus der Land- und Stadtwirthschaft, wodurch viele neue, im In- und Auslande, besonders in Teutschland, England und Frankreich gemachte Erfindungen und Verbesserungen bekannt gemacht werden; — die vollständige Genealogie des österreichischen Kaiserhauses; die genaue Uebersicht aller regierenden Fürsten in Europa mit statistischen Tafeln; — ein Verzeichniß der Messen und Jahrmärkte, und viele sehr nützliche, möglichst genau berichtigte Tabellen.

WIENER STADTBIBLIOTHEK

Wien.

Gedruckt und verlegt auf Kosten des Herausgebers.

In Commission bey J. G. Ritter v. Mösle's sel. Witwe, Buchhandlung in Wien, am Graben Nr. 1144.

Gedruckt bey Friedrich Hagenauer.

# Kleiner Wandkalender auf das gemeine Jahr 1836 von 365 Tagen.

| Januar. | | Februar. | | März. | | April. | | May. | | Junius. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 F. | Neujahr | 1 M. | Jng. v. A. B. | 1 M. | Albinus B. ☽ | 1 D. | Hugo B. | 1 S. | Phil. u. Jac. | 1 D. | Juventius |
| 2 S. | Makarius ☽ | 2 D. | Mar. Lichtm. | 2 D. | Simplicius | 2 F. | Fr. de Paula | 2 S. | C 3 Jub. | 2 M. | Quat. Ec. † |
| 3 S. | C Genovef. | 3 M. | Blasius B. | 3 M. | Quat. Kun. † | 3 S. | Richardus | 3 M. | Kreuz-Erfi. | 3 D. | Clotilde K. |
| 4 M. | Titus B. | 4 D. | Veronica | 4 D. | Adrianus | 4 S. | C 6 Palm. | 4 D. | Florianus | 4 F. | Quirinus † |
| 5 D. | Telesph P. | 5 F. | Agatha M. | 5 F. | Eusebius † | 5 M. | Vincentius F | 5 M. | Gotthard | 5 S. | Bonif. M. † |
| 6 M. | Heil. 3 Kön. | 6 S. | Doroth. M. | 6 S. | Fridolin. † | 6 D. | Sixtus | 6 D. | Joh. v. D. | 6 S. | C 1 Dreyf. ☽ |
| 7 D. | Raimund | 7 S. | C Sept. ☽ | 7 S. | C 2 Rem. | 7 M. | Hermann † | 7 F. | Stanislaus | 7 M. | Lykarion |
| 8 F. | Severin | 8 M. | Joh. v. M. | 8 M. | Joh. v. Gott | 8 D. | Gründon ☽ † | 8 S. | Mich. E. ☽ | 8 D. | Medard. B |
| 9 S. | Marcellin ☽ | 9 D. | Apollonia M. | 9 D. | Francisca ☽ | 9 F. | Charfr. † | 9 S. | C 4 Cant. | 9 M. | Prim. Fel. |
| 10 S. | C 1 Epiph. | 10 M. | Scholast. | 10 M. | 40 Martyr. † | 10 S. | Charf. Ez. † | 10 M. | Antonius | 10 D. | Fronleich. |
| 11 M. | Hyginus P. | 11 D. | Desiderius | 11 D. | Heraklius | 11 S. | C Osterf. | 11 D. | Mamert | 11 F. | Barnabas A. |
| 12 D. | Ernestus | 12 F. | Eulalia | 12 F. | Greg. d. G. † | 12 M. | Osterm. | 12 M. | Pancrat. | 12 S. | Joh. Fac. |
| 13 M. | Hilarius B. | 13 S. | Katharina R. | 13 S. | Rosina † | 13 D. | Hermenegild | 13 D. | Pet. R. | 13 S. | C 2 n Pf. ☾ |
| 14 D. | Felix in Pinc. | 14 S. | C Sexag. | 14 S. | C 3 Oculi | 14 M. | Tibur. M. | 14 F. | Bonifac. | 14 M. | Basilius B. |
| 15 F. | Maurus Abt | 15 M. | Faustinus | 15 M. | Long. M. | 15 D. | Anastasia | 15 S. | Sophie ☾ | 15 D. | Vitus M. |
| 16 S. | Marcel. P. | 16 D. | Juliana ☾ | 16 D. | Heribert | 16 F. | Turibius ☾ | 16 S. | C 5 Rogate | 16 M. | Franz R. |
| 17 S. | C 2 Epipp. ☾ | 17 M. | Constantia | 17 M. | Gertrudis † ☾ | 17 S. | Rudolph | 17 M. | Ubaldus | 17 D. | Rainerus |
| 18 M. | Prisca J. | 18 D. | Flavian | 18 D. | Eduard | 18 S. | C 1 Quasim. | 18 D. | Venant. | 18 F. | Marc. Marc. |
| 19 D. | Canutus | 19 F. | Gabinus | 19 F. | Joseph Naz. † | 19 M. | Crescentin | 19 M. | Pet. Cel. | 19 S. | Juliana F. |
| 20 M. | Fab. u. S. | 20 S. | Eleutherus | 20 S. | Joachim † | 20 D. | Marcellinus | 20 D. | Chr. Himm. | 20 S. | C 3 n Pf. ☽ |
| 21 D. | Agnes M. | 21 S. | C Quinq. | 21 S. | C 4 Lätare | 21 M. | Anselmus B. | 21 F. | Fel. Cant. | 21 M. | Alois v. G. |
| 22 F. | Vincent. M. | 22 M. | Petr. Stuhlf. | 22 M. | Octavianus | 22 D. | Caj. u. Sot. | 22 S. | Julia J. ☽ | 22 D. | Achatius |
| 23 S. | Verm. M. | 23 D. | Fastn. Ebh. ☽ | 23 D. | Victorian | 23 F. | Adalbert ☽ | 23 S. | C 6 Exaudi | 23 M. | Zeno M. |
| 24 S. | C 3 Epiph. ☽ | 24 M. | Ascherm. † | 24 M. | Gabriel † ☽ | 24 S. | Georgius M. | 24 M. | Johanna | 24 D. | Joh. Bapt. |
| 25 M. | Pauli Bek. | 25 D. | Walburga | 25 D. | Mar. Verk. | 25 S. | C 2 Miser. | 25 D. | Ubanus | 25 F. | Prosper |
| 26 D. | Polykarp. B. | 26 F. | Nestor † | 26 F. | Emanuel † | 26 M. | Cletus P. | 26 M. | Phil. v. N. | 26 S. | Joh. u. Paul |
| 27 M. | Joh. Chrys. | 27 S. | Leander † | 27 S. | Rupertus † | 27 D. | Peregrinus | 27 D. | Joh. Paul | 27 S. | C 4 n. Pf. |
| 28 D. | Car. Mag. ☾ | 28 S. | C 1 Invoc. | 28 S. | C 5 Judica | 28 M. | Vital. u. Fal. | 28 F. | Wilhelm | 28 M. | Leo II P. ☽ † |
| 29 F. | Franz v. Sal. | | | 29 M. | Eustasius A. | 29 D. | Petrus M. ☽ | 29 S. | Maxim. † ☽ | 29 D. | Pet. u. Paul |
| 30 S. | Martina | | | 30 D. | Quirinus | 30 F. | Kathar. v. S. | 30 S. | C Pfingstf. | 30 M. | Pauli Ged. |
| 31 S. | C 4 Epiph. ☽ | | | 31 M. | Amos Pr † ☽ | | | 31 M. | Pfingstm. | | |

| Julius. | | August. | | September. | | October. | | November. | | December. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 D. | Theodor. | 1 S. | C 9 n. Pf. | 1 M. | Aegid. Abt | 1 F. | Remigius B. | 1 M. | Aller Heil. | 1 M. | Eligius † |
| 2 F. | M. Heimf. | 2 M. | Portiuncula | 2 D. | Steph. K. ☽ | 2 S. | Leodegar ☽ | 2 D. | Aller Seelen | 2 D. | Bibiana M. |
| 3 S. | Eulogius | 3 D. | Stephan Erf. | 3 F. | Mansuetus | 3 S. | C 18 n. Pf. | 3 M. | Hubertus | 3 F. | Franz Xav. † |
| 4 S. | C 5 n. Pf. | 4 M. | Dominic. ☽ | 4 S. | Rosalia J. | 4 M. | Franz. Ser. | 4 D. | Car. Bor. | 4 S. | Barbara |
| 5 M. | Domit. M. | 5 D. | M. Schnee | 5 S. | C 14 n. Pf. | 5 D. | Placidus M. | 5 F. | Emericus | 5 S. | C 2 Adv. |
| 6 D. | Isaias Pr. ☽ | 6 F. | Verklär. Chr. | 6 M. | Zacharias | 6 M. | Bruno B. | 6 S. | Leonhard L. | 6 M. | Nikolaus B. |
| 7 M. | Willibaldus | 7 S. | Cajetanus | 7 D. | Regina J. | 7 D. | Justina M. | 7 S. | C 23 n Pf. ☾ | 7 D. | Ambros. ☾ † |
| 8 D. | Kilianus | 8 S. | C 10 n Pf. | 8 M. | Mar. Geb. | 8 F. | Brigitta ☾ | 8 M. | Gottfried | 8 M. | Maria Empf. |
| 9 F. | Briccius | 9 M. | Romanus | 9 D. | Gorgonius ☾ | 9 S. | Dionys. A. | 9 D. | Theodor S. | 9 D. | Leocadia |
| 10 S. | Amalia | 10 D. | Laurentius | 10 F. | Nic. v. Tol. | 10 S. | C 19 n. Pf. | 10 M. | Andr. Avell. | 10 F. | Melch. † |
| 11 S. | C 6 n. Pf. | 11 M. | Susanna ☾ | 11 S. | Aemilianus | 11 M. | Burkhard | 11 D. | Martin B. | 11 S. | Damas. P. |
| 12 M. | Heinrich | 12 D. | Clara Jungf. | 12 S. | C 15 n. Pf. | 12 D. | Maximil. | 12 F. | Mart. Papst | 12 S. | C 3 Adv. |
| 13 D. | Margar. ☾ | 13 F. | Hippolit. M. | 13 M. | Maurillus B. | 13 M. | Kolomanus | 13 S. | Stanisl. K. | 13 M. | Lucia M. |
| 14 M. | Bonavent. | 14 S. | Eusebius † | 14 D. | † Erhöh. | 14 D. | Calixtus P. | 14 S. | C 24 n. Pf. | 14 D. | Spiridion |
| 15 D. | Apostel-Th. | 15 S. | C 11 n. Pf. | 15 M. | Quat. Hild. † | 15 F. | Theresia | 15 M. | Leopold ☽ | 15 M. | Quat. J. ☽ † |
| 16 F. | Scapulirf. | 16 M. | Rochus | 16 D. | Ludmilla | 16 S. | Gallus ☽ | 16 D. | Edmundus | 16 D. | Eusebius |
| 17 S. | Alexius | 17 D. | Liberatus | 17 F. | Lambert ☽ † | 17 S. | C 20 n. Pf. | 17 M. | Gregor B. | 17 F. | Lazarus † |
| 18 S. | C 7 n. Pf. | 18 M. | Helena K. ☽ | 18 S. | Thom. v. V. † | 18 M. | Lucas Ev. | 18 D. | Eugenius | 18 S. | Grat. B. † |
| 19 M. | Arsenius | 19 D. | Ludov. T. B. | 19 S. | C 16 n. Pf. | 19 D. | Ferdinand | 19 F. | Elisabeth | 19 S. | C 4 Adv. |
| 20 D. | Margarit. ☽ | 20 F. | Steph. Kön. | 20 M. | Eustachius M. | 20 M. | Felicianus | 20 S. | Felix v. Val. | 20 M. | Theophras |
| 21 M. | Daniel Pr. | 21 S. | Joh. Fr. | 21 D. | Matthäus Ap. | 21 D. | Ursula | 21 S. | C 25 n. Pf. | 21 D. | Thom. Ap. |
| 22 D. | Mar. Magd. | 22 S. | C 12 n. Pf. | 22 M. | Mauritius M. | 22 F. | Cordula | 22 M. | Cäcilia M. | 22 M. | Zeno † ☽ |
| 23 F. | Liborius B. | 23 M. | Philippus | 23 D. | Thecla M. | 23 S. | Joh. Cap. | 23 D. | Clemens P. ☽ | 23 D. | Victoria |
| 24 S. | Christina | 24 D. | Barthol. Ap. | 24 F. | Joh. Empf. | 24 S. | C 21 n Pf. ☽ | 24 M. | Joh. v. Kreuz | 24 F. | Adam u. Ev. † |
| 25 S. | C 8 n. Pf. | 25 M. | Ludov. K. | 25 S. | Kleophas ☽ | 25 M. | Crispinus M. | 25 D. | Katharina | 25 S. | H. Christfest |
| 26 M. | Anna | 26 D. | Samuel ☽ | 26 S. | C 17 n. Pf. | 26 D. | Evaristus P. | 26 F. | Konrad | 26 S. | C Steph. M. |
| 27 D. | Pantaleon ☽ | 27 F. | Joseph Cal. | 27 M. | Cosm. u. D. | 27 M. | Sabina | 27 S. | Virgilius | 27 M. | Joh. Evang. |
| 28 M. | Innocentius | 28 S. | Augustin B. | 28 D. | Wenzesl. | 28 D. | Sim. u. Jud. | 28 S. | C 1 Adv. | 28 D. | Unsch. Kind. |
| 29 D. | Martha | 29 S. | C 13 n. Pf. | 29 M. | Michael Erz. | 29 F. | Zenobius | 29 M. | Saturn. B. | 29 M. | Thomas B. ☽ |
| 30 F. | Abd. u. S. | 30 M. | Rosa v. Lima | 30 D. | Hieronymus | 30 S. | Claudia † | 30 D. | Andreas A. ☽ | 30 D. | David |
| 31 S. | Ign. v. Loj. | 31 D. | Raimund | | | 31 S. | C 22 n Pf. ☽ | | | 31 F. | Sylvester |

## Die Finsternisse im Jahre 1830.

In diesem Jahre ereignen sich sechs Verfinsterungen, nähmlich 4 an der Sonne und 2 an dem Monde. Es wird aber davon bey uns nur die Mondesfinsterniß am 2. September sichtbar seyn.

Die erste, eine Sonnenfinsterniß am 25. Februar, fällt vor dem Aufgange der Sonne in Wien, und kann daher nur im nordwestlichen Asien und der östlichen Hälfte des europäischen Rußlands sichtbar seyn. Die Conjunction der Sonne mit dem Monde tritt ein um 5 Uhr 41 Min. 36 Sec. Morgens (nach Wiener Zeit) im Zeichen der Fische, unter 4° 7′ Länge und 1° 25′ nördlicher Breite. Stündliche relative Bewegung in der Länge 34′ 55″, in der Breite 3′ 18″.

Die zweyte, eine totale Mondesfinsterniß am 9. März, kann nur auf der andern Halbkugel gesehen werden. Die Sonne steht dem Monde gegenüber um 2 U. 36 Min. 15 Sec. (Wiener Zeit) im Zeichen der Jungfrau, unter 18° 31′ Länge und 4′ 26″ südlicher Breite. — Der Anfang der Finsterniß ist auf der Erde um 0 Uhr 40 Min. Nachmittags; der Anfang der totalen Verfinsterung um 1 Uhr 45 Min., das Mittel um 2 Uhr 37 Min., das Ende der totalen Verfinsterung um 3 Uhr 29 Min., das Ende der Finsterniß auf der Erde überhaupt um 4 Uhr 34 Min. Abends (Wiener Zeit).

Die dritte, eine Sonnenfinsterniß am 24. März Abends, kann in Europa ebenfalls nicht gesehen werden. Die Conjunction der Sonne mit dem Monde tritt ein um 3 Uhr 50 Min. Nachmittags, im Zeichen des Widders unter 3° 29′ Länge und 1° 18′ südlicher Breite. Die stündliche relative Bewegung beträgt in der Länge 35′ 29″, in der Breite 3′ 23″.

Die vierte, eine Sonnenfinsterniß am 18. August Nachmittags, ist gleichfalls hier nicht zu sehen. Conjuction um 0 Uhr 58 M. Nachmittags im Zeichen des Löwen, unter 24° 58′ Länge und 1° 23′ südlicher Breite. Stündliche relative Bewegung in der Länge 29′ 26″, in der Breite 2′ 49″.

Die fünfte, eine Mondesfinsterniß in der Nacht vom 2. zum 3. September, wird total und sichtbar seyn. Opposition um 11 Uhr 43 Min. 2 Sec. Abends im Zeichen der Fische, unter 9° 53′ der Länge, und 2′ 12″ nördlicher Breite. Anfang der Finsterniß auf der Erde um 9 Uhr 55 Min. Abends (Wiener Zeit). Anfang der totalen Verfinsterung um 10 Uhr 54 Min. Mittel um 11 Uhr 43 Min. Ende der totalen Verfinsterung am 3. Sept um 0 Uhr 32 Min nach Mitternacht. Ende der Finsterniß um 1 Uhr 32 Min. Morg. Dauer der totalen Verfinsterung 1 St. 38 Min., Dauer der ganzen Finsterniß 3 St. 37 Min.

Die sechste, eine Sonnenfinsterniß am 17. Sept. nach 3 Uhr Morgens, vor dem Aufgange der Sonne, und daher in Europa nicht sichtbar. Conjunction der Sonne und des Mondes um 3 Uhr 33 Min. Morg. (Wiener Zeit) im Zeichen der Jungfrau, unter 23° 40′ der Länge und 1° 15′ nördlicher Breite. Stündliche relative Bewegung in der Länge 27′ 57″, in der Breite 2′ 43″.

Im laufenden Jahrhunderte werden noch folgende Sonnenfinsternisse in Europa sichtbar seyn: 27. Julius 1832 (2 Uhr Ab.) — 17. Jul. 1835 (6 Uhr M.) — 27. May 1835 (2 Uhr Ab.) — 15. May 1836 (3 Uhr Ab.) — 4. May 1837 (7 Uhr Ab.) — 15. März 1839 (3 Uhr Ab.) — 21 Febr. 1841 (11 Uhr M.) — 18. Jul. 1841 (3 Uhr Ab.) — 8. Jul. 1842 (5 Uhr M.) — 6. May 1845 (10 Uhr M.) — 25. April 1846 (6 Uhr Ab.) — 20. Oct. 1846 (9 Uhr M.) — 9. Oct. 1847 (7 Uhr M.) — 27. Sept. 1848 (11 Uhr M.) — 28. Jul 1851 (3 Uhr Ab.) — 18. Sept. 1857 (7 Uhr Ab.) — 15 März 1858 (1 Uhr Ab.) — 18. Jul. 1860 (3 Uhr Ab.) — 31. Dec. 1861 (3 Uhr Ab.) — 17. May 1863 (6 Uhr M.) — 19. Oct. 1865 (6 Uhr Ab.) — 8 Oct. 1866 (5 Uhr Ab.) — 6. März 1867 (10 Uhr M.) — 23. Febr. 1868 (3 Uhr Ab.) — 18. Aug. 1868 (6 Uhr M.) — 22. Dec 1870. (1 Uhr Ab.) — 26. May 1873. (9 Uhr M.) — 10. Oct. 1874 (11 Uhr M.) — 29 Sept. 1875 (1 Uhr Ab.) — 19. Jul. 1879 (9 Uhr M.) — 31. Dec. 1880 (3 Uhr Ab.) — 17. May 1882 (8 Uhr M.) — 27. März 1884 (7 Uhr M.) — 29. Aug. 1886 (2 Uhr Ab.) — 19. Aug 1887 (7 Uhr M.) — 17. Jun. 1890 (10 Uhr M.) — 6. Jun. 1891 (5 Uhr Ab.) — 16. April 1893 (4 Uhr Ab.) — 6 April 1894 (5 Uhr M.) — 26. März 1895 (10 Uhr M.) — 9 Aug. 1896 (5 Uhr M.) — 22. Jan. 1898 (9 Uhr M.) — 8. Junius 1899 (5 Uhr M.) — 28. May 1900 (4 Uhr Abends)

## Constellationen der Planeten (ehemahlige Aspecten).

Gegenschein (Opposition) mit der Sonne (☍☉). Der Sonne gegenüber steht: Saturn 3. Februar, Jupiter 5. Julius, Uran 1. August, Mars 19. September.

## Die scheinbare Schiefe der Ekliptik im Jahre 1830.

(Nach den neuesten Bestimmungen.)

| | | | |
|---|---|---|---|
| Den 1. Januar | 23° 27′ 31″,54 | Den 9. Julius | 23° 27″ 31″,72 |
| „ 10. April | 23 27 32, 54 | „ 7. Oct. | 23 27 32, 85 |

Im Jahre 1800 betrug die scheinbare Schiefe der Ekliptik am 1. October 23° 28′ 12″.

Die Abplattung der Erde beträgt nach Bürg $\frac{1}{302}$.

## Zusammenkünfte (Conjunctionen).

Diese haben mit der Sonne (☌ ☉): Uranus 26. Januar, Venus (unten) 7. März, Saturn 15. Aug., Venus (oben) 31. Dec. Jupiter kommt dieses Jahr nicht zur Sonne.

## Quadraturen.

Quadraturen mit der Sonne (□ ☉) haben: östliche als Abendsterne: Saturn 2. May, Mars 8. May, Jupiter 2. Oct., Uran 30. Oct.; — westliche als Morgensterne: Jupiter 6. Apr., Uran 1. May, Saturn 24. Nov.

Stehen die Planeten in der östlichen Quadratur, so sind sie Abendsterne, stehen sie aber in der westlichen Quadratur, so sind sie Morgensterne. Sie stehen damahls 90 Grade in der Länge östlich oder westlich (also um den 4. Theil des größten Kreises am Firmamente) von der Sonne ab.

## Die vier astronomischen und physischen Jahreszeiten 1830.

Astronomischer Frühlings-Anfang den 21. März um 2 Uhr 38 Min. Morgens.
" " Sommers-Anfang den 21. Junius um 11 Uhr 55 Min. vor Mitternacht.
" " Herbstes-Anfang den 23. Sept. um 2 Uhr 57 Min. Nachmittags.
" " Winters-Anfang den 22. Dec. um 7 Uhr 13 Min. Morgens.

Die physischen Jahreszeiten lassen sich nach Anfang und Ende nicht so genau angeben, wie die astronomischen, weil sie unmerklich und allmählich in einander übergehen, und nach der verschiedenen Polhöhe, so wie nach der verschiedenen Erhöhung des Bodens, unzähligen Abänderungen unterliegen. Unter der Breite von Wien (48° 12′ nördl.) fangen alle physischen Jahreszeiten um 2 bis 4 Wochen früher an, als die astronomischen; der Frühling z. B. um den 1. März, der Sommer um den 21. May, der Herbst um den 11. Sept., der Winter um den 21. Nov. Es dauert demnach zu Wien im Durchschnitte der eigentliche Frühling 81, der Sommer 113, der Herbst 71, und der Winter 100 Tage. Unter den astronomischen Jahreszeiten ist der Sommer die längste, der Winter die kürzeste; unter den physischen Jahreszeiten der Sommer die längste, der Herbst die kürzeste.

Das mittlere (tropische) Sonnenjahr hat nach de Lambre 365 Tage, 5 Stunden, 48 Min., 51 Secunden, $3\frac{2}{5}$ Terzien in mittlerer Zeit. Das mittlere Mondjahr hat 354 Tage, 8 Stunden, 48 Min., 38 Sec. 12 Terzien.

Ueberdieß unterscheidet man noch mehrere Unterabtheilungen der 4 Haupt-Jahreszeiten, nähmlich: 1) den Vorwinter, der in Oesterreich beyläufig von Martini (11. Nov.) bis Weihnachten (25. Dec.) dauert; 2) den eigentlichen Winter, von Weihnachten (25. Dec.) bis Mathias (24. Febr.); 3) den Nachwinter, von Mathias (24. Febr.) bis Joseph (19. März); 4) den wahren Frühling, von Joseph (19. März) bis Johann von Nepomuk (16. May); 5) den Vorsommer, von Johann von Nepomuk (16. May) bis Medard (8. Jun.); 6) den wahren Sommer, von Medard (8. Jun.) bis Maria Himmelfahrt (15. Aug.); 7) den Nachsommer, von Maria Himmelfahrt (15. Aug.) bis Matthäus (21. Sept.); 8) den wahren Herbst, von Matthäus (21. Sept.) bis Martini (11. Nov.)

## Zeitrechnung auf das Jahr 1830.

| | Jahre. |
|---|---|
| Von der Erschaffung der Welt nach der Rechnung des Calvisius | 5779 |
| Nach der Rechnung der neueren Griechen, wie auch ehemahls der Russen bis auf Peter den Großen (Constantinopolitanische oder Byzantinische Aere) | 7338 |
| Nach der gewöhnlichen Annahme der Weltschöpfung | 5813 |
| Nach der Rechnung der Juden, vom 28. Sept. 1829 anzufangen | 5590 |
| Seit der Einführung der Olympiaden-Zeitrechnung | 2606 |
| Das Jahr 1830 ist also das 2te der 652sten Olympiade, die im Julius anfängt. | |
| Nach Erbauung der Stadt Rom | 2583 |
| Nach der Zeitrechn. Nabonassars, die d. 6. Junius anfängt | 2579 |
| Nach der Seleucidischen oder griechischen, auch Alexandrinischen Aere | 2142 |
| Nach der Diokletianischen oder Martyrer-Aere vom Jahre 284 | 1546 |
| Seit der Flucht Muhameds von Mecca nach Medina, vom 3. Julius 1829 anzufangen | 1245 |
| Seit der Geburt Christi | 1830 |
| Seit der Gregorianischen Jahresverbesserung im Jahre 1582 | 248 |
| Seit der Reformation im Jahre 1517 | 313 |
| Von der Festsetzung eines allgemeinen neuen Reichskalenders im Jahre 1777 | 53 |
| Seit der Erfindung des Papiermachens | 458 |
| Seit der Erfindung der Buchdruckerey | 390 |
| Vom ersten Erscheinen der Stadt Wien als ordentlichen Stadt im Jahre 390 | 1440 |
| Vom Regierungsantritte des babenbergischen Hauses in Oesterreich im Jahre 983 | 847 |
| Vom Regierungsantritte des habsburgischen Hauses in Oesterreich im Jahre 1282 | 548 |

Vom Aussterben des Mannsstamms der habsburgischen Dynastie im Jahre 1740 . . . . . 90
Von der Geburt Sr. Majestät Kaisers Franz des I. im Jahre 1768 . . . . . 62
Von Allerhöchstdesselben Antritte aller Oesterreichischen Erbländer im Jahre 1792 . . . . . 38
Von Einführung der Oesterreichischen Kaiserwürde im Jahre 1804 . . . . . 26

Das Jahr 1830 nach Christi Geburt ist das 6543ste Jahr der Julianischen Periode.

## Festrechnung vom Jahre 1830.

Nach dem Gregorianischen allgemeinen Kalender.

Die goldene Zahl . . . . . 7
Die Epakte oder das Alter des Mondes am Neujahrstage . . . . . VI.
Der Sonnencirkel . . . . . 19
Der Römer Zinszahl oder Indiction . . . . . 3
Der Sonntagsbuchstabe . . . . . C

Nach dem Julianischen oder griechisch-russischen Kalender.

Die goldene Zahl . . . . . 7
Die Epakte . . . . . XVII.
Der Sonnencirkel . . . . . 19
Der Römer Zinszahl . . . . . 3
Der Sonntagsbuchstabe . . . . . E

Der Gregorianische Kalender umfaßt den ungeheuren Cirkel von 9,090,090 Jahren, nach deren Verlauf die Jahre wieder in derselben Ordnung zurückkehren. Der Julianische Kalender hat einen Cirkel von 532 Jahren, d. i. 19 mahl 28 Jahre, wodurch die goldene Zahl mit dem Sonnencirkel multiplicirt wird. Die Perioden endigen sich in den Jahren nach Christi Geburt 75, 607, 1139, 1671, 2203, 2735, 3267, 3799 u. s. w. Der türkisch-arabisch-muhamedanische Kalender umfaßt einen Cirkel von 297,668 julianischen Jahren; der jüdische Kalender von 689,472 Jahren, nach deren Verlauf die Jahre wieder in der vorigen Ordnung zurückkehren.

Das jüdische Jahr 5590, das am unserm 28. Sept. 1829 anfängt, ist ein gemeines Mondjahr von 355 Tagen, das Jahr 5591, das an unserm 18. Sept. 1830 anfängt, ein gemeines Mondjahr von 355 Tagen.

Das Osterfest der Juden fällt immer zwischen den 24. März und 26. April, auf den 15. (eigentlich 14.) ihres Monaths Nisan, und zwar im Jahre 1830 auf unsern 8. April. In ihrem Jahre 5590 fällt ihr Osterfest auf d. 8. Apr., 5591 auf d. 29. März, 5592 auf d. 15. Apr., 5593 auf d. 4. Apr., 5594 auf d. 24. Apr., 5595 auf d. 14. April.

Das türkische Jahr (der Hedschra) 1245, das an unserm 3. Julius 1829 anfängt, ist ein Schaltjahr von 355 Tagen, das Jahr 1246, das an unserm 23. Jun. 1830 anfängt, ein gemeines Mondjahr.

Zwischen Weihnachten und Fasten sind 60 Tage. Die ganze Fastnacht dauert vom 7. Januar bis 25. Febr. 49 Tage oder 7 Wochen. Fastnachts-Sonntage sind 7, Sonntage nach Epiphania 4, Sonntage nach Pfingsten 25, nach Trinit. 24.

Der Fasching (Fastnacht) kann nie länger dauern, als 9 Wochen, auch nie kürzer seyn, als 4 Wochen. Die mittlere Länge desselben beträgt gerade 41 Tage oder 5 Wochen und 6 Tage; die Länge des Faschings ist also im Jahre 1830 um 8 Tage über der Mittellänge.

Dauer des Faschings im Jahre 1831: 41 Tage; — 1832: 61 Tage; — 1833: 45 Tage; — 1834: 37 Tage; — 1835: 57 Tage; — 1836: 41 Tage; — 1837: 33 Tage; — 1838: 53 Tage; — 1839: 38 Tage; — 1840: 58 Tage; — 1841: 49 Tage; — 1842: 34 Tage; — 1843: 54 Tage; — 1844: 45 Tage; — 1845: 30 Tage; — 1846: 50 Tage; — 1847: 42 Tage; — 1848: 62 Tage; — 1849: 46 Tage; — 1850: 38 Tage.

Die Evangelien sind theils nach dem römischen Meßbuche, theils nach dem protestantischen Kirchen-Rituale geordnet.

## Die beweglichen Feste fallen im Jahre 1830:

1) Im Kalender der Katholiken und Protestanten.

Sonntag Septuagesima den 7. Febr. Aschermittwoch den 24. Febr. Ostern den 11. April. Die Bittage den 17. 18. 19. May. Christi Himmelfahrtstag den 20. May. Pfingstfest den 30. May. Dreyeinigkeitsfest den 6. Junius. Fronleichnamsfest den 10. Junius. Erster Adventsonntag den 28. November. Die Festzahl (der Jahrs-Charakter) ist 21, das heißt: das Osterfest fällt unter jenen 35 Tagen, auf welche es vom 22. März bis 25. April fallen kann, auf den 21 Tag oder 11 April. J. 1831 fällt Ostern d. 3. April, J. 1832 d. 22. April, J. 1833 d. 7. April, J. 1834 d. 30. März, J. 1835 d. 19. April, J. 1836 d. 3. April, J. 1837 d. 26. März, J. 1838 d. 15. April, J. 1839 d. 31. März, J. 1840 d. 19. April, J. 1841 d. 11. April, J. 1842 d. 27. März, J. 1843 d. 16. April, J. 1844 d. 7. April, J. 1845 d. 23. März, J. 1846 d. 12. April, J. 1847 d. 4. April, J. 1848 d. 23. April, J. 1849 d. 8. April, J. 1850 d. 31. März.

2) Im Kalender der Griechen und Russen (nach altem Styl angesetzt.)

Sonntag Septuagesima den 2. Febr. Aschermittwoch den 19. Febr. Ostern den 6. April. Himmelfahrtstag den 15. May. Pfingstfest den 25. May. Erster Adventsonntag den 30. Nov. Die Festzahl ist 16. d. h. das Osterfest fällt unter den 35 Tagen, auf welche es vom 22. März bis 25. April fallen kann, auf den 16. Tag oder 6. April (alten Styls). Im J. 1831 fällt Ostern d. 19. April, J. 1832 d. 10. April, J. 1833 d. 2. April, J. 1834 d. 22. April, J. 1835 d. 7. April, J. 1836 d. 29. März, J. 1837 d. 18. April, J. 1838 d. 3. April, J. 1839 d. 26. März, J. 1840 d. 14. April, J. 1841 d. 30. März, J. 1842 d. 19. April, J. 1843 d. 11. April, J. 1844 d. 26. März, J. 1845 d. 15. April, J. 1846 d. 7. April, J. 1847 d. 23. März, J. 1848 d. 11. April, J. 1849 d. 3. April, J. 1850 d. 23. April.

Die russischen Kalender zeigen außer den Sonn- und Feyertagen noch viele andere Festtage an, welche im russischen Reiche zu feyern sind, nähmlich 65 Kirchen- und Staatsfeste, und 3 Ritterfeste. Ferner gibt es 36 Festtage, an welchen in sämmtlichen Gerichtshöfen keine Sitzung, und in den Unterrichtsanstalten keine Schule gehalten wird, und 6 Tage, an welchen in den Kirchen für erfochtene große Siege Dankgebethe verrichtet werden, und zwar: 1) zum Gedächtnisse des mit der osmanischen Pforte in Kutschuk-Kainardschi geschlossenen Friedens und der Vereinigung des taurischen Gebiethes mit dem russischen Reiche; 2) der Eroberung der Fregatten bey Hangöudd und Greenham; 3) der Eroberung der Stadt Narva; 4) des über die preußische Armee erfochtenen Sieges (19. August); 5) des über den General Löwenhaupt erfochtenen Sieges; 6) der Eroberung der Festung Schlüsselburg.

Die jüdischen Festtage sind entweder von strenger Feyer, oder nicht. Die ersteren sind roth, die letzteren schwarz gedruckt. Das jüdische Osterfest fällt nie vor unserm 26. März, nie nach dem 25. April. 163 Tage nach dem Osterfeste tritt der Neujahrstag oder Molad Tischri des folgenden Jahres ein.

## Die vier Quatember im Jahre 1830.

Im Gregorianischen Kalender: 1) Fasten-Quartal d. 3. März. 2) Pfingst-Quartal d. 2. Junius. 3) Herbst-Quartal d. 15. Sept. 4) Winter-Quartal d. 15. Dec. — Im Julianischen Kalender: 1) Den 26. Febr. 2) Den 28. May. 3) Den 17. Sept. 4) Den 17. Dec. — Der erste Quatember fällt immer am Mittwoch nach Invocabit, der zweyte am Mittwoch nach Pfingsten, der dritte am Mittwoch nach Kreuz-Erhöhung, der vierte am Mittwoch nach Lucia.

Die Bitt- und Fasttage der Katholiken sind mit einem ✝ bezeichnet.

Anmerkung. Außer der jährlichen großen Fasten vom Aschermittwoch bis Ostersonntag sind in der katholischen Kirche noch nachfolgende gebothene Fasttage: 1. In jeder Quatemberwoche der Mittwoch, Freytag und Samstag. 2. Die Vigilien, oder der Tag vor nachfolgenden Festen: a) vor Pfingsten; b) vor Petri und Pauli; c) vor Maria Himmelfahrt; d) vor Allerheiligen; e) vor Mariä Empfängniß und f) vor dem Christfeste. Fällt eine dieser Fasten auf einen Sonntag, so wird sie auf den vorhergehenden Samstag verlegt, auch wenn dieser Samstag selbst ein Festtag seyn sollte. 3. In der Woche nach dem ersten, zweyten, dritten und vierten Advent jedesmahl der Mittwoch und Freytag, doch unter der Bedingung, daß in der Woche nach dem vierten Adventsonntag dieser Mittwoch oder Freytag noch vor dem Christtage falle.

Die Griechen haben viererley Fasten: 1) Die Fasten vor Ostern (Quadragesima) durch 7 Wochen. 2) Die Fasten Petri und Pauli, vom ersten Sonntage nach Pfingsten bis 29. Junius durch 3 bis 5 Wochen. 3) Die Fasten der Mutter Gottes, vom 1. August bis Maria Himmelfahrt, durch 2 Wochen. 4) Die Fasten vor Weihnachten, vom 15. November bis zum Christfest, durch 6 Wochen. Also in allem 18 bis 20 Wochen.

Für die katholische Kirche sind noch folgende Tage zu bemerken: 1) Das Nahmen-Jesufest fällt jedesmahl auf den zweyten Sonntag nach Epiphania. 2) Das ehemahlige Scapulirfest war auf den 16. Julius unbeweglich festgesetzt, es mochte auf einen Sonntag oder Wochentag fallen. 3) Das Schutzengelfest fällt immer auf jenen Sonntag, welcher der nächste dem ersten Tage im September ist; es kann folglich auch in die letzten Tage des August fallen. 4) Das ehemahlige Rosenkranzfest fiel immer auf den ersten Sonntag im October. 5) Das allgemeine Kirchweihfest, auch die Kaiser-Kirmeß genannt, fällt auf den dritten Sonntag im October. 6) Das Fest der sieben Schmerzen Mariä fällt auf den Freytag nach Judica (2 Tage vor dem Palmsonntage). 7) Das Maria-Nahmensfest auf den Sonntag nach Mariä Geburt. 8) Fällt der Charfreytag oder der Charsamstag auf d. 25. März, so wird das Fest Maria Verkündigung auf den Montag nach dem weißen Sonntag oder Quasimodogeniti verlegt. Dieß ist der Fall in den künftigen Jahren 1837, 1842, 1853, 1864, 1910, 1921, 1932, 1967, 1978, 1989 u. s. w.

## Die zwölf Zeichen des Thierkreises (Himmelsthore) mit ihren Zahlen und Gebiethen.

| Zahl. | Zeichen | Nahmen | Zeichen | Reicht von Z. | Reicht von Grad. | Reicht bis Z. | Reicht bis Grad. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0. | ♈ | Widder | | 0 | 26 | 1 | 20 |
| 1. | ♉ | Stier | | 1 | 20 | 2 | 27 |
| 2. | ♊ | Zwillinge | | 2 | 27 | 3 | 24 |
| 3. | ♋ | Krebs | | 3 | 24 | 4 | 14 |
| 4. | ♌ | Löwe | | 4 | 14 | 5 | 19 |
| 5. | ♍ | Jungfrau | | 5 | 19 | 7 | 5 |
| 6. | ♎ | Wage | | 7 | 5 | 7 | 27 |
| 7. | ♏ | Scorpion | | 7 | 27 | 8 | 27 |
| 8. | ♐ | Schütze | | 8 | 27 | 9 | 29 |
| 9. | ♑ | Steinbock | | 9 | 29 | 10 | 24 |
| 10. | ♒ | Wassermann | | 10 | 24 | 11 | 15 |
| 11. | ♓ | Fische | | 11 | 15 | 0 | 26 |

In vielen Kalendern und astronomischen Werken kommen statt der Zeichen, wovon es zweyerley gibt, wie sich aus diesem kleinen Tableau ersehen läßt, die Zahlen derselben vor. Vorstehende Angabe derselben erleichtert daher den Gebrauch jener Werke für Alle, welche mit dergleichen Abkürzungen nicht ganz vertraut sind.

Merkur ist der nächste Planet bey der Sonne, und kann des Jahrs für uns nur in 6 bis 7 verschiedenen Zeitperioden und jedes Mahl nur auf kurze Zeit sichtbar seyn, und zwar nur in der Morgen- und Abenddämmerung der Sonne. Er ist dreymahl größer als der Mond, zwölfmahl größer als die Juno, und wird sechsmahl stärker, als die Erde, von der Sonne beleuchtet. Er ist sichtbar als Morgenstern (größte westliche Ausweichung) 10. März, 8. Jul, 28. Oct.; — als Abendstern (größte östliche Ausweichung) 28. Jan., 21. May, 17. Sept.

Venus, die Königinn aller Gestirne und die Zierde am Firmamente, ist der zweyte Planet. Sie ist um $\frac{1}{7}$ kleiner, als unsere Erde. Von der Erde aus gesehen hat sie erst nach 584 Tagen ($1\frac{3}{5}$ Jahr) wieder die nähmliche Stellung gegen den Erdplaneten; nach 8 Jahren steht sie an jedem bestimmten Tage des Jahres wieder in der nähmlichen Himmelsgegend. Das Sonnenlicht ist auf ihr um 24 mahl stärker, als auf der Erde. Als Abendstern glänzt sie vom 20. May 1829 bis 7. März 1830, dann als Morgenstern bis 21. Dec. Sie hat den 17. May ihre größte westliche Ausweichung von der Sonne.

Mars ist ebenfalls stärker, als unsere Erde beleuchtet, und legt jährlich einen Umlauf von 200 Millionen Meilen zurück.

Jupiter ist nach der Venus das schönste Himmelsgestirn und legt eine Bahn von 682 Millionen Meilen zurück.

Saturn, ein wegen seines Doppelringes ausgezeichneter Planet. Dieser Doppelring ist 5800 Meilen von seiner Oberfläche entfernt, schwebt über ihm als ein freyes Gewölbe, dessen Breite 4000, dessen Umfang 127000 Meilen beträgt. Dieser Planet vollendet eine Bahn von 1280 Millionen Meilen, und schwingt sich in 10 Stunden 16 Minuten um seine Achse. Die Bewohner des Saturns sehen die Sonne 90mahl kleiner, als wir.

Uranus, der entlegenste Planet, den wir kennen (es werden noch 9 Planetenbahnen hinter Uranus vermuthet), legt eine Bahn von 2500 Millionen Meilen zurück, und seine Bewohner sehen die Sonne im Flächenraume 364mahl kleiner, als wir.

Der Mond läuft in 27 Tagen 7 Stunden 43 Min. 5 Sec. um die Erde, ist 51000 Meilen von ihr entfernt, und 50mahl kleiner. Die Entfernung des Mondes von der Sonne beträgt 20,857,008 geogr. Meilen.

## Knauer's regierender Planet.

Der alte Wetterprophet Abbé Knauer, der alle Jahre einen andern Planeten regieren ließ, setzte die ersten 3 Monathe des Jahrs 1830 noch in die Regierungszeit der Venus, deren Zeit vom 20. März 1829 bis 21. März 1830 dauert; vom 21. März 1830 bis 21. März 1831 soll Merkur regieren! Wer das abergläubische Unwesen, welches sogar noch heut zu Tage Gläubige findet, lesen will, nehme Knauer's 100jährigen Kalender zur Hand.

## Zeichen der Mondesviertel oder Mondesphasen.

● Neumond | ☽ Erstes Viertel. | ○ Vollmond | ☾ Letztes Viertel.

## Die Sonne mit den 11 Planeten, oder unser Sonnensystem.

Vorstellung der Umlaufszeit, Entfernung und Größe der Sonne und der Planeten.

| Nahmen der Weltkörper. | Durchmesser in geograph. Meilen. | Umlauf um die Sonne. Jahre | Tage | St. | Min. | Beweg. in einer Sec. Meilen. | Mittlere Entfern. von der Sonne. Geogr. Meilen. | Größer oder kleiner als die Erde. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☉ Sonne | 192,640 | „ | „ | „ | „ | „ „ | „ „ „ „ | 1,448,000mahl größ. |
| ☿ Merkur | 608 | — | 87 | 23 | 14 | 6,7 | 8,073,747 | 16 „ kleiner |
| ♀ Venus | 1668 | — | 224 | 16 | 41 | 4,9 | 15,086,520 | $\frac{1}{10}$ „ kleiner |
| ♁ Erde | 1720 | — | 365 | 5 | 48 | 4,1 | 20,857,008 | — „ — |
| ♂ Mars | 1006 | 1 | 321 | 22 | 18 | 3,4 | 31,779,645 | $4\frac{3}{5}$ „ kleiner |
| ⊡ Vesta | 68 | 3 | 224 | — | — | 2,7 | 49,121,087 | 14841 „ kleiner |
| ✝ Juno | 309 | 4 | 131 | — | — | 2,5 | 55,628,847 | 172 „ kleiner |
| ♃ Pallas | 465 | 4 | 220 | — | — | 2,5 | 57,751,975 | 53 „ kleiner |
| ⚳ Ceres | 352 | 4 | 221 | — | — | 2,5 | 57,719,789 | 116 „ kleiner |
| ♃ Jupiter | 19,566 | 11 | 314 | 14 | 39 | 1,9 | 108,495,777 | 1474 „ größer |
| ♄ Saturn | 17,362 | 29 | 166 | 19 | 16 | 1,3 | 198,984,136 | 1037 „ größer |
| ♅ Uranus | 7,437 | 84 | 8 | 39 | 39 | 0,9 | 397,989,255 | 83 „ größer |

# 1. Januarius, Eismond, Kältemonath, hat 31 Tage.

| Wochent. | Monathst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer December 1829. | | Jüdischer IV. Tebeth 5590. | | Türkisch-arab. VII. Redscheb 1245. | | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Fr. | 1 | A Neujahr | Neujahr | 20 | Ignaz M. | 6 | | 6 | 27 Tsum. | ♑ | 16 |
| Sa. | 2 | B Makarius ☽ | Abel, Seth. | 21 | Juliana M. | 7 | 14 Sabb. | 7 | | ♑ | 32 |
| 1) Kath. und Prot. Nachdem Herodes gestorben war. Matth. 2, 19 — 23. | | | | | | | | | | | |
| So. | 3 | C Genovefa | Ennoch | 22 | J 4 Anastasia | 8 | | 8 | | ♑ | 28 |
| Mo. | 4 | Titus B. | Titus B. | 23 | 10 Mart. | 9 | | 9 | | ♒ | 11 |
| Di. | 5 | Telesph. P. | Simeon | 24 | Heil. Väter | 10 | Fasten. Be- | 10 | | ♒ | 24 |
| Mi. | 6 | Heil. 3 Kön. | Ersch. Christ. | 25 | Geb. J. Christi | 11 | lag. Jeruf. | 11 | | ♓ | 8 |
| Do. | 7 | Raimund | Raimund | 26 | Mutter Gottes | 12 | | 12 | | ♓ | 21 |
| Fr. | 8 | Severin | Erhard | 27 | Steph. M. | 13 | | 13 | 28 Tsum | ♈ | 5 |
| Sa. | 9 | Marcellin ☺ | Marcellin | 28 | 20,000 Mart. | 14 | 15 Sabb. | 14 | glückl. | ♈ | 19 |
| 2) Kath. und Prot. Da der Herr Jesus 12 Jahre alt war. Luc. 2, 42 — 52. | | | | | | | | | | | |
| So. | 10 | C 1 Epiph. P. E. | 1 Ep. P. Einf. | 29 | J Unsch. Kind. | 15 | | 15 | Tage. | ♉ | 3 |
| Mo. | 11 | Hyginus P. | Mathilde | 30 | Anysia M | 16 | | 16 | Siegestag | ♉ | 17 |
| Di. | 12 | Ernestus | Reinhold | 31 | Melania | 17 | | 17 | | ♊ | 1 |
| Mi. | 13 | Hilarius B. | Hilarius | 1 | A Neujahr 1830 | 18 | | 18 | | ♊ | 15 |
| Do. | 14 | Felix in Pincis | Felix | 2 | B Sylvester | 19 | | 19 | | ♋ | 0 |
| Fr. | 15 | Maurus Abt | Maurus | 3 | C Malachias | 20 | | 20 | 29 Tsum. | ♋ | 14 |
| Sa. | 16 | Marcell. P. | Marcus | 4 | D 70 Apostel | 21 | 16 Sabb. | 21 | | ♋ | 28 |
| 3) Kath. und Prot. Von der Hochzeit zu Cana in Galiläa. Joh. 2, 1 — 11. | | | | | | | | | | | |
| So. | 17 | C 2 Ep. N. Jes ☾ | 2 Ep. Amt. Einf. | 5 | E Theopemptus | 22 | | 22 | | ♌ | 12 |
| Mo. | 18 | Prisca Jungf. | Prisca | 6 | Ersch. Christi | 23 | | 23 | | ♌ | 26 |
| Di. | 19 | Canutus | Sara | 7 | Joh. Täufer | 24 | | 24 | | ♍ | 9 |
| Mi. | 20 | Fab. u. Seb. | Fäb. u. Seb. | 8 | Georg Chos. | 25 | | 25 | | ♍ | 22 |
| Do. | 21 | Agnes | Agnes | 9 | Polyeuktes | 26 | | 26 | | ♎ | 5 |
| Fr. | 22 | Vincent M. | Vincent. | 10 | Greg. Nyss. | 27 | | 27 | 30 Tsum | ♎ | 17 |
| Sa. | 23 | Verm. Mar. | Emerentie | 11 | Theodosius | 28 | 17 Sabb. | 28 | Muh Erb | ♎ | 29 |
| 4) Kath. und Prot. Von des Hauptmanns Knecht. Matth. 8, 1 — 13. | | | | | | | | | | | |
| So. | 24 | C 3 Ep. Tim. ● | 3 Ep. Timoth. | 12 | E Tatiana | 29 | | 29 | | ♏ | 11 |
| Mo. | 25 | Pauli Bekehr. | Pauli Bek. | 13 | Hermylus | 1 | Shebath | 30 | | ♏ | 23 |
| Di. | 26 | Polykarp | Polykarp | 14 | Zachäus | 2 | | 1 | Shaban | ♐ | 5 |
| Mi. | 27 | Joh. Chrys. | Chrysostom. | 15 | Paul Theb. | 3 | | 2 | | ♐ | 17 |
| Do. | 28 | Carol. Mag. | Carl d. Große | 16 | Petri Kettenf. | 4 | | 3 | | ♐ | 29 |
| Fr. | 29 | Franz v Sal. | Valerius | 17 | Anton | 5 | | 4 | 31 Tsum. | ♑ | 11 |
| Sa. | 30 | Martina | Adelgunde | 18 | Ath. Canut. | 6 | 18 Sabb. | 5 | | ♑ | 24 |
| 5) Kath. und Prot. Vom Ungewitter auf dem Meere. Matth. 8, 23 — 27. | | | | | | | | | | | |
| So. | 31 | C 4 Ep. Petr. ☽ | 4 Ep. Virgil. | 19 | E Makarius | 7 | | 6 | | ♒ | 10 |

*) Den 17. ist das Nahmen-Jesu-Fest.

1. Betrachtungen in Schlesien. Jahrbuch. Augsburg.
Leipzig. 2. Theil. Jahrbuch.
2. Mittelburg Arbeiten. Neue Stellen. Schaum. Gesetzbuch. Samuel
Schaeffer. Nachrichten. Schlesien. Dieman Gering.
4. H. Beruth. Schlesien. Hofe. Leistenand.
5. Ragolod. Neuchronologie. Bollandisch. Schlesien. —

Nichts, Wichtig: Verbindlichkeit.

1. Jährlich 200 Thaler im Archiv zum Theil bei 20 f. b. 3. — 10 f. gegeben.
2. Ch. pieman ingenua Wedeck und 10 f. Ch. Nachfolgung.
3. Stelle u. Nahrung aus dem Verbrauch. gemeinschaftlich.
4. Wollen Ch. gratis. Tuche zum Kleiden.
5. Verfassung hoch u. Luden u. Leiden. 1. Pl. 60 f. 2. Pl. 40. 3. Pl. 20 f.

Mittel. Q.

1. Stand — 20 = 10
2. Nahrung Hein — Kurze Arbeiten zum.
3. Ch. nicht Wollen.
4. Ch. Liebe die Welt.

Wein Jahrbuch 2 f. 1. 4 f.
1 f. 1 f. 1 f.
2 f. 2 f. 2 f.

Stand Ragolod.

1. Hainmühle — 100.
2. Zinne — 80.
3. Jahrlingsmühle 40.
4. Jahr Lieder — 60. —
5. Hainingmühle u. 2 Jahrlinge — 60.
340.
6. Mahlschatz 300. —
7. Zinnen mühlrecht 140 2 [illegible]
8. Jahrlingsmühle [illegible]
[illegible]

Nichts 3 P. Wicker E E in nächsten Ofen
2 P. XX im nächsten
Florentia 2 P. X im Luden
25 Gidf 4. P. Schlesien im Luden Ofen
25. 4. Baum. Neudeschein im Luden Ofen.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 200. Fr | 829 | à | 2 f. | f 400. — | |
| 2. | 100. M | 828 | à | 5 | 500. — | |
| 3. | 200. Fr | 827. | à | 6 f. | 1200. — | zusammen |
| 4. | 100. f. | 827 | à | 7 f. | 700. — | Gr. |
| 5. | 50 Fr | à 822 | | 9 | 450. | |
| | 650. Fr. | | | | f 3250. | |

Wenn zusammen

829. Oesterb. N. 23. 53. } zusammen 801.
26. 37.
6 f. Lang 32. 28.
3 f. Daly 44. 66.
37. 80.
Oesterb. 38. 20.
29. 28.
6 f. Lang 30. 27. } 128.
6 f. Dopel 21. 25.

822.

28. — 36.
34. — 24.
35. — 30. } 115. Wendling.
61. — 13.
58. — 11.

819. 39. 21. zusammen.

828. Ho 1. — 62. } 166.
13. 54.
21. 50.

827. zum. 2 — 62. } Lang à 17 f. 290. Lang à 16 f. zusammen.
8. — 60.
11. — 60.
17. — 55.
24. — 53.

827 Zum. 2. — 56. } 273.
8 — 49.
13. — 60.
12. — 55.
16 — 53.

| | | |
|---|---|---|
| Rebellen . . . 50. | 200. | 829. |
| 50. | 100. | f. Oest |
| 50. | 150. | 828 |
| 100. | 300. | 827 zum. |
| 120. | 270. | 827 f. |
| 50. | 100. | 822. |
| 20 | 20. | 819. |
| 440. | 1140. | |
| | 440. | |
| | 700. | |

# Jänner. Der Tag nimmt zu von 8 St. 12 Min. bis 9 St. 18 Min.

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | W. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ☽ Erstes Viertel Samstag d. 2. um 3 Uhr 39 Min. Morg. | 1 | 7 54 | 4 6 | Der zunehmende bey Tage | Morg. | 12 3 49 |
| ○ Vollmond Samst. d. 9. um 4 Uhr 38 Min. Morg. | 2 | 7 53 | 4 7 | | 1 14 | — 4 17 |
| ☾ Letztes Viertel Sonnt. d. 17. um 5 Uhr 8 Min. Morg. | 3 | 7 53 | 4 7 | | 2 25 | — 4 45 |
| ● Neumond Sonnt. d. 24. um 6 Uhr 0 Min. Ab. | 4 | 7 52 | 4 8 | | 3 37 | — 5 12 |
| ☽ Erstes Viertel Sonnt. d. 31. um 11 Uhr 52 Min. Morg. | 5 | 7 52 | 4 8 | | 4 44 | — 5 40 |
| | 6 | 7 51 | 4 9 | | 5 47 | — 6 6 |
| | 7 | 7 50 | 4 10 | | 6 43 | — 6 32 |
| | 3 | 7 49 | 4 11 | | 7 32 | — 6 59 |
| | 9 | 7 48 | 4 12 | 5 A. 13 | 8 ♒ 13 | — 7 23 |
| | 10 | 7 47 | 4 13 | 6 17 | | — 7 48 |
| Erdnähe des ☾ den 2. | 11 | 7 46 | 4 14 | 7 18 | Der abnehmende bey Tage unter. Mond geht | — 8 12 |
| Erdferne des ☾ den 15. | 12 | 7 45 | 4 15 | 8 22 | | — 8 35 |
| Erdferne des ☾ den 27. | 13 | 7 44 | 4 16 | 9 23 | | — 8 58 |
| | 14 | 7 43 | 4 17 | 10 24 | | — 9 20 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Norden am 1., nach Süden am 15. und wieder nach Norden den 28. Größte nördliche Abweichung des ☾ am 8., größte südliche am 22. | 15 | 7 42 | 4 18 | 11 24 | | — 9 42 |
| | 16 | 7 41 | 4 19 | Morg. | | — 10 3 |
| | 17 | 7 40 | 4 20 | 1 25 | | — 10 24 |
| | 18 | 7 39 | 4 21 | 2 27 | | — 10 43 |
| | 19 | 7 38 | 4 22 | 3 26 | | — 11 2 |
| | 20 | 7 37 | 4 23 | 4 27 | | — 11 20 |
| | 21 | 7 36 | 4 24 | 5 24 | | — 11 37 |
| Die Sonne rückt aus dem Steinbock in das Zeichen des Wassermannes, Mittwoch den 20. Jan. um 11 Uhr 46 Minuten Morgens. | 22 | 7 35 | 4 25 | 6 18 | | — 11 54 |
| | 23 | 7 34 | 4 26 | 7 6 | | — 12 9 |
| | 24 | 7 33 | 4 27 | 7 ● 48 | 4 A. 48 | — 12 25 |
| | 25 | 7 31 | 4 29 | | 6 2 | — 12 39 |
| | 26 | 7 30 | 4 30 | Mond geht auf. | 7 17 | — 12 52 |
| Am 1. Jänner ist die Sonne in der Erdnähe. | 27 | 7 28 | 4 32 | | 8 33 | — 13 5 |
| | 28 | 7 27 | 4 33 | | 9 48 | — 13 17 |
| Die Venus hat am 13. ihren größten Glanz als Abendstern. Merkur hat den 7. seine größte heliocentrische südliche Breite. | 29 | 7 25 | 4 35 | | 11 4 | — 13 28 |
| | 30 | 7 23 | 4 37 | | Morg. | — 13 38 |
| | 31 | 7 21 | 4 39 | | 1 29 | — 13 47 |

Kleines Stammbuch der Heil. oder Erinnerungstafel an die Namenspatrone und Kirchenfeste.

6. Januar. Das heil. Dreykönigs-Fest. Die Kirche feyert die dreyfache Erscheinung des Herrn: 1. durch den Stern den drey Weisen; 2. bey der Taufe Christi im Jordan; 3. durch Verwandlung des Wassers in Wein, bey der Hochzeit in Cana. — Ein Tag der Anbethung und des Vertrauens.

16. Januar. Marcellus, ein Römer, bestieg im Jahre Christi 308 den päpstlichen Stuhl. Wegen seines Eifers wurde er von Maxentius nach Sicilien ins Elend geschickt, und litt unter eben diesem Kaiser einen langsamen Martertod im Jahre Christi 310.

19. Januar. Canutus, König von Dänemark, nahm sich um die Ausbreitung der christlichen Religion kräftig an, errichtete milde Stiftungen, und zeichnete sich durch seinen Gerechtigkeits-Eifer aus. Allein die wilde Herrschsucht seines Bruders machte, daß der fromme König den Martertod starb, im Jahre Christi 1086.

(Diese Andeutungen aus dem Leben der Heiligen werden seit 1822 durch alle Tage d. Jahrs fortgesetzt.

## Witterungs-Angaben.

Januar. In die erste Hälfte des Januars fallen im Durchschnitte, wo nicht überall, doch in Gebirgsgegenden, die kältesten Tage des Jahrs. Am 14. Januar haben wir gerade die Mitte des Winters. Etwas später hinaus bringen oft Winde aus Norden und Nordost strenge Kälte und Schnee, und Südwinde hausen nicht selten auf Bergen und Ebenen. Die Witterung ist in der Regel sehr gesund.

Loostag. Den 22. „Vincenzen Sonnenschein füllet die Faß mit Wein."

Knauers Wetterprophezeihung. "Dieses Jahr ist im Allgemeinen mehr trocken und kalt, als warm, selten gar sehr fruchtbar. — Der Januar ist anfänglich gelind mit Sonnenschein bis 6., dann kalt und unlustig mit Schnee, am 12. stark windig und sehr kalt, den 15. windig, bis 18. sehr kalt mit vielem Schnee; vom 19. bis 2.. warm und mittelmäßig schön, doch mit starken Winden vermischt, den 23. bis 25. kalt ohne Winde, 26. u. 27. kalt mit Schnee, dann bis zu Ende kalt ohne Wind.

## II. Februarius, Thaumond, Hornung, hat 28 Tage.

| Wochent. | Monatht. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer Januar. | | Jüdischer V. Shebath 5590. | Türkisch-arab. VIII. Shaban 1245. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Mo. | 1 | Ign. v. A. B. | Brigitta | 20 | Euthymius | 8 | 7 | | 1 |
| Di. | 2 | Mar. Lichtm. | Mar. Reinig. | 21 | Triodionius | 9 | 8 | | 15 |
| Mi. | 3 | Blasius B. | Blasius | 22 | Timotheus | 10 | 9 | | 28 |
| Do. | 4 | Veronica | Veronica | 23 | Clemens | 11 | 10 | | 12 |
| Fr. | 5 | Agatha M. | Agatha | 24 | Xenia | 12 | 11 32 Tsum. | | 25 |
| Sa | 6 | Dorothea M. | Dorothea | 25 | Gregor Th. | 13 10 Sabb. | 12 | | 7 |
| 6) Kath. und Prot. Von den Arbeitern im Weinberge. Matth. 20, 1 — 16. | | | | | | | | | |
| Sp. | 7 | ☾ Sept. Rom. | ☾ Sept. Richard | 26 | ☾ Triod. Xen. | 14 | 13 glück- | | 20 |
| Mo. | 8 | Joh. v. M. | Salomon | 27 | Joh. Chrys. | 15 Freudentag Baumfest. | 14 liche | | 2 |
| Di. | 9 | Apollonia M. | Apollonie | 28 | Ephrem. Syr. | 16 | 15 Tage | | 14 |
| Mi. | 10 | Scholastica | Gabriel | 29 | Ignatius | 17 | 16 Barr. N. | | 26 |
| Do. | 11 | Desiderius | Euphrosine | 30 | Bas. Gre. Jo. | 18 | 17 | | 8 |
| Fr. | 12 | Eulalia | Eulalia | 31 | Cyriac. u. Joh. | 19 | 18 33 Tsum. | | 20 |
| Sa. | 13 | Katharina N. | Castor | 1 | Februar. Trif | 20 20 Sabb. | 19 | | 2 |
| 7) Kath. und Prot. Vom Samen, Unkraut und vielerley Erdreich. Luc. 8, 4 — 15. | | | | | | | | | |
| Sp. | 14 | ☾ Sept. Valentin | Sexag. Valent. | 2 | ☾ Sept. M. Rein. | 21 | 20 | | 13 |
| Mo. | 15 | Faustinus | Faustinus | 3 | Sim. u. Anna | 22 | 21 | | 26 |
| Di. | 16 | Juliana | Juliana | 4 | Isidor Abt | 23 | 22 | | 8 |
| Mi. | 17 | Constantia | Constantia | 5 | Agatha | 24 | 23 | | 21 |
| Do. | 18 | Flavian | Concordia | 6 | Bucolus B. | 25 | 24 | | 4 |
| Fr. | 19 | Gabinus | Gabinus | 7 | Parthenius | 26 | 25 34 Tsum. | | 17 |
| Sa. | 20 | Eleuther. P. | Eucharius | 8 | Theodor | 27 21 Sabb. | 26 | | 1 |
| 8) Kath. und Prot. Vom Blinden am Wege bey Jericho. Luc. 18, 31 — 43. | | | | | | | | | |
| Sp. | 21 | ☾ Quing. Eleonor. | Quing. Eleon. | 9 | ☾ 2 Serag. Nik. | 28 | 27 | | 15 |
| Mo. | 22 | Petr. Stuhlf. | Petr. Stuhlf. | 10 | Charalampius | 29 | 28 | | 0 |
| Di. | 23 | Fastn. Eberh. | Serenus | 11 | Tryoph. | 30 | 29 | | 15 |
| Mi. | 24 | Aschermi. Math. | Mathias | 12 | Melet. Alex. | 1 Adar | 1 Ramazan | | 0 |
| Do. | 25 | Walburga | Alexander | 13 | Martinian | 2 | 2 Fastenm. | | 15 |
| Fr. | 26 | Nestor | Gotthilf | 14 | Aurentius | 3 | 3 35 Tsum. | | 0 |
| Sa. | 27 | Leander | Victorin | 15 | Onesimus | 4 22 Sabb. | 4 | | 14 |
| 9) Kath. und Prot. Von der Versuchung Christi. Matth. 4, 1 — 11. | | | | | | | | | |
| Sp. | 28 | ☾ 1 Invoc. Rom. | Invoc. Rom. | 16 | ☾ 5 Pamphil. | 5 | 5 | | 28 |

*) Der Sonntag Quinquagesima heißt sonst Fastnachts-Sonntag oder Esto Mihi. Er ist der 5ste Tag vor Ostern, und hat davon, so wie der Sonntag Sexagesima, den Nahmen erhalten. Der Sonntag Invocabit wird auch Quadragesima oder der erste Sonntag in der Fasten genannt.

1. Meidling.

a, 8 Häuser auf die Gasse à . . . f 8000.
b, 2 Ha am Hof . . . 5000.
c, 6 Seitengebäuden auf die Gasse " 6000.
d, 27 Hausstellen bei Schwan " 13,500.
e, Radicirte Schwan Eigenschaftsgut " 6000.

2. St. Gerhard.

a, 800 Joch Aeckerungen à 100 f à 150 f. 80,000.
b. 1200 Joch Gehäude à 20 × 10 f " 18,000.
c. Gehäude zu Angedlungen " 6000.

3. Brun.

a, Unterwill " 3000.
b, die Lüste 220 Joch " 20,000.
c, Gehäude zu Straßl " 7000.

4. Nagelsd. 20 Joch Wiesen à 400 f " 8000.

159,500.

Erfindiert. Schwarzach Meidling f 6000.
Lüste in Brun " 20000.
Wiesen Nag. " 8000. 34000.

125500.

3. Grub

1. Gust . 70.
2. Meidl . 70.
3. Nagelsd " 14.
4. Gerh " 17.
180. f.

Meidling . . . 700 f.
Grub . . . 140.
200 f 10 Joch. 5 Tagl.
275 fl.

Vieh . 2,
Egen . 2,
Brau . 4
Kuppa . 1
Dom . 11
21

1. Meidling . . 70. 85.
2. Gerh . . 60. 12.
3. Brun . . 10. 60.
15.
15.
10.
100 fl. 115. f.

Stammbaumschnitt der Lang von 3. Magerl.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 829. | Schafbrang | N.r 44. | 66 Fr. | à 5 f | 330. |
| 2. | d. | d. | N. 22. | 28. | à 6 f | 168. |
| 3. | d. | Schafz | N.r 30. | 37. | à 6 f. | 222. |
| | | 7x. C. M. | Zillenrasst. | | à 16 f | 960. |
| 4. | 827. | Schafb. | N.r 11. | 60. | à 17 f. | 1054. |
| 5. | d. | Schafb. | N. 3. | 82. | à 17 f. | |
| | | 6x. C. M. | Zillenrasst. | | | |
| Ausfall. | | | | | à 6 f | 210. |
| 6. | 829. | Schafz. | N. 21. | 35. | | |
| | | | | | | 2944. |
| | | | | | | 210. |
| | | | | | Rest | 2734. |

Rest

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 100 Fr. | 828. | à 6 f. | 1. 829.r | 50 Fr. | à 6 f | 300. |
| 150 d. | 827 | à 8 f. | 2. 828.r | 50. | à 15 f | 750. |
| 50 d. | 822 | à 10 f. | 3. 827.r Schafb. | 50. | à 16 f | 800 |
| | | | 4. 827.r d.r | 150. | à 20 f | 3000. |
| | | | 5. 822.r | 50. | à 25. | 750. |
| | | | | 350 Fr. | | f 5600. |

Kühe zu kaufen.

Kühe bleiben.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. 829.r | 70 Fr. | — | | | | |
| 2. 828.r | 100. | — | 50. | à 6 f | 300. | Gründe. |
| 3. 827 Fr.r | 60. | — | | | | |
| 4. 827 Fr.r | 120. | — | 50. | 8 f. | 400. | |
| 5. 822 d.r | 50. | — | 20. | 10. | 200. | |
| 6. 822. d.r | 21 | | 120. | | | |
| | 421 Fr. | | | | | |

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | Wochentag | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Vollmond Sonnt. d. 7. um 3 Uhr 48 Min. Ab. | | | | | | |
| Letztes Viertel Dienst. d. 16. um 1 Uhr 33 Min. Morg. | 1 | 7 20 | 4 41 | | 2 35 | 12 13 56 |
| Neumond Dienst. d. 23. um 5 Uhr 41 Min. Morg. | 2 | 7 18 | 4 43 | Der Mond geht bey | 3 39 | — 14 3 |
| | 3 | 7 16 | 4 45 | | 4 36 | — 14 10 |
| | 4 | 7 15 | 4 46 | | 5 27 | — 14 16 |
| | 5 | 7 14 | 4 47 | | 6 11 | — 14 21 |
| | 6 | 7 12 | 4 49 | | 6 49 | — 14 25 |
| Erdferne des ☾ den 13. | 7 | 7 11 | 4 50 | 5 A 4 | 7 21 | — 14 29 |
| Erdnähe des ☾ den 26. | 8 | 7 9 | 4 51 | 6 8 | | — 14 32 |
| | 9 | 7 8 | 4 53 | 7 10 | | — 14 33 |
| | 10 | 7 6 | 4 55 | 8 11 | | — 14 34 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Süden am 11., nach Norden am 25. Größte nördliche Abweichung am 4., größte südliche am 18. | 11 | 7 4 | 4 57 | 9 12 | | — 14 35 |
| | 12 | 7 2 | 4 59 | 10 13 | | — 14 34 |
| | 13 | 7 0 | 5 0 | 11 13 | | — 14 33 |
| | 14 | 6 59 | 5 2 | Morg. | | — 14 31 |
| | 15 | 6 57 | 5 4 | 1 12 | | — 14 28 |
| | 16 | 6 56 | 5 6 | 2 11 | | — 14 25 |
| | 17 | 6 54 | 5 7 | 3 9 | | — 14 21 |
| Die Sonne rückt aus dem Wassermann in das Zeichen der Fische Freyt. den 19. Febr. Morgens 2 U. 27 Min. Die Tage sind im Wachsen. | 18 | 6 52 | 5 9 | 4 3 | | — 14 16 |
| | 19 | 6 50 | 5 11 | 4 53 | | — 14 11 |
| | 20 | 6 48 | 5 13 | 5 38 | | — 14 5 |
| | 21 | 6 46 | 5 15 | 6 19 | | — 13 58 |
| | 22 | 6 45 | 5 16 | 6 55 | | — 13 50 |
| | 23 | 6 43 | 5 18 | 7 29 | 6 A 7 | — 13 42 |
| Den 23. Februar ist eine nur in Asien sichtbare Sonnenfinsterniß. | 24 | 6 42 | 5 19 | Tage auf. | 7 27 | — 13 34 |
| | 25 | 6 40 | 5 21 | | 8 44 | — 13 24 |
| | 26 | 6 38 | 5 23 | | 10 3 | — 13 15 |
| | 27 | 6 37 | 5 24 | | 11 17 | — 13 4 |
| Merkur hat den 10. seine größte heliocentrische nördliche Breite. | | 6 35 | 5 26 | | Morg. | — 12 53 |

Der abnehmende Mond geht bey Tage unter.

Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Namenspatrone und Kirchenfeste.

12. Februar. Eulalia, eine Jungfrau von Barcellona in Spanien, war eine der größten Heldinnen des Christenthums, die während der Christenverfolgung unter dem Kaiser Diocletian gelitten haben. Standhaft widersetzte sie sich dem Befehle, den Göttern zu opfern, und standhaft beharrte sie auf der Anbethung des Einen wahren Gottes, der sie der Gnade eines heil. Martertodes würdigte.

15. Februar Walfried, wegen seiner Frömmigkeit und seines hohen Adels gleich berühmt, entschloß sich mit seiner gottseligen Gemahlinn, aus höherm Geistestriebe in heiliger Enthaltsamkeit zu leben, und stiftete das Kloster Pallazelo in Toscana, in welchem er als ein wahrer Tugendheld sich mehr und mehr abtödtete und heilig vorbereitet starb, um das Jahr 765.

25. Februar. Tharasius aus einer edlen Familie von Constantinopel, verwaltete die ersten Staatsämter unter dem Kaiser Constantin und der Kaiserinn Irene mit eben so großer Treue und Entschlossenheit, mit welcher er nachher als Patriarch von Constantinopel die ihm anvertraute Heerde Jesu Christi auf dem Wege des Heiles führte. Er starb in Rufe der Heiligkeit im Jahre 806.

## Witterungs-Angaben.

Februar. Auch in diesem Monathe gibt es noch oft viel Schnee und Kälte, besonders im Gebirge, und die alten Teutschen setzten um Maria Lichtmeß die Mitte ihres Winters. Noch jetzt hört man das Sprichwort: Auf Maria Lichtmeß haben wir den Winter gewiß. Vom 24. sagt man: Mattheis bricht Eis; findet er keins, so macht er eins. Warmen Tagen ist in diesem Monathe auf keine Art zu trauen.

Loostag. Wenn es am Lichmeßtage schön hell ist, so bleibt der Dachs im Loch, denn er spürt, daß noch Winterkälte vorhanden ist. Wenn aber das Wetter ungestüm, mit Regen und Schnee vermischt ist, so bricht er hervor und fürchtet keinen Winter mehr.

Knauers Wetterprophezeihung. Der Februar fängt trüb an, wird am 5. schön, darauf unlustig, d. h. fällt große Kälte ein, die bis 12. anhält, dann wird es warm mit Regen, der großes Wasser verursacht, gegen Ende des Monaths ist es rauh, windig und unlustig mit Schnee.

| Wochent. | Monatst. | Allgeneiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer Februar. | | Jüdischer VI. Adar 5590. | Türkisch-arab. IX. Ramazan 1245. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Mo. | 1 | Albinus B. ☽ | Albinus | 17 | Theodor] | 6 | 6 | | 12 |
| Di. | 2 | Simplicius P. | Simplicius | 18 | Orthodoxus | 7 | 7 | | 25 |
| Mi. | 3 | Quat. Kunig. † | Kunigunde | 19 | Ascherm. Archip. | 8 | 8 | | 9 |
| Do. | 4 | Adrianus | Adrianus | 20 | Leo v. Catan. | 9 | 9 | | 21 |
| Fr. | 5 | Eusebius M. † | Friderich | 21 | Timotheus | 10 | 10 36 Tsum. | | 4 |
| Sa. | 6 | Fridolin † | Fridolin | 22 | Mart. v. Eug. | 11 23 Sabb. | 11 | | 16 |
| 10) Kath. Von der Verklärung Christi. Matth. 17, 1 — 9. Prot. Vom chananäischen Weibe. Matth. 15. | | | | | | | | | |
| So. | 7 | ☾ 2 Rem. Thom. | Rem. Felicius | 23 | ☾ 4 Polykarp | 12 | 12 | | 29 |
| Mo. | 8 | Joh. v. Gott | Philemon | 24 | Haupt Joh. | 13 Fast-Esth | 13 glück- | | 11 |
| Di. | 9 | Francisca ☺ | 40 Martyrer | 25 | Tarasius | 14 Kl. Purim | 14 liche | | 23 |
| Mi. | 10 | 40 Martyrer † | Cajus | 26 | Porphyrius | 15 Purim oder | 15 Tage | | 5 |
| Do. | 11 | Heraklius | Rosina | 27 | Prokopius | 16 Hamansf. | 16 | | 16 |
| Fr. | 12 | Greg. d. Gr. P. † | Gregorius | 28 | Basilius | 17 | 17 37 Tsum. | | 28 |
| Sa. | 13 | Rosina † | Ernest | 1 | März Eudokia | 18 24 Sabb. | 18 | | 10 |
| 11) Kath. und Prot. Jesus treibt einen Teufel aus, welcher stumm war. Luc. 11, 14 — 28. | | | | | | | | | |
| So. | 14 | ☾ 3 Oculi Mathilde | Oculi Zacharias | 2 | ☾ 5 Theod. B. | 19 | 19 Niederlage | | 22 |
| Mo. | 15 | Longin. M. | Christoph | 3 | Eutropius | 20 | 20 v. Wien. | | 4 |
| Di. | 16 | Heribert | Christian | 4 | Gerasimus | 21 | 21 | | 16 |
| Mi. | 17 | Mittf. Gertr. ☾ † | Gertrud | 5 | Konon M. | 22 | 22 | | 29 |
| Do. | 18 | Eduard | Anselm | 6 | 42 Mart. i. Am. | 23 | 23 | | 12 |
| Fr. | 19 | Joseph Naz. † | Joseph | 7 | Basil. Ephr. | 24 | 24 38 Tsum. | | 25 |
| Sa. | 20 | Joachim † | Hubert | 8 | Theophylakt | 25 25 Sabb. | 25 | | 9 |
| 12) Kath. und Prot. Jesus speiset 5000 Mann am galiläischen Meere. Joh. 6, 1 — 15. | | | | | | | | | |
| So. | 21 | ☾ 4 Lätare Bened. | Lätare Benedict | 9 | ☾ 6 40 M. v. Seb. | 26 | 26 | | 23 |
| Mo. | 22 | Octavianus | Casimir | 10 | Kodrat. M. | 27 | 27 | | 8 |
| Di. | 23 | Victorian | Eberhard | 11 | Sophronius | 28 | 28 | | 23 |
| Mi. | 24 | Gabriel † ● | Gabriel | 12 | Theophanes | 29 | 29 | | 8 |
| Do. | 25 | Mar. Verk. | Mar. Verk. | 13 | Nikephorus | 1 Nisan | 30 | | 23 |
| Fr. | 26 | Emanuel † | Emanuel | 14 | Bened. Abt | 2 | 1 Schewwal 39 | | 8 |
| Sa. | 27 | Rupert † | Rupert | 15 | Agapius | 3 26 Sabb. | 2 Großer | | 23 |
| 13) Kath. und Prot. Die Juden wollten Jesum im Tempel steinigen. Joh. 8, 46 — 59. | | | | | | | | | |
| So. | 28 | ☾ 5 Jud. Eustach. | Judica Eustach. | 16 | ☾ 7 Sabinus | 4 | 3 Beiram | | 8 |
| Mo. | 29 | Eustasius A. | Malchus | 17 | Alexis M. | 5 | 4 | | 22 |
| Di | 30 | Quirinus | Guido | 18 | Cyr. v. Jer. | 6 | 5 | | 5 |
| Mi. | 31 | Amos Pr. ☽ † | Detlaus | 19 | Chrysost. Dar. | 7 | 6 | | 18 |

*) Am 9. dieses Monaths wird in Mähren das Fest der h. Namens-Patronen Cyrill und Methudius gefeyert. Der 19. ist in Steyrmark und Tyrol Festtag, nähmlich des Landespatrons. Der Sonntag Reminiscere heißt auch der zweyte Sonntag in der Fasten, der Sonntag Oculi der dritte Sonntag in der Fasten. Den 17. März ist Mittfasten, d. i. der mittlere Fasten-Mittwoch.

1. [illegible] Arbeiten.
2. [illegible]
3. Messer.
4. Linden.
5. Mühlenwerk.
6. Holz.
7. Kup. R.
8. Glas.
9. Bretlingen.
10. Glasthürme.
11. [illegible]
12. Gehalt.
13. Gemarkung.
14. Kuchelz.
15. Glas Rayeld.
16. Glas Einschreibung.
17. Kuhgeschirr.
18. Kuhaufsicht.
Kuh Aufgänge.
19. Glasaufzeichnung.
20. Stöcker – Knecht.
21. Lunte h. Rayeld.
22. Aufbau. Hist. gerichte.
Bau.
23.
24.

Expensa Domus de aō. 830.

1. 6 fa. à 15 ß - Spanj. 90.
2. 2 Jt. à 20 ß Mützel 40.
3. 2 Jt. à 10 ß roth 20.
4. 10 Jt. à 6 ß } Tuchlo. 60.
5. 14 Jt. à 5 ß } 70.
280 ß.

zugestellt in Jt. 1.
2. 4. 5 - - 20.
300 ß.

34 fa.

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | Wochentag | Sonnen-Aufg. U. M. | Sonnen-Untg. U. M. | Mondes-Aufg. U. M. | Mondes-Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ☽ Erstes Viertel Mont. d. 1. um 9 Uhr 7 Min. Ab. | 1 | 6 34 | 5 27 | | 1 33 | 12 12 42 |
| ○ Vollmond Dienst. d. 9. um 2 Uhr 36 Min. Ab. | 2 | 6 32 | 5 29 | Der zunehmende Tage | 2 32 | — 12 29 |
| | 3 | 6 31 | 5 30 | | 3 24 | — 12 17 |
| ☾ Letztes Viertel Mittw. d. 17. um 6 Uhr 41 Min. Ab. | 4 | 6 29 | 5 32 | | 4 10 | — 12 4 |
| | 5 | 6 27 | 5 34 | | 4 49 | — 11 50 |
| ● Neumond Mittw. d. 24. um 3 Uhr 49 Min. Ab. | 6 | 6 26 | 5 35 | | 5 23 | — 11 36 |
| | 7 | 6 24 | 5 37 | | 5 54 | — 11 22 |
| ☽ Erstes Viertel Mittw. d. 31. um 8 Uhr 3 Min. Morg. | 8 | 6 22 | 5 39 | | 6 20 | — 11 7 |
| | 9 | 6 21 | 5 40 | 6 A. 0 | 6 45 | — 10 51 |
| Erdferne des ☾ d. 11. Erdnähe des ☾ d. 24. | 10 | 6 19 | 5 42 | 7 3 | | — 10 36 |
| | 11 | 6 17 | 5 44 | 8 3 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 10 20 |
| | 12 | 6 16 | 5 45 | 9 4 | | — 10 4 |
| Der Mond geht durch den Aequator nach Süden d. 10., nach Norden d. 24. Größte nördliche Abweichung des ☾ d. 3. und 30., größte südliche d. 17. | 13 | 6 14 | 5 47 | 10 3 | | — 9 47 |
| | 14 | 6 12 | 5 49 | 11 2 | | — 9 30 |
| | 15 | 6 10 | 5 51 | 12 0 | | — 9 13 |
| | 16 | 6 8 | 5 53 | Morg. | | — 8 56 |
| | 17 | 6 6 | 5 55 | 1 52 | | — 8 38 |
| Die Sonne rückt aus den Fischen in das Zeichen des Widders Sonnt. d. 21. März Morgens 2 Uhr 37 Min. — Frühlings-Anfang. Tag- u. Nachtgleiche. (Erstes Aequinoct u. m.) | 18 | 6 4 | 5 57 | 2 42 | | — 8 21 |
| | 19 | 6 2 | 5 59 | 3 2[illegible] | | — 8 3 |
| | 20 | 6 1 | 6 0 | 4 11 | | — 7 45 |
| | 21 | 6 0 | 6 1 | 4 49 | | — 7 27 |
| | 22 | 5 58 | 6 3 | 5 24 | | — 7 9 |
| | 23 | 5 56 | 6 5 | 5 56 | | — 6 50 |
| Den 9. März Nachmittags eine in America sichtbare totale Mondesfinsterniß. Den 24. März Abends eine in Europa nicht sichtbare Sonnenfinsterniß. | 24 | 5 54 | 6 7 | 6 ● 29 | 6 A. 15 | — 6 32 |
| | 25 | 5 53 | 6 8 | Mond geht bey auf. | 7 36 | — 6 13 |
| | 26 | 5 51 | 6 10 | | 8 54 | — 5 55 |
| | 27 | 5 49 | 6 12 | | 10 9 | — 5 36 |
| | 28 | 5 47 | 6 14 | | 11 20 | — 5 18 |
| | 29 | 5 45 | 6 16 | | Morg. | — 4 59 |
| Die Sonne ist d. 31. März in ihrer mittlern Entfernung von der Erde. Venus hat d. 6. ihre größte heliocentrische nördliche Breite. | 30 | 5 44 | 6 17 | | 1 20 | — 4 41 |
| | 31 | 5 42 | 6 19 | | 2 9 | — 4 22 |

## Kleines Stammbuch der Heiligen oder Erinnerungstafel an die Namenspatrone und Kirchenfeste.

2. März. Simplicius, zu Tivoli in Italien geboren, folgte dem h. Hilarius im J. 468 auf dem römischen Stuhle. Er verordnete, daß von den Opfern der Gläubigen auch den Fremden und den Nothleidenden ein Theil zukommen sollte, und starb im J. Chr. 483.

18. März. Eduard III., König von England, wurde auf Befehl seiner Stiefmutter Elfriede, der er einen Besuch abstattete, auf eine meuchelmörderische Art ermordet, wiewohl er gegen sie die schönsten Merkmahle der Achtung bezeugte, und sogar bey jeder Gelegenheit die zärtlichste Liebe für ihren Sohn, seinen Stiefbr[illegible] äußerte. Dieses geschah im J. 9[illegible]

20. März. Joachim, der Vater der seligsten Jungfrau Maria, wurde von den heil. Vätern Epiphan und Damascen mit dem größten Lobe erhoben. Wenn wir die einzelnen Glieder verdienstvoller Familien ehren, so ist es wohl billig, daß wir Joachim als einem Gliede einer so heil. Familie unsere Verehrung darbringen.

## Witterungs-Angaben.

März. Im März vermehren sich schon die hübschen Tage; aber auch schlechte Zeit, Nässe und Nebel gibt es noch genug, und die Unbeständigkeit der Witterung (der schnelle Wechsel) verstärkt die Schädlichkeit des Monaths, den man unter allen für den lebensgefährlichsten, für den Freund und Bruder des Todesengels ansieht. Im Allgemeinen thauet aller Schnee im März; der Märzenschnee ist von keiner Dauer. Gebirgsgegenden haben aber noch oft sehr kalte Nächte. Gegen Ende des Monaths kann man aber schöne, milde und freundliche Frühlingstage erwarten. Die Winde trocknen äußerst schnell, werden aber auch oft zur Zeit der Tag- und Nachtgleiche (21.) oder auch später zu Sturmwinden (Aequinoctial-Stürme).

Loostag. Maria Verkündigung sieht der gemeine Mann für einen Loostag an. Wenn es an diesem Tage vor Sonnen-Aufgang schön hell ist, soll das ein fruchtbares Jahr und trockene Heuernte bedeuten; wenn es dagegen um diese Zeit viel Wasser auf den Feldern gibt, soll es damit schlecht stehen. Die Marterwoche geht selten ohne Sturm und Regen hin. Wie es im März regnet, so soll es im Brachmonath wieder regnen.

Knauers Wetterprophezeihung. Der März ist vom Anfang bis zum 22. meistens kalt, um diese Zeit aber tritt warmer Regen ein, den 26. heitert es sich aus und wird schön warm, den letzten wieder kühl. — D[illegible] in diesem Monathe beginnende Frühling fängt warm an, im April ist es trocken bis 25., dann wieder kalt; d[illegible] May hat anfänglich raube und kalte Tage, so daß die Früchte in Gefahr stehen.

IV. Aprilis, Ostermond; Keimemonath, Blumenmonath, hat 30 Tage.

| Wochent. | Monatsst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer März. | | Jüdischer VII. Nisan 5590. | Türkisch-arab. X. Schewwal 1245. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Do. | 1 | Hugo B. | Theodor | 20 Joh. Serg. | | 8 | 7 | | 1 |
| Fr. | 2 | Franc. de Paula † | Theodosia. | 21 Jacob B. | | 9 | 8 Ad Tsum. | | 14 |
| Sa. | 3 | Richardus † | Darius | 22 Basilius v. A. | | 10 27 Sabb. | 9 | | 26 |
| 14) Kath. und Prot. Jesus Einritt zu Jerusalem auf einer Eselinn. Matth. 21. 1 — 9. | | | | | | | | | |
| So. | 4 | ☾ 6 Palms. Amb. | Palms. Ambr. | 23 ☾ 8 Nikodem. | | 11 | 10 | | 8 |
| Mo. | 5 | Vincentius F. | Maximilian | 24 Zacharias | | 12 | 11 | | 20 |
| Di. | 6 | Sixtus | Irenäus | 25 Mar. Ver. | | 13 | 12 | | 2 |
| Mi. | 7 | Hermann † | Hegesipp | 26 Gabr. Erz. | | 14 gr. Ost. Sabb | 13 glückl. | | 13 |
| Do. | 8 | Gründ. Albr. ☾ | Gründ. Apoll. | 27 Matrona | | 15 Osterf. | 14 Tage | | 25 |
| Fr. | 9 | Charfr. Dem. | † Charfrey. Bog. | 28 Hiarion | | 16 II. Osterf. | 15 41 Tsum. | | 7 |
| Sa. | 10 | Charf. Ezech. | † Charf. Dan. | 29 Marcus Beicht. | | 17 III. 28 S | 16 | | 19 |
| 15) Kath. und Prot. Von der Auferstehung Christi. Marc. 16, 1 — 7. | | | | | | | | | |
| So. | 11 | ☾ Osterf. Leo P. | Osterf. Ezech. | ~~30 ☾ 9 Joh. Chrm.~~ | | 18 IV. Oster- | 17 | | 1 |
| ~~Mo.~~ | ~~12~~ | ~~Osterm. Jul. P.~~ | ~~Osterm. Eust.~~ | ~~31 Hypatius~~ | | ~~19 V.~~ tag. | 18 | | 13 |
| Di. | 13 | Hermenegild | Patricius | 1 April. Hugo | | 20 VI. | 19 | | 26 |
| Mi. | 14 | Tiburtius M. | Tiburtius | 2 Titus Ap. | | 21 VII. Osterf. | 20 | | 8 |
| Do. | 15 | Anastasia | Olympia | 3 Nicetas | | 22 Ost. Ende | 21 | | 21 |
| Fr. | 16 | Turibius ☾ | Aron | 4 Jos. u. Georg | | 23 | 22 42 Tsum. | | 4 |
| Sa. | 17 | Rudolph | Rudolph | 5 Theodulus | | 24 29 Sabb. | 23 | | 18 |
| 16) Kath. und Prot. Jesus ging durch verschlossene Thüren. Joh. 20, 19 — 31. | | | | | | | | | |
| So. | 18 | ☾ 1 Quasim.* Apol. | Quasim.* Valer | 6 ☾ Osterf. Eutych. | | 25 | 24 | | 2 |
| Mo. | 19 | Crescentin. M. | Hermogen | 7 II. Fest. Georg | | 26 | 25 | | 16 |
| Di. | 20 | Marcellinus | Sulpicius | 8 Thomas | | 27 | 26 | | 1 |
| Mi. | 21 | Anselmus B. | Adolarius | 9 Eupsychius | | 28 | 27 | | 16 |
| Do. | 22 | Caj. u. Sot. | Soterus | 10 Terentius | | 29 | 28 | | 2 |
| Fr. | 23 | Adalbert ● | Albinus | 11 Antipas | | 30 | 29 43 Tsum. | | 17 |
| Sa. | 24 | Georgius M. | Georgius | 12 Basilius Par. | | 1 Jiar 30 | 1 Dsu'lkade | | 2 |
| 17) Kath. und Prot. Vom guten Hirten. Joh. 10, 11 — 16. | | | | | | | | | |
| So. | 25 | ☾ 2 Miser.* Marc. | ☽ Miser.* Marc. | 13 ☾ 2 Artemon | | 2 | 2 | | 16 |
| Mo. | 26 | Cletus P. | Cletus | 14 Mart. B. | | 3 | 3 | | 1 |
| Di. | 27 | Peregrinus | Anastasius | 15 Aristarch | | 4 | 4 | | 14 |
| Mi. | 28 | Vital. u. Fal. | Vitalis | 16 Agape | | 5 | 5 | | 27 |
| Do. | 29 | Petrus M. | Sybilla | 17 Simeon | | 6 | 6 | | 10 |
| Fr. | 30 | Katharin. v. S. | Eutropius | 18 Joh. Decar. | | 7 | 7 44 Tsum. | | 23 |

*) Der 1. Sonntag nach Ostern, Quasimodogeniti, den 18. heißt gewöhnlich der weiße Sonntag. Der 2. Freytag nach Ostern wird Heiligthümertag genannt. Den 25. ist großes Fest in Venedig, nähmlich des Landespatrons. Den 2. ist das Fest der sieben Schmerzen Mariä (schmerzhafter Freytag).

Heu zur Citation.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. 830. | 300. fo. | à 5 | 1500. | |
| 2. 829. | 100. " | à 2½ | 250. | |
| 3. 828. | 100. " | à 6 | 600. | |
| 4. 827. | 200. " | à 7 | 1400. | |
| 5. 822. | 100. " | à 9 | 900. | |
| | 800 fo. | | 4650. fl. | |

Heu.

| | |
|---|---|
| 830. | 250 fo. |
| 829. | 50. |
| 828. | 50. |
| 827. | 100. |
| 822 | 50. |
| | 500 fo. |

**Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne.**

○ Vollmond Donnerst. d. 8. um 8 Uhr 34 Min. Morg.

☾ Letztes Viertel Freyt. d. 16. um 7 Uhr 54 Min. Morg.

● Neumond Freyt. d. 23. um 0 Uhr 32 Min. Morg.

☽ Erstes Viertel Donnerst. d. 29. um 8 Uhr 59 Min. Ab.

Erdferne des ☾ d. 7.
Erdnähe des ☾ d. 21.

Der Mond geht durch den Aequator nach Süden d. 7., nach Norden d. 21. Größte südliche Abweichung des ☾ d. 14., größte nördliche d. 26.

Die Sonne rückt aus dem Widder in das Zeichen des Stiers Dienst. d. 20. April Abends um 3 Uhr 6 Min. — Die Tage werden fortan länger.

Die Venus hat d. 25. April ihren größten Glanz als Morgenstern. Merkur hat den 5. seine größte heliocentrische südliche Breite.

| Mo. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Monds- Aufg. U. M. | Monds- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 5 41 | 6 20 | | 2 49 | 12 4 4 |
| 2 | 5 39 | 6 22 | | 3 27 | — 3 46 |
| 3 | 5 37 | 6 24 | | 3 57 | — 3 28 |
| 4 | 5 35 | 6 26 | | 4 25 | — 3 10 |
| 5 | 5 33 | 6 28 | | 4 50 | — 2 52 |
| 6 | 5 31 | 6 30 | | 5 15 | — 2 34 |
| 7 | 5 30 | 6 31 | | 5 58 | — 2 16 |
| 8 | 5 29 | 6 32 | 6 A 55 | 6 ☽ 3 | — 1 59 |
| 9 | 5 27 | 6 34 | 7 56 | | — 1 42 |
| 10 | 5 25 | 6 36 | 8 56 | | — 1 25 |
| 11 | 5 23 | 6 38 | 9 55 | | — 1 9 |
| 12 | 5 22 | 6 39 | 10 53 | | — 0 52 |
| 13 | 5 20 | 6 41 | 11 46 | | — 0 36 |
| 14 | 5 18 | 6 43 | Morg. | | — 0 21 |
| 15 | 5 17 | 6 44 | 1 24 | | — 0 6 |
| 16 | 5 15 | 6 46 | 2 5 | | 11 59 51 |
| 17 | 5 13 | 6 48 | 2 43 | | — 59 36 |
| 18 | 5 12 | 6 49 | 3 20 | | — 59 22 |
| 19 | 5 10 | 6 51 | 3 53 | | — 59 8 |
| 20 | 5 8 | 6 53 | 4 25 | | — 58 55 |
| 21 | 5 6 | 6 55 | 4 57 | | — 58 42 |
| 22 | 5 4 | 6 57 | 5 31 | | — 58 30 |
| 23 | 5 3 | 6 58 | 6 ● 10 | 7 A 43 | — 58 18 |
| 24 | 5 1 | 7 0 | | 8 59 | — 58 6 |
| 25 | 4 59 | 7 2 | | 10 8 | — 57 55 |
| 26 | 4 58 | 7 3 | | 11 10 | — 57 45 |
| 27 | 4 56 | 7 5 | | Morg. | — 57 34 |
| 28 | 4 54 | 7 7 | | 0 48 | — 57 25 |
| 29 | 4 52 | 7 9 | | 1 25 | — 57 16 |
| 30 | 4 51 | 7 10 | | 1 59 | — 57 7 |

Der zunehmende Tag — Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. — Mond geht Tage auf.

**Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.**

10. April. Ezechiel, der dritte unter den großen Propheten, stammte von priesterlichem Geschlechte ab. In den Wissenschaften der Hebräer wohl unterrichtet, berief ihn der Herr fünf Jahre nach der Abführung in die babylonische Gefangenschaft zum Propheten-Amte, und er mußte seinen mißvergnügten Brüdern predigen.

20. April. Sulpicius, überzeugt von der Wahrheit, daß es besser sey, Gott zu gehorchen, als den Menschen, konnte sich nicht entschließen, den heidnischen Göttern zu opfern. Er opferte dem einzigen wahren Gotte sein Leben, und wurde unter Kaiser Trajan gemartert.

26. April. Cletus u. Marcellin. Cletus folgte dem heil. Linus als Papst nach, regierte die Kirche bey 12 Jahre, und starb im J. 91 als Marterer. Marcellin kam im J. 296, eben zur Zeit der 10. Christenverfolgung, in welcher die Christen auf das Grausamste behandelt wurden, auf den römischen Stuhl. Er wurde gemartert im J. 304.

## Witterungs-Angaben.

April. Der April ist aus allen Monathen der veränderlichste, und wird seit jeher als ein Sinnbild der Veränderlichkeit und Unbeständigkeit angesehen; denn schöne und warme Aprile sind als Seltenheit anzusehen. Die Sonne entwickelt von Tag zu Tag mehr Wärme, und in der Regel folgen auf kühle Morgen mehr oder meniger warme Mittage. Reife in diesem Monathe sind gefährlich, denn, während Hagel, Wassergüsse und andere Witterungsabänderungen nur strichweise Schaden thun, pflegen sich schädliche Reife über ein ganzes Land zu erstrecken. Um die Mitte Aprils herrscht die mittlere Temperatur zwischen größter Hitze und Kälte. Nicht selten sind starke Westwinde.

Loostag. Der 24. Wenn das Korn so groß ist, daß sich ein Rabe darin verbergen kann, so ist es eine Anzeige von einem guten Getreidejahr.

Knauers Wetterprophezeihung. Der April ist kalt und trocken bis zum 15., so daß am 16. und 17. noch Rosmarin und Nelken in den Gärten erfrieren, vom 25. bis zu Ende wird es warm, den 28. donnert es und bleibt warm.

| Wochent. | Monathst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer April. | | Jüdischer VIII. Jiar 5590. | Türkisch-arab. XI. Dsul'kade 1245. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Sa. | 1 | Phi. u. Jac. | Phil. u. Jac. | 19 | Joh. Höhle | 8 31 Sabb. | 8 | | 5 |
| | | 18) Kath. und Prot. Ueber eine kleine Zeit werdet ihr mich nicht sehen. Joh. 16, 16 — 22. | | | | | | | |
| So. | 2 | ☾ 3 Jub. Athan. | 2 Jubil. Sigm. | 20 | ☾ 3 Theod. Tr. | 9 | 9 | | 17 |
| Mo. | 3 | Kreuz-Erfind. | Kreuz-Erfind | 21 | Januarius | 10 | 10 | | 29 |
| Di. | 4 | Florianus | Florian | 22 | Paralytus | 11 | 11 | | 10 |
| Mi. | 5 | Gotthard | Gotthard | 23 | Georg M. | 12 | 12 | | 22 |
| Do. | 6 | Joh. v. Dam. | Dietrich | 24 | Sabb. Str. | 13 | 13 glückliche | | 4 |
| Fr. | 7 | Stanislaus B. | Gottfried | 25 | Marcus Ev. | 14 | 14 45 Tsum. | | 16 |
| Sa. | 8 | Mich. Ersch. ☺ | Stanislaus | 26 | Basilius M. | 15 32 Sabb. | 15 Tage. | | 28 |
| | | 19) Kath. und Prot. Ich gehe hin zu dem, der mich gesandt hat. Joh. 6, 5 — 14. | | | | | | | |
| So. | 9 | ☾ 4 Cant Greg. | 3 Cantate Hiob | 27 | ☾ 4 Sim. M. | 16 | 16 | | 10 |
| Mo. | 10 | Antoninus | Victorie | 8 | Jason | 17 | 17 | | 23 |
| Di. | 11 | Mamert. | Adolph | 29 | 9 Martyrer | 18 Schülerfest | 18 | | 5 |
| Mi. | 12 | Pancratius | Pancratius | 30 | Jacob Ap. | 19 | 19 | | 18 |
| Do. | 13 | Petr. N. | Servatius | 1 | May. Jerem. | 20 | 20 | | 1 |
| Fr. | 14 | Bonifacius | Christine | 2 | Athanas. Alex. | 21 | 21 46 Tsum. | | 14 |
| Sa. | 15 | Sophie ☾ | Sophie | 3 | Timotheus M. | 22 33 Sabb. | 22 | | 28 |
| | | 20) Kath. und Prot. Bittet so werdet ihr empfangen. Joh. 16, 23 — 30. | | | | | | | |
| So. | 16 | ☾ 5 Rog. Joh. N. | 4 Rog. Peregr. | 4 | ☾ 5 Pelagia M. | 23 | 23 | | 12 |
| Mo. | 17 | Ubaldus | Torpetus | 5 | Irene | 24 | 24 | | 26 |
| Di. | 18 | Bittag Venant. M. | Liborius | 6 | Hiob | 25 | 25 | | 10 |
| Mi. | 19 | Petr. Cel. | Potentiana | 7 | † Erschein. | 26 | 26 | | 25 |
| Do. | 20 | Chr. Himmelf. | Chr. Himmelf | 8 | Joh. The. | 27 | 27 | | 10 |
| Fr. | 21 | Felix Cant. | Prudens | 9 | Isaias Pr. | 28 | 28 47 Tsum. | | 25 |
| Sa. | 22 | Julia J. ● | Helena | 10 | Simon Sel. | 29 34 Sabb. | 29 | | 10 |
| | | 21) Kath. und Prot. Wenn der Tröster kommt. Joh. 15, 26 — 27. | | | | | | | |
| So. | 23 | ☾ 6 Exaudi Desid. | 5 Exaud. Desid. | 11 | ☾ 6 Mocius | 1 Siban | 30 | | 25 |
| Mo. | 24 | Johanna | Susanna | 12 | Epiphanius | 2 | 1 Dsul'hedsche | | 9 |
| Di. | 25 | Urbanus | Urbanus | 13 | 318 Väter | 3 Vorbe- | 2 | | 23 |
| Mi. | 26 | Philipp v. Ner. | Beda | 14 | Isidorus | 4 reitungs- | 3 | | 6 |
| Do. | 27 | Johann Paul | Lucas | 15 | Chr. Himmelf. | 5 Tage. | 4 | | 19 |
| Fr. | 28 | Wilhelm | Wilhelm | 16 | Theodor | 6 Pfingstf. | 5 48 Tsum. | | 1 |
| Sa. | 29 | Maximin. † ☽ | Manitius | 17 | Andronicus | 7 II. Pfingstf. | 6 | | 13 |
| | | 22) Kath. u. Prot. Wer mich liebt, wird mein Wort halten. Joh. 14, 23 — 31. | | | | | | | |
| So. | 30 | ☾ Pfingstf. Ferd. | Pfingstf. Wig. | 18 | ☾ 7 Theodotus | 8 | 7 | | 25 |
| Mo. | 31 | Pfingstm. Angela | Pfingstm. Petr. | 19 | Patricius | 9 | 8 Offenbar | | 7 |

*) Der 5. Sonntag nach Ostern heißt auch Bethsonntag, und die Woche darauf die Kreuz- oder Bittwoche. Den 16. May ist großer Festtag in Böhmen, das Fest des heil. Johann von Nepomuk; am 7. in Galizien und Polen das Fest des h. Stanislaus.

| uf | |
|---|---|
| € | Gr. |
| 5 | |
| 17 | |
| 29 | |
| 10 | |
| 22 | |
| 4 | |
| 16 | |
| 28 | |
| 10 | |
| 23 | |
| 5 | |
| 18 | |
| 1 | |
| 14 | |
| 28 | |
| 12 | |
| 26 | |
| 10 | |
| 25 | |
| 10 | |
| 25 | |
| 10 | |
| 25 | |
| 9 | |
| 23 | |
| 6 | |
| 19 | |
| 1 | |
| 13 | |
| 25 | |
| 7 | |
| o che | |
| po | |

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | M. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. | Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☺ Vollmond Samst. d. 8. um 1 U. 8 Min. Morg. | 1 | 4 50 | 7 11 | | 2 30 | 11 56 59 | 11. May. Mamertius, Bischof von Vienne in Frankreich, von den verschiedenen Drangsalen und Geiseln, welche diese Stadt betrafen, gerührt, nahm seine Zuflucht zum Gebethe. Er hielt 3 Bittgänge vor dem Feste Christi Himmelfahrt, welcher Gebrauch nachher in der ganzen Christenheit eingeführt wurde und noch immer beobachtet wird. Er starb im J. 475 oder 476. |
| ☾ Letztes Viertel Samst. d. 15. um 5 U. 23 Min. Ab. | 2 | 4 48 | 7 13 | Der zunehmende Mond geht bey Tage | 2 56 | — 56 51 | |
| ● Neumond Samst. d. 22. um 8 U. 18 Min. Morg. | 3 | 4 47 | 7 14 | | 3 20 | — 56 44 | |
| ☽ Erstes Viertel Samst. d. 29. um 11 U. 54 Min. Vormittags. | 4 | 4 46 | 7 15 | | 3 45 | — 56 38 | |
| | 5 | 4 45 | 7 16 | | 4 9 | — 56 32 | |
| | 6 | 4 43 | 7 18 | | 4 37 | — 56 26 | |
| | 7 | 4 42 | 7 19 | | 5 4 | — 56 21 | |
| | 8 | 4 41 | 7 20 | 7 A 50 | 5 36 | — 56 17 | |
| | 9 | 4 39 | 7 22 | 8 48 | | — 56 13 | |
| | 10 | 4 37 | 7 24 | 9 48 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 56 10 | |
| | 11 | 4 36 | 7 25 | 10 36 | | — 56 8 | |
| Erdferne des ☾ den 5. Erdnähe des ☾ den 20. | 12 | 4 34 | 7 27 | 11 23 | | — 56 6 | 12. May. Pancratius, aus Phrygien von edlen Eltern, kam im 14. Jahre seines Alters nach Rom, und wurde im christlichen Glauben unterrichtet und getauft. Aufgefordert, den Göttern Weihrauch zu streuen, widerstand er mit männlichem Muthe, und ging durch den Tod der Blutzeugen in den ewigen Frühling im J. 304. |
| | 13 | 4 33 | 7 28 | Morg. | | — 56 4 | |
| | 14 | 4 31 | 7 30 | 0 44 | | — 56 4 | |
| | 15 | 4 30 | 7 31 | 1 18 | | — 56 3 | |
| Der Mond geht durch den Aequator nach Süden d. 4., nach Norden d. 18., und wieder nach Süden d. 31. Größte südliche Abweichung des ☾ d. 11., größte nördliche d. 24. | 16 | 4 29 | 7 32 | 1 52 | | — 56 4 | |
| | 17 | 4 28 | 7 33 | 2 24 | | — 56 5 | |
| | 18 | 4 27 | 7 34 | 2 55 | | — 56 6 | |
| | 19 | 4 25 | 7 36 | 3 27 | | — 56 8 | |
| | 20 | 4 24 | 7 37 | 4 3 | | — 56 11 | |
| | 21 | 4 23 | 7 38 | 4 43 | | — 56 14 | |
| | 22 | 4 22 | 7 39 | 5 ● 30 | 7 A 46 | — 56 18 | |
| | 23 | 4 22 | 7 39 | | 8 53 | — 56 23 | 23. May. Desiderius, Bischof von Langres in Frankreich, war ein wahrer Hirt seiner Heerde, die er so innigst liebte, daß er, mit zärtlichster Theilnahme an jeden ihrer Leiden, sich zu dem Könige der Vandalen begab, um für sie zu bitten, von diesem aber zum Tode verurtheilt wurde, im J. 411. |
| Die Sonne rückt aus dem Stier in das Zeichen der Zwillinge Freytag d. 21. May Abends 3 Uhr 24 Min. — Die Tage werden fortan länger. | 24 | 4 21 | 7 41 | Der Mond geht auf. | 9 53 | — 56 27 | |
| | 25 | 4 20 | 7 41 | | 10 42 | — 56 33 | |
| | 26 | 4 19 | 7 42 | | 11 25 | — 56 39 | |
| | 27 | 4 18 | 7 43 | | Morg. | — 56 45 | |
| | 28 | 4 17 | 7 44 | | 0 31 | — 56 52 | |
| | 29 | 4 16 | 7 45 | | 0 59 | — 56 59 | |
| Merkur hat d. 9. seine größte heliocentrische nördliche Breite. | 30 | 4 15 | 7 45 | | 1 25 | — 57 7 | |
| | 31 | 4 14 | 7 46 | | 1 50 | — 57 15 | |

## Witterungs-Angaben.

May. Durch freundliche, schöne und heitere Tage zeichnet sich dieser Monath vor allen übrigen aus; doch ist er oft trüglich und es hat schönere Aprile gegeben, als der May war. Oft wechseln schnelle Kühle und schnelle Hitze mit einander. Ein kalter May ist sehr schädlich, ein kühler May aber ist der Wunsch aller Landwirthe. Bis zum 13. kann man noch keine bestimmte warme Witterung erwarten, aber nach diesem Tage fällt in der Regel kein Frost mehr ein, welcher dem Weinstocke schaden könnte. Am 15. ist die Gränze des Frühlings und Vorsommers, und zwischen dem 20. April und 21. Junius sind in unserm Klima die schönsten Tage des Jahrs.

Als Loostag sieht der gemeine Mann den Walburgistag oder 1. May (an welchem in diesem Kalender Philippi und Jacobi gesetzt ist) an. Regnet es an diesem Tage, so hofft man ein fruchtbares Jahr. Ist es um Urbani (d. 25.) gut Wetter, so kommt ein gutes Weinjahr.

Knauers Wetterprophezeihung. Im May dauert das schöne Wetter noch bis 6., wo es bey Tage windig und rauh wird, vom 8. bis 18. wird es wieder warm und dabey so trocken, daß die Pflanzen am Wachsthum gehindert sind, am 25. tritt ein guter warmer Regen ein bis 29., der bis zu Ende wieder alles belebt und fruchtbar macht.

| Wochent. | Monathst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer May. | | Jüdischer IX. Sivan 5590. | Türkisch-arab. XII. Dsu'lhedsche 1245. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Di. | 1 | Juventius | Nikodemus, | 20 | Thalaläus | 10 | 9 Ostern | | 19 |
| Mi. | 2 | Quat. Erasm. † | Marcellin | 21 | Konst. Hel. | 11 | 10 kl. Beir. | | 1 |
| Do. | 3 | Clotilde K. | Erasmus | 22 | Basilius | 12 | 11 | | 13 |
| Fr. | 4 | Quirinus † | Carpasius | 23 | Michael B. | 13 | 12 49 Tsum. | | 25 |
| Sa. | 5 | Bonif. M. † | Bonifacius | 24 | Simeon | 14 36 Sabb. | 13 glück- | | 7 |

23) Kath. Mir ist alle Gewalt gegeben. Matth. 28, 18 — 20. Prot. Joseph und Nikodemus Joh. 3.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| So. | 6 | C 1 Dreyf. ☉ | Trinit. Benign. | 25 | E Pfingstf. Hpt. J. | 15 | 14 liche | | 19 |
| Mo. | 7 | Lykarion | Lucretia | 26 | II. Pfingstf. Carp. | 16 | 15 Tage | | 2 |
| Di. | 8 | Medard. B. | Medardus | 27 | Joh. P. | 17 | 16 | | 15 |
| Mi. | 9 | Prim. u. Felician | Primus | 28 | Nicetas | 18 | 17 | | 28 |
| Do. | 10 | Fronleichn. Mar. | Onuphrius | 29 | Theodosia | 19 | 18 | | 11 |
| Fr. | 11 | Barnabas Ap. | Barnabas | 30 | Isaak | 20 | 19 50 Tsum. | | 25 |
| Sa. | 12 | Joh. Fac. | Basilides | 31 | Hermias | 21 37 Sabb. | 20 | | 8 |

24) Kath. Vom großen Abendmahl. Luc. 14, 16 — 24. Prot. Vom Lazarus und dem reichen Manne. Luc. 10.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| So. | 13 | C 2 r. Pf. Ant. ☾ | 1 n. Trin. Tob. | 1 | E 1 Junius | 22 | 21 | | 22 |
| Mo. | 14 | Basilius B. | Elisäus | 2 | Nicephorus | 23 | 22 | | 6 |
| Di. | 15 | Vitus M. | Veit | 3 | Lucillian | 24 | 23 | | 20 |
| Mi. | 16 | Franz. Reg. | Rolandus | 4 | Metrophanes | 25 | 24 | | 5 |
| Do. | 17 | Rainerus | Volkmar | 5 | Dorotheus | 26 | 25 | | 19 |
| Fr. | 18 | Marc. Marcellian | Arnolph | 6 | Norbert | 27 | 26 51 Tsum. | | 4 |
| Sa. | 19 | Juliana F. | Gervasius | 7 | Theodatus | 28 38 Sabb. | 27 | | 19 |

25) Kath. Vom verlornen Schafe. Luc. 15, 1 — 10. Prot. Vom großen Abendmahle. Luc. 14.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| So. | 20 | C 3 n. Pf. Silv. ● | 2 n. Tr. Silver. | 8 | E 2 Theodorus | 29 | 28 | | 3 |
| Mo. | 21 | Aloys v. Gonz. | Albanus | 9 | Cyrill. Alex. | 30 | 29 | | 17 |
| Di. | 22 | Achatius | Achatius | 10 | Timotheus | 1 Tamuz | 30 | | 1 |
| Mi. | 23 | Zeno M. | Basilius | 11 | Bartholom. | 2 | 1 Muharrem | | 14 |
| Do. | 24 | Joh. Baptist | Joh. d. Täuf. | 12 | Onuphrius | 3 | 2 Neuj. 1246. | | 27 |
| Fr. | 25 | Prosper | Eulogius | 13 | Aquilina M. | 4 | 3 Nekiab 1 Tf. | | 9 |
| Sa. | 26 | Joh. u Paul M. | Jeremias | 14 | Elisäus Pr. | 5 39 Sabb. | 4 | | 21 |

26) Kath. Vom großen Fischzug Petri. Luc. 5, 1 — 11. Prot. Vom verlornen Schafe. Luc. 15.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| So. | 27 | C 4 n. Pf. Ladisl. | 3 n. Tr. 7 Schläf. | 15 | E 3 Amos Pr. | 6 | 5 | | 3 |
| Mo. | 28 | Leo II. P. ☽ † | Leo | 16 | Tychon | 7 | 6 | | 15 |
| Di. | 29 | Petr. u. Paul. | Petr. u. Paul. | 17 | Emanuel M. | 8 | 7 | | 27 |
| Mi. | 30 | Pauli Ged. | Pauli Ged. | 18 | Leontius | 9 | 8 | | 9 |

*) Den 13. ist im Venezianischen das Fest des heil. Anton von Padua.

r.

9
1
3
25
7

19
2
15
28
11
25
8

22
6
20
5
19
4
19

3
17
1
14
27
9
21

3
15
27
9

## Juny. Der Tag nimmt zu von 15 St. 32 Min. bis 15 St. 48 Min.

**Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne.**

☽ Vollmond Sonnt. d. 6. um 3 Uhr 24 Min. Ab.
☾ Letztes Viertel Sonnt. d. 13. um 11 Uhr 55 Min. Ab.
● Neumond Sonnt. d. 20. um 4 Uhr 8 Min. Ab.
☽ Erstes Viertel Mont. d. 28. um 4 Uhr 21 Min. Morg.

Erdferne des ☾ d. 1.
Erdnähe des ☾ d. 17.
Erdferne des ☾ den 29.

Der Mond geht durch den Aequator nach Norden d. 14., nach Süden d. 28. Größte südliche Abweichung des ☾ d. 7., größte nördliche d. 20.

Die Sonne rückt aus den Zwillingen in das Zeichen des Krebses Montag d. 21. Junius Ab. um 11 Uhr 55 Min. — Sommer-Sonnenwende.

Venus hat d. 27. ihre größte südliche heliocentrische Breite.

| M. T. | Sonnen-Aufg. U. M. | Sonnen-Untg. U. M. | Mondes-Aufg. U. M. | Mondes-Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 4 14 | 7 46 | Der Mond geht bey Tage auf. | 2 14 | 11 57 23 |
| 2 | 4 13 | 7 47 | | 2 40 | — 57 32 |
| 3 | 4 12 | 7 48 | | 3 8 | — 57 41 |
| 4 | 4 11 | 7 49 | | 3 41 | — 57 51 |
| 5 | 4 11 | 7 49 | | 4 16 | — 58 1 |
| 6 | 4 10 | 7 50 | 7 A 37 | 4 ☽ 58 | — 58 11 |
| 7 | 4 9 | 7 51 | 8 33 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 58 22 |
| 8 | 4 8 | 7 52 | 9 23 | | — 58 33 |
| 9 | 4 8 | 7 52 | 10 8 | | — 58 44 |
| 10 | 4 7 | 7 53 | 10 46 | | — 58 56 |
| 11 | 4 7 | 7 53 | 11 23 | | — 59 8 |
| 12 | 4 6 | 7 54 | 11 55 | | — 59 20 |
| 13 | 4 6 | 7 54 | Morg. | | — 59 32 |
| 14 | 4 6 | 7 54 | 0 57 | | — 59 44 |
| 15 | 4 5 | 7 55 | 1 27 | | — 59 57 |
| 16 | 4 5 | 7 55 | 2 2 | | 12 0 10 |
| 17 | 4 5 | 7 55 | 2 38 | | — 0 22 |
| 18 | 4 4 | 7 56 | 3 21 | | — 0 35 |
| 19 | 4 4 | 7 56 | 4 9 | | — 0 48 |
| 20 | 4 4 | 7 56 | 5 ● 4 | 7 A 37 | — 1 1 |
| 21 | 4 4 | 7 56 | Der Mond geht bey Tage auf. | 8 33 | — 1 15 |
| 22 | 4 3 | 7 57 | | 9 19 | — 1 28 |
| 23 | 4 4 | 7 56 | | 9 57 | — 1 41 |
| 24 | 4 4 | 7 56 | | 10 32 | — 1 54 |
| 25 | 4 4 | 7 56 | | 11 1 | — 2 6 |
| 26 | 4 5 | 7 55 | | 11 27 | — 2 19 |
| 27 | 4 5 | 7 55 | | 11 52 | — 2 32 |
| 28 | 4 5 | 7 55 | | Morg. | — 2 44 |
| 29 | 4 6 | 7 54 | | 0 43 | — 2 56 |
| 30 | 4 6 | 7 54 | | 1 10 | — 3 8 |

**Kleines Stammbuch der Heiligen oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.**

12. Junius. Johannes v. Facundo, von Geburt ein Spanier, trat in den strengern Orden des h. Augustin. Er lehrte durch Worte und Beyspiele. Aber die aufgebrachten Gemüther versöhnen, Feindschaften tilgen, und seinen eigenen Beleidigern verzeihen und noch Gutes thun, zeichnete ihn vor Anderen aus. Er starb im Jahre 1479.

14. Junius. Basilius, Erzbischof von Cäsarea, mit dem Beynahmen der Große, war mit seinem regen Eifer für Wahrheit und Gerechtigkeit, ein großes Licht für die Kirche. Nach vielen Leiden und Verfolgungen hat er sein Ziel, nach dem er gerungen, — den Himmel — erreicht ums J. 379.

15. Junius. Marcus und Marcellianus, zwey Brüder aus einer der vornehmsten Familien Roms. Von der Wahrheit der christlichen Religion fest überzeugt, konnten sie weder durch Bitten und Weinen ihrer Gemahlinnen, noch durch den Anblick ihrer unmündigen Kinder zum Abfalle bewogen werden. Sie starben heldenmüthig den Martertod im 3. Jahrhunderte.

### Witterungs-Angaben.

Junius. Noch ein herrlicher Monath, von dessen Witterung die Fruchtbarkeit und der Segen des ganzen Jahres abhängt. Vom 8. Junius bis 15. Aug. ist der hohe Sommer. Alles ist im schönsten Flor, das Getreide reift der Ernte entgegen. Die Wärme wird immer stärker und verursacht häufige Donnerwetter, welche die Luft wieder abkühlen und angenehme Regen herbeyführen. Der Junius wirft aber im Durchschnitte auch die meisten Hagel. Gegen Ende des Monaths zu, sind gemeiniglich große Wetter und Wassergüsse, und „wenn man vor Johannis um Regen bittet, so kommt er nach Johannis ungebethen." Ein kalter und allzunasser Junius ist allen Gewächsen hinderlich, dem blühenden Weinstocke aber höchst schädlich.

Als Loostage bezeichnet der gemeine Mann (der gebildete wohl nicht?) folgende: Wenn es am Medarditag (den 8.) regnet, so regnet es 40 Tage. Wenn es um Vitus (den 15.) regnet, bedeutet es ein fruchtbares Jahr.

Knauers Wetterprophezeihung. Der Junius fängt schön an, hat am 9. und 10. Regen, darauf des Morgens Nebel bis 13., hernach fällt Regenwetter ein bis 23., worauf es wieder schön wird bis zu Ende. — Der in diesem Monathe beginnende Sommer hat ziemlich viel Regen, von welchem die Erde doch nicht recht erquickt wird. Das Heu und Getreide kann wohl eingebracht werden, doch darf man sich nicht säumen.

## VII. Julius, Heumond, Wärmemonath, hat 31 Tage.

| Wochent. | Monatst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer Juny. | | Jüdischer X. Tamuz 5590. | Türkisch-arab. I. Muharrem 1246. | | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Do. | 1 | Theodor | Theodor | 19 | Juda Br. C. | 10 | 9 | | ☾ | 21 |
| Fr. | 2 | Mar. Heims. | Mar. Heims. | 20 | Methodius | 11 | 10 | 2 Tsum. | ☾ | 3 |
| Sa. | 3 | Eulogius | Cornelius | 21 | Julianus M. | 12 40 Sabb. | 11 | | ☾ | 16 |
| 27) Kath. Von der Pharisäer Gerechtigkeit. Matth. 5, 20 — 24. Prot. Seyd barmherzig. Luc. 6. | | | | | | | | | | |
| So. | 4 | C 5 n. Pf. Ulrich | 4 n. Tr. Ulrich | 22 | E 4 Eusebius B. | 13 | 12 | | ☾ | 28 |
| Mo. | 5 | Domit. M. | Demetrius | 23 | Agrippina | 14 | 13 | glück- | ☾ | 11 |
| Di. | 6 | Isaias Pr. ☺ | Esaias | 24 | Geburt J. | 15 | 14 | liche | ☾ | 24 |
| Mi. | 7 | Wilibaldus | Wilibald | 25 | Febronia | 16 | 15 | Tage. | ☾ | 8 |
| Do. | 8 | Kilianus | Kilian | 26 | Dav. v. Thess. | 17 Fast. Tem- | 16 | | ☾ | 21 |
| Fr. | 9 | Briccius | Louise | 27 | Samson | 18 pel Erober. | 17 | 3 Tsum | ☾ | 5 |
| Sa. | 10 | Amalia | 7 Brüder | 28 | Cyrill u. Joh. | 19 41 Sabb | 18 | | ☾ | 19 |
| 28) Kath. Jesus speiset 4000 Mann. Marc. 8, 1 — 9. Vom Fischzuge Petri. Luc. 5. | | | | | | | | | | |
| So. | 11 | C 6 n. Pf. Pius | 5 n. Tr. Pius | 29 | E 5 Petr. u. Paul | 20 | 19 | | ☾ | 3 |
| Mo. | 12 | Heinrich | Heinrich | 30 | 12 Apostel | 21 | 20 | | ☾ | 17 |
| Di. | 13 | Margaretha ☾ | Margareth | 1 | Julius Kosm. D. | 22 | 21 | | ☾ | 1 |
| Mi. | 14 | Bonaventura | Carolina | 2 | Kleid Mar. | 23 | 22 | | ☾ | 15 |
| Do. | 15 | Apostel-Theil. | Apost. Scheid. | 3 | Hyacinth | 24 | 23 | | ☾ | 0 |
| Fr. | 16 | Scapulirfest | Ruth | 4 | Andreas | 25 | 24 | 4 Tsum. | ☾ | 14 |
| Sa. | 17 | Alexius | Alexius | 5 | Athanasius | 26 42 Sabb | 25 | | ☾ | 28 |
| 29) Kath. Von den falschen Propheten. Matth. 7, 15 — 27. Prot. Von der Pharisäer Gerechtigkeit. Matth. 5. | | | | | | | | | | |
| So. | 18 | C 7 n. Pf. Friedrich | 6 n. Tr. Arnold | 6 | E 6 Sisoas M. | 27 | 26 | | ☾ | 12 |
| Mo. | 19 | Arsenius | Rufina | 7 | Thomas v. Aq. | 28 | 27 | | ☾ | 26 |
| Di. | 20 | Margaritha ● | Elias | 8 | Prokopius | 29 | 28 | | ☾ | 9 |
| Mi. | 21 | Daniel Pr. | Praxedes | 9 | Pankratius | 1 Abb. | 29 | | ☾ | 22 |
| Do. | 22 | Maria Magd. | Mar. Magd. | 10 | 45 Martyrer | 2 | 1 | Safer | ☾ | 5 |
| Fr. | 23 | Liborius B. | Apollinarius | 11 | Euthymia | 3 | 2 | 5 Tsum. | ☾ | 17 |
| Sa. | 24 | Christina | Christina | 12 | Proclus | 4 43 Sabb. | 3 | | ☾ | 29 |
| 30) Kath. Vom ungerechten Haushälter. Luc. 16, 1 — 9. Prot. Jesus speiset 4000 Mann. Marc. 8. | | | | | | | | | | |
| So. | 25 | C 8 n. Pf. Jacob | 7 n. Tr. Jacob | 13 | E 7 Gabriel Erz. | 5 | 4 | | ☾ | 11 |
| Mo. | 26 | Anna | Anna | 14 | Aquila Ap. | 6 | 5 | | ☾ | 23 |
| Di. | 27 | Pantaleon ☽ | Pantaleon | 15 | Quiricus Jul. | 7 | 6 | | ☾ | 5 |
| Mi. | 28 | Innocentius | Innocentius | 16 | Athenogenes | 8 | 7 | | ☾ | 17 |
| Do. | 29 | Martha | Beatrix | 17 | Marina M. | 9 Fast. Temp. | 8 | | ☾ | 29 |
| Fr. | 30 | Abdon u. Sen. | Abdon | 18 | Hyacinthus | 10 Verbrenn. | 9 | 6 Tsum. | ☾ | 11 |
| Sa. | 31 | Ignaz v. Lojola | Germanus | 19 | Macr. u. Dius | 11 44 Sabb. | 10 | | ☾ | 24 |

*) Den 16. Julius ist das ehemahlige Scapulirfest.

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | M. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit m wahren Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ☽ Vollmond Dienstag den 6. um 3 Uhr 30 Min. Morg. | 1 | 4 6 | 7 54 | | 1 40 | 12 3 20 |
| ☾ Letztes Viertel Dienstag den 13. um 4 Uhr 42 Min. Morg. | 2 | 4 7 | 7 53 | | 2 14 | — 3 32 |
| | 3 | 4 7 | 7 53 | | 2 54 | — 3 43 |
| | 4 | 4 8 | 7 52 | | 3 40 | — 3 54 |
| ● Neumond Dienstag den 20. um 1 Uhr 19 Min. Morg. | 5 | 4 8 | 7 52 | | 4 34 | — 4 5 |
| | 6 | 4 9 | 7 51 | 8 A. 6 | 5 ☾ 34 | — 4 15 |
| ☽ Erstes Viertel Dienstag d. 27. um 9 Uhr 41 Min. Ab. | 7 | 4 10 | 7 50 | 8 48 | Der abnehmende Mond geht Tage unter. | — 4 25 |
| | 8 | 4 10 | 7 50 | 9 26 | | — 4 34 |
| | 9 | 4 11 | 7 49 | 9 59 | | — 4 44 |
| Erdnähe des ☾ den 13. | 10 | 4 11 | 7 49 | 10 31 | | — 4 52 |
| Erdferne des ☾ den 26. | 11 | 4 12 | 7 48 | 11 1 | | — 5 1 |
| | 12 | 4 13 | 7 47 | 11 30 | | — 5 9 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Norden den 11., nach Süden den 25. Größte südliche Abweichung des ☾ den 5., größte nördliche den 18. | 13 | 4 14 | 7 46 | Morg. | | — 5 16 |
| | 14 | 4 15 | 7 45 | 0 38 | | — 5 24 |
| | 15 | 4 16 | 7 44 | 1 17 | | — 5 30 |
| | 16 | 4 17 | 7 43 | 2 2 | | — 5 37 |
| | 17 | 4 18 | 7 42 | 2 52 | | — 5 42 |
| | 18 | 4 19 | 7 41 | 3 50 | | — 5 47 |
| | 19 | 4 20 | 7 40 | 4 53 | | — 5 52 |
| Die Sonne rückt aus dem Krebsen in das Zeichen des Löwen Freytag den 23. Julius Morgens um 10 Uhr 43 Min. — Die Tage sind im Abnehmen. | 20 | 4 21 | 7 39 | 5 ● 59 | 7 A. 54 | — 5 56 |
| | 21 | 4 22 | 7 38 | Der zunehmende Mond geht Tage auf. | 8 31 | — 6 0 |
| | 22 | 4 23 | 7 37 | | 9 1 | — 6 3 |
| | 23 | 4 24 | 7 36 | | 9 31 | — 6 5 |
| | 24 | 4 25 | 7 35 | | 9 56 | — 6 7 |
| | 25 | 4 26 | 7 34 | | 10 19 | — 6 9 |
| Merkur hat d. 2., Mars den 21. seine größte heliocentrische südliche Breite. | 26 | 4 27 | 7 33 | | 10 44 | — 6 9 |
| | 27 | 4 28 | 7 32 | | 11 13 | — 6 9 |
| | 28 | 4 29 | 7 31 | | 11 41 | — 6 9 |
| | 29 | 4 30 | 7 30 | | Morg. | — 6 8 |
| Am 1. ist die Sonne in ihrer größten Entfernung von der Erde. | 30 | 4 31 | 7 29 | | 0 49 | — 6 6 |
| | 31 | 4 33 | 7 27 | | 1 32 | — 6 4 |

## Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.

2. Julius. Heimsuchung Mariä. Maria, vom Erzengel Gabriel unterrichtet, daß Elisabeth, ihre Base, schon seit 6 Monathen gesegnet sey, eilte über das Gebirge in die Stadt Hebron, um mit einander vereint die Gefühle der Dankbarkeit dem Allerhöchsten darzubringen. Sie kehrte nach 5 Monathen nach Nazareth zurück.

6. Julius. Isaias, der Sohn Amos, wurde im Jahr 769 vor Christi Geburt zum Propheten-Amte berufen. Wegen der Deutlichkeit, mit welcher er den Messias 700 Jahre vor seiner Ankunft bezeichnete, nennt ihn der heil. Hieronymus den Evangelisten des alten Testamentes. Er war 43 Jahre Führer, Belehrer des Volkes und der Könige in Juda.

17. Julius. Alexius, der einzige Sohn eines reichen römischen Senators, wählte freywillige Armuth und die Keuschheit. Deßwegen entwich er aus dem väterlichen Hause, in das er späterhin als fremder Bettler zurückkehrte, und dort unerkannt lebte. Er starb zu Anfang des 5. Jahrhunderts.

## Witterungs-Angaben.

Julius. Abermahls ein heißer Monath, in dem es sehr oft Gewitter und Hagel gibt. Zu Anfang des Monaths fürchtet man die Schlossen am meisten, da das Getreide eben reif wird. Am 15. ist die wahre Mitte des hohen Sommers, und am 23. nach Magdalena beginnen die Hundstage. Gegen Ende des Monaths, manchmahl wohl auch schon zu Anfang des Monaths, haben wir die heißesten und schwülsten Tage des Jahrs, wie die Thermometer gezeigt haben. Um Margaretha den 13. und Jacobi den 25. pflegen schwere Gewitter zu kommen, welche die Luft abkühlen und den Staub löschen. Der auf den Hochgebirgen in Menge schmelzende Schnee schwellet die Flüsse und setzt tief gelegene Gegenden in große Wassersgefahr, wenn anders im Winter viel Schnee gefallen ist.

Loostage. Wenn es an Maria Heimsuchung regnet, leiden die Früchte, und regnet 10 Tage. Regnet es am Margarethentag, so fallen die wälschen Nüsse ab, die Haselnüsse aber werden madig; regnet es um Jacobi, so verderben die Eicheln. Regen am Margarethentage zieht 14 regnerische Tage nach sich.

Knauers Wetterprophezeihung. Der Julius fängt mit großer Hitze an, den 5. fällt Regenwetter ein, welches bis zum 21. anhält; darauf wird es schön warm bis zu Ende.

## VIII. August, Erntemond, Hitzemonath, hat 31 Tage.

| Wochent. | Monatst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer Julius. | | Jüdischer XI. Abh. 5590. | Türkisch-arab. II. Safer 1246. | | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31) Kath. Jesus weint über Jerusalem. Luc. 19, 41 — 47. Prot. Von den falschen Propheten. Matth. 7. | | | | | | | | | | |
| So. | 1 | C 9 n Pf. Petri K. | 8 n Tr. Pet. K. | 20 | E 8 Elias Pr. | 12 | 11 | | | 6 |
| Mo. | 2 | Portiuncula | Gustav | 21 | Simeon | 13 | 12 | | | 20 |
| Di. | 3 | Steph. Erf. | August | 22 | Maria Magd. | 14 | 13 | glück- | | 3 |
| Mi. | 4 | Dominicus ☉ | Dominicus | 23 | Trophimus | 15 Freudentag | 14 | liche | | 17 |
| Do | 5 | Maria Schnee | Oswald | 24 | Christina | 16 | 15 | Tage | | 1 |
| Fr. | 6 | Verklär. Chr. | Verklär. Chr. | 25 | Anna Tod | 17 | 16 | 7 Tsum. | | 15 |
| Sa. | 7 | Cajetanus | Donatus | 26 | Hermolaus | 18 45 Sabb. | 17 | | | 29 |
| 32) Kath. Vom Pharisäer und Zöllner. Luc. 18, 9 — 14. Prot. Vom ungerechten Haushälter. Luc. 16. | | | | | | | | | | |
| So. | 8 | C 10 n Pf. Cyr. | 9 n Tr. Cyriacus | 27 | E 9 Pantelemon | 19 | 18 | | | 14 |
| Mo. | 9 | Romanus | Gotthold | 28 | Prochorus | 20 | 19 | | | 28 |
| Di. | 10 | Laurentius M. | Lorenz | 29 | Callinicus | 21 | 20 | | | 12 |
| Mi. | 11 | Susanna M. ☾ | Susanna | 30 | Silas Silv. | 22 | 21 | | | 26 |
| Do. | 12 | Clara Jungf. | Hermann | 31 | Eudocim. | 23 | 22 | | | 10 |
| Fr. | 13 | Hippolit. M. | Hippolitus | 1 | Aug. H. † | 24 | 23 | 8 Tsum | | 24 |
| Sa. | 14 | Eusebius † | Eusebius | 2 | Steph. M. | 25 46 Sabb. | 24 | | | 8 |
| 33) Kath. Vom Taubstummen. Marc. 7, 31 — 37. Prot. Jesus weint über Jerusalem. Luc. 19. | | | | | | | | | | |
| So. | 15 | C 11 n Pf. M. Him. | 10 n Tr. M. H. | 3 | E 10 Isaak Dal. | 26 | 25 | | | 21 |
| Mo. | 16 | Rochus | Rochus | 4 | 7 Mart. Kind. | 27 | 26 | | | 5 |
| Di. | 17 | Liberatus | Verena | 5 | Eusygnias | 28 | 27 | | | 18 |
| Mi. | 18 | Helena Kön. ● | Agapitus | 6 | Verklär. Chr. | 29 | 28 | | | 0 |
| Do. | 19 | Ludov. Tol. B. | Sebaldus | 7 | Domitius | 30 | 29 | | | 13 |
| Fr. | 20 | Stephan Kön. | Bernhard | 8 | Emilian | 1 Elul | 1 Rebi 9 Ts. | | | 25 |
| Sa. | 21 | Johanna Franc | Hartwig | 9 | Mathias | 2 47 Sabb. | 2 el-ewwel | | | 7 |
| 34) Kath. Vom barmherzigen Samaritaner. Luc. 10, 23 — 37. Prot. Vom Pharisäer und Zöllner. Luc. 18. | | | | | | | | | | |
| So. | 22 | C 12 n Pf. Tim. | 11 n Tr. Sym. | 10 | E 11 Laurentius | 3 | 3 | | | 19 |
| Mo. | 23 | Philippus | Zachäus | 11 | Euplus | 4 | 4 | | | 1 |
| Di. | 24 | Barthol. Ap. | Bartholom. | 12 | Phocius | 5 | 5 | | | 13 |
| Mi. | 25 | Ludov. Kön. | Ludwig | 13 | Maximus | 6 | 6 | | | 25 |
| Do. | 26 | Samuel | Samuel | 14 | Micheas Pr. | 7 | 7 | | | 7 |
| Fr. | 27 | Joseph Calas. | Severin | 15 | Mar. Himmelf. | 8 | 8 10 Tsum. | | | 19 |
| Sa. | 28 | Augustin B. | Augustin | 16 | Schweißtuch | 9 48 Sabb. | 9 | | | 2 |
| 35) Kath. Von den 10 Aussätzigen. Luc. 17, 11 — 19. Prot. Vom Taubstummen. Marc. 7. | | | | | | | | | | |
| So. | 29 | C 13 n Pf. J. E. | 12 n. Tr. J. E. | 17 | E 12 Mykon | 10 | 10 | | | 14 |
| Mo. | 30 | Rosa v. Lima | Rebekka | 18 | Flor. u. Laur. | 11 | 11 | | | 28 |
| Di. | 31 | Raymund | Paulinus | 19 | Andres M. | 12 | 12 Muh. Geb. | | | 11 |

*) Den 20. ist großer Festtag in Ungarn (des Landespatrons). Den 29. fällt das Schutzengelfest.

~~den 28. Oktober. Wilh. Eg. u. Ferd. Olney.~~

Ferdinand 1/2 f.

15. August. Bach 1/2 f. 17.
Bauer — 2000 f. 17.
17. Sept. Gaudler. Bauer.
Batty. Jind.
18. Sept. Bach 2000 f. Rhein.
19. Okt. Mrakl. Jind.
Veit Bauer. Rhein.
Jind. Rafold. Rhein.
26. Okt. Augsch. 1/2 f. Prolay.

Jind. Rhein.

1. Ferdinand Mahl Bäck. 1.
2. Batty. Jind. 1. 250.
3. Veit. Gu Mahl. 1.
4. Mrakl. Gu Rhein. 1.
5. Augsch. Prolay. Bach. 5.
6. Jind. Rhein. Jind. 5.
7. Bauer. Mahl. 5.
8. Wiedling. Bauer. 5.

1. Wiedling. f. 600.
2. Jind. Rhein. 2000.
3. Rhein. 2400.
4. Mahl. 1000.
5. Bauer u. Bach. 2000.
6. Veit. —
a. f. 17000.

Jind. 2800.
Rhein 1200.
Mahl 1000.
Ba. u. Bj 3000.
Bauer 2000. 8 pf.
Bach 6 pf.

1. Mahl Bäck.
2. Korler pod. Aulický.
3. Bauer Gudler.
4. Mahl Bäck. Bach.
5. Bach. Bäck.
6. Bäck Bauer.
7. Rhein Gu Wiedling.

Jind. 2800.
Bach 1000.
3800.
Veit 1500.
Gaudler Bauer 2300.
300.
a. f. 2000.
Wiedling f. 120.
f. 1880.
Bäck. Bauer 120.
1760.
Mrakl. 500.
f. 1200.
Bach a. 450.
f. 750.
Mrakl. a. 670.
a. 80 f.

# August. Die Tage nehmen ab von 14 St. 52 Min. bis 13 St. 16 Min.

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | W. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | | Mittl. Zeit im wahr. Mittag U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ○ Vollmond Mittw. d. 4. um 2 Uhr 2 Min. Nachmittags. | 1 | 4 34 | 7 26 | | 2 22 | | 12 6 1 |
| ☾ Letztes Viertel Mittw. d. 11. um 9 Uhr 13 Min. Morg. | 2 | 4 36 | 7 24 | | 3 20 | | — 5 57 |
| ● Neumond Mittw. d. 18. um 0 Uhr 58 Min. Nachmittags. | 3 | 4 37 | 7 23 | | 4 15 | | — 5 53 |
| ☽ Erstes Viertel Donnerstag d. 26. um 3 Uhr 9 Min. Ab. | 4 | 4 38 | 7 22 | 7 A 25 | 5 ○ 34 | | — 5 48 |
| | 5 | 4 39 | 7 21 | 7 59 | | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 5 42 |
| | 6 | 4 41 | 7 19 | 8 33 | | | — 5 36 |
| | 7 | 4 42 | 7 18 | 9 4 | | | — 5 30 |
| | 8 | 4 44 | 7 16 | 9 34 | | | — 5 23 |
| | 9 | 4 45 | 7 15 | 10 4 | | | — 5 15 |
| | 10 | 4 46 | 7 13 | 10 40 | | | — 5 4 |
| Erdnähe des ☾ den 8. | 11 | 4 48 | 7 11 | 11 19 | | | — 4 58 |
| Erdferne des ☾ den 23. | 12 | 4 50 | 7 9 | 12 0 | | | — 4 48 |
| | 13 | 4 52 | 7 7 | Morg. | | | — 4 38 |
| | 14 | 4 53 | 7 6 | 1 41 | | | — 4 28 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Norden am 8., nach Süden am 21. Größte südliche Abweichung des ☾ den 1. und 28., größte nördliche den 14. | 15 | 4 54 | 7 5 | 2 40 | | | — 4 17 |
| | 16 | 4 56 | 7 3 | 3 42 | | | — 4 5 |
| | 17 | 4 57 | 7 2 | 4 48 | | | — 3 53 |
| | 18 | 4 59 | 7 0 | 5 ● 55 | 7 A. 2 | | — 3 41 |
| | 19 | 5 1 | 6 58 | | 7 31 | | — 3 28 |
| | 20 | 5 3 | 6 56 | | 7 58 | | — 3 14 |
| | 21 | 5 5 | 6 54 | | 8 23 | | — 3 0 |
| Die Sonne rückt aus dem Löwen in das Zeichen der Jungfrau Mont. den 23. August Ab um 5 U. 12 Min. Die Tage werden immer kürzer. | 22 | 5 6 | 6 53 | | 8 48 | Der zunehmende Mond geht bey Tage auf. | — 2 45 |
| | 23 | 5 8 | 6 51 | | 9 13 | | — 2 30 |
| | 24 | 5 9 | 6 50 | | 9 41 | | — 2 15 |
| | 25 | 5 11 | 6 48 | | 10 11 | | — 1 59 |
| | 26 | 5 13 | 6 46 | | 10 45 | | — 1 43 |
| Den 18. August eine in Europa nicht sichtbare Sonnenfinsterniß. | 27 | 5 14 | 6 45 | | 11 25 | | — 1 26 |
| | 28 | 5 16 | 6 43 | | Morg. | | — 1 9 |
| | 29 | 5 18 | 6 41 | | 1 3 | | — 0 52 |
| Merkur hat den 5. seine größte heliocentrische nördliche Breite. | 30 | 5 19 | 6 40 | | 2 6 | | — 0 34 |
| | 31 | 5 21 | 6 38 | | 3 11 | | — 0 16 |

Kleines Stammbuch der Heiligen oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.

7. August. Cajetan, aus einem adelichen Hause im Venezianischen entsprossen, lebte von seiner Jugend an immer eingezogen. Er widmete sich ganz den Armen und Kranken, und stiftet den Theatiner-Orden, dessen Beruf es war, das Volk zu unterrichten und Kranken beyzustehen. Er starb im J. 1547.

14. August. Eusebius, ein Priester in Rom, zu den Zeiten des Kaisers Constantius, der die Irrlehre der Arianer besonders in Schutz nahm. Der fromme Priester vertheidigte nach allen seinen Kräften die reine Lehre, weßwegen er ins Gefängniß geworfen wurde, worin er sieben Monathe schmachtete, und endlich im 4. Jahrhundert als ein Bekenner des Glaubens starb.

20. August. Bernhard, von adelichen Eltern in Burgund geboren, war die Zierde des 12. Jahrhunderts. Er bildete seine schönen Talente in der Einsamkeit aus. Ohne seinen heiligen Lebenswandel zu verlassen, arbeitete er rastlos sowohl in Schriften, als mündlich in geistlichen Versammlungen, zum Besten der Religion. Dieser heil. Kirchenvater starb reich an Verdiensten im Jahre 1153.

## Witterungs-Angaben.

August. Der größte Theil des Augusts ist noch sehr warm; denn wir sind noch immer in den Hundstagen, welche den 8. ihr Mittel, den 24. ihr Ende erreichen. Nach dem 24. nähert sich das Jahr schon dem Herbste, die Wärme nimmt merklich ab, und die Atmosphäre fängt an, an den April und Herbst zu erinnern. Schon in der ersten Hälfte wehen zuweilen gelinde Herbstwinde; dessen ungeachtet gibt es noch manchmahl Donnerwetter und erfrischende Strichregen. Um den 23. zu ist das Ende der Donnerwetter. Der August ist fast in jedem Lande anders gestaltet und wechselt schon in benachbarten Ländern sehr ab. Gegen Ende des Monaths gibt es oft schon feuchte Luft mit Winden; und die Zugvögel fangen an, abzuziehen in Länder, wo der Sommer noch nicht zu Ende ist.

Loostage. Wenn es zu Laurenzi (d. 10.) und Bartholomäi (d. 24.) schön ist, so folgt ein schöner Herbst, ist es um Laurenzi und Maria Himmelfahrt (d. 15.) schön, so hofft man einen guten Weinherbst. Die Weinhauer beurtheilen auch nach den 2 letzten Tagen des Augusts, und den 2 ersten Tagen des Septembers den ganzen folgenden Herbst.

Knauers Wetterprophezeihung. Der August fängt mit großer Hitze an, um den 5. fällt Regenwetter ein; dieses dauert bis gegen den 19., wo ein schöner Tag ist. Unstetes Wetter fällt die letzten Tage dieses Monaths ein.

| Wochent. | Monatst. | Allgemeiner Kalender. für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer August. | | Jüdischer XII. Elul 5590. | Türkisch-arab. III. Rebi el ewwel 1246. | Lauf des ☽ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Mi. | 1 | Aegidius Abt | Aegidius | 20 | Samuel | 13 | 13 glückl. | | 25 |
| Do. | 2 | Stephan K. ☉ | Absalon | 21 | Thaddäus | 14 | 14 Tage | | 10 |
| Fr. | 3 | Mansuetus | Mansuetus | 22 | Agathonikus | 15 | 15 11 Tsum. | | 24 |
| Sa. | 4 | Rosalia J. | Rosalia | 23 | Lupus | 16 49 Sabb. | 16 | | 9 |
| 36) Kath. Niemand kann zwey Herren dienen. Matth. 6, 24 — 33. Prot. Vom barmherzigen Samaritaner. Luc. 10. | | | | | | | | | |
| So. | 5 | E 14 n Pf. Vict. | 3 n Tr. Herk. | 24 | E 13 Eutyches M. | 17 | 17 | | 24 |
| Mo. | 6 | Zacharias Pr. | Magnus | 25 | Bartholomäus | 18 | 18 | | 8 |
| Di. | 7 | Regina Jungf. | Regina | 26 | Adr. Nat. | 19 | 19 | | 23 |
| Mi. | 8 | Mar. Geburt | Mar Geburt | 27 | Poemenus | 20 | 20 | | 7 |
| Do. | 9 | Gorgonius ☾ | Gorgonius | 28 | Moses | 21 | 21 | | 21 |
| Fr. | 10 | Nic. v. Tolent. | Jodocus | 29 | Joh. Enthaupt. | 22 | 22 12 Tsum. | | 5 |
| Sa. | 11 | Aemilianus | Protus | 30 | Alex. Newski | 23 30 Sabb. | 23 | | 18 |
| 37) Kath. Vom Jüngling zu Naim. Luc. 7, 11 — 16. Prot. Von den 10 Aussätzigen. Luc. 17. | | | | | | | | | |
| So. | 12 | E 15 n Pf. N. M. | 4 n Tr. Syrus | 31 | E 14 Gürtel M. | 24 | 24 | | 1 |
| Mo. | 13 | Maurillus B. | Amatus | 1 | Sept. Simeon | 25 | 25 | | 14 |
| Di. | 14 | † Erhöhung | † Erhöhung | 2 | Mamant. | 26 | 26 | | 27 |
| Mi. | 15 | Quat. Hildeg. † | Nikodemus | 3 | Anthemus | 27 | 27 | | 9 |
| Do. | 16 | Ludmilla | Lambertus | 4 | Babylas | 28 | 28 | | 22 |
| Fr. | 17 | Lambertus ● | Euphemia | 5 | Zachar. Elisab. | 29 5591 | 29 13 Tsum | | 4 |
| Sa. | 18 | Thomas v. V. | Titus | 6 | Mich. Erz. | 1 Tischri Neuj | 30 | | 16 |
| 38) Kath. Vom Wassersüchtigen. Luc. 14, 1 — 11. Prot. Niemand kann 2 Herren dienen. Matth. 6. | | | | | | | | | |
| So. | 19 | E 16 n Pf. Const. | 5 n Tr. Micl. | 7 | E 15 Sozont. M. | 2 Neuj. Fest | 1 Rebi el | | 2 |
| Mo. | 20 | Eustachius M. | Fausta | 8 | Mar. Geburt | 3 Fast. Gedal. | 2 achir | | 9 |
| Di. | 21 | Matthäus Ap. | Matthäus | 9 | Joach. u. An. | 4 | 3 | | 21 |
| Mi. | 22 | Mauritius M. | Moriz | 10 | Minodora | 5 | 4 | | 3 |
| Do. | 23 | Thecla M. | Thecla | 11 | Theodora | 6 | 5 | | 15 |
| Fr. | 24 | Joh. Empf. | Gerhard | 12 | Antonom. | 7 | 6 4 Tsum. | | 27 |
| Sa. | 25 | Kleophas ☽ | Kleophas | 13 | Corn. Haupt | 8 Sabb. | 7 | | 10 |
| 39) Kath. Vom größten Gebothe. Matth. 22, 34 — 46. — Prot. Vom Jüngling zu Naim. Luc. 7. | | | | | | | | | |
| So. | 26 | E 17 n Pf. Just. | 6 n Tr. Cypr. | 14 | E 16 † Erhöh. | 9 | 8 | | 22 |
| Mo. | 27 | Cosm. u. Dam. | Cosmus | 15 | Nicetas | 10 Versöhn Fest (langer Tag) | 9 | | 6 |
| Di. | 28 | Wenzeslaus | Wenzeslaus | 16 | Euphemia | 11 | 10 | | 19 |
| Mi. | 29 | Michael Erz. | Michael | 17 | Sophia F. | 12 | 11 | | 3 |
| Do. | 30 | Hieronymus | Hieronymus | 18 | Eumenes | 13 | 12 | | 16 |

*) Böhmen und Galizien haben in diesem Monathe die großen Festtage ihrer Landespatrone, Böhmen den 28., Galizien den 29., Dalmatien den 30. Am 12. wird das Maria-Nahmensfest gefeyert.

Oben.

1. Wohnhaus [illegible]
2. Küche mit Nebenbau.
3. Geschirrhaus. Ställe. Hofplatz. Scheune. Dünger. Gesindehaus.
4. Mittel. Vorbau. Anbau [illegible]. Gartenhaus. Serpentin. Anlage. Anlagen. Mittelweg – Gartenhaus.
5. Gemüse. Spinat. Kl. Gärten. Bäume. Obst. Baum.
6. Blumen. Busch. Gemüse.

1. Springer. Schmiedt.
2. Capitalien. [illegible]
3. Kuhstall mit Nebenbau.
4. Kl. H. Platz vor Graftenhof.
5. Scheune. Ackerwagen. Rosgarten.
6. Schweinestall. Mittelweg.
7. Taggenmöbelhaus.
8. Kl. Kuhstall.

Mittelweg.

| | |
|---|---|
| 1. Platz | 2000. |
| 2. " | 2600. |
| 3. " Jo oben Gusstreppe | 2000. |
| 4. " am Hof f. Gärten. | 2000. |
| 5. " am Jo " " | 2000. |
| 6. " Pan. f. Platz. | 3000. |
| 7. Thorplatz | 1000. |
| 8. 3 Kastanien beim Teich alleeweg mit Gärten | 5000. |
| 9. Schemischer Grund 27. | 12400. |
| 10. Kl. Park. 400 J. Eichen. | 40000. |
| 11. Die Lindenallee. | 6000. |
| 12. 1000 Jahr Grenzeichen | 15000. |
| 13. Baum parcellen " | 8000. |
| | 110,000. |

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | Wochentag | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ☺ Vollmond Donnerst. d. 2. um 11 Uhr 43 Min. vor Mitternacht. | 1 | 5 23 | 6 36 | | 4 23 | 11 59 57 |
| ☾ Letztes Viertel Donnerst. d. 9. um 3 Uhr 4 Min. Nachmitt. | 2 | 5 25 | 6 34 | 6 A. 32 | 5 ☺ 40 | — 59 38 |
| ● Neumond Freytag d. 17. um 3 Uhr 34 Min. Morg. | 3 | 5 27 | 6 32 | 7 3 | | — 59 19 |
| ☽ Erstes Viertel Samst. d. 25. um 7 Uhr 58 Min. Morg. | 4 | 5 28 | 6 31 | 7 35 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 59 0 |
| | 5 | 5 30 | 6 29 | 8 6 | | — 58 40 |
| | 6 | 5 32 | 6 27 | 8 39 | | — 58 20 |
| | 7 | 5 33 | 6 26 | 9 16 | | — 58 0 |
| | 8 | 5 35 | 6 24 | 9 59 | | — 57 40 |
| Erdnähe des ☾ den 4. Erdferne des ☾ den 20. | 9 | 5 36 | 6 23 | 10 45 | | — 57 20 |
| | 10 | 5 38 | 6 21 | 11 37 | | — 56 59 |
| | 11 | 5 40 | 6 19 | Morg. | | — 56 38 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Norden am 4., nach Süden am 18. Größte nördliche Abweichung des ☾ am 10., größte südliche am 25. | 12 | 5 42 | 6 17 | 1 35 | | — 56 18 |
| | 13 | 5 44 | 6 15 | 2 38 | | — 55 57 |
| | 14 | 5 45 | 6 14 | 3 41 | | — 55 36 |
| | 15 | 5 47 | 6 12 | 4 45 | | — 55 15 |
| | 16 | 5 49 | 6 10 | 5 49 | | — 54 54 |
| | 17 | 5 51 | 6 8 | 6 ● 51 | 6 A. 27 | — 54 33 |
| Die Sonne rückt aus der Jungfrau in das Zeichen der Wage Donnerstag den 23. Sept. um 2 Uhr 17 Minuten Abends. | 18 | 5 53 | 6 6 | | 6 50 | — 54 12 |
| | 19 | 5 54 | 6 5 | | 7 16 | — 53 51 |
| | 20 | 5 56 | 6 3 | | 7 43 | — 53 30 |
| | 21 | 5 57 | 6 2 | Der zunehmende Mond geht bey Tage auf. | 8 11 | — 53 9 |
| | 22 | 5 59 | 6 0 | | 8 44 | — 52 48 |
| In der Nacht vom 2. auf den 3. September ist eine in Europa sichtbare totale Mondesfinsterniß. | 23 | 6 0 | 5 59 | | 9 20 | — 52 27 |
| | 24 | 6 1 | 5 58 | | 10 3 | — 52 7 |
| | 25 | 6 3 | 5 56 | | 10 52 | — 51 46 |
| | 26 | 6 4 | 5 55 | | 11 48 | — 51 26 |
| Den 17. September bald nach Mitternacht ist eine in Europa nicht sichtbare Sonnenfinsterniß. | 27 | 6 6 | 5 53 | | Morg. | — 51 5 |
| | 28 | 6 8 | 5 51 | | 1 53 | — 50 45 |
| | 29 | 6 10 | 5 49 | | 3 11 | — 50 26 |
| Merkur hat den 28. seine größte heliocentrische südliche Breite. | 30 | 6 13 | 5 47 | | 4 28 | — 50 6 |

**Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.**

9. September. Gorgonius, ein Vertrauter des Kaisers Diocletian, wurde durch die Peinen, welche die Christen zu Nikomedien duldeten, so sehr gerührt, daß er ganz frey diese Grausamkeiten verabscheute. Aufgefordert, den Göttern zu opfern, ward der heldenmüthige Bekenner ein Opfer der Verfolger durch eine glorreiche Marter.

17. September. Lambert, Bischof vom Mastricht, trat diese Würde mit einer heilsamen Furcht an, welche die erhabenen Pflichten dieses heiligen Amtes ihm einflößten. Mit äußerster Pünctlichkeit erfüllte er diese Pflichten, bis er, von seinem Sitze vertrieben, aber wieder zurückberufen, für die Gerechtsame der Kirche Gottes sein Leben opferte. Er ward mit Pfeilen erschossen ums J. 708.

25. September. Kleophas, einer von den zwey Jüngern, denen Jesus nach seiner Auferstehung auf dem Wege nach Emaus erschien. Da sie ihn erkannten, sprachen sie: „Ward nicht unser Herz entzündet, da er auf dem Wege mit uns sprach und die Schrift erklärte?"

## Witterungs-Angaben.

September. Der Herbst ist eingezogen und beginnt den 1. mit dem sogenannten kleinen May oder Nachsommer, der am 22. dem wahren Herbste Platz macht. In diesem Monathe hat man oft noch sehr angenehme Temperatur. Wärme und Wetter sind noch gleichförmig, halbverläßlich, die Regen nicht häufig. Obst und Trauben überall; nur gibt es auch schon zuweilen böse Nebel und scharfe Winde. Um die Herbst-Tag- und Nachtgleiche haben wir gewöhnlich stürmische Winde (Aequinoctial-Stürme).

Loostage. Wie es am Aegiditag ist, soll es den ganzen September bleiben. Werden die Eicheln vor Michaelis zeitig, so kommt ein früher und harter Winter. Wenn es in der Nacht vor Michaelis hell ist, soll ein heftiger kalter Winter folgen.

Knauers Wetterprophezeihung. Der September ist zu Anfang bis zum 4. schön und warm, darauf kommt Regen- und Donnerwetter, worauf wieder schönes Wetter wird bis zum 20. Neues Regenwetter am 30. — Der in diesem Monathe beginnende Herbst hat zuerst viel Regen und zeitigen Frost; wann aber der halbe October vorüber ist, fällt trocknes Wetter ein, das bis zu Anfang Novembers anhält.

## X. October, Weinmond, Reisemonath, Blätterfall, hat 31 Tage.

| Wochen. | Monatst. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer September. | | Jüdischer I. Tischri 5591. | | Türkisch-arab. IV. Rebi el-achir 1246. | | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Fr. | 1 | Remigius B. | Remigius | 19 | Trophimus | 14 | | 13 | 15 Tsum glückl. | | 3 |
| Sa. | 2 | Leodegar ☾ | Leodegar | 20 | Eustachius | 15 | Laubh.-Fest | 14 | | | 18 |
| 40) Kath. Vom Gichtbrüchigen. Matth. 9, 1 — 8. Prot. Vom Wassersüchtigen. Luc. 14. | | | | | | | | | | | |
| So. | 3 | C 18 n Pf. Cand. | 17 n Tr. Jairus | 21 | C 17 Kodr. M. | 16 | II Laubh.-F | 15 | Tage | | 3 |
| Mo. | 4 | Franz Seraph. | Franz v. Assis | 22 | Phokas | 17 | III. | 16 | | | 18 |
| Di. | 5 | Placidus M. | Placidus | 23 | Joh. B. C. | 18 | IV | 17 | | | 3 |
| Mi. | 6 | Bruno Beicht. | Friderica | 24 | Thekla | 19 | V. Tag | 18 | | | 17 |
| Do. | 7 | Justina M. | Amalia | 25 | Euphrosina | 20 | VI. | 19 | | | 1 |
| Fr. | 8 | Brigitta ☾ | Pelagius | 26 | Joh. Theol. | 21 | Palmenf. | 20 | 16 Tsum. | | 15 |
| Sa. | 9 | Dionys. Abt | Dionysius | 27 | Kallistratus | 22 | Laubh.-Ende | 21 | | | 28 |
| 41) Kath. Vom hochzeitlichen Kleide. Matth. 22, 1 — 14. Prot. Vom größten Gebothe. Matth. 22. | | | | | | | | | | | |
| So. | 10 | C 19 n Pf. Fr. B. | 18 n Tr. Sid. | 28 | C 18 Chariton C. | 23 | Gesetzfreude | 22 | | | 11 |
| Mo. | 11 | Burkhard | Burkhard | 29 | Cyriacus | 24 | | 23 | | | 24 |
| Di. | 12 | Maximilian | Maximilian | 30 | Gregor B. | 25 | | 24 | | | 6 |
| Mi. | 13 | Kolomanus | Koloman | 1 | Octob. Mar. G. | 26 | | 25 | | | 18 |
| Do. | 14 | Calixtus P. | Calixtus | 2 | Cyprian | 27 | | 26 | | | 0 |
| Fr. | 15 | Theresia | Hedwig | 3 | Dionysius | 28 | | 27 | 17 Tsum. | | 12 |
| Sa. | 16 | Gallus ● | Gallus | 4 | Hierotheus M. | 29 | 5 Sabb. | 28 | | | 24 |
| 42) Kath. Vom königlichen Sohne. Joh. 4, 46 — 50. Prot. Vom Gichtbrüchigen. Matth. 9. | | | | | | | | | | | |
| So. | 17 | C 20 n Pf. Hedw. | 19 n Tr. Flor. | 5 | C 19 Charitina | 30 | | 29 | | | 6 |
| Mo. | 18 | Lucas Ev. | Lucas Ev. | 6 | Thomas A. | 1 | Marchesvan | 1 | Dschemadi el-ewwel | | 18 |
| Di. | 19 | Ferdinand | Ferdinand | 7 | Serg. B. | 2 | | 2 | | | 0 |
| Mi. | 20 | Felicianus | Wendelin | 8 | Pelagius | 3 | | 3 | | | 12 |
| Do. | 21 | Ursula m. 11000 J. | Ursula | 9 | Jac. Alph. | 4 | | 4 | | | 24 |
| Fr. | 22 | Cordula Jungf. | Cordula | 10 | Eulampius | 5 | | 5 | 18 Tsum. | | 6 |
| Sa. | 23 | Joh. Capistr. | Severus | 11 | Philipp Ap. | 6 | 6 Sabb. | 6 | | | 18 |
| 43) Kath. Vom des Königs Rechnung. Matth. 18, 23 — 35. Prot. Vom hochzeitlichen Kleide. Matth. 22. | | | | | | | | | | | |
| So. | 24 | C 21 n Pf. Raph. ☽ | 20 n Tr. Sal. | 12 | C 20 Probus | 7 | | 7 | | | 1 |
| Mo. | 25 | Crispinus M. | Crispinus | 13 | Carpus. | 8 | | 8 | | | 14 |
| Di. | 26 | Evaristus P. | Amandus | 14 | Naz. Ger. | 9 | | 9 | | | 28 |
| Mi. | 27 | Sabina | Sabina | 15 | Euthymius | 10 | | 10 | | | 11 |
| Do. | 28 | Simon u. Jud. | Sim. u. Jud. | 16 | Longinus | 11 | | 11 | | | 26 |
| Fr. | 29 | Zenobius | Narcissus | 17 | Hoseas Pr. | 12 | | 12 | 19 Tsum. | | 11 |
| Sa. | 30 | Claudia † | Hartmann | 18 | Lucas Ev. | 13 | 7 Sabb. | 13 | glückliche | | 26 |
| 44) Kath. Gebet dem Kaiser. Matth. 22, 15 — 21. Prot. Vom königlichen Sohne. Joh. 4. | | | | | | | | | | | |
| So. | 31 | C 22 n Pf. Wfg. ☾ | 21 n Tr. Wolfg. | 19 | C 21 Joel Pr. | 14 | | 14 | Tage. | | 11 |

*) Den 3. ist das ehemahlige Rosenkranzfest, den 17. das allgemeine Kirchweihfest oder die Kaiser-Kirmeß, am 15. das Hedwigsfest in Schlesien.

Wien.

1. [illegible]
2. Auspitz.
3. [illegible]
4. Gemeinde Hindberg.
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. Myrto.
9. Dr. Pasetto.
10. Carl von Braun.
11. Steinbrechner.
12. Lang.
13. Gf. Mikoschky.

| | | |
|---|---|---|
| Grund | 110 fl. | M. Berk |
| ab | 70. | 18. |
| | 40, | 10. |
| | 10, | 20. |
| zu V. | | 48,— fl. |
| Rath | 38. | |
| | 88,— | 2da. |
| ab. M. Minty | 19. | |
| | 69. | Bäm. . . . fa 40,— |
| Zeron | 22. | Futh . . . 10,— |
| | 47. | 50,— |
| A. 3 m H | 15. | Gerau . . 15. |
| | 32. | 32. |
| ab. Sa. | 12. | Mauhl . 19. |
| | 20. | Eurent . 13 m fa |
| abzüg | 3. | Gründungskosten. |
| | 17. | Berth. nach zu Minty. |
| Eurent | 7. | |
| | 10. | Rand. |
| Ba. | 38 m f. | |
| M. | 28 m f. | Sundab. |

a. Rüstkosten M. . . . fl 18,—
b. Gf. Gründ. . . „ 10,—
c. F. Berth. zurück. 40,—
aus Ablösungen.

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. Grund | 120. | bar | |
| 2. Windberg | 120. | bar | |
| 3. Nagelsd. | 120. | bar | |
| 4. Berth | 40. | 2000. | |
| 5. Baum | 240. | 12000. | |
| | 640. f. C. M. | | 32000. f. Revenüen. |

| | | |
|---|---|---|
| Windberg | 2 Häuser Grund | f 5000. |
| | 4 d. Haus | 8000. |
| | 4 d. Garten C. M. | 2000. |
| Ofen. Gr. | | 12000. |
| F. Berth. | 400 J Land à 100 f | 40000. |
| | Weinen Ungerd. Gr. | 4000. |
| | Schmied | 15000. |
| Baum | Gesammtes | 6000. |
| Nagelsd. | Rückerth. Zins | 4000. |
| | | 97000. f. |

**Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne.**

Vollmond Samst. d. 2. um 9 U. 2 Min. Morg.
Letztes Viertel Freyt. d. 8. um 11 U. 37 Min. vor Mittern.
Neumond Samst. d. 16. um 8 U. 37 Min. Ab.
Erstes Viertel Sonnt. d. 24. um 11 U. 25 Min. vor Mittern.
Vollmond Sonnt. d. 31. um 6 U. 24 Min. Ab.

Erdnähe des ☾ den 2.
Erdferne des ☾ den 17.
Erdnähe des ☾ den 31.

Der Mond geht durch den Aequator nach Norden d. 1., nach Süden d. 15., und wieder nach Norden d. 29. Größte nördliche Abweichung des ☾ d. 8., größte südliche d. 23.

Die Sonne rückt aus der Wage in das Zeichen des Scorpions Samstag d. 23. October Abends um 10 Uhr 13 Min. — Die Tage werden immer kürzer.

Venus ist d. 14. vom Monde bedeckt, und hat d. 16. ihre größte heliocentrische nördliche Breite.

| Mon. Tag | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 6 14 | 5 45 | | 5 48 | 11 49 47 |
| 2 | 6 16 | 5 43 | 6 A 2 | 7 ♍ 9 | — 49 28 |
| 3 | 6 18 | 5 41 | 6 35 | | — 49 9 |
| 4 | 6 20 | 5 39 | 7 14 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | — 48 50 |
| 5 | 6 22 | 5 37 | 7 53 | | — 48 32 |
| 6 | 6 24 | 5 35 | 8 39 | | — 48 15 |
| 7 | 6 26 | 5 33 | 9 31 | | — 47 57 |
| 8 | 6 28 | 5 31 | 10 27 | | — 47 40 |
| 9 | 6 29 | 5 30 | 11 28 | | — 47 24 |
| 10 | 6 31 | 5 28 | Morg. | | — 47 8 |
| 11 | 6 33 | 5 26 | 1 34 | | — 46 52 |
| 12 | 6 35 | 5 24 | 2 37 | | — 46 37 |
| 13 | 6 36 | 5 23 | 3 39 | | — 46 23 |
| 14 | 6 38 | 5 21 | 4 42 | | — 46 9 |
| 15 | 6 39 | 5 20 | 5 43 | | — 45 56 |
| 16 | 6 41 | 5 18 | 6 ● 45 | 5 A 20 | — 45 43 |
| 17 | 6 43 | 5 16 | | 5 45 | — 45 30 |
| 18 | 6 44 | 5 15 | | 6 13 | — 45 19 |
| 19 | 6 46 | 5 13 | | 6 44 | — 45 8 |
| 20 | 6 47 | 5 12 | Der zunehmende Mond geht bey Tage auf. | 7 19 | — 44 57 |
| 21 | 6 48 | 5 11 | | 7 59 | — 44 47 |
| 22 | 6 50 | 5 9 | | 8 44 | — 44 38 |
| 23 | 6 52 | 5 7 | | 9 35 | — 44 29 |
| 24 | 6 54 | 5 5 | | 10 34 | — 44 22 |
| 25 | 6 55 | 5 4 | | 11 38 | — 44 14 |
| 26 | 6 57 | 5 2 | | Morg. | — 44 8 |
| 27 | 6 59 | 5 0 | | 2 0 | — 44 2 |
| 28 | 7 1 | 4 58 | | 3 15 | — 43 57 |
| 29 | 7 3 | 4 56 | | 4 34 | — 43 53 |
| 30 | 7 4 | 4 55 | | 5 55 | — 43 49 |
| 31 | 7 5 | 4 54 | 5 A 7 | 7 ♍ 15 | — 43 46 |

**Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.**

5. October. Placidus, der Sohn eines römischen Patriciers, hat sich in der Schule des heil. Benedict zu einem Muster der schönsten Tugenden ausgebildet, und war einer der würdigsten seiner Jünger. Er wurde nach Sicilien geschickt, wurde aber dort in seinem Kloster überfallen und starb mit den Seinigen einen rühmlichen Martertod im J. 541.

9. October. Dionysius, Bischof, predigte vielen Völkern das Evangelium. Er kam nach Frankreich, nachdem er vorher in den abgöttischen Ländern vieles gelitten hatte, und verbreitete seinen Eifer bis nach Paris; hier aber wurde er auf der heldenmüthigen Bahn der Blutzeugen in den Himmel berufen gegen das Ende des 3ten Jahrh.

16. October. Gallus kam auf seinen evangelischen Reisen aus England bey den Schweizer-Gebirgen zu Arbon an. Er ist der Stifter des heutigen St. Gallen, welches von ihm den Nahmen führt. Seine Rede, die er noch in einem Alter von 95 Jahren an das Volk hielt, war mit einem wahrhaft apostolischen Geiste abgefaßt. Er starb bald hernach ums J. 646.

## Witterungs-Angaben.

October. Der Herbst wird immer stärker, Winde, Kälte, Reife und Nebel immer heftiger und empfindlicher; die Gipfel hoher Gebirge bedecken sich mit Schnee, der Blätterfall dauert fort, und die Natur tritt ins Greisenalter. Am 12. u. 13. ist gerade die mittlere Temperatur zwischen der größten Sommerhitze und strengsten Winterkälte. Um Theresia werden die Oefen gesetzt und die Winterfenster eingehängt; doch herrscht um die Mitte des Monaths gewöhnlich trockenes Wetter. Des Morgens gibt es fast täglich Nebel und Reife, des Tages schnell segelnde Herbstwolken, wenig Sonne, düsteren Himmel; die Nächte sind kalt und finster.

Knauers Wetterprophezeihung. Der October fängt mit Regen an, und bleibt bis 13. und 14. regnerisch und trüb, am 15. und 16. wird es schön, nur am 24. tritt wieder Regen ein, es wird aber gleich wieder schön bis 29., wo ein Paar neblige und kühle Tage eintreten.

| Wochen. | Monatsz. | Allgemeiner Kalender für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer October. | | Jüdischer II. Marchesvan 5591. | Türkisch-arab. V. Dschemadi el-ewwel 1246. | Lauf des ☾ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Mo. | 1 | Aller Heiligen | Aller Heil. | 20 | Artemius | 15 | 15 glückl. T. | ☾ | 26 |
| Di. | 2 | Aller Seelen | Aller Seelen | 21 | Hilarion | 16 | 16 | ☾ | 12 |
| Mi. | 3 | Hubertus | Gottlieb | 22 | Abercius | 17 | 17 | ☾ | 26 |
| Do. | 4 | Carol. Borr. | Emerich, | 23 | Jac. Br. C. | 18 | 18 | ☾ | 11 |
| Fr. | 5 | Emericus | Blandine | 24 | Arethas M. | 19 | 19 20 Tsum. | ☾ | 24 |
| Sa. | 6 | Leonhard L. | Leonhard | 25 | Marcian | 20 8 Sabb. | 20 Erob. Const | ☾ | 8 |
| 45) Kath. Von des Obersten Tochter. Matth. 9, 18 — 26. Prot. Von des Königs Rechnung. Matth. 18. | | | | | | | | | |
| So. | 7 | E 23 n Pf. Eng. ☾ | 22 n. Tr. Ecdm. | 26 | E 22 Demetrius | 21 | 21 | ☾ | 21 |
| Mo. | 8 | Gottfried | Sebastian | 27 | Nestor M. | 22 | 22 | ☾ | 3 |
| Di. | 9 | Theodor. Solo. | Theodorus | 28 | Terentius | 23 | 23 | ☾ | 15 |
| Mi. | 10 | Andr. Avell. | Proba | 29 | Anastasia | 24 | 24 | ☾ | 28 |
| Do. | 11 | Martin B. | Martin | 30 | Zenobius | 25 | 25 | ☾ | 9 |
| Fr. | 12 | Martin Papst | Jonas | 31 | Stachys | 26 | 26 21 Tsum. | ☾ | 21 |
| Sa. | 13 | Stanislaus K. | Briccius | 1 | Nov. Cosmas | 27 9 Sabb. | 27 | ☾ | 3 |
| 46) Kath. Das Himmelreich ist einem Senfkörnlein gleich. Matth. 13, 31 — 35. Prot. Vom Zinsgroschen. Matth. 22. | | | | | | | | | |
| So. | 14 | E 24 n Pf. Luc. | 23 n. Tr. Levin. | 2 | E 23 Acindinus | 28 | 28 | ☾ | 15 |
| Mo. | 15 | Leopold ● | Leopold | 3 | Acepsimus | 29 | 29 | ☾ | 27 |
| Di. | 16 | Edmundus B. | Ottmarus | 4 | Joannicius | 30 | 30 | ☾ | 9 |
| Mi. | 17 | Gregor B. | Hugo | 5 | Galakteon | 1 Kislaw | 1 Dschemadi el-achir | ☾ | 21 |
| Do. | 18 | Eugenius | Otto | 6 | Paul. Erem. | 2 | 2 | ☾ | 3 |
| Fr. | 19 | Elisabeth | Elisabeth | 7 | Hieronym. † | 3 | 3 22 Tsum. | ☾ | 15 |
| Sa. | 20 | Felix v. Valois | Amalia | 8 | Vers. Mich. | 4 10 Sabb. | 4 | ☾ | 28 |
| 47) Kath. Vom Gräuel der Verwüstung. Matth. 24, 15 — 35. Prot. Von Jairi Töchterlein. Matth. 9. | | | | | | | | | |
| So. | 21 | E 25 n Pf. M. Opf. | 24 n Tr. M. O. | 9 | E 24 Onesiph. | 5 | 5 | ☾ | 10 |
| Mo. | 22 | Cäcilia M. | Cäcilia | 10 | Erast. M. | 6 | 6 | ☾ | 23 |
| Di. | 23 | Clemens P. ☽ | Clemens | 11 | Victor | 7 | 7 | ☾ | 7 |
| Mi. | 24 | Joh. v. Kreuz | Chrysogen | 12 | Johann Alm. | 8 | 8 | ☾ | 20 |
| Do. | 25 | Katharina | Katharina | 13 | Joh. Chrys. | 9 | 9 | ☾ | 5 |
| Fr. | 26 | Konrad | Konrad | 14 | Philipp Ap. | 10 | 10 23 Tsum. | ☾ | 19 |
| Sa. | 27 | Virgiltus | Busso | 15 | Gurias M. | 11 11 Sabb. | 11 | ☾ | 4 |
| 48) Kath. Es werden Zeichen geschehen. Luc. 21, 25 — 33. Prot. Christi Einritt zu Jerusalem. Matth. 21. | | | | | | | | | |
| So. | 28 | E 1 Adv. Sosth. | 1 Adv. Günther | 16 | E 25 Matth. Ap. | 12 | 12 | ☾ | 19 |
| Mo. | 29 | Saturn. B. | Saturninus | 17 | Gregor N. | 13 | 13 glückl. Tage | ☾ | 5 |
| Di. | 30 | Andreas Ap. ☺ | Andreas Ap. | 18 | Platon M. | 14 | 14 | ☾ | 20 |

*) Den 4. ist in der ganzen Lombardie Festtag des Landespatrons. Der 15. ist nur im Erzherzogthum Oesterreich Festtag und Normatag.

von Lb. von Baum nach Razelsdorf.

## December, [illegible]

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | M. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | Mittl. Zeit im wahr. Mittag. U. M. S. | Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Namenspatrone und Kirchenfeste. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☾ Letztes Viertel Sonnt. d. 7. um 11 U. 58 Min. Vormittags. ● Neumond Mont. d. 15. um 3 U. 1 Min. Nachmittags. ☽ Erstes Viertel Dienst. d. 23. um 0 U. 50 Min. Nachmittags. ○ Vollmond Dienst. d. 30. um 4 U. 14 Min. Morgens. | 1 | 7 7 | 4 52 | 5 44 | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | 11 43 44 | 7. November. Engelbert, Erzbischof und Churfürst von Cöln, stand bey dem Kaiser Friedrich II wegen seiner Rechtschaffenheit und Gottseligkeit in einem so großen Ansehen, daß er ihm seinen Prinzen zur Erziehung übergab. Er starb als Vertheidiger der gerechten Sache durch die Hand seines eigenen Vetters den Tod eines Marterers im J. 1225. |
| | 2 | 7 8 | 4 51 | 6 28 | | — 43 43 | |
| | 3 | 7 9 | 4 50 | 7 19 | | — 43 43 | |
| | 4 | 7 10 | 4 49 | 8 15 | | — 43 43 | |
| | 5 | 7 12 | 4 47 | 9 17 | | — 43 45 | |
| | 6 | 7 13 | 4 46 | 10 22 | | — 43 47 | |
| | 7 | 7 15 | 4 44 | 11 25 | | — 43 50 | |
| | 8 | 7 17 | 4 42 | Morg. | | — 43 53 | |
| | 9 | 7 18 | 4 41 | 1 32 | | — 43 58 | |
| | 10 | 7 19 | 4 40 | 2 34 | | — 44 4 | |
| Erdnähe des ☾ den 13. Erdferne des ☾ den 28. | 11 | 7 21 | 4 38 | 3 36 | | — 44 10 | |
| | 12 | 7 22 | 4 37 | 4 38 | | — 44 17 | |
| | 13 | 7 24 | 4 35 | 5 38 | | — 44 25 | |
| | 14 | 7 25 | 4 34 | 6 38 | | — 44 34 | |
| Der Mond geht durch den Aequator nach Süden d. 11., nach Norden d. 25. Größte nördliche Abweichung des ☾ d. 4., größte südliche d. 19. | 15 | 7 27 | 4 32 | 7 ☾ 39 | 4 A 46 | — 44 44 | 10. November. Andreas Avellinus, zu Castro nuovo im Neapolitanischen geboren, verlegte sich auf die Rechtsgelehrtheit; da ihm aber bey einem Rechtsstreite eine Lüge entfuhr, entschloß er sich, von Reue durchdrungen, im Theatiner-Orden eine strengere Lebensweise anzunehmen. Daselbst von äußerlichen sowohl als innerlichen Leiden entkräftet, starb er, vom Schlagflusse getroffen, am Fuße des Altars im J. 1608. |
| | 16 | 7 29 | 4 30 | | 5 19 | — 44 55 | |
| | 17 | 7 30 | 4 29 | | 5 57 | — 45 6 | |
| | 18 | 7 32 | 4 28 | | 6 40 | — 45 19 | |
| | 19 | 7 33 | 4 27 | | 7 30 | — 45 32 | |
| | 20 | 7 34 | 4 26 | | 8 27 | — 45 46 | |
| | 21 | 7 35 | 4 25 | | 9 28 | — 46 1 | |
| Die Sonne rückt aus dem Scorpion in das Zeichen des Schützen Montag d. 22. November Abends um 6 Uhr 42 Min. — Die Tage werden kürzer. | 22 | 7 36 | 4 24 | Der zunehmende Mond geht bey Tage auf. | 10 32 | — 46 16 | 24. November. Johann von Kreuz, ein geborner Spanier, widmete sich schon in seinen Jünglingsjahren dem Dienste der Kranken. In dem Carmeliterorden stieg er immer zu höheren Tugenden empor. Nach schweren Prüfungen, die er zu überwinden hatte, nahm ihn Gott zu sich im J. 1591. |
| | 23 | 7 37 | 4 23 | | 11 40 | — 46 33 | |
| | 24 | 7 38 | 4 22 | | Morg. | — 46 50 | |
| | 25 | 7 39 | 4 21 | | 2 7 | — 47 8 | |
| | 26 | 7 40 | 4 20 | | 3 24 | — 47 26 | |
| | 27 | 7 41 | 4 19 | | 4 42 | — 47 45 | |
| | 28 | 7 42 | 4 18 | | 6 2 | — 48 5 | |
| | 29 | 7 43 | 4 17 | | 7 20 | — 48 26 | |
| Merkur hat seine größte heliocentrische nördliche Breite d. 1. Nov. | 30 | 7 44 | 4 16 | 5 A 2 | 8 ☾ 30 | — 48 48 | |

## Witterungs-Angaben.

**November.** Zu Anfang des Monaths sind noch einige hübsche Tage; aber den 11. beginnt der Vorwinter, der bis zum 25. December anhält. Heiteres Wetter ist immer nur von kurzer Dauer; denn der November ist der nasseste und traurigste Monath im ganzen Jahre. Anhaltender Regen und unfreundlicher Himmel, die meisten Nebel im Jahre, viele Winde, empfindlich nasse Kälte, nach Leopoldi oft schon Schnee, besonders auf dem Gebirge, verscheucht die Menschen in die geheitzten Wohnstuben; denn draußen ist alles öde und leer. Am 22. tritt der eigentliche oder physische Winter ein.

Knauers Wetterprophezeihung. Der November fängt schön an, hat aber am 5. und 6. große Winde, darauf 2 Regentage; dann wird es wieder schön bis zum 16. mit Ausnahme der zuweilen sich zeigenden Nebel, vom 17. wird es kalt und trüb bis 27., und darnach regnerisch bis zu Ende.

| Wochent. | Monatst. | Allgemeiner Kalender. für Katholiken und Protestanten. | | Griechisch-russischer November. | Jüdischer III. islam 5591. | Türkisch-arab. VI. Dschemadi el-achir 1246. | Lauf des ☽ Z. | Gr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Mi. | 1 | Eligius † | Longinus | 19 Abdias | 15 | 15 glückl. T. | ♏ | 5 |
| Do. | 2 | Bibiana M. | Candida | 20 Greg. v. Dec. | 16 | 16 | ♏ | 19 |
| Fr. | 3 | Franz Xav. † | Cassania | 21 Mar. Opfer. | 17 | 17 24 Tsum. | ♐ | 3 |
| Sa. | 4 | Barbara M. | Barbara | 22 Philemonti | 18 12 Sabb. | 18 | ♐ | 16 |
| 49) Kath. Johannes im Gefängnisse. Matth. 11, 2 — 10. Prot. Es werden Zeichen geschehen. Luc. 21. | | | | | | | | |
| So. | 5 | C 2 Adv. Sab. A. | 2 Adv. Abigail | 23 E 26 Amphiloch. | 19 | 19 | ♐ | 29 |
| Mo. | 6 | Nikolaus B. | Nikolaus | 24 Katharina | 20 | 20 | ♑ | 12 |
| Di. | 7 | Ambr. B. † ☾ | Agathon | 25 Clemens | 21 | 21 | ♑ | 24 |
| Mi. | 8 | Maria Empf. | Maria Empf. | 26 Georgius | 22 | 22 | ♒ | 6 |
| Do. | 9 | Leocadia | Joachim | 27 Jak. M. | 23 | 23 | ♒ | 18 |
| Fr. | 10 | Melchiades P. † | Judith | 28 Steph. Mart. | 24 Lichtanzünd | 24 25 Tsum. | ♓ | 0 |
| Sa. | 11 | Damas. P. | Damasus | 29 Paramon | 25 13 Sabb | 25 | ♓ | 12 |
| 50) Kath. Vom Zeugniß Johannis in Bethania. Joh. 1, 19 — 29. Prot. Johannes im Gefängnisse. Matth. 11. | | | | | | | | |
| So. | 12 | C 3 Ad. Maxent. | 3 Adv. Epim. | 30 E 1 Adv. Andr. | 26 | 26 | ♓ | 24 |
| Mo. | 13 | Lucia M. | Lucia | 1 Dec. Nah. | 27 Tempel- | 27 | ♈ | 6 |
| Di. | 14 | Spiridion | Nicasius | 2 Habakuk Pr. | 28 weihe | 28 | ♈ | 18 |
| Mi. | 15 | Quat. Iren. ● † | Ignatius | 3 Sophonias | 29 Altarfest | 29 | ♉ | 0 |
| Do. | 16 | Eusebius | Ananias | 4 Barbara | 30 | 1 Redscheb | ♉ | 12 |
| Fr. | 17 | Lazarus B. † | Lazarus | 5 Sabbas | 1 Tebeth | 2 26 Tsum. | ♊ | 25 |
| Sa. | 18 | Gratian B. † | Wunibald | 6 Nikolaus B. | 2 14 Sabb | 3 | ♊ | 8 |
| 51) Kath. Im 15. Jahre des Kaisers Tiberius. Luc. 3, 1 — 6. Prot. Vom Zeugniß Johannis. Joh. 1. | | | | | | | | |
| So. | 19 | C 4 Adv. Nem. | 4 Adv. Nemes. | 7 E 2 Adv. Ambros. | 3 | 4 | ♊ | 20 |
| Mo. | 20 | Theophras | Ammon | 8 Patapius | 4 | 5 | ♋ | 3 |
| Di. | 21 | Thomas Ap. | Thomas Ap. | 9 Mar. Empf. | 5 | 6 | ♋ | 17 |
| Mi. | 22 | Zeno † ☽ | Beata | 10 Menas | 6 | 7 | ♌ | 0 |
| Do. | 23 | Victoria | Dagobert | 11 Daniel | 7 | 8 | ♌ | 14 |
| Fr. | 24 | Adam u. Eva † | Adam u. Eva | 12 Spiridion | 8 | 9 27 Tsum. | ♍ | 29 |
| Sa. | 25 | H. Christfest | H. Christfest | 13 Eustratus | 9 15 Sabb | 10 | ♍ | 13 |
| 52) Von Tödtung der Propheten. Matth. 23, 34 — 39. | | | | | | | | |
| So. | 26 | C Stephan M. | Stephan M. | 14 E 3 Adv. Thyrsus | 10 Fast. | 11 | ♍ | 28 |
| Mo. | 27 | Joh. Evang. | Joh. Evang. | 15 Eleutherius | 11 | 12 | ♎ | 13 |
| Di. | 28 | Unschuld. Kind. | Unsch. Kind. | 16 Aggäus Pr. | 12 | 13 glückl. | ♎ | 28 |
| Mi. | 29 | Thomas B. ☾ | Jonathan | 17 Daniel Pr. | 13 | 14 Tage | ♏ | 12 |
| Do. | 30 | David | David | 18 Sebastian | 14 | 15 28 Tsum. | ♏ | 27 |
| Fr. | 31 | Sylvester | Sylvester | 19 Bonifacius | 15 | 16 | ♐ | 11 |

*) Den 7. Dec. ist in der Lombardie Festtag, nähmlich L'Ordinazione di S. Ambrogio.

| Beobachtungen und Erscheinungen an dem Monde und der Sonne. | M. | Sonnen- Aufg. U. M. | Sonnen- Untg. U. M. | Mondes- Aufg. U. M. | Mondes- Untg. U. M. | | Mittl. Zeit im wahren Mittag. U. M. S. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 Letztes Viertel Dienstag den 7. um 4 Uhr 21 Min. Morg. | 1 | 7 45 | 4 15 | 5 56 | | Der abnehmende Mond geht bey Tage unter. | 11 49 10 |
| Neumond Mittwoch den 15. um 9 Uhr 25 Min. Morg. | 2 | 7 46 | 4 14 | 6 57 | | | — 49 32 |
| Erstes Viertel Mittw. d. 22. um 11 Uhr 48 Min. vor Mittern. | 3 | 7 47 | 4 13 | 8 3 | | | — 49 56 |
| Vollmond Mittw. den 29. um 3 Uhr 7 Min. Nachm. | 4 | 7 48 | 4 12 | 9 12 | | | — 50 20 |
| | 5 | 7 49 | 4 11 | 10 17 | | | — 50 44 |
| | 6 | 7 50 | 4 10 | 11 20 | | | — 51 10 |
| | 7 | 7 50 | 4 10 | Morg. | | | — 51 35 |
| | 8 | 7 51 | 4 9 | 1 27 | | | — 52 1 |
| | 9 | 7 52 | 4 8 | 2 28 | | | — 52 28 |
| Erdferne des ☾ den 11. Erdnähe des ☾ den 27. | 10 | 7 53 | 4 7 | 3 29 | | | — 52 55 |
| | 11 | 7 53 | 4 7 | 4 30 | | | — 53 23 |
| | 12 | 7 54 | 4 6 | 5 28 | | | — 53 51 |
| Der Mond geht durch den Äquator nach Süden den 8., nach Norden den 23. Größte nördliche Abweichung des ☾ den 1. und 29., größte südliche den 16. | 13 | 7 54 | 4 6 | 6 27 | | | — 54 19 |
| | 14 | 7 55 | 4 5 | 7 24 | | | — 54 48 |
| | 15 | 7 55 | 4 5 | 8 18 | 4 A. 37 | | — 55 17 |
| | 16 | 7 56 | 4 4 | | 5 26 | | — 55 46 |
| | 17 | 7 56 | 4 4 | | 6 21 | | — 56 16 |
| | 18 | 7 56 | 4 4 | | 7 21 | | — 56 45 |
| | 19 | 7 56 | 4 4 | | 8 25 | | — 57 15 |
| | 20 | 7 56 | 4 4 | | 9 33 | | — 57 45 |
| Die Sonne rückt aus dem Schützen in das Zeichen des Steinbocks Mittwoch den 22. Dec. Morgens um 7 Uhr 13 Min. — Winter-Sonnenwende. | 21 | 7 57 | 4 3 | | 10 41 | Der zunehmende Mond geht bey Tage auf. | — 58 15 |
| | 22 | 7 57 | 4 3 | | 11 51 | | — 58 45 |
| | 23 | 7 57 | 4 3 | | Morg. | | — 59 15 |
| | 24 | 7 56 | 4 4 | | 2 19 | | — 59 45 |
| | 25 | 7 56 | 4 4 | | 3 36 | | 12 0 15 |
| | 26 | 7 56 | 4 4 | | 4 51 | | — 0 45 |
| | 27 | 7 56 | 4 4 | | 6 5 | | — 1 15 |
| | 28 | 7 55 | 4 5 | | 7 12 | | — 1 44 |
| Merkur hat seine größte heliocentrische südliche Breite den 25. December. | 29 | 7 55 | 4 5 | 4 A. 35 | 8 11 | | — 2 13 |
| | 30 | 7 54 | 4 6 | 5 40 | | | — 2 43 |
| | 31 | 7 54 | 4 6 | 6 48 | | | — 3 11 |

Kleines Stammbuch der Heiligen, oder Erinnerungstafel an die Nahmenspatrone und Kirchenfeste.

5. December. Sabbas, von reichen und ansehnlichen Eltern geboren, begab sich in die Einsamkeit, und stiftete mehrere Klöster in Palästina. Bey Tage beschäftigte er sich mit der Handarbeit, und die Nacht brachte er im Gebethe und in heiligen Betrachtungen zu. Seinen Jüngern zeigte er den Weg in eine selige Ewigkeit, in die er im J. 531 einging.

10. December. Melchiades bestieg im J. 311 den päpstlichen Stuhl. Unter seiner Regierung trat der höchst beglückte Zeitpunct ein, daß die christliche Kirche von dem Joche der heidnischen Verfolgung, die volle 3 Jahrhunderte dauerte, befreyet wurde. In dieser längst erwünschten Ruhe beschloß dieser heilige Papst sein Leben im J. 314.

28. December. Die unschuldigen Kinder. Herodes, von den 3 Weisen belehrt, daß sie den neugebornen König der Juden anzubethen gekommen wären, ließ alle zweyjährigen Knaben im ganzen Bethlehemischen Bezirke tödten. Die Kirche ehrt sie als Marterer, die wegen Jesus Christus ihr Leben verloren haben.]

## Witterungs-Angaben.

December. Den 21. erreicht der Vorwinter sein Ende und der astronomische Winter beginnt. Beynahe der ganze Monath hat trüben, unfreundlichen Himmel; nur wenige Tage sind, an welchen die Sonne scheint. Alles ist düster, neblicht, kalt, im Gebirge viel Schnee, in der Ebene der meiste Schnee um die Mitte des Decembers. Um das Christfest große Kälte, manchmahl aber auch Mangel an Schnee und mäßig kalt, und dann sagt der Landmann: „Grüne Weihnachten, weiße Ostern;" „wenn der Winter beginnt, so kommt die Kälte gegangen;" „gelindes Wetter um Weihnachten ist ein Vorbothe, daß die Kälte lang hinaus dauern wird;" „wenn es nicht vorwintert, wintert es nach."

Knauers Wetterprophezeihung. Der December ist den 1. schön, wird dann ungestüm bis 15., vom 16. bis 20. kalt, den 21., 22. bis 29. trüb mit Schnee und darauf sehr kalt. — Der in diesem Monathe beginnende Winter tritt eigentlich schon zu Anfang Decembers ein, er ist kalt und hat Schnee bis in den Februar, der sich etwas gelind anläßt; um die Hälfte ist er sehr kalt bis zum 4. März, wo starke Sturmwinde beginnen.

# Bemerkungen.

Dieses Jahrbuch enthält für jeden Monath zwey Seiten. Auf der ersten Seite sind die vollständigen Kalender für Katholiken, Evangelische, Griechen (nach altem Styl), Juden und Türken enthalten. Alle zu feyern gebothenen Festtage sind roth gedruckt, die sogenannten halben Feyertage aber nur mit durchschossener Schrift angegeben. Jedem Sonntage ist der Sonntagsbuchstabe beygefügt. Jeder Wochentag wird nähmlich, wie es in diesem Kalender zu Anfang des Januars geschieht, mit einem Buchstaben, von A bis G fortlaufend, bezeichnet, so daß am 1. Januar A, am 2. B u. s. w. gesetzt wird. Der Buchstabe, welcher nun auf den 1. Sonntag trifft, gilt dann für alle übrigen Sonntage des Jahrs, und heißt der Sonntagsbuchstabe. Die letzte Spalte bildet der Lauf des Mondes oder die Angabe der Zeichen des Thierkreises und der Grade, welche der Mond täglich den ganzen Monath hindurch durchwandert. Die Thierzeichen selbst, welche auf Seite 7 aufgeführt sind, werden auf verschiedene Weise erklärt und ausgelegt. Nach einem alten ägyptischen Kalender, der etwa 2000 Jahre vor Christi Geburt verfertiget worden ist, soll jedes Gestirn ein Bild der Jahrszeit enthalten, in der es bey Sonnenuntergang im Osten steht. Damahls stand die Sonne im Löwen am höchsten, und von da oder mit dem heliacischen Aufgang des Syrius fing das Jahr an. Nach einer andern Auslegung soll der Widder den März andeuten, weil um diese Zeit die Schafe lammen; der Stier den April, weil da die meisten Kühe kalben; die Zwillinge, die ursprünglich als Ziegenzwillinge vorgestellt wurden, den May, weil die Ziegen alsdann jungten; der Krebs deutet auf den scheinbaren Rückgang der Sonne im Junius, weil sich dann die Sonne wieder nach Süden herabzusenken anfängt. Der Löwe sollte die heißen Tage des Julius anzeigen. Die Jungfrau mit der Aehre zeigte auf den Erntemonath oder August; die Wage auf die Gleichheit des Tages und der Nacht im September (oder nach einer andern Deutung die gute Eintheilung und Abwägung der gesammelten Früchte bis auf die zukünftige Ernte). Der Scorpion bezeichnete die im October sich einfindenden bösartigen Seuchen, der Schütze erinnerte an die beste Jagdzeit im November, und der Steinbock war das Bild des scheinbaren Heraufsteigens der Sonne nach dem 21. December. Der Wassermann verkündigte die Regenzeit im Januar, und die Fische deuten die Leichzeit der Fische im Februar an.

Die Zeichen der Mondesviertel sind den einzelnen Tagen beygefügt, um die Leser aufmerksam zu machen; der Eintritt jedes Viertels ist auf der folgenden Seite genauer angegeben.

Eine gewöhnliche Kalenderzugabe sind die katholischen und protestantischen Evangelien.

Die beweglichen Feste sind, wie bekannt, immer nach dem Eintritte der Ostern geordnet. Die ganze Festrechnung gründet sich auf einen Beschluß der Nicäischen Kirchenversammlung im IV. Jahrh., den der Papst Gregor XIII. bey seiner neuen Kalenderform gleichfalls befolgte. Ostern muß nähmlich immer an jenem Sonntage gefeyert werden, welcher dem ersten Vollmonde nach dem Frühlings-Aequinoctium folgt. Gregor XIII. schlug zur Aufsuchung dieses Ostervollmondes die cyklische Rechnung, nähmlich die Epakten vor; die Protestanten hingegen setzten bey ihrer Annahme des neuen Kalenders solchen nach genauer astronomischer Rechnung fest. Da aber die astronomische Rechnung in gewissen Jahren mit der cyklischen nicht übereintrifft, so veranlaßte dieß, daß die Protestanten zuweilen Ostern an einem andern Sonntage feyerten, als die Katholiken. Um den daraus entstandenen Unordnungen abzuhelfen, beschlossen die protestantischen Stände 1776 auf dem Reichstage zu Regensburg, den Oster-Vollmond gleichfalls mit den Katholiken nach der cyklischen Rechnung zu bestimmen, und so künftig mit ihnen Ostern immer an demselben Sonntage zu feyern.

Die zweyte Seite enthält zuerst die Dauer des kürzesten und längsten Tages in jedem Monathe; die genaue Angabe der Mondesviertel, die Erdnähe und Erdferne des Mondes, den Stand der Sonne und den Stand einiger Planeten. Auch sind hier die eintretenden Finsternisse in Kürze bemerkt. Die Mondesviertel haben auf die Witterung keinen Einfluß.

In drey Spalten ersieht man Auf- und Untergang der Sonne, Auf- und Untergang des Mondes und die mittlere Zeit im wahren Mittag. Alles ist nach dem Meridiane und der Polhöhe von Wien, als dem Mittelpuncte des österr. Kaiserstaates, berechnet worden. Die Stunde des Untergangs doppelt genommen gibt die Länge des Tages, und die Stunde des Aufgangs doppelt genommen gibt die Länge der Nacht. Wegen der zu- oder abnehmenden Abweichung der Sonne vom Aufgang bis Untergang ist der halbe Tagbogen vor Mittag bald um 1 Minute in Zeit kürzer oder länger, als nach Mittag. Aus der Angabe der mittlern Zeit im wahren Mittag ersieht man, um wie viel die Uhren zu früh oder zu spät gehen. Um so viel Minuten und Secunden die mittlere Zeit nach 12 Uhr steht, um so viel gehen die Uhren zu früh, und um so viel Minuten und Secunden die mittlere Zeit vor 12 Uhr trifft, um so viel gehen die Uhren zu spät.

Zuletzt kommen die Witterungs-Angaben, da diese, bey all ihrer Unzuverlässigkeit, doch in jedem Kalender gesucht werden; und endlich das Verzeichniß der vorzüglichsten Heiligen mit kurzen Andeutungen aus deren Biographie.

# Aufsätze aus der Land- und Hauswirthschaft,

## oder Mittheilung der neuesten Erfindungen und Verbesserungen zum Nutzen der Wirthschafts-Besitzer.

## Erste Abtheilung: Landwirthschaft.

### 1) Ueber den Einfluß des Mondes auf die Witterung *).

Während die ausgezeichnetsten Astronomen und Physiker Italiens, Frankreichs und Teutschlands, unter welchen wir bloß die Nahmen Oriani, Arago, Olbers anführen wollen, nach vieljährigen sorgfältigen Beobachtungen des Mondes und der Witterung so oft erklärten, daß der Mond keinen Einfluß auf letztere habe, trat kürzlich wieder ein Herr J. D. auf, und wärmte im London Journal, Jun. 1828 alle die alten Fabeln aus Virgil, Toaldo, Cotte ꝛc auf, die sich alte Weiber erzählen. Man muß gestehen, daß, so helle Köpfe England in einzelnen wenigen Fällen aufzuweisen hat, die Masse seiner Gelehrten und Halbgelehrten, so wie die ganze Masse des Volkes einen solchen Köhlerglauben, einen solchen Hang zum Wunderbaren und einen so schändlichen Aberglauben besitzt, daß sie weit hinter uns Teutschen zurückstehen. Hr. D. theilt eine Tabelle mit, die er auf philosophische Betrachtung der Attraction der Sonne und des Mondes in ihren verschiedenen Stellungen gegen die Erde nach dem berühmten Sir Will. Herschel entwarf, und durch vieljährige wirkliche Beobachtung bestätigt fand. Man wird nach derselben, sagt er, die Witterung, die nach dem Eintritte des Mondes in ein Viertel folgt, mit solcher Genauigkeit bestimmen können, daß man sich nur selten täuschen wird. Er meint, daß man 6 gegen 1 wetten könne, daß der Neumond ein anderes Wetter bringen wird (!). Wenn seine Tabelle nicht zutrifft, so meint Hr. D., müsse der Wind daran Schuld seyn. So viel wissen aber die Bauern auch bey uns, indem sie den Wind den Wettermacher nennen, nicht den Mond, und sich so oft ärgern, daß das neue Viertel das schlimme Wetter nicht besser machte. Woher es aber kommt, daß der Wind jetzt da, und in einer Stunde darauf dort her bläst, das wissen unsere Bauern so wenig als die Engländer.

### 2) Verbesserte Drillmaschine für jede Art von Samen, 1827 erfunden von dem Engländer Th. Patrick Coggin.

Diese Drillmaschine soll bloß allein mit dem Fuße in Thätigkeit gesetzt werden. Sie besteht aus einer Büchse (oder gewöhnlich aus zwey kleinen Büchsen, da man sie lieber doppelt hat), in welcher sich der zu säende Same befindet. Der ganze Apparat läuft auf Rädern, und führt zwey kegelförmige Setzeisen, wovon das eine größer ist als das andere. Diese Eisen sind in einer und derselben Linie mit der Oeffnung des Drill-Trichters angebracht, und stehen in solcher Entfernung von einander, wie es zur gehörigen Legung des Samens gerade nöthig ist. Der Samen wird mit der demselben zur Beymengung nöthigen Erde in einen Rumpf oder Trichter geschüttet, aus dem er unten wieder herausfällt. Vor diesem Trichter befindet sich auf der Erde das Setzeisen nebst seinem Griffe, und steht mit zwey Hebeln in Verbindung, wovon der untere, der an der Achse des Haupt-Laufrades hängt, an seinem vordern Ende einen kleinen Kegel führt, der als Merker dient. Der obere Hebel treibt die Achse des Cylinders innerhalb des Rumpfes, welcher die Samen liefert. Wenn nun, nachdem der Grund zur Aussaat gehörig vorbereitet ist, die Maschine in Thätigkeit gebracht werden soll, stellt der Säemann seinen Fuß an den untern Hebel, um damit das Setzeisen niederzudrücken. Zugleich dreht er den aufrecht stehenden langen Griff mit der Hand, und bildet dadurch ein kegelförmiges Loch, in welches der Samen fallen soll. Zugleich wird auch der untere Hebel niedergedrückt, wodurch der kleine vorderste Hebel mit dem Kegel ein Zeichen in die Erde macht, auf welches das größere Setzeisen beym nächsten Vorrücken gebracht wird. Wenn nun der Säer seinen Fuß hebt, zieht er das Setzeisen aus dem Loche, und bringt dasselbe und die ganze Maschine vorwärts auf den Punct, der vorher durch den kleinen Kegel bezeichnet wurde. Der Druck des Fußes auf den untern Hebel tritt wieder, wie vorher, das Setzeisen in die Erde, und macht ein anderes kegelförmiges Loch, und während dieses geschieht, bewegt der senkrecht stehende Griff den obern kleinen Hebel, der den Speisungs-Cylinder im Rumpfe dreht, so, daß der Samen mit der Erde in das kegelförmige Loch fällt, welches durch das vorher niedergedrückte Setzeisen gebildet wurde. Auf diese Weise wird, durch Wiederhohlung der Bewegungen dieser Maschine, so wie sie vorrückt, jedesmahl der Punct bezeichnet, wo das Loch getreten und der Samen gelegt werden soll. Da der Säer an jedem Fuße sich einen solchen Apparat anschnallen kann, so kann er damit doppelt drillen. — Es ist aber nicht bekannt, ob mit diesem Apparate wirklich gearbeitet worden sey. (Wer derselbe mehr interessirt, findet die Zeichnung im London

*) Vgl. über die Mittel, welche wir besitzen, um die muthmaßliche Witterung voraus zu bestimmen, nach London, im Jahrg. 1827 dieses Kalenders, S. 33—36.

Journal of Arts, Novemb. 1828, p. 88., oder in G. Dingler's polytechnischem Journal, 1829, Bd. XXXI. H. 5. S. 332.)

3) Ueber die Cultur der Oehlgewächse.

Der bekannte Franzose Dubrunfaut schrieb eine interessante Abhandlung über die Cultur der Oehlgewächse und die Gewinnung des Oehles. Die Samen, die man im Großen zur Oehlgewinnung baut und benutzt, sind: Sommer- und Winterreps (Brassica campestris L.), Mohn (Papaver somniferum), Leindotter (Myagrum sativum L., Camelina sativa), Lein und Hanf. Mehrere dieser Oehlgewächse dienen als gegenseitige Aushülfe. So ist der Sommer- oder Märzreps eine Aushülfe für den Winterreps, wenn dieser durch den Frost oder aus was immer für einer Ursache im Winter gelitten hätte; so ist der Mohn Aushülfe, wenn der Sommerreps verderben sollte, und Leindotter kann mit Vortheil gebaut werden, wenn der Mohn mißräth. Den Winterreps baut man im Julius und erntet ihn im October; der Sommerreps wird im März im freyen Wurfe gebaut. Man erntet ihn im Julius und schlägt ihn im September nach der Getreideernte. Der Mohn wird im April gesäet, zweymahl gejätet, blüht im Julius und wird im August geerntet. Einmahliges Jäten reicht hin. Den Lein säet man im März und erntet ihn im Julius. Man säet ihn aus der Hand und jätet ihn sorgfältig. — Die Oehlsamen haben verschiedene Formen und Eigenschaften, die man durch das Gesicht und den Geruch, an der Trockenheit, der Farbe und an dem Fleische derselben erkennt. Man beurtheilt den Oehlgehalt derselben dadurch, daß man einige Kerne davon zwischen den Nägeln der Daumen zerdrückt, wo man sie dann mehr oder weniger fett finden wird. (Das Beste und Vollständigste über den Bau der Oehlgewächse schrieb Böhmer in seiner technischen Geschichte der Pflanzen, Th. I. S. 626 flg.)

4) Ueber Mittel gegen den Mehlthau oder Honigthau und die Blattläuse im Hopfen. Von Thom. Carpenter.

Carpenter, ein sehr aufmerksamer Beobachter und Besitzer eines der besten Mikroskope in England, bemerkte, daß die weiblichen Blattläuse gegen Ende Sommers eine Art feinen Gewebes bilden, in welches sie ihre Eyer legen, und daß dieses Gewebe von den hinzukommenden Männchen, die mit Flügeln versehen sind, in die Luft geführt und so auf Bäume verpflanzt wird, die sie nicht selten als sogenannter Mehlthau verheeren; daß diese Blattläuse in den westlichen Umgebungen Londons, von Kew her, bey Tottenham, zuweilen so häufig in der Luft schweben, daß sie ganze Wolken zu bilden scheinen *). — Carpenter empfiehlt nun gegen den Honig- und Mehlthau in Hopfengärten durch Kinder Frauenkäfer sammeln und nach den Hopfengärten verpflanzen zu lassen, da er beobachtet hat, daß die Frauenkäfer immer ihre Eyer auf die vom Mehlthau ergriffenen Bäume legen, und die Raupen, die in wenigen Tagen aus diesen Eyern auskriechen, begierig die verheerenden Blattläuse auffressen *).

Da Carpenter fand, daß die Blattläuse auf Rosen häufig von einem Ichneumon angestochen sind, der seine Eyer in den Bauch derselben legt (die Art dieses Ichneumons hat er aber nicht entomologisch bestimmt angegeben), so ist es zu verwundern, daß er nicht auch die Aufmerksamkeit auf die Ichneumonen selbst empfohlen hat. Es ist überhaupt auffallend, daß die Entomologen und Oekonomen das Studium über die Vermehrung und Wartung und Pflege der als Raupenvertilger so äußerst nützlichen Ichneumonen so sehr vernachläßigen konnten. Diese Thiere sind das einzige Mittel, dessen sich die Natur im Großen, aber ganz im Stillen, zur Vertilgung der schädlichen Raupen bedient. Wir hören mit jedem Jahre immer mehr und mehr über die Verheerungen der Raupen klagen, die sich in dem Maße vermehren, als man mehr Obstbäume pflanzt, und die Vögel von denselben zu verscheuchen sucht; wir haben aber noch nie gehört, daß ein Oekonom Ichneumon-Schwärme in seinem Obstgarten zur Schützung der Obstbäume gegen Raupen angelegt hätte.

5. Ueber verschiedene Gegenstände der Gartencultur. Aus den Verhandlungen der Londoner Horticultural-Society.

1. Feigenbäume gegen Frost zu schützen. Der Geistliche Georg Swayne zu Dyrham bey Bath theilte der Gesellschaft folgende Methode mit, Feigenbäume gegen den Frost zu schützen. Er bemerkte, daß, wo immer eine Fruchtknospe eines Feigenbaumes zufällig von dem wollenen Bande bedeckt war, mit welchem die Zweige des Baumes an der Wand angebunden wurden, die Feige, die sich in der Folge aus dieser Knospe entwickelte, schneller heranwuchs und größer wurde, als andere Feigen desselben Astes, deren Knospen nicht bedeckt waren. Hieraus schloß er, daß, wenn man den ganzen Theil eines Astes, der im nächsten Jahre Früchte tragen soll, auf ähnliche Weise mit einer leichten Decke schützen könnte, dasselbe bey allen Früchten Statt haben würde. Er nahm daher altes bedrucktes Papier, das noch einiges Licht durchläßt (was er für wichtig hielt) und doch zugleich ein schlechter Wärmeleiter ist, das zugleich auch weniger Nässe durchläßt, als unbedrucktes Papier, und umwickelte den fruchttragenden Theil der Aeste mit langen Streifen desselben zu Anfang des Winters, wo bereits Frost zu befürchten stand; nicht früher, damit das Holz vollkommen ausreifen konnte. Den mit dem Papierstreifen ganz nach chirurgischer Pra-

*) Man wird sich hierüber nicht wundern, wenn man bedenkt, daß Réaumur schon vor beynahe 100 Jahren gefunden hat, daß eine Blattlaus in der fünften Generation 5904 Millionen 900000 Nachkommen hat, und daß sie in einem Jahre oft 20 Generationen zählt.

*) In Gegenden, wo die Blattläuse häufig sind, vermehren sich auch die Frauenkäfer auf ein furchtbare Weise.

ris gefatschten Ast befestigte er dann mittels zweyer Wollenbänder, damit das Papier festhielt, am Anfang und am Ende des Verbandes an der Wand. Zu Ende Aprils, wo man bereits vor Reifen sicher ist, und die Knospen schwellen, nahm er den Verband an einem milden trüben Tage behutsam ab, und er hatte davon den besten Erfolg.

2. Mittel, Bäume, die an der Wand gezogen werden, vor dem Erfrieren zu schützen. Der engl. Geistliche William Phelps in Mellyfont Abbey, bey Wels in Somersetshire, schützte seine an der Wand gezogenen Bäume mittels breiter Leitern, die hoch genug waren, um über die obersten Zweige der Bäume emporzureichen, wenn sie am Grunde der Mauer 3 Fuß weit von derselben abstanden, und in dieser Richtung an der Wand angelehnt waren. Er gab einer Leiter 6 Fuß Breite, und ließ die Sprießeln 1½ Fuß weit von einander. Diese Sprießeln umwickelte er mit Heu und Stroh, das bey der schiefen Stellung der Leitern, in Bündeln so über einander hing, daß die kalten Winde abgehalten wurden, und doch noch Luft genug unter dieser Bedeckung war. Diese Leitern stellte er im Frühjahre vor, wenn die Bäume anfingen zu blühen, und ließ sie so lang vor denselben, bis sich bereits die Frucht angesetzt hatte. Die Leitern sind sehr leicht gebaut, damit sie nicht theuer kommen. Schon seit mehreren Jahren bedient sich der Erfinder dieser Methode mit dem besten Erfolge.

3. Ananas-Beete ohne künstliche Hitze und Dünger zu treiben. J. Dall, Gärtner bey dem Earl of Hardwicke zu Wienpole, in Cambridgeshire, benutzte Mac-Phial's Plan bey den Ananas-Beeten, um sie ohne künstliche Hitze und Dünger zu treiben. Er umgab das Beet vorne mit einem 5 Fuß, rückwärts mit einem 7 Fuß hohen und überall 5½ Fuß dicken Blätterwalle, und that immer frische Blätter hinzu, so wie die alten sich setzten. Ein solcher Wall dauert, ohne daß man ihn umzustürzen braucht, ein Jahr lang; nach dieser Zeit können die Blätter noch zum Treiben des Spargels, Seekohls rc. verwendet werden und im dritten Jahre geben sie die beste Pflanzenerde. Die Länge seines Ananas-Beetes betrug 160 Fuß, wozu er jährlich 700 einspännige Pferdekarren voll Blätter braucht, die 300 Kubik-Yards (1 Yard = 3 Fuß) Pflanzenerde geben. Von den 5 bis 600 Stöcken Ananas, die er in diesem Beete zieht, schneidet er jährlich an 150 Früchte.

4. Rhabarber zu treiben. J. Smith, Gärtner bey dem Earl of Hopetown, zu Hopetown in Schottland, treibt die Rhabarber auf folgende Weise. In der letzten Woche des Decembers nimmt er Wurzeln von Rheum hybridum, deren Fasern er so viel möglich schont, und pflanzt sie in leichter Erde in Kisten von 3 Fuß Länge, 1 F. 8 Zoll Breite, und eben solcher Tiefe. Er stellt diese Kisten in einen Champignonkeller oder in einen dunklen Ort, und begießt die Erde von Zeit zu Zeit. Wenn die Temperatur in diesem Gewölbe + 10 bis 14° Reaum. ist, werden die Wurzeln treiben, und die Schößlinge im Februar schön weiß geschnitten werden können. Wenn man alle 3 Wochen eine frische Kiste einsetzt, so wird man für eine gewöhnliche Familie immer genug von diesem Gemüse bis in den April haben, wo man die Wurzeln dann in den Garten verpflanzt, und auf ähnliche Weise weiter benutzt. — Auf dem festen Lande kennt man dieses wohlschmeckende und gesunde frühe Gemüse noch viel zu wenig, so wie man überhaupt den Rhabarberbau für Apotheker sehr vernachläßiget. Unsere Alpenländer könnten viel mit dieser Pflanze gewinnen.

5. Budakohl, wie Seekohl gebleicht. J. Wedgewood, Esqu., sandte der Horticultural Society Proben von Budakohl (Buda-Kale), den er wie Seekohl mittels darüber gestürzter Gartentöpfe bleichte. Was soll aber dieser Budakohl seyn? Ist er vielleicht Crambe tatarica, die in Ungarn und auch in Mähren wild wächst, und deren Wurzeln von den Landleuten genossen werden? Haben vielleicht reisende Engländer diese Crambe aus Ungarn nach England gebracht, und nach der Hauptstadt Ungarns, Ofen (Buda), Buda-Kale genannt?

6. Mistbeeten- und Treibhäuser-Fenster einzukitten. Bey der gewöhnlichen Weise, die Glastafeln in die Mistbeeten- und Treibhäuser-Fenster einzukitten, ist der Kitt der Sonne und der Witterung zu sehr ausgesetzt, verliert nur zu bald seine Zähigkeit, löst sich ab, und das Wasser verdirbt nicht bloß die Rahmen, sondern tröpfelt auch in die Beete und Häuser und verdirbt die Pflanzen. J. Read, in Newington Causeway, in Southwark, half diesem Nachtheile dadurch ab, daß er die Fensterleisten zu jeder Seite mit einer tiefen Furche versieht, in welche der Kitt über das eingesetzte Glas eingestrichen wird, und die Leiste sich oben zu beyden Seiten schief abdacht. Wenn frische Glastafeln eingesetzt werden müssen, nimmt man den Kitt mittels eines Hohlmeißels aus der Furche heraus.

7. Bau der Teltower Rüben (auch unter den Nahmen Scheer-Rüberln, bayrische oder Pfada-Rüberln bekannt). Der Preuße Hunneman, der in London ansäßig ist, sandte der Gesellschaft mehrere Wurzeln der Teltower Rübe, einer kleinen, kostbar schmeckenden, spindelförmigen Rübe von der Größe der kleinen langen Rettige, die vorzüglich um Teltow im Brandenburgischen gebaut wird, und begleitete sie mit folgender Notiz über die Art, dieselben zu bauen. Man säet sie zwey Mahl des Jahrs, ein Mahl im April, wo sie dann im Julius oder noch früher geerntet werden können; das andere Mahl im August, wo sie in das umgestürzte Kornfeld oder in einen frühen Kartoffelacker gebaut werden. Diese letzteren werden erst spät im Herbste ausgezogen, und nachdem man sie von den Kronen und Fasern gereinigt hat, in Kellern in trockenem Sande aufbewahrt. Sie gedeihen nur in dem sandigen Boden von Teltow gut, und arten auf besserem Boden schnell aus. Sie vertragen durch-

aus keinen Dünger. Als Gemüse werden sie auf verschiedene Weise zugerichtet genossen, vorzüglich aber gedämpft.

8. Mittel gegen Würmer in Gartentöpfen. Baronet Ch. Miles Lambert Monck bemerkte, daß Tuberosen, die er in Töpfen zog, und die freudig blühten, plötzlich anfingen zu kränkeln. Er fand eine Menge kleiner Würmer auf der Oberfläche der Erde in diesen Töpfen, und vermuthete, daß diese die Ursache des kranken Zustandes der Tuberosen wären. Er ließ daher einen Aufguß von Nußblättern bereiten, und die Töpfe mit demselben begießen. Dieß trieb die Würmer aus der Erde an die Oberfläche derselben, wo man sie leicht wegschaffen konnte. Auf diese Weise wurde 14 Tage lang fortgefahren, bis kein Wurm mehr zum Vorscheine kam. Die Tuberosen erhohlten sich. An anderen Töpfen wiederhohlte Versuche gaben denselben Erfolg. Der Aufguß dient nicht bloß als Mittel gegen die Würmer, sondern auch als Dünger. Man nimmt frische Nußblätter, übergießt sie mit siedend heißem Wasser, und läßt sie bedeckt stehen, bis der Aufguß erkaltet.

9. Zwiebeln früh so zu treiben, daß sie reichlich Zwiebelbrut (Kindeln) ansetzen. J. Smith, Gärtner bey Esqu. Hammond zu Potter's Bar, bey Barnet, behandelt die Zwiebeln in dieser Hinsicht auf folgende Weise. Er säet den Samen in einem Gartenbeete sehr dicht Ende April's aus, und verdünnt die Sämmlinge nicht, wodurch sie also sehr klein bleiben. Ein Theil davon wird zum Pöckeln verbraucht, und der Ueberrest, der ungefähr die Größe einer Nuß haben wird, im Januar oder Februar nur so tief in die Erde gesteckt, daß sie kaum davon bedeckt werden. Wenn sich nun die Blüthenschäfte zeigen, bricht er dieselben ab, und nun wird die Zwiebel, statt wieder einen Blüthenschaft zu treiben, junge Zwiebeln um die alte Zwiebel ansetzen (sogenannte Kindel treiben). Auf diese Weise erhielt er Zwiebelstöcke von 2 bis 3 Zoll im Durchmesser im frühesten Frühjahre, zu einer Zeit, wo die frischen Zwiebeln kaum so dick wie eine Federspule zu seyn pflegen. Bis Ende Junius sind diese Zwiebeln ganz ausgewachsen, lassen sich aber nicht gut aufbewahren.

10. Birnen auf Mispeln gepfropft. Capitän Rainier pfropfte Birnen auf Mispeln. Die Schößlinge waren sehr stark und 3 Fuß lang, und trugen im zweyten Jahre, trugen aber immer nur Zwergbäume.

11. Methode, die schwarze Damascener Traube zu ziehen. Wilh. Rosse sandte der Gesellschaft einige Trauben der schwarzen Damascener Sorte (Black Damascus grape) aus seinem Garten zu Stoke Newington, die er mit dem Blumenstaube Royal-Muscadine befruchtete. Er fügte die Bemerkung bey, daß die schwarze Damascener Traube sehr schwer ansetzt, und daß er mehrere Jahre lang von einer Rebe dieser Sorte nur 3 bis 4 Beeren statt einer Traube erhielt, indem alle übrigen Blüthen abortirten. Er zog daher einige Fechser derselben zwischen den Reben der Sorte, die in England unter dem Nahmen Royal-Muscadine bekannt ist, so daß die Blumen von dem Blumenstaube derselben befruchtet werden konnten. Der Versuch gelang. Alle Blumen des schwarzen Damasceners wurden jetzt befruchtet, und die zwischen die Royal-Muscadine hingepflanzten Reben des schwarzen Damasceners brachten jetzt strotzende Trauben, während die einzeln dastehende Damascener Rebe fortfuhr, einzelne Beeren zu bringen. Als er blühende Trauben von Traubensorten, die reichlich stauben (Blüthenstaub erzeugen), über diese scheinbar unfruchtbare Rebe hing, und die Blüthen derselben mit dem Blumenstaube der andern fruchtbaren befruchtete, brachte auch diese unfruchtbare Rebe schöne Trauben.

12. Erdbeeren zu pflanzen. Joh. William, Esqu. zu Pitmaston bey Worcester, zieht seine Erdbeeren auf folgende Weise mit gutem Erfolge. Er zieht in sein Gartenbeet tiefe Furchen von Norden gegen Süden, so daß die Erde zwischen den beyden einander zunächst stehenden Furchen 9 Zoll überdie Fläche des Beetes emporragt, und setzt die Erdbeer pflanzen in die obere Kante der dadurch entstehenden Erdrücken; die Seitenabhänge dieser letzteren bedeckt er zu jeder Seite mit flachen Ziegeln, und findet, daß die Erdbeerstöcke auf diese Weise reichlichere und schmackhaftere Früchte tragen, die auch früher reifen. Auf einem Boden, der wenig gute tragbare Erde hat, wird diese, bey obigem Verfahren, mehr aufgehäuft, die Ziegel halten die Erde feucht und doch warm; man darf weniger gießen, und die Früchte werden nicht so schmutzig. Für Gärtner, die Erdbeeren für den Markt ziehen, wird dieses Verfahren vielleicht zu kostbar seyn; für Gärten wohlhabender Privaten ist es aber allerdings zu empfehlen.

13. Das Abtröpfeln der Fenster in den Glashäusern zu verhindern. Die schädlichen Folgen dieses Tröpfelns der Fenster in den Glashäusern sind den Besitzern kostbarer Gewächse in ihren Glashäusern nur zu bekannt. Joh. Rigden Neame bringt an den Leisten der Fenster seines Glashauses kleine kupferne Rinnchen an, die von oben an dem obersten Ende des Fensters bis zur untern Querseite desselben herablaufen, und bey dieser das Wasser in eine allgemeine Rinne leiten, die dasselbe aus dem Hause führt.

14. Wanzen und Schildläuse aus Ananas-Beeten zu vertreiben. Joh. Bowers, Gärtner bey Lord Selsey, West Dean House in Sussex, empfiehlt zur Vertreibung der Wanzen und Schildläuse aus den Ananas-Beeten ein Waschwasser aus 3 Gallons Regenwasser, 2 Pf. weicher Seife, 16 Loth schwarzem Schwefel und 4 Loth

Kampher; alles dieses wird eine Stunde lang gekocht, worauf man 6 Loth Terpentin zusetzt. Man zieht die Pflanzen aus, putzt die Fasern von den Wurzeln, und taucht die Pflanze in eine Kufe, die mit dieser Flüssigkeit gefüllt ist, ungefähr 5 Minuten lang bey einer Temperatur von 120 bis 136° Fahr. Letztere Temperatur ist für die Queen und Sugar-loaf Ananas; die Antiguas und übrigen Sorten nehmen mit einer niedrigern Temperatur vorlieb, müssen aber doppelt so lang eingesenkt bleiben. Wenn die Pflanzen aus dieser Flüssigkeit kommen, muß man sie gut ablaufen lassen, und auf den Zug des Ananas-Hauses, die Wurzeln nach unten gekehrt, so lang stellen, bis sie trocken werden, worauf man sie in kleine Töpfe versetzt, die man in ein frisches Lohbeet versenkt, dessen Boden mit Düngerfutterung gehörig warm geholten wird. Man beschattet sie am Tage gegen die Sonne, und gibt ihnen etwas Luft, bis sie anfangen zu wachsen, was in der dritten Woche nach dem Versetzen geschehen wird.

15. Ananasse mit Düngerwärme zu ziehen. Joh. Breese, Gärtner bey Sir Th. Neare, Baronet, zu Dagnom Park in Essex, zieht seine Ananasse mit Düngerwärme in einem Treibhause, in welchem Reben getrieben werden, auf folgende Weise. Das Haus ist 44 Fuß lang und 17 Fuß breit. Die Grube ist 36 Fuß lang und 9 Fuß breit. Er brachte starke Querbalken über der Grube an, auf welche er, der Länge nach, 6 Reihen beweglicher Stellen aufsetzte, so daß er 6 Reihen Ananasse, 20 in jeder Reihe, stellen konnte; die Töpfe standen 6 Zoll tief. Von diesen Stellen bis an den Grund der Grube war eine Tiefe von 3 Fuß, wovon 2½ Fuß mit fettem Stalldünger, die übrigen 8 Zoll mit altem erschöpften Dünger aus einem Gurkenbeete ausgefüllt waren. Die Ananaspflanzen wurden auf die Stellen gebracht, wo dann der Dampf aus dem frischen Dünger durch den erschöpften, oben auf liegenden Dünger mild genug aufstieg, um die Reben und die Ananasse zugleich zu treiben. Wenn die Hitze sehr nachließ, wurde sie dadurch erneut, daß man den Dünger des Monaths ein Mahl umkehrte, und etwas frischen Dünger zusetzte, und wenn die Wärme auch dann wieder nachließ, wurden von Stelle zu Stelle Schieferplatten gelegt, so daß sie den ganzen Raum bedecken, und alle Zwischenräume werden mit Lohe ausgefüllt. Letzteres ist nicht nöthig, bis die Hitze nicht sehr nachgelassen hat, und dann muß man noch dafür sorgen, daß die Lohe nicht zu warm wird, und die Wurzeln der Pflanzen abbrennt. Wo man kann, lassen sich Blätter statt der Lohe nehmen. Breese hat auf diese Weise schönere Ananasse und Trauben gewonnen, als man durch Ofenwärme zu Stande bringt. Es scheint ihm, daß eine Vorrichtung möglich wäre, um den Dünger zu erneuern, ohne daß man die Pflanzen selbst rühren darf. (Diese und noch andere Gegenstände sind ausführlicher abgehandelt im Repertory of Patent-Inventions, 1829, Januar und Februar.)

6) Eine neue Wand, welche die Wärme zu den Bäumen, die an derselben gezogen werden, durchläßt, so daß die Früchte früher reifen, erfunden von dem Engländer Andr. Hunt Grubbe, Schreiber zu St. Bernard, 1828.

Der Zweck des Patentes, welches Hunt auf seine Wand nahm, ist der, die Sonnenstrahlen durchzulassen, so daß diejenige Seite, welche der Einwirkung derselben beraubt ist, die zum Ausreifen der Früchte nöthige Wärme erhalten, und man eine nördliche Wand auf eben so vortheilhafte Weise mit Bäumen bepflanzen kann wie eine südliche. Der Erfinder läßt diese Wand aus einer Menge Rahmen aus Guß- oder Hammereisen verfertigen, die so wie gewöhnliche Fenster eingerichtet und tragbar sind, alle 6 oder 8 Fuß mittels Falzen und Bolzen mit einander verbunden, und mittels schief gestellter eiserner oder hölzerner Stützen, die an der Erde auf hölzernen oder steinernen Unterlagen ruhen, in senkrechter Lage erhalten werden. Diese Rahmen können auch zwischen Pfeilern, die aus Ziegelsteinen aufgemauert sind, festgehalten werden. Die offenen viereckigen Felder dieser Rahmen werden entweder mit dünnen Schiefer-, oder mit Eisenblech- oder Gußeisenplatten oder mit Glastafeln ausgefüllt, die wie Glastafeln in den Fensterrahmen, eingekittet werden. An diese Wand wird dann ein sogenanntes Treillage (Gitterwerk) aus feinen hölzernen Latten oder eisernen Stängelchen angebracht, und mittels Schrauben oder auf irgend eine andere Weise zu beyden Seiten befestigt, und dann wie gewöhnlich mit Obstbäumen bepflanzt. — Wird eine solche Wand aber zu beyden Seiten mit Bäumen bepflanzt, so werden die Blätter der an der südlichen (Sonnen-) Seite gepflanzten Bäume beynahe alle Sonnenstrahlen auffangen, und wenig Wärme ihren Nachbarn an der nördlichen (Schatten-) Seite zukommen lassen. Wird jedoch diese Methode dort angewendet, wo die Lage eines Gartens eine große Schattenseite an einer Wand nothwendig macht, und wird Glas statt des Schiefers oder Blechs hierzu gewählt, so kann eine solche Wand recht vortheilhaft seyn, außerdem, daß vielleicht noch eine schöne Aussicht in die nächsten Umgebungen erhalten wird, und wenn auch dieß nicht der Fall ist, schon die größere Menge Lichtes allein dem Garten verschönern und verbessern muß. Solche Wände aus Glas, 7½ Fuß hoch, würden wohl 6 bis 7 Mahl theurer kommen, als gleich hohe, 9 Zoll dicke Ziegelmauern; sie würden aber das Capital an dem Obste in Menge und Güte desselben reichlich verzinsen. (Repertory of Patent-Inventions, Febr. 1829.)

7) Mittel gegen die Verheerungen der Rübenfliege auf den Rübenfeldern.

Von Carl Poppy d. jüng. zu Witnesham bey Ipswich.

Es ist sehr zu bedauern, daß weder Poppy, welcher von der Londoner Aufmunterungs-Gesellschaft die goldene Ceres-Medaille für diese Mittheilung erhielt, noch der Secretär der Gesellschaft bekannt machte, was diese Rübenfliege für ein Insect ist. Denn den Engländern ist jedes fliegende Insect eine Fliege, und die Rüben werden von gar vielen Insecten heimgesucht. Es heißt hier bloß: Die Rübenfliege (Turnip Fly) ist ein kleines Insect, das sich die ganze warme Zeit über an den Hecken und Rainen in größerer Anzahl aufhält und sich von da auf jene Saaten wirft, die ihm angenehm sind, unter welche vorzüglich die Rüben gehören, so lang sie noch sehr zart sind; wenn ihr Laub rauch geworden ist, sind sie gegen diese Angriffe sicher. Poppy behauptet, daß diese Fliege seit einigen Jahren größere Verheerungen in den Rübenfeldern anrichtet, als ehemahls, und er erklärt sich diese Erscheinung dadurch, daß die jetzt gezogenen Rüben in allen ihren Theilen durch die längere Cultur feiner und zarter geworden sind, und länger in Samenblättern bleiben. Man hat bemerkt, daß, wenn Rübenfelder nach und nach, in Zwischenräumen von ein Paar Tagen mit Rüben bestellt werden, die Rüben weit mehr von dem Insecte leiden, als wenn die Felder an einem und demselben Tage bebaut werden. Die Fliege wandert immer auf das später bestellte Feld und zieht den Rüben-Sämlingen nach. Sutlon schlug daher vor, alle Rübenfelder zugleich, an einem und demselben Tage zu bestellen, was jedoch bey sehr großen Feldern nicht wohl möglich ist. Man hat ferner bemerkt, daß dort, wo der Samen zufällig zu dicht angebaut wurde, und folglich die Pflänzchen lange Zeit über sehr zart und saftig bleiben, die Fliege vorzüglich ihre Verheerungen anrichtet. Paul zu Starston schlug vor, einige Stellen im Felde absichtlich sehr dicht zu besäen, um die Fliegen dahin zu locken, und sie daselbst mit der Walze oder durch aufgestreutes Stroh, das man darüber anzündet, zu zerstören. Der Erfolg blieb zweifelhaft; indessen wurden Hayward und Taylor dadurch zu dem Versuche veranlaßt, die Rüben sehr dicht zu säen, damit auch dann noch etwas übrig bleibt, wann die Fliege viel abgefressen hat. Der Versuch gelang zwar, schlug aber auch wieder häufig fehl; die Pflanzen wuchsen langsam, gaben wenig Ertrag, und große Rüben geben immer mehr Nutzen als kleine. Poppy empfiehlt nun die Rüben zu drillen, und zwar um die Hälfte dichter als gewöhnlich, zugleich aber jede zweyte Furche abwechselnd sehr dicht, und eigentlich nur für die Fliegen, zu besäen. Da ferner die Fliege die weiße Rübe der schwedischen vorzieht, so ist es besser, die weiße Rübe für die Fliegen in den Furchen dicht, und die schwedische dünn zu säen. Was von ersterer übrig bleibt, wird bey der ersten Behackung der schwedischen Rübe umgestürzt. Seit Poppy diesen Plan befolgt, hat er herrliche Rübenernten, während seine Nachbarn bey der gewöhnlichen Methode fast immer leer ausgehen. (Gill's technological Repository, März 1828.)

8) Ueber Anlage von Waldbaumpflanzungen auf öden Gründen und die Vortheile des tiefen Pflügens und Düngens bey solchen Anlagen. Von W. Withers.

Besitzer großer wüster Strecken im nördlichen England und in Schottland haben seit mehreren Jahren diese Wüsteneyen dadurch zu einigem Ertrage zu bringen versucht, daß sie stellenweise Löcher in die Erde gruben, einen Baum in das Loch pflanzten, und den übrigen Wachsthum desselben der Natur überließen. Wenn von 50 auf diese Weise gepflanzten Bäumen einer auf diesen Wüsten fortkam, war doch etwas gewonnen. Dieses wilde Pflanzensystem fand in England Nachahmer, die da glaubten, die Heidenstrecken um ihre Sommerhäuser auf eine ähnliche Art schnell und wohlfeil in Lustwälder verwandeln zu können. Withers belehrt nun diese Herren durch sein Beyspiel, und durch das Beyspiel vieler seiner Nachbarn, die diesem neuen Systeme huldigten, und dadurch ihr Geld zum Fenster hinaus warfen, daß, wenn man wüstes Land wirklich in einen schnell nutzbaren Wald verwandeln will, man alles Heidekraut und Farrenkraut abbrennen, die Asche liegen lassen, den Boden tief umgraben, fleißig behauen und vom Unkraute rein halten müsse. Damit hat er nun nichts Neues gesagt; es ist aber leider nur zu oft nöthig, das Alte hundert Mahl wieder zu sagen, um Vorurtheile und Irrthümer zu beseitigen, und eines der am tiefsten eingewurzelten Vorurtheile bey den Reichen ist dieses, daß man überall sparen müsse. So werden oft kleine Summen erspart und große verworfen und auch noch an Zeit verloren. Viele Landwirthe wollen sparen, sogar an Dünger sparen, und vergessen, daß sie, je mehr sie düngen, desto reichlicher ernten. (Transactions of the Society d'Encouragement, Bd. 40.)

9) Bienenwirthschaft in Rußland. Von Jos. Busch, Gärtner des Kaisers von Rußland.

Das hier beschriebene Verfahren ist durch vieljährige Erfahrung erprobt, und nicht nur einträglich, sondern auch human, indem es das grausame Tödten der armen Bienen überflüssig macht. Der Bienenkasten, aus 2 Zoll dicken Bretern gezimmert, hat 14 Zoll ins Gevierte und ist 7 Zoll tief. Er wird, wenn er voll ist, 24 Pf. Honigwaben, also 20 Pf. Honig und 4 Pf. Wachs geben. Wenn ein Schwarm eingestellt wird, sind drey solcher Kästen nöthig. In Zeit von 3 Wochen haben die Bienen dieses Schwarmes die beyden oberen Kästen beynahe voll gebaut, und in diesem Falle muß ein leerer Kasten unter diese drey Kästen gestellt werden. Jeder Kasten hat vorne eine viereckige Oeffnung, 3 Zoll hoch und 2¼ Zoll breit,

und als Flugloch eingeschnitten, so daß ein zinnerner Schieber mit kleinen Löchern, durch welche Luft eingelassen werden kann, wenn man die Bienen einsperren muß, sich darin bewegen kann. An den breiten Seiten sind 6 zinnerne, ½ Zoll dicke Leisten genau und eben mit der Kante des Kastens eingelassen. An der Rückseite werden kleine Glasscheiben, 3 Zoll hoch, 4 Zoll breit, angebracht, um durch sie die Bienen arbeiten zu sehen. Die Gläser dürfen nicht eingekittet werden, indem das Oehl den Bienen schädlich ist; man kann sie mit Nägelchen oder Stiften befestigen. Ein kleiner darüber befindlicher Schieber dient zur Abhaltung des Lichtes, indem, wenn man die Gläser unbedeckt ließe, die Bienen dieselben bald mit dunklem Wachse bedecken und unnütz machen würden. Ein Bret dient als Unterlage, worauf die Kästen über einander stehen; es ist an allen Kanten schief abgedacht, damit das Wasser leicht ablaufen kann. Ueber den obersten Kasten kommt ein Deckel, und auf diesen ein flacher Stein oder Ziegel, um ihn festzuhalten. Es sollen 4 Kästen über einander stehen; der oberste wird mit 1, die übrigen mit 2, 3, 4 bezeichnet, so daß 4 der unterste ist. Wenn ein neuer Schwarm die Kästen einen Monath lang eingenommen hat, also ungefähr Ende Augusts (in Rußland), wird man die 3 oberen, und auch einen Theil von Nr. 4 voll Honigwaben finden. Nr. 1 wird dann beynahe ganz leer von Bienen seyn, und kann auf diese Weise abgenommen werden, daß man einen Meißel zwischen 1 und 2, und dann einen dünnen Draht einführt, den man hierauf durchzieht, und so den Honigkuchen flach durchschneidet. So wäre nun Nr. 1 und 2 getrennt. Nr. 1 wird abgehoben und Nr. 2 mit einem Deckel belegt. Die darunter befindlichen Bienen haben also nicht im Geringsten gelitten. Man stellt nun einen leeren Kasten unter Nr. 4, und bringt den Kasten Nr. 1 alsogleich in seine Wohnung, indem er sonst von den benachbarten Bienen ausgeraubt würde. Wenn man Bienen aus einem alten Strohstocke in solche Holzkästen bringen will, muß ein runtes Loch in den Deckel geschnitten und der Strohkorb darüber gestellt werden. Die Bienen werden bald in die leeren Kästen hinabarbeiten und den alten Stock verlassen, der Ende Sommers abgehoben werden kann. Loudon empfahl Bienenstöcke aus hohlen Baumstämmen, wie man sie in Rußland und Polen hat; diese aber werden nicht taugen, denn sie werden, wie die Strohkörbe, mehrere Jahre alte Honigwaben enthalten. Er hat sich auch geirrt, wenn er sagt, daß man in Rußland und Polen die alten Stöcke nicht zerstört, was allerdings geschieht, da jeder Stock 2 bis 3 Schwärme und häufig auch noch sogenannte Jungfernschwärme gibt. Das Klima von England ist den Bienen nicht sehr günstig, da es dort oft plötzliche Regen gibt, während die Bienen ausgeflogen sind, und viele derselben während des Regens auf dem Heimfluge verunglücken. Im südlichen Rußland hält die Witterung länger an, ist periodisch; wenn es anfängt zu regnen, dauert es wochenlang, und die Bienen bleiben zu Hause. Während des Winters, wo es anhaltend kalt ist, werden die Bienenstöcke in trockenen Kellern, in frostfreyen Behältern gehalten. Es ist indeß zu zweifeln, ob Bienen je erfrieren können. Sie leben oft in Rußland unter Dächern, und zwar viele Jahre hindurch. Bienen schwärmen nur, wenn sie nicht Raum genug finden; gibt man ihnen genug Platz, so schwärmen sie nicht. Hält man sie im Winter warm, so fressen sie viel, und sterben dann aus Mangel an Futter, weil man ihnen nicht genug geben kann; ihr eigener Vorrath ist erschöpft, ehe der Winter vorüber ist *). Es geschieht zuweilen, daß ein Stock Bienen genug hat und doch nicht vorwärts kommt; hier ist entweder der Weisel (die Königinn) gestorben, oder der Stock wurde von Räubern angefallen. Um zu sehen, ob der Weisel fehlt, darf man nur Acht geben, ob die Bienen, wenn sie heimfliegen, sowohl gelben als pomeranzenfarbigen Blumenstaub eintragen. Wenn der letztere fehlt, so fehlt auch der Weisel. Wenn man aber glaubt, daß fremde oder Raubbienen sich eingenistet haben, so darf man nur des Nachts (vorausgesetzt, daß man für den nächsten Morgen eines schönen Wetters gewiß ist) den zinnernen Schieber herablassen. Am nächsten Morgen öffnet man dann, wenn die übrigen Bienen bereits im vollen Fluge sind, einige Stunden nach Sonnenaufgang den Schieber, aber nur wenig, und so, daß die Bienen kaum ausfliegen können, und pudert die Bienen weiß ein (jedoch nicht mit Mehl, wodurch der Honig in Gährung gerathen würde); so viele jetzt ausfließen, so viele Räuber waren über Nacht im Stocke. Man darf, um sich davon zu überzeugen, nur beobachten, wie viel eingestaubte Bienen wieder zu dem Stocke oder zu dem nächsten Stocke heimfliegen, und auch auf die Stöcke der Nachbarn Acht geben; auf diese Weise wird man bald finden, wohin die Räuber gehören. Sind sie bey dem Nachbar zu Hause, so muß man die Stöcke wechseln, und eben dieß muß geschehen, wenn die Räuber sich unter den eigenen Stöcken fänden. Wenn der Nachbar dieß nicht gutwillig thun will, wird in Rußland Gewalt gebraucht. Man muß den Stock des Nachts schließen und am ganzen folgenden Tage geschlossen halten, vor dem zinnernen Schieber aber verdorbenen Honig hinstellen. Fehlt der Weisel, so muß man den Stock unter die übrigen schwächeren Stöcke ganz oder theilweise eintheilen. (Die Ab-

*) Diese beyden rein aus der Natur der Bienen aufgegriffenen Bemerkungen: daß Bienen nie erfrieren, und folglich das Füttern der Bienen im Winter eine Thorheit ist, indem die Biene ein Winterschläfer ist; daß ferner Bienen nur deßwegen schwärmen, weil es ihnen an Raum fehlt, bilden die einzig feste Basis einer guten Bienenzucht. Aus Unkenntniß wurden jährlich lieber Millionen Bienen ermordet, als daß man diese harmlosen, wohlthätigen Thierchen nur schlafen und sich vermehren ließ, um zehntausend Mahl mehr Honig und Wachs zu haben, als man wirklich hat.

bildung dieser Kästen findet man in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1828, Bd. XXX. H. 4., S. 300.)

10) Englischer Obstschirm und Fliegenfalle.

Um Obstfrüchte, die an den Wänden oder Geländern gezogen werden, gegen Vögel, Wespen, Fliegen ꝛc. zu schützen, auch um im Frühjahre die Blüthen gegen den Reif zu sichern, bedient man sich im Garten der London Horticultural Society zu Chiswik folgender Erfindung Joh. Dick's, Gärtners zu Ballindean. Es sind längs dem Mauerwerke in angemessener Entfernung große hölzerne Rahmen, in welche eine Art von Fliegengitter oder andern durchsichtigen Leinenzeuges ausgespannt ist. Ganz unten ist ein Tuch gezogen, um die abfallenden Früchte aufzunehmen. (Näher beschrieben und abgebildet im Mechanic's Magazine, 1828, Nr. 251, und in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1828, Bd. XXX. H. 1, S. 68.)

Die Fliegenfalle wird schon seit langer Zeit in den Gärten zu Welbeck gebraucht. Sie besteht aus einer sechs- oder mehreckigen Laterne, die unten offen ist, und aus deren oberm Giebel man 3 Gläser heraus nimmt. Eine zweyte, oben geschlossene, übrigens der vorigen vollkommen ähnliche und nur etwas weitere Laterne wird über die vorige gestürzt und dort, wo sie etwa nicht genau an dieselbe anschließen sollte, so daß eine Fliege durchkönnte, mit Moos oder Wolle verstopft und auf 3 Steine gestellt, so daß die Fliegen und Insecten von unten hinein können. Man legt nun unter diese Laterne faules Obst oder braunen Zucker, wodurch die Fliegen bald unter die Laterne gelockt werden. Wenn sie nun wieder davon fliegen wollen, fliegen sie allezeit in die Höhe, und fliegen hier durch die offenen Scheiben, woraus sie nie wieder zurück herabkehren, sondern in dieser Laterne herumsummen und schwärmen, bis sie ermattet oder todt niederfallen. Eine solche Laterne macht eine vollendete Niederlage unter den Fliegen, wenn sie an eine Baumwand oder in ein Treibhaus hingestellt wird, denn alle Fliegen suchen in diese Laterne zu kommen, in welcher sie so viele ihre Brüder und Schwestern flattern sehen. Man kann diese Fliegenfalle den Krämern, die mit Eßwaaren handeln, nicht dringend genug empfehlen. (Abgebildet an denselben Orten.)

11) Die neuen blechernen Milchgeschirre, eine herrliche Erfindung für Milchwirthschaften.

Man bediente sich früher allgemein hölzerner Gefäße, in welche man die Milch goß, damit die Sahne (das Obers) sich gehörig aufwerfen konnte. Allein diese hölzernen Gefäße hatten manche Unbequemlichkeiten, und darunter war keine der geringsten die, daß sie schwer zu reinigen waren, und daß die zurückgebliebenen Milchtheile leicht versäuerten und die nun hineingegebene Milch verderbten. Es war daher schon längst wünschenswerth, bessere Gefäße zu diesem Gebrauche herzustellen; Baird in den schottischen Eisenwerken bey Whitburn in West-Lothian, verfertigte zuerst eiserne Milchgefäße, die wegen ihrer Zierlichkeit und Reinlichkeit bald allgemein beliebt wurden. Sie werden inwendig rein ausgekratzt und verzinnt, damit die Milch nicht mit dem Eisen in unmittelbare Berührung komme, an der Außenseite aber mit Farbe oder Firniß überstrichen, um sie gegen den Rost zu schützen. In Rücksicht der Formen gleichen sie Schüsseln mit ganz flachem Boden und schief aufwärts steigenden hohen Wänden; an Größe sind sie nach dem Bedarfe der Wirthschaft verschieden. Solche Gefäße sind nicht allein dauerhaft und leicht zu reinigen, sondern sie haben auch den gehörigen Grad von Kühle, welcher zum Aufwerfen der Sahne so unumgänglich nöthig ist, und sind nicht allein deßwegen, sondern auch weil sie um ⅓ mehr Sahne liefern, den hölzernen Gefäßen vorzuziehen.

Wir freuen uns, bey dieser Gelegenheit anzeigen zu können, daß diese Gefäße seit 1829 in Wien weit vollkommener und schöner verfertigt werden, als in Schottland und England, und daß diese Wiener Milchgefäße die Probe bereits glücklich bestanden haben. Sie werden nähmlich auf der neuen, von Hrn. Stephan Edlen von Keeß erfundenen, und von ihm in Verbindung mit dem Handelsmanne Anton Falkbeer errichteten Metallwaaren-Preßmaschine, welche nun von dem Letztern betrieben wird, durch Druck aus dem schönsten verzinnten inländischen und englischen Bleche aus einem einzigen Stücke verfertigt. Außer ihrer ausgezeichnet reinen und glatten Oberfläche empfehlen sie sich auch noch dadurch, daß sie nirgends eine Löthstelle haben. Ihr Inhalt steigt in der Regel von 1 bis 3 Wiener Maß.

Man sehe darüber J. Twamley's Werk über die vortheilhafteste Benutzung der Milch bey Wirthschaften. Aus dem Englischen übersetzt von C. Mayer, Mitglied der Landwirthschaftsgesellschaft in Wien. 8. Wien, Möschner und Jasper, 1823, wo S. 23 bemerkt ist, daß die eisernen verzinnten Milchgefäße wegen ihrer großen Dauerhaftigkeit, leichten Reinigung und ergiebigern Absonderung der Sahne vor allen übrigen zu empfehlen sind.

In der Nähe Wiens und überhaupt aller Städte, wo der Bedarf an Sahne bedeutend ist, sollte keine Milchwirthschaft es versäumen, sich mit solchen weißblechernen Milchgefäßen zu versehen. Die Niederlage ist in Wien am Bauernmarkte.

# Zweyte Abtheilung: Haus- und Stadtwirthschaft.

12) Ueber den Einfluß der Temperatur auf Gebäude. Von Vicat.

Der gelehrte Naturforscher Vicat beobachtete schon früher die periodischen Bewegungen der Brücke zu Souillac in Frankreich, welche durch die Veränderungen der Temperatur hervorgebracht wurden, und setzte seitdem seine Beobachtungen noch weiter fort. Er sagt unter anderm Folgendes: Wenn es wahr ist, daß ein Stein von 1 Meter in der Länge sich bey einem Temperaturwechsel von 100 Grad bis Null am hundertgradigen Thermometer um ¼ Millimeter verkürzt, so würde dieß bey einem Wechsel von 40 Grad in der Temperatur, wie derselbe gewöhnlich in unserm Klima Statt hat, $\frac{1}{10}$ Millimeter betragen, und da bey unseren Bauten im großen Style nicht selten Steine von 2 Meter Länge vorkommen, so sieht man, wohin dieß führen könnte. Der Mörtel an den senkrechten Fugen, der solchen Bewegungen des Steines nicht folgen kann, spaltet sich oder löst sich von einem Steine ab, und bleibt an dem zunächst stehenden hängen. Auch der Mörtel im horizontalen Gefüge, der von dem oben aufliegenden und von dem unten liegenden Steine in entgegengesetzten Richtungen gezogen wird, wird von den Flächen derselben los. Man sieht zwar alles dieses nicht mit freyem Auge, es hat aber dessenungeachtet wirklich Statt, und die Festigkeit der Mauer wird dadurch zerstört. Man hat längst bemerkt, daß Mauerwerk aus behauenen Steinen sich am leichtesten abbrechen läßt, und daß bey manchen Stürmen am Meere ungeheure Steine durch den Wellenschlag aus dem Steindamme gleichsam hinausgeblasen oder hinausgeschluckt wurden, ohne daß die daneben liegenden Steine im mindesten verrückt oder erschüttert sind. Dieses rührt von den thermometrischen Einflüssen her, welche die Bindungskraft des Mörtels zerstören und denselben auf einen bloßen Keil herabbringen. Schon Vitruvius sagt, wo er vom Baue der Tempel spricht (B. IV. Cap. 4.), ausdrücklich, daß man, wenn man mit Bruchsteinen bauen will, die kleinsten wählen müsse, und wenn man mit Quadern oder Marmor baut, nur mittelmäßig große und gleich große, indem mittelmäßig große Steine nur mittelmäßige Gefüge geben, sich fester binden und daher dauerhafter sind. Eine Menge Beyspiele erläutern die Wahrheit dieser Lehre Vitruv's, und beweisen, daß die Römer den Mörtel bey großen Quadern für überflüssig hielten. Das Theater zu Nismes, die Wasserleitung am Gard, das pyramidenförmige Monument an der Vienne im Dauphiné ꝛc. bestehen aus großen genau behauenen Quadern, die ohne alle andere Verbindung, außer einer Lage Kalktünche von der Dicke eines Papierblatts, auf einander liegen. (Annales de Chimie et de Physique, Dec. 1827.)

13) Ueber die Austrocknung des Bauholzes *).

Der Engländer Joh. Stephen Langton zu Langton in Lincolnshire erfand 1825 eine zweckmäßige Methode, das Bauholz vor der Verwendung gehörig auszutrocknen. Es wird dabey der größte Theil des atmosphärischen Druckes beseitigt und zugleich künstliche Hitze angewendet, wodurch die Zeit, die man sonst zum Austrocknen des Holzes braucht, auf ungefähr zwey Mahl so viel Wochen beschränkt wird, als man bisher nach der gewöhnlichen Weise Jahre nöthig hatte. Die gewöhnliche Art, das Holz zu trocknen, besteht in Verdünstung der flüssigen Stoffe desselben, des Saftes, mittels der natürlichen Wärme der Atmosphäre, mit der Vorsicht, daß dasselbe gegen Wind und Sonne geschützt wird, indem es durch diese Risse bekommen und leiden würde. Dieses Trocknen durch die natürliche Wärme der Atmosphäre geschieht aber nur sehr langsam und unregelmäßig, und es hat mancher große Verlust dabey Statt, wenn es nicht unter einem Dache geschieht, das Regen und Schnee abhält. Unter Dach trocknen ist langweilig und kostbar, denn man braucht wenigstens drey Jahre von der Zeit des Fällens des Holzes an gerechnet, bis man dasselbe zum Schiffbaue anwenden kann; es ist folglich ein Holzvorrath für den Bedarf voller vier Jahre nöthig, und der Bedarf von drey Jahren muß unter Dach gehalten werden, wenn man nicht noch größern Verlust durch die Nässe erleiden will. Bey dem neuen Verfahren Langton's bedient man sich noch der Kraft einer Luftpumpe, um den Saft aus dem Innern des Holzes herauszuziehen, und wenn dadurch die Tendenz des Saftes nach außen vermehrt ist, kann ohne Gefahr des Springens eine höhere Temperatur, als die der Atmosphäre angewendet, folglich das Trocknen in weit kürzerer Zeit vollendet werden. Einige wiederhohlte Versuche werden bald das beste Verhältniß zwischen Zeit und Hitze bey verschiedenen Holzarten lehren. Was die Stärke und Dauerhaftigkeit betrifft, so wird bey dem neuen Verfahren, wie bey dem alten, der Saft durch Verdünstung davon getrieben; man wendet kein Auflösungsmittel an, welches das Holz angreifen könnte; es ist ferner offenbar, daß, da der Saft im Holze eine Flüssigkeit ist, auf welche die Temperatur leicht einwirkt, es für das Holz immer desto bes-

*) In Kurze angezeigt im Jahrg. 1829 dieses Kalenders, S. 42.

ser ist, je früher dieser aus jenem weggeschafft wird, wenn anders die Holzfaser sich gehörig zusammenziehen und ohne Nachtheil fest werden kann. Daß letzteres geschehen kann, erhellet aus den Mustern, aus welchen der Saft ausgezogen wurde. Sie sind dichter als jene, welche auf die gewöhnliche Weise getrocknet wurden, und haben dem Gewichte nach beynahe eben so viel verloren, nur sind sie etwas mehr zusammengeschrumpft. Der ausgezogene Saft ist eine beynahe wasserhelle, süßlich schmeckende Flüssigkeit von einem eigenen Geschmacke und widrigen schimmligen Geruche. Letzterer scheint von einer leichten flockigen Materie herzurühren, die in dem Safte schwimmt, und deutlich beweiset, daß, je früher das Holz von derselben befreyt wird, es desto besser ist. Da es nun scheint, daß durch das neue Verfahren diese Materie vollkommen weggeschafft wird, so scheint es, daß das Holz durch dasselbe dauerhafter werden müsse, und daß es in Hinsicht auf Stärke nicht das mindeste dadurch verliere.

Das Verfahren besteht darin, daß das Holz, nahmentlich jedes Bau- oder Werkholz, in luftdichte Gefäße gebracht wird, aus welchen die Luft mittels einer Luftpumpe zum Theil ausgezogen wird, und die während dieser Arbeit mittels eines Dampf- oder Wasserbades (welches letztere wieder mit Dampf geheißt wird), oder auch mittels eines Sandbades, in welchem der Sand durch Röhren geheißt wird, erwärmt werden, wodurch die Feuchtigkeit in diesem Holze in Gestalt von Dampf ausgetrieben, als solcher abgeführt, und in einem luftdichten Kühlapparate so verdichtet wird, daß das Holz dieselbe nicht mehr wieder einsaugen kann. (Der ganze Apparat ist beschrieben und mit Zeichnungen belegt in dem Repertory of Patent-Inventions, und in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1829, Bd. XXXI. H. 1. S. 26.)

In Wien hatte der Clavierlacher Streicher schon viel früher einen ähnlichen, aber weit einfacher wirkenden Apparat aufgestellt, aus welchem das Wasser gleich im flüssigen Zustande abgelassen wird. (Dieser Wiener Apparat, der wirklich in Ausübung gesetzt wurde, findet sich beschrieben in Stephan v. Keeß Darstellung des Fabriks- und Gewerbswesens, Th. I. 1819, S. 36.) Den ausländischen Werken und Zeitschriften ist der Fehler gemein, die in Oesterreich gemachten Erfindungen zu ignoriren.

14) Haus- und Gartenthore, die sich beym Einfahren von selbst öffnen.

Der englische Eisen- und Drahtgitterfabrikant Johann Parker in Middlesex, erfand im J. 1826 dieses sogenannte Zauberthor (sympathetic Park-Gate), das sich bey Annäherung der Kutsche von selbst öffnet, und hinter dem Wagen von selbst wieder schließt. Dieses Thor spielt durch einige in dem Fahrwege eingelegte Platten, die, wenn der Wagen darüber hinwegrollt, wie Gewichte niedersteigen, und auf gewisse Hebel wirken, die in einer Kiste unter der Erde verborgen sind. Durch diese Hebel wird ein Zahnrad in Bewegung gesetzt, welches einen Triebstock treibt, der an der Schwungleiste des Thores, oder an dem Schwungpfeiler einer Garten- oder Parkthür sich befindet, und so die Thür oder das Thor öffnet. Obwohl dieses Thor nur selten angewendet werden wird, aber in einzelnen Fällen doch wegen der Bequemlichkeit oder auch nur wegen der Sonderbarkeit erwünschlich seyn könnte, so wollte man hier darauf aufmerksam machen. Gefahr, daß ein Fremder denselben Weg benutzen könnte, ist damit nicht verbunden, da dieß durch eine kleine Vorrichtung ganz verhindert werden kann. (Wer sich über die Construction dieses Thors genauer unterrichten will, findet dasselbe genau gezeichnet und beschrieben im London Journal of Arts, Jan. 1828, und aus diesem in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1828, Bd. XXX. H. 2. S. 104.)

15) Darcet's Bereitung eines Brotes aus Kartoffeln, welches eben so viel thierische und stickstoffhaltige Substanz enthält, als das aus Weitzenmehl bereitete Brot.

Darcet wurde durch einen in England gemachten Vorschlag, das verdorbene Mehl durch Zusatz von Hausenblase (Fischleim) zu verbessern, aufgemuntert, mit diesem höchst wichtigen Gegenstande sich zu beschäftigen, und Versuche anzustellen, um alle wenig nahrhaften vegetabilischen Substanzen durch Zusatz einer hinreichenden Menge Gallerte zu animalisiren. Im J. 1821 machte er den Vorschlag, das Weitzenmehl mit Gallerte zu versetzen, um aus diesem Gemenge sehr nahrhaften Schiffszwieback zu bereiten; auch schlug er solchen Zwieback für die Reise um die Welt, welche unter dem Commando Durville's vorgenommen wird, vor. Außerdem rieth er auch Brot aus Kartoffeln zu verfertigen, welche durch Gallerte-Auflösung animalisirt worden sind. Nach Darcet's Untersuchung bestehen 100 Th. des Mehls, welches die Pariser Weißbäcker verwenden, aus 10 Th. Wasser, 10 Kleber, 73 Stärkmehl, 4 Zuckersubstanz, 3 gummig-klebriger Substanz. Die Kartoffeln, so wie man sie auf dem Markte kauft, enthalten in 100 Theilen: 72 Wasser, 2 Holzfaser, 26 Stärkmehl. Um die Kartoffeln so viel als möglich dem Weitzenmehle Behufs des Brotbackens zu nähern, müßte man also, wie es die Vergleichung dieser Analysen ergibt, 100 Theilen Kartoffel 4, 63 thierische Substanz und 1, 53 Th. zuckerige Substanz zusetzen. Durch Vermengung dieser drey Substanzen erhielte man offenbar eine Art Mehl, welches eben so nahrhaft und eben so leicht in Brot zu verwandeln ist, als das Weitzenmehl. Als thierische Substanz könnte man den Kartoffeln Gallerte oder Käsestoff zusetzen. Der Stärkesyrup oder der Traubenzucker würde eine sehr wohlfeile zuckerige Substanz abgeben.

Nach Darcet's Versuchen werden auf 240 Kilogramm Kartoffeln, die man mit Dampf kocht, 12 Kilo-

gramm Gallerte und 4 Kilogramm Stärke- oder Traubenzucker genommen. Um diesen Teig in Brot zu verwandeln, braucht man ihm nur noch durch Zusatz von Mehl die gehörige Consistenz zu geben, ihn mit Hefe zu versetzen, den Teig gähren zu lassen und das Brot auf die gewöhnliche Weise zu backen. Noch ökonomischer ist es, die mit Dampf gekochten Kartoffeln vermittelst einer der von Schwartz (in seinem Traité de la pomme de terre, p. 51) beschriebenen Maschine zerreiben und mit der Gallerte und dem Stärkezucker mengen zu lassen. Das Resultat der Versuche war, daß das animalisirte Kartoffelmehl nicht halb so viel, als das Weitzenmehl koste, und daß solches Brot in Spitälern, wo die Gallerte nichts kosten kann, nur den vierten Theil des gewöhnlichen Weitzenbrotes kosten würde.

### 16) Neues gläsernes Butterfaß.

Pellatt und Green erfanden ein neues gläsernes Butterfaß, welches ein sehr elegantes Tischgeräthe ist, und Herren und Damen Gelegenheit zu manchem Spaße bey Tische gibt, für welchen man sich die Butter auf diese Weise mit aller möglichen Reinlichkeit selbst bereiten kann. Das Ganze besteht aus einem Glascylinder, und in diesem steht eine senkrechte Achse mit 4 Blättern, die unter rechten Winkeln auf einander stehen, und an den Kanten eingeschnitten und durchlöchert sind. Inwendig an dem Cylinder sind noch 3 Blätter, die gleich weit entfernt von einander stehen und so ausgeschnitten sind, daß die Hervorragungen der Blätter des Cylinders durch die Ausschnitte derselben genau durchlaufen können. Die schnelle Umdrehung der Achse wird mittels einer Kurbel und zweyer Räder bewirkt, wovon das eine senkrechte mit der Kurbel, das andere horizontale mit der Achse des Cylinders in Verbindung steht. (Register of Arts, Nr. 38.)

### 17) Vazie's Patent-Kochofen.

Vazie hat den von ihm erfundenen Kochofen, der aber eigentlich nur ein Wasserbad ist, in der Londoner Industrie-Ausstellung 1828 aufgestellt, und ein eigenes Kochbuch dazu geschrieben. Der ganze Apparat besteht aus einem eisernen oder irgend einem metallenen Kessel von beliebiger Form und Größe, in welchem ein Gefäß aus Silber oder Zinn so eingesetzt oder eingehängt wird, daß der in dem Kessel erzeugte Dampf in den Raum zwischen dem Deckel des äußern Kessels und dem Deckel des eingehängten Gefäßes gelangen kann. Man bringt den Kessel über das Feuer und füllt ihn bis auf $\frac{1}{3}$ seiner Höhe mit reinem Wasser, hängt hierauf das Gefäß ein, gibt die zu kochende Speise in dasselbe und übergießt letztere mit kaltem Wasser nur so hoch, daß sie davon bedeckt wird, worauf man das Gefäß mit seinem Deckel und eben so den Kessel mit seinem Deckel schließt. Binnen einer halben Stunde wird das Wasser in dem Kessel kochen, und bald darauf wird auch das eingehängte Gefäß heiß genug werden, um das darin enthaltene Fleisch und Gemüse zu kochen, und immer denselben Grad von Hitze behalten. Der Schaum muß, so wie er sich entwickelt, abgenommen werden. In anderthalb Stunden ist alles in dem Gefäße gahr geworden. Man soll auf diese Weise 25 Procent an Fleisch ersparen, indem die Suppe um so viel kräftiger wird. Wenn in einem Ofen gekocht wird, ist kein Deckel auf dem Kessel, sondern nur auf dem Gefäße nöthig. (Register of Arts, Nr. 38.)

### 18) Wohlfeile Methode, Wasser zum Sieden zu bringen.

Schon vor mehreren Jahren wurde in England der Vorschlag gemacht, Wasser mit einem Löthrohre zum Sieden zu bringen, und zwar nicht ohne Erfolg, so daß dieses Verfahren dort ziemlich allgemein in Gebrauch kam. Das London Journal of Arts, 1828, May, lehnt sich aber dagegen auf, und behauptet, daß es keinen widersinnigern Apparat geben könne, indem die Hitze von der Seite angebracht ist, und das Metall durch das Löthrohr bald oxydirt wird. Es gibt dafür einen andern Apparat, der nicht nur besser ist, sondern auch um $\frac{1}{4}$ wohlfeiler zu stehen kommt. Er besteht aus einem kleinen metallenen Gefäße, das in einem Napfe steht, in welchem etwas Baumwolle mit brenzlig holzsaurem Aether ist, der recht gut statt des Alkohols gebraucht werden kann. Nach dieser Methode soll es nicht mehr als 3 Pfenige kosten, um ein kleines Gefäß voll Wasser zum Sieden zu bringen.

### 19) Reinigung des Honigs.

Der Apotheker B. Menegazzi gab neuerlich ein Verfahren bey der Honigreinigung an, welches sehr einfach und kräftig wirkend ist, und den Honig vollkommen durchsichtig macht, so daß, wie es nach anderen Methoden nicht selten geschieht, weder etwas von der Salpetersäure, noch auch von dem Serum der Milch zurückbleiben kann, wodurch der Honig nur zur Fäulniß geneigt gemacht wird. Nach Menegazzi's Methode wird der Honig mit $\frac{1}{3}$ seines Umfangs Wasser gemengt, gekocht, und demselben hierauf etwas von einem gesättigten Galläpfel-Absude zugesetzt, dieser gehörig damit gemischt, und noch 2 oder 3 Minuten lang damit im Sude erhalten, wo dann die Reinigung geschehen ist. Man sieht jetzt in der Flüssigkeit eine Menge Flocken schwimmen, die sich endlich zu Boden setzen und den Honig vollkommen durchsichtig zurücklassen, den man dann nur durch Wollentuch filtriren und abrauchen darf, um ihn in gehöriger Consistenz zu erhalten. Diese Methode läßt sich bey jedem, auch bey dem schlechtesten Honig anwenden, nur wird schlechter Honig dadurch in anderer Rücksicht nicht besser. Die Menge des zuzusetzenden Galläpfel-Absudes hängt von dem größern oder geringern Grade der Reinheit, und von der Gute der Galläpfel ab, weßwegen man diesen Absud nur nach und nach und in geringer Menge so lang

zusetzen darf, als sich Flocken zeigen. Nach jedem neuen Zugießen desselben muß wieder gekocht werden. Meistens reichen 4 bis 5 Quentchen Galläpfel auf 10 Pfund (Apothekergewicht) Honig zu. Der Honig wird auf diese Weise vollkommen klar. Wenn man ihn noch reiner haben will, kann man ihn dann noch mit Kohle oder mit kohlensaurem Kalke behandeln. (Giornale di Farmacia, Chimica e Science accessorie di A. Cattaneo, 1828, Giugno)

20) Bonnemain's künstliche Ausbrütungsart der Eyer *).

Seit länger als 2000 Jahren brütet man in Aegypten die jungen Hühner mittels eigens dazu gebauter Oefen aus, die man Mamals nennt, ohne daß man, wie gewöhnlich, die Eyer den alten Hühnern unterlegt. Im Dorfe Bermé heitzt man zu gewissen Zeiten des Jahrs diese Oefen bloß mit Lampen, und bebrütet fremde Eyer für Geld. In unserm Klima läßt dieses Verfahren sich nicht anwenden, und man muß sich hierzu einer andern Methode bedienen. Réaumur hat viele sinnreiche Beobachtungen über künstliches Brüten angestellt, Bonnemain war aber der erste Physiker, welcher, nachdem er alle Umstände bey dem künstlichen Bebrüten genau studirte, Eyer im Großen mittels eines eigenen Apparates auf eine glücklichere und sichrere Weise ausbrütete, als es bisher selbst in den besten Hühnerställen möglich war.

Bonnemain's Apparat besteht 1) aus einem Erwärmer (Calorifère), in welchem heißes Wasser umherläuft; 2) aus einem Regulator, durch welchen immer eine gleichförmige Temperatur unterhalten wird; und 3) in einem Ofen, der beständig in der gehörigen Brütwärme gehalten wird, und neben welchem sich auch eine Hühnersteige befindet, um die Thierchen in den ersten Tagen nach ihrem Ausfallen gehörig zu erwärmen.

Der Erwärmer ist so eingerichtet, daß er die Hitze des Feuers allen Theilen des Ofens mittels Röhren, durch welche heißes Wasser läuft, mittheilt. Er besteht aus einem kupfernen walzenförmigen Herde, mit einem Roste, der ihn von der Aschengrube trennt. Dieser Herd ist ringsumher mit Wasser umgeben, welches in dem hohlen walzenförmigen Kessel enthalten ist. Dieser Kessel hat 5 Röhren, durch welche die Flamme, der Rauch und die erhitzte Luft, die aus dem Feuer aufsteigt, herumläuft, so daß der größte Theil der Hitze derselben vor ihrer Entweichung durch den Schornstein dem Wasser mitgetheilt wird. Ein Vorstoß oder eine Verbindungsröhre, die oben auf dem Kessel angebracht ist, bildet eine Verbindung zwischen dem Innern des Kessels und der senkrechten Röhre, welche mit einer horizontalen Röhre vereinigt ist; an diese ist eine lange Querröhre angelöthet, in welche eine gerade Zahl von Röhren paßt, z. B. 6, 8, 10 ꝛc. Diese Reihe von Röhren geht durch die Scheidewand in den Ofen und zwar in einer sanft geneigten Lage, und tritt an der entgegengesetzten Seite heraus, wo diese Röhren sich wieder krümmen, und 8 bis 9 Zoll tiefer wieder in den Ofen treten, durch denselben durchziehen, bey der Scheidewand heraustreten, dann wieder sich biegen und durch den Ofen gehen, und so zwey bis drey Mahl durch den Ofen laufen. Die letzten beyden Mahle läßt Bonnemain sie durch eine Art von Hühnersteige laufen, die mit einem Schafpelze austapezirt ist, unter welchem die jungen Thierchen sich schützen und wärmen. Diese Reihe von Röhren vereinigt sich dann wieder mit einer andern Querröhre am Boden des Ofens, wo sie wieder mit einer andern Röhre verbunden wird, die an einer Seite des Kessels in denselben hinabführt, und wieder bis an den obersten Theil desselben emporsteigt, und so zum Füllen und Ausleeren des Kessels dienen kann. In diesem Falle muß man aber zwischen der Mündung der Röhre und dem Boden des Kessels eine kupferne Capsel mit 3 Füßen anbringen, so daß das erhitzte Wasser nicht unmittelbar gegen die Oeffnung kommt, und die Wirkung seiner Siedekraft verliert. Es ist auch sehr gut, wenn man um diese Röhre auf der ganzen Strecke, in welcher sie durch das Wasser läuft, eine doppelte Hülle auflöthet, die mit Luft gefüllt ist, um dadurch zu verhüten, daß das Wasser nicht wieder eher heiß wird, als es in den Kessel kommt, wodurch der Umlauf desselben leiden würde. Eine offene Röhre auf dem höchsten Puncte der Röhre, läßt die im Wasser enthaltene Luft entweichen. Die andere Röhre, die in den untern Theil des Kessels eingefügt ist, die aber selbst über die oberste Umlaufsröhre emporragt, hat oben einen Trichter, durch welchen der Kessel mit Wasser gefüllt wird.

Beym Gebrauche wird der Deckel des Ofens abgehoben, und dieser bis zur Hälfte oder auf zwey Drittel mit Holzkohlen oder mit Holz gefüllt. Der Deckel wird dann wieder aufgesetzt, die Mündung des Ofens geöffnet und durch dieselbe das Feuer angezündet, und für den gehörigen Zug gesorgt. Die Producte der Verbrennung gehen durch mehrere Röhren in den Schornstein. Diese gasartigen Bestandtheile geben dem Wasser während ihres Durchganges durch die Röhren einen großen Theil ihrer Wärme, und treten endlich sehr abgekühlt bey dem Schornsteine aus.

Wenn in diesem Apparate die kreislaufende Bewegung des Wassers einmahl begonnen hat, hält sie so lang an, als das Wasser in dem Erwärmer erwärmt wird, indem die Temperatur nie in allen Theilen des Apparates gleich ist. Es ist auch offenbar, daß eine solche gleichförmige Temperatur nie entstehen kann, indem beständig Wärme von der äußern Oberfläche der Röhre entweicht: indessen wird doch die Temperatur der Luft im Ofen so erhöht, daß sie nur wenig von der Temperatur der Röh-

*) Ueber Barlow's Apparat s. d. Jahrg. 1829 dieses Kalenders, S. 41.

ren selbst abweicht, die durch den Ofen ziehen, und da die Biegungen der Röhren außen am Ofen nur wenig Fläche darbiethen, die von der sie umgebenden Luft abgekühlt werden könnte, so kann die Umlaufskraft, die sich stets wie der Unterschied zwischen der Temperatur des Wassers verhält, welches in den Erwärmer aus- und einfließt, nie bedeutend vermindert werden, selbst nachdem eine große Menge Wärmestoffes entwickelt wurde, außen an dem Ofen verloren ging, und selbst für die Hühnersteige verwendet wurde. Um den Verlust der Wärme so viel möglich zu verhindern, wird der Erwärmer, so wie alle Theile desselben, welche der Luft ausgesetzt sind, mit Tuchenden umhüllt. Auf diese Weise unterhält Bonnemain in seinen Oefen eine Temperatur, die selten um ½ Grad R. abweicht, und ist auch im Stande, diese Temperatur in allen Theilen des Ofens auf jenen Grad zu erhöhen, der zum Ausbrüten am besten taugt, und diesen Grad von Wärme beständig zu erhalten. Letzteres bewirkt er durch seinen Feuerregulator.

Die Wirkung dieses Regulators gründet sich auf die ungleiche Ausdehnung der Metalle durch die Wärme. Eine eiserne Stange ist unten in eine männliche Schraube zugeschnitten, die in eine weibliche Schraube aus Messing paßt, welche in einer bleyernen Röhre eingeschlossen ist, deren oberes Ende sich in einen messingenen Ring endet. Die bleyerne Röhre ist an der Seite einer der Röhren in das in dem Erwärmer enthaltene Wasser getaucht. Wenn eine Vermehrung der Hitze die Röhre zu sehr verlängert, wirkt der Ring auf einen Hebel, und durch diesen auf einen Draht, welcher das Register herabläßt und so den Zutritt der Luft zum Feuer vermindert oder ganz aufhebt, wodurch die Verbrennung sogleich langsamer geschieht und die Temperatur um etwas fällt. Eine andere Vorrichtung ist noch angebracht, um die bleyerne Röhre nach Bedarf zu heben oder zu senken.

Bonnemain's Erwärmer kann, mit Abänderungen, in Treibhäusern zur Erwärmung der Treibbeete, um frühe und späte Spargel, Erbsen, Gurken, Melonen ꝛc. zu erzeugen, verwendet werden, worüber man bereits Beweise gelungener Versuche im botanischen Garten zu Paris (Jardin du Roi) sah. Auch in Orangerien, zum Beheitzen der Zimmer, und vorzüglich in Stuben, wo es sich um Unterhaltung der Alkohol- und Essiggährung handelt, wo Candiszucker, Weinstein ꝛc. krystallisirt wird, ist er sehr nützlich.

Um Hühner in dem bereits beschriebenen Ofen auszubrüten, wird Feuer in dem Erwärmer angezündet, und mittels des Regulators die Brütwärme hervorgerufen. Man legt nun die Eyer auf die Stellen, die unter den Röhrenreihen hinlaufen. Es ist gut, wenn man am ersten Tage nicht mehr als den zwanzigsten Theil der Stellen mit Eyern belegt, und 20 Tage lang täglich ein Zwanzigstel zusetzt, so daß am 21sten Tage der größte Theil der am ersten Tage eingelegten Eyer ausgebrütet seyn wird, und man auf diese Weise täglich beynahe dieselbe Zahl von jungen Hühnern erhält. Man kann sich indessen hier nach Bedürfniß und Jahreszeit richten.

Während der ersten Tage des Bebrütens, dieses mag künstlich oder natürlich geschehen, verdünstet der größte Theil des in dem Eye enthaltenen Wassers durch die Schale, und wird durch etwas Luft ersetzt, die dem Thiere zum Athemhohlen nothwendig ist. Da nun die Luft, welche die Eyer in der Brütstube umgibt, bey dieser Temperatur entweder sehr trocken oder nur wenig feucht ist, so würde das junge Thier im Eye dadurch sehr leiden, und am Ende zu Grunde gehen durch diese Trockenheit. Der wässerige Dunst, den die alten Vögel während des Brütens von sich geben, beugt diesem Nachtheile zum Theil vor, reicht aber bey trockener Witterung kaum hin; die Hennen scheinen dieß zu fühlen, und decken bey trockner Witterung die Eyer mit Erde zu. Beym künstlichen Ausbrüten stellt man Wasser in flachen Schüsseln auf die Stellen, um die Luft immer feucht zu erhalten.

Die ausgebrüteten Hühnchen kommen aus dem Ofen in eine Steige, wo sie mit Hirse gefuttert werden. Man bringt diejenigen, die an einem und demselben Tage ausgefallen sind, immer in einer eigenen Abtheilung zusammen, um sie gehörig nach dem Alter zu futtern. (Eine ausführlichere Beschreibung dieses Verfahrens und des dazu nöthigen Apparates, mit Zeichnungen belegt, findet man im Dictionnaire technologique, dann in Gill's technological Repository, Febr. 1828, und in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1828, Bd. XXIX. H. 2, S. 115.)

Da die Vortheile des künstlichen Ausbrütens der Hühner gar nicht zu berechnen sind, so muß man sich in der That verwundern, daß man diesen Industriezweig, den die Aegypter schon zu Herodot's Zeiten betrieben, noch bey keinem Volke nachahmte. Da dieses Gewerbe in Aegypten die Beschäftigung der gemeinsten Leute war und noch ist, so scheint es doch wahrlich keine Hexerey zu seyn. Man tadelt vergebens unsern Himmel; denn jeder Heitzer kann bey uns ein Zimmer auch bey den gewöhnlichen Ofen so heitzen, daß das Thermometer in denselben kaum Differenzen von 2 Graden gibt. Es gehörte nur einige Aufmerksamkeit dazu, und die Sache würde, auch mit einer weit einfachern Vorrichtung, als die von Bonnemain, sicher gelingen, wenn man sich ernsthaft damit beschäftigen wollte. Man wird es vielleicht nicht eher bey uns versuchen, als bis das Brennholz bey uns so theuer seyn wird, als in Aegypten, wo man es nach dem Lothe kauft.

21) Neue Methode, den Weinfässern den Schimmelgeruch zu benehmen, von G. Ferrari.

Die bisher angewendeten Methoden, den Weinfässern den Schimmelgeruch, welchen sie so leicht an-

nehmen, zu entziehen, taugen bekanntlich nicht viel; Ferrari hat mit dem besten Erfolge zu diesem Zwecke das Chlor angewendet. Er gibt folgendes Verfahren in dem Calendario georgico der k. Gesellschaft des Ackerbaues zu Turin, hierzu an. Man mischt 1½ Pfund gestoßenes Kochsalz mit ½ Pf. gepulvertem Braunstein; anderseits mischt man 1½ Pf. Schwefelsäure mit 1 Pf. Wasser, indem man die Säure vorsichtig in kleinen Quantitäten in das Wasser gießt. Man reinigt das angesteckte Faß zuerst gut mit Wasser und stellt es gerade, dann gibt man in einen erdenen Topf eine gewisse Quantität von obigem Pulver und eine gleiche Menge der säuerlichen Mischung, worauf man ihn sogleich in das Faß bringt und auf dessen Boden stellt. Man verstopft hierauf die Oeffnungen, durch welche der Dampf oder das Chlor austreten könnte, auf's beste mit feuchten Lumpen. Nach mehreren Stunden muß man das Gemenge in dem Topfe mit einem hölzernen Stabe umrühren und von der vorräthigen Schwefelsäure noch etwas zusetzen. Diese Operation wird ein oder zwey Mahl des Tages vorgenommen, und durch mehrere Tage fortgesetzt, je nachdem das Faß mehr oder weniger angesteckt ist. Sollte das Faß einen Chlorgeruch behalten, so läßt sich dieser am schnellsten entfernen, wenn man die Fässer mit in Wasser gelöschtem Kalk gut ausschwenkt. Ferrari glaubt auch, daß diese Verfahrungsart bey solchen Fässern vortheilhaft angewendet werden könnte, worin man das Wasser bey langen Seereisen aufbewahrt, wodurch die Nachtheile, welchen die Seefahrer durch Mangel an gutem Trinkwasser ausgesetzt sind, großentheils verhindert werden könnten.

22) Ueber die Verfahrungsarten, wodurch man dem Wein den Geruch und Geschmack benehmen kann, welchen er in mit Schimmel bedeckten Fässern annimmt.

In der Sitzung der kön. Akademie der Medicin zu Paris d. 29. Nov. 1828 erstatteten Boullay und Chevalier Bericht über eine Notiz des Apothekers Pomier zu Salies, betreffend ein Verfahren, um dem Weine den Geruch und Geschmack zu benehmen, welchen er in mit Schimmel bedeckten Fässern annimmt. Dieses Verfahren besteht darin, daß man in den so verdorbenen Wein Olivenöhl schüttet, das Gemische stark umrührt und durch Ruhe absetzen läßt, so daß man die beyden Flüssigkeiten von einander abscheiden kann. Die Berichterstatter bemerkten, daß sie dieses Verfahren mit dem besten Erfolge wiederhohlten, und daß Lajour, Secretär der Ackerbaugesellschaft der Arriège-Departements, den Vorschlag machte, das Innere der alten, schimmelig gewordenen Fässer mit Oehl zu überziehen, damit der Wein, womit man sie nachher füllt, keinen widerlichen Geruch und Geschmack annimmt und trinkbar bleibt. Planche sagte, daß man auch ohne Nachtheil den Wein in Oehlfässer bringen könne; andere Mitglieder erinnerten an die in Italien und der Provence bekannte Verfahrungsweise, die Weinfässer inwendig zu öhlen, so wie auch, eine kleine Schichte Oehl auf den Wein in den Bouteillen u. a. Gefäßen zu gießen, um ihn gegen den Geruch der Korkstöpseln zu schützen; es wurde auch bemerkt, daß man befürchten müsse, das Oehl möchte ranzig werden und seinerseits einen unangenehmen Geschmack ertheilen. Virey bemerkte, weil, so wie die fixen Oehle, wenn man sie mit riechenden destillirten Wassern schüttelt, die in diesen Wassern enthaltenen flüchtigen Oehle aus Verwandtschaft zu diesen Essenzen absorbiren, so auch das Olivenöhl, mit Wein geschüttelt, welcher den Faßgeruch habe, sich der Substanz, welche diesen unangenehmen Geruch hervorbringt, bemächtige: so könne man daraus schließen, daß diese Substanz von fetter Natur sey. Serullas theilte bey dieser Gelegenheit das Verfahren mit, wodurch man dem Kartoffel-Branntweine seinen unangenehmen Geschmack benimmt. Dieser Branntwein wird besonders im Moseldepartement und dem alten Lothringen fabricirt. Man rectificirt ihn über Süßmandelöhl, welches sich fast des ganzen so unangenehmen eigenthümlichen Riechstoffes dieses Alkohols bemächtigt. (Journal de Pharmacie, 1829, Janvier.)

23) Fenner's Verbesserung an den Vorrichtungen zur Verbesserung rauchender Schornsteine und zur Reinigung derselben.

Wilhelm Fenner zu Bushell-Rents, Wapping, in Middlesex, erfand 1826 die eben genannte Vorrichtung, welche in einer am obern Ende des Schornsteins angebrachten Serpentine besteht, durch welche der Zug vermehrt werden soll. Es kann in die Ziegelmauer eingeschlossen oder über derselben angebracht seyn. Im ersten Falle werden mehrere Bolzen in dem Mauerwerke angebracht, durch welche die Ausbiegungen derselben gleichsam angezapft, und vom anklebenden Ruße gereinigt werden können, der dann unten durchfällt. Die Serpentine oder schlangenförmig gebogene Röhre besteht am besten aus Kupferblech, damit sie nicht so leicht angefressen wird, und kann aus mehreren Stücken bestehen, die zusammengenietet oder in einander durch Bayonnette-Gefüge befestigt sind. Die Weise, wie die Serpentine im Schornsteine befestigt wird, ist folgende. An der untern Kante des untersten Stücks ist ein Vorsprung angebracht, der auf dem Mauerwerke ruht; oben wird sie von einer Metallplatte oder von flachen Ziegeln festgehalten. An den Wänden sind in gewissen Zwischenräumen Bolzen oder Abzapfer, die in Stiefeln eingelassen sind, und durch das Mauerwerk laufen. Wenn die Röhre rußig geworden ist, schlägt man mit dem Hammer an diese Bolzen, und der Ruß springt ab und fällt hinab. Eben diese Serpentine kann

auch als Kappe oben auf dem Schornsteine aufgesetzt werden, wo sie eben so gut dienen wird. Man kann in dieser Serpentine auch den Ruß ohne alle Feuersgefahr anzünden, und die Röhre, wie man sagt, ausbrennen, wodurch sie am besten gereinigt wird. (London Journal of Arts, 1828, Febr.)

In demselben Jahre 1826 erfand Franz Halliday zu Ham in Surrey einen sogenannten Windwächter, d. i. eine Vorrichtung, um das Rauchen an Schornsteinen durch Windstöße zu hindern. Diese Vorrichtung besteht in einer Windfahne, welche mit einem Schilde versehen ist, der von derselben so gedreht wird, daß der Schornstein oben an seinem Ausgange gegen jeden Windstoß gesichert wird, wodurch der Rauch dann immer frey hinausziehen kann. (Die nähere Beschreibung, mit Abbildungen begleitet, findet man im London Journal of Arts, 1827, Dec., und in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1828, Bd. XXVIII. H. 1. S. 45.)

24) Verbesserte Rattenfalle.

Es ist gewiß kein Land auf Erden, wo so viel über Rattenfallen geschrieben wird, als in England; auch gehört der Rattenfänger daselbst zu einer Hofcharge (the King's Rat Catcher mit dem gelben Aermel). Die neue verbesserte Rattenfalle ist nach dem sogenannten Schaukelsysteme eingerichtet und fängt Ratten und Mäuse ohne Ende, ohne daß es nöthig ist, sie neu aufzurichten. Die Falle besteht aus einem langen hölzernen Kästchen, in dessen Hintertheil das mit Draht umflochtene Fleisch ꝛc. aufgehängt ist. Der Boden der Falle ist sehr glatt und besteht entweder aus lackirtem Eisenblech oder es ist ein dünnes Bretchen mit einer Glastafel belegt. Nur der vordere Theil des Bodens ist fest, der ganze hintere Theil aber ist um eine Achse beweglich, so daß die Ratte, sobald sie über die Achse hinaus ist und dem Fleische zueilt, mit dem Boden abwärts sinkt und über den glatten Boden in ein untergestelltes Wasser- oder Laugengefäß hinabrutscht. Wenn man diese Falle stellt, wird sie mit dem vordern Theile von der Eingangsthür bis zur Achse des beweglichen Bodens auf das Ende eines Tisches, Fasses, einer Bank ꝛc. gestellt, oben mit einem schweren Steine belegt, und der hintere Theil mit dem abwärts fallenden Boden ragt frey über ein darunter gestelltes Gefäß hervor, das mit Wasser gefüllt ist, oder mit Lauge oder einer andern scharfen Flüssigkeit, welche das hineingefallene Thier schneller tödtet. Die Falle stellt sich, wenn das Thier hinabgefallen ist, immer von selbst wieder, so daß Hunderte von Ratten nacheinander gefangen werden können. (Die Abbildung dieser recht brauchbaren Rattenfalle findet man im Mechanic's Magazine Nro. 279, 1828, und in J. G. Dingler's polytechnischem Journal, 1829, Bd. XXXI. H. 3. S. 225.)

---

# Land- und hauswirthschaftliche Miscellen.

25) Schädliche Färbung des Brotes durch Kuhweitzensamen. In der Sitzung der medicinischen Akademie in Paris den 27. Dec. 1828 las Dizé die Versuche vor, welche er über die Färbung des Brotes durch Kuhweitzensamen und über die Methode, dessen Gegenwart in dem Weitzenmehl auszumitteln, angestellt hatte. Der Samen mehrerer Arten der Gattung Melampyrum (Fleischblume, Schwarzkörner), besonders der Art arvense (Acker-Fleischblume, Kuhweitzen) ertheilt dem Brote eine röthlichblaue Farbe und einen unangenehmen Geschmack, welchen man sogar für ungesund hält. Wird dieser schwärzliche und harte Samen zerstoßen, so ertheilt er dem Papier öhliche Flecken. Die rothe Farbe, welche die Hülse der Samen besitzt, konnte durch die gewöhnlichen Verfahrungsweisen nicht isolirt werden, Dizé gelang es aber, sie durch mit Wasser verdünnte Essigsäure zu entwickeln. Er bemerkte, daß der Teig des ungegohrnen Brotes diese Farbe nie annimmt, während hingegen bey der Brotgährung die sich bildende Essigsäure auf den Samen wirkt und dem Teige eine röthlichblaue Farbe ertheilt. Um daher die Gegenwart des Kuhweitzensamens in irgend einem Mehle zu entdecken, verfährt man auf folgende Weise. Man bereitet aus dem zu prüfenden Mehle mit einer hinreichenden Menge Essigsäure, die mit ⅔ Wasser verdünnt ist, einen weichen Teig und bäckt dieses kleine Brot in einem Löffel, den man einer hinreichenden Hitze aussetzt. Wenn das Mehl mit Kuhweitzensamen gemengt war, wird das Innere des Brotes röthlichblau gefärbt seyn. (Journal de Pharmacie, 1829, Febr.)

26) Kohlenstaub als Mittel gegen eine Krankheit der Zwiebeln und des Kohles. Der Gärtner Smith erzählt, daß in dem nassen festen Boden seines Gartens alle Zwiebeln von einem Wurme und von Schimmel zerstört wurden, und dieses zwar in allen Perioden ihres Wachsthums. Die Zwiebelschalen wurden zu Anfang der Krankheit graulich blaulichgrün, dann gelb, und die Blätter wurden hängend. Alle gewöhnlichen Mittel wurden versucht und blieben ohne Erfolg, bis Smith auf die Idee kam, Kohlenstaub, der auf der Kohlenstätte eines Kohlenmeilers zurückbleibt, einen halben Zoll dick oben auf die Erde derjenigen Beete zu streuen, die er mit Zwiebelsamen besäen wollte, und vorläufig auf gewöhnliche Weise düngte und umgrub. Der Kohlenstaub wurde bloß mit der Spitze der Schaufel eingestrichen, so daß die Erde an der Ober-

fläche des Beetes damit gemengt wurde. Seit Anwendung dieses Mittels blieben die Zwiebeln gesund, und es zeigte sich nicht die geringste Spur einer Ansteckung. Der Kohlenstaub muß ganz trocken seyn und auf Haufen, die man mit Moos bedeckt, aufgeschlagen zum Gebrauche aufbewahrt werden. Smith bediente sich des Kohlenstaubes mit demselben Erfolge auch gegen eine ähnliche Krankheit in den Wurzeln der Kohlgewächse, welche die englischen Gärtner Dlubbing nennen, und gegen welche er bisher ungelöschten Kalk vom Kalkofen her ohne Erfolg anwendete. — Dieses Mittel könnte vielleicht auch bey den Safranzwiebeln und bey den verschiedenen Blumenzwiebeln mit Nutzen angewendet werden. (Transactions of the London Horticultural Society.)

27) Anwendung der Chlorine auf den Ackerbau. Remond hat Versuche über die Wirkung der Chlorine auf das Keimen der Samen verschiedener in der Landwirthschaft allgemein gebrauchter Pflanzen, als da sind alle Arten Getreide, Mays, Kohl, Kartoffeln ꝛc. angestellt und gefunden, daß Pflanzen, deren Samen der Einwirkung der Chlorine ausgesetzt werden, schneller keimen, frischer wachsen, schneller reifen, und mehr Ertrag, zuweilen zwey bis drey Mahl mehr als gewöhnlich liefern. Er empfiehlt die Samen 12 Stunden lang in Fluß-, nie in Brunnwasser einzuweichen, und dann 14 bis 15 Tropfen einer starken Chlorine-Auflösung (oxygenirter Kochsalzsäure) auf jedes Liter (2 ½ Wiener Seitel) Wasser zuzusetzen, alles gehörig umzurühren, und die Samen noch 6 Stunden länger darin in der Sonne, wo möglich unter einer Glasglocke, oder in Abgang derselben unter einer Hülle von öhlgetränktem Papiere weichen zu lassen. Man seiht hierauf dieses Wasser durch ein Tuch von den Samen ab, und mengt diese, um sie bequemer aussäen zu können, mit Steinkohlenasche, Sand oder trockener Erde. Nach dem Aussäen schüttet man obiges Wasser auf den Grund, den man mit diesem Samen bestellte. (Quaterly Journal of Science. Register of Arts, 1829, Nr. 57.)

28) Brand im Mays. Nach einer neuerlich von Dulong von Astrafort mitgetheilten Analyse besteht der sogenannte Brand im Mays, so wie der Brand im Weitzen, bloß aus kleinen Pilzen (Schwämmen). (Journal de Pharmacie, 1828. Nov.)

29) Jessop's Methode, Kartoffeln zu pflanzen. Er warnt vor dem nahen Aneinanderlegen der Kartoffeln. Er empfiehlt den Grund doppelt tief umzugraben, nicht zu düngen, und nur in einer Entfernung von 2 Fuß im Verbande, ja nicht näher an einander, die Kartoffeln ganz, nicht gespalten in die Erde zu legen. Sobald die Pflanze treibt, soll man die Erde um jeden Stock fleißig aufhäufeln, wo sie dann reichlich Knollen tragen wird. Die Blüthen müssen fleißig abgepflückt werden. Auf diese Weise erhielt er von 1 Acre Landes *) 20 Ctr. Kartoffeln. Jessop empfiehlt auch die Kartoffeln unter hochstämmige Bäume zu pflanzen, in Obstgärten, wie in Wäldern, indem das Häufeln den Bäumen nicht schadet; vorzüglich findet er dieses in neuen Waldanlagen höchst empfohlenswerth. Und gewiß ist es, daß viel Ackerland erspart werden könnte, wenn man den Rand der Wälder mit Kartoffeln bepflanzte. (Gardener's Magazin. Register of Arts, 1829, Febr.)

30) Fest und reine Gartenwege anzulegen. Um Gartengänge und Eingänge vor dem Hause immer trocken und rein zu halten, empfiehlt man Straßenkoth gut getrocknet und durchgesiebt mit Steinkohlentheer gut zu mengen und etwas feinen Schutt zuzusetzen. Damit wird der anzulegende Weg in einer mäßig dicken Schichte gleichsam wie mit einem Grundlager belegt, und auf diesem Grund der gewöhnliche feine Schutt und Sand aufgefahren. Auf diese Weise werden alle Würmer und Insecten, und auch alles Unkraut wird von diesen Wegen verbannt, und die Wege bleiben auch in nasser Witterung immer trocken. (Register of Arts, 1829, Jan.)

31) Stöpseln, die fest in Flaschen stecken, ohne Beschädigung herauszuziehen. Zu dem Ende wird empfohlen, eine in heißes Wasser getauchte Serviette um den Hals der Flasche zu wickeln, und in demselben Augenblicke einen schnellen Schlag mit dem Rücken des Messers gegen den Hals der Flasche zu führen, wo dann der Stöpsel, da der Hals der Flasche durch die Einwirkung der Wärme ehe erweitert wird, als der Stöpsel, leicht herausgeschafft werden kann. (Mechanic's Magazine, No. 285.)

32) Wie lang die Schafe hungern können. Das Dampfschiff Amwell hatte 400 Schafe auf dem Verdecke. Durch Unfälle aller Art mußte es 10 Tage und Nächte auf der See umhertreiben, während welcher Zeit die armen Thiere kein Futter erhielten, und doch am Leben blieben.

33) Verbesserung an Talgkerzen-Dochten. John Murray versichert in Dr. Brewster's Journal, daß, wenn man die baumwollenen Dochte der Talgkerzen in eine Auflösung von Pottasche in Kalkwasser taucht, diese Kerzen viel höher und reiner brennen, höchstens nur so oft als Wachskerzen geputzt werden dürfen, und nicht ablaufen. Es versteht sich von selbst, daß die Dochte vollkommen trocken seyn müssen, ehe sie in den Talg getaucht werden.

---

*) 1 Acre hält 1125 Wiener Quadratklafter.

# Genealogie
## des österreichischen Kaiserhauses.
(Haus Österreich-Lothringen aus dem Stamme Ethicho.)
(Katholischer Religion.)

### A. Kaiserliche Hauptlinie.

Franz (Joseph Carl) der I., Kaiser von Oesterreich, König von Ungarn, Böhmen, der Lombardey und von Venedig, von Galizien, Lodomerien und Illyrien, Erzherzog zu Oesterreich ꝛc., geboren zu Florenz den 12. Februar 1768; trat nach dem Tode seines Herrn Vaters, des röm. Kaisers Leopold des II., am 1. März 1792 die Regierung der österreichischen Monarchie an; ward 14. Julius 1792 zu Frankfurt am Main zum röm. Kaiser gekrönt; erklärte sich 11. August 1804 zum Erbkaiser von Oesterreich; legte 6. August 1806 die römisch-kaiserliche Reichs-Regierung nieder. Residirt in Wien. Er vermählte sich zum ersten Mahle 6. Januar 1788 mit Elisabeth (Wilh. Lud.), Tochter des Herzogs Friedrich Eugen von Würtemberg, ward Witwer 18. Februar 1790; zum zweyten Mahle 19. September 1790 mit Maria Theresia (Carol. Jos.), Tochter Ferdinands des I., Königs beyder Sicilien, ward Witwer 13. April 1807; zum dritten Mahle 6. Januar 1808 mit Maria Ludovica (Beatr. Ant.), Tochter weil. des Erzherzogs Ferdinand, vormahligen Gouverneurs und General-Capitäns der österr. Lombardey, ward Witwer 7. April 1816; zum vierten Mahle 29. October durch Procuration zu München, dann 10. November 1816 zu Wien mit Carolina Auguste, Tochter des Königs von Bayern Maximilian Joseph, höchsten Schutzfrau des Sternkreuz-Ordens, obersten Schutzfrau und Ober-Directorinn des adelich-freyweltlichen Damenstiftes Maria-Schul zu Brünn und Ober-Protectorinn des adelichen Damenstiftes zu Innsbruck, geboren 8. Februar 1792.

#### Kinder zweyter Ehe.

Kaiserliche Prinzen und Prinzessinnen, Erzherzoge und Erzherzoginnen von Oesterreich ꝛc. ꝛc.

1. Maria Ludovica (Leop. Franc. Ther. Jos. Luc.), Erzherzoginn von Oesterreich, Herzoginn von Parma, Piacenza und Guastalla. S. E. Nebenlinie von Parma.
2. Ferdinand Carl (Leop. Jos. Franz Marcellin), des Kaiserthums Oesterreich kaiserlicher, zu Ungarn, Böhmen, Lombardey und Venedig, Galizien, Lodomerien und Illyrien königl. Kronprinz und Thronfolger ꝛc., Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des österr. kais. Leopoldsordens, Ritter des Ordens der eisernen Krone erster Classe, Großkreuz der königl. französischen Ehrenlegion und Ritter des königl. französischen Ordens vom heil. Geiste, des königl. portugiesischen Christus-, des kön. sicilischen St. Ferdinands- und Verdienstordens, Großkreuz des kais. brasilischen Ordens vom südlichen Kreuze, General-Feldwachtmeister und Inhaber des 4ten Cürassier-Regiments, geb. zu Wien 19. April 1793. In Wien.
3. Maria Clementine (Franc. Jos.), geb. zu Wien 1. März 1798. Vermählt 28. Julius 1816 zu Schönbrunn mit Leopold (Joh. Jos.), königl. Prinzen beyder Sicilien, Fürsten von Salerno, Großkreuz des kön. ungr. St. Stephans-Ordens, Inhaber des 22sten österr. Linien-Infanterie-Regiments, geb. 2. Julius 1790. In Neapel.
4. Caroline (Ferd. Theres. Jos. Demetr.), Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. zu Wien 8. April 1801. Vermählt 26. Sept. 1819 durch Procuration zu Wien, dann 7. Oct. 1819 zu Pillnitz mit Friedrich August (Albert), königl. Prinzen von Sachsen, Inhaber des 3ten österr. Cürassier-Regiments ꝛc., geb. 18. May 1797. In Dresden.
5. Franz Carl (Jos.), Ritter des goldenen Vließes, des kön. franz. Ordens vom heil. Geiste, und des kön. bayr. St. Hubert-Ordens, Großkreuz des kön. sicil. St. Ferdinand- und Verdienst-Ordens und des kais. brasil. Ordens vom südlichen Kreuze, Oberst und Inhaber des ungr. Infanterie-Regiments Nr. 52, geb. zu Wien 7. Dec. 1802. Vermählt 4. Nov. 1824 zu Wien mit Sophia Friderica (Dorothea Wilhelmina), Tochter des Königs Max. Joseph von Bayern zweyter Ehe, geb. zu München 27. Jan. 1805. In Wien.
6. Maria Anna (Franc. Ther. Jos. Med.), Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. zu Wien 8. Junius 1804. In Wien.

#### Geschwister Sr. Maj. des Kaisers.

Kaiserliche Prinzen und Prinzessinnen, Erzherzoge und Erzherzoginnen von Oesterreich ꝛc. ꝛc.

1. Carl Ludwig (Joh. Jos. Laur.), Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des militär. Marien-Theresien-Ordens, der königl. französ. Ehrenlegion, des großh. toscanischen St. Josephs-Ordens und des kais. brasil. Ordens vom südlichen Kreuze, Gouverneur und General-Capitän des Königreichs Böhmen, k. k. General-Feldmarschall, Inhaber des 3ten Infanterie- und des 3ten Uhlanen-Regiments, geb. 5. Sept. 1771; resignirt als Großmeister des teutschen Ordens 30. Junius 1804; vermählt zu Weilburg 17. Sept. 1815 mit Henriette (Alexandr. Friedr. Wilh.), Tochter weil. des Fürsten Friedrich Wilhelm von Nassau-Weilburg, geb. 30. Oct. 1797. In Wien.

Kinder.

a) Erzh. Maria Theresia (Isab.), geb. zu Wien 31. Julius 1816. In Wien.

b) Erzh. Albrecht (Friedr. Rud.), geb. zu Wien 3. August 1817. In Wien.

c) Erzh. Carl Ferdinand, geb. zu Wien 29. Julius 1818. In Wien.

d) Erzh. Friedrich (Ferd. Leopold), geb. zu Wien 14. May 1821. In Wien.

e) Erzh. Maria Carolina (Ludov. Christina), geb. zu Wien 10. Sept. 1825. In Wien.

f) Erzh. Wilhelm (Franz Carl), geb. zu Wien 21. Apr. 1827. In Wien.

2. Joseph (Ant. Joh.), Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des königl. ungr. St. Stephans-Ordens und des kais. brasil. Ordens vom südlichen Kreuze, (G. C. E. K.), Palatinus, kön. Statthalter und General-Capitän des Königreichs Ungarn, Comes et Judex Jazygum et Cumanorum, k. k. General-Feldmarschall, Inhaber des 2ten und 12ten Husaren-Regiments, Oberster und immerwährender Obergespan der vereinigten Gespanschaften Pesth, Pilis u. Solth ꝛc. ꝛc., geb. 9. März 1776. Vermählt zum ersten Mahle auf dem Schlosse Gatschina bey Petersburg, mit Alexandrina Pawlowna, Tochter des russ. Kaisers Paul des I., 13. Oct. 1799, ward Witwer 16. März 1801; zum zweyten Mahle zu Schaumburg 30. Aug. 1815 mit Hermine, Tochter des Herzogs Victor Carl Friedr. von Anhalt-Bernburg-Schaumburg, ward Witwer 14. Sept. 1817; zum dritten Mahle auf dem Schlosse zu Kirchheim unter Teck 24. Aug. 1819 mit Marie Dorothee (Wilhelm. Carol.), Tochter des Herzogs Ludwig Friedrich Alexander von Würtemberg, geb. 1. Nov. 1797. In Ofen.

Kinder der zweyten Ehe.

a) Erzh. Stephan (Franz Victor), Besitzer der Standesherrschaft Holzapfel, von 1½ Quadratmeilen mit 3581 Einwohnern.
b) Erzh. Hermine (Amal. Mar.)
} Zwillinge, geb. zu Ofen 14. Sept. 1817. In Ofen.

Kind der dritten Ehe.

c) Erzh. Alexander Leopold (Ferdinand), geb. zu Ofen 6. Junius 1825. In Ofen.

3. Anton (Victor Jos. Joh. Raym.), Großmeister des teutschen Ordens im Kaiserthume Oesterreich, k. k. General-Feldzeugmeister und Inhaber des 4ten Infanterie-Reg., geb. 31. Aug. 1779. In Wien.

4. Joh. Baptist (Jos. Fab. Sebast.), Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des militär. Marien-Theresien-, des österr. kais. Leopolds- und des kön. würtemb. Militär-Verdienst-Ordens, dann Ritter des kön. sächsischen Ordens der Rautenkrone, k. k. General der Cavallerie, General-Director des Genie- und Fortificationswesens, der Ingenieur- und der Neustädter Militär-Akademie, und Inhaber des 1sten Dragoner-Regiments, geb. 20. Januar 1782. In Wien.

5. Rainer (Jos. Joh. Mich. Franz Hier.), Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des kön. ungr. St. Stephans- und des österr. kaiserl. Leopolds-Ordens, Vicekönig des lombardisch-venezianischen Königreichs, k. k. General-Feldzeugmeister und Inhaber des 11ten Infanterie-Reg., geb. 30. Sept. 1783. Vermählt 28. May 1820 zu Prag mit Maria Elisabetha Francisca, Prinzessinn von Savoyen-Carignan, Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. 13. April 1799. In Mailand.

Kinder.

a) Erzh. Maria Carolina (Aug. Elisab. Margar. Dorothea), geb. 6. Febr. 1821. In Mailand.

b) Erzh. Adelheid Francisca (Mar. Rain. Elis. Clot.), geb. zu Mailand 3. Junius 1822. In Mailand.

c) Erzh. Leopold (Ludw. Maria Franz Jul. Eustorg. Gerhard), geb. zu Mailand 6. Junius 1823. In Mail.

d) Erzh. Ernest (Carl Felix Maria Rainer Gottfried Cyriak), geb. zu Monza 8. Aug. 1824. In Mailand.

e) Erzh. Siegmund (Leop. Rainer Maria Ambr. Valent.), geb. zu Mailand 7. Jan. 1826. In Mailand.

f) Erzh. Rainer (Ferd. Maria Joh. Evang. Franz Ignaz)., geb. zu Mailand 11. Januar 1827. In Mailand.

g) Erzh. Heinrich Anton (Maria Rainer Carl Gregor), geb. zu Mailand 9. May 1828. In Mailand.

6. Ludwig (Jos. Ant.), Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des kön. ungr. St. Stephans-Ordens, k. k. General-Feldzeugmeister, General-Artillerie-Director und Inhaber des 8ten Infanterie-Regiments, geb. 13. Dec. 1784. In Wien.

7. Rudolph (Joh. Jos. Rain.), Großkreuz des kön. ungr. St. Stephans-Ordens, Ritter des kön. sächs. Ordens der Rautenkrone, Cardinal-Priester der heil. röm. Kirche titulo Sti. Petri in monte aureo, und Fürst-Erzbischof zu Olmütz ꝛc. ꝛc., geb. 8. Jan. 1788, einstimmig zum Erzbischof v. Olmütz gewählt 24. März 1819. In Kremsier.

## B. Nebenlinie von Toscana.

Erzherzog Leopold (Joh. Jos. Franz Ferd. Carl) der II., Großherzog von Toscana, Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz der königl. franz. Ehrenlegion, und des kön. sicilischen St. Januarius-Ordens, Großmeister des toscanischen St. Josephs- und Stephans-Ord., k. k. General-Feldwachtmeister, Inhaber des 4ten Dragoner-Regiments, geb. 3. Oct. 1797, folgt seinem Herrn Vater, dem Großherzoge Ferd. dem III., 18. Junius 1824. Vermählt durch Procuration zu Dresden 18. Oct., dann zu Florenz 16. Nov. 1817 mit Maria Anna (Carolina), dritten Tochter des kön. Prinzen Maximilian von Sachsen, geb. 15. Nov. 1799. Residirt in Florenz.

Kinder.

a) Erzh. Carolina Augusta (Elis. Vinc. Joh. Jos.), geb. zu Florenz 19. Nov. 1822. Zu Florenz.

b) Erzh. Augusta Ferdinanda (Ludov. Maria Joh. Jos.), geb. zu Florenz 1. April 1825. Zu Florenz.

c) Erzh. Maria Maximiliana (Thekla Joh. Jos.), geb. zu Florenz 10. Jan. 1827. Zu Florenz.

Geschwister.

1. Erzh. Maria Ludovica (Joh. Jos. Carol.), Sternkreuz-Ordens-Dame, Aebtissinn des Fräuleinstiftes zur heil. Anna, geb. 30. Aug. 1798. In Florenz.
2. Erzh. Theresia (Franz. Jos. Joh. Beneo.), Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. 21. März 1801. Vermählt zu Florenz 30. Sept. 1817 mit dem Herzoge Carl (Eman. Albr.) v. Savoyen-Carignan, muthmaßlichen Erben der Krone Sardinien (nach den Zusicherungen des Wiener Congresses), Großkreuz der kön. franz. Ehrenlegion, geb. 2. Oct. 1798. In Turin.

Schwiegermutter.

Erzherzoginn Maria Anna (Ferd. Amalia), zweyte Tochter des kön. Prinzen Maximilian von Sachsen, Sternkreuz-Ordens-Dame, auch Dame des spanischen Ordens der Königinn Maria Ludovica. Vermählt zu Florenz 6. May 1821 mit dem Großherzoge Ferdinand dem III., Witwe seit 18. Junius 1824. In Florenz.

## C. Nebenlinie von Massa-Carrara.

(Haus Oesterreich-Este.)

Königliche Hoheiten und Erzherzoge von Oesterreich.

Erzh. Maria Ricciarde Beatrix von Este, Herzoginn zu Massa und Carrara, Tochter des Herzogs Herkules Rainald von Modena, Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. 7. April 1750, verlobt 26. April 1770 und vermählt 15. Oct. 1771 mit Erzherzog Ferdinand (Carl Ant.), vormahligem (bis 1796) Gouverneur und General-Capitän der österr. Lombardey, Witwe seit 24. Dec. 1806; erhielt Massa und Carrara wieder 30. May 1814. In Wien.

Kinder.

1. Maria Theresia (Joh. Joseph.), geb. 1. Nov. 1773; vermählt durch Procuration zu Mailand 29. Jun. 1788, dann zu Novara 21. April 1789 mit Victor Emanuel (Cajet.), Könige v. Sardinien, Witwe seit 10. Jan. 1824. In Turin.
2. Maria Leopoldine (Anna Jos. Joh.), geb. 10. Dec. 1776, vermählt zu Innsbruck 14. Febr. 1795 mit Carl Theodor, Churfürsten von Pfalz-Bayern; Witwe seit 16. Febr. 1799. Zu Stettbert bey Neuburg an der Donau.
3. Franz der IV. (Jos. Carl Ambr. Stan.), regierender Herzog von Modena. S. D. Nebenlinie von Modena.
4. Ferdinand (Carl Jos.), Ritter des goldenen Vließes und milit. Marien-Theresien-Ordens, k. k. General der Cavallerie, commandirender General im Königreiche Ungarn, und Inhaber des 3ten Husaren-Regiments, geb. 25. April 1781. In Ofen.
5. Maximilian (Jos. Joh. Ambr. Carl), Ritter des teutschen Ordens, k. k. General-Feldzeugmeister, und Inhaber des 2. Artillerie-Regiments, geb. 14. Jul. 1782. In Wien.

(Nach dem Absterben der Erzh. Maria Ricciarde Beatrix fallen ihre Besitzungen an die Nebenlinie von Modena.)

## D. Nebenlinie von Modena.

(Aus dem Hause Oesterreich-Este.)

Erzh. Franz der IV. v. Este (Joseph Carl Ambr. Stan.), kön. Prinz v. Ungarn und Böhmen, Erzh. v. Oesterreich, regierend. Herzog v. Modena, Reggio, Mirandola, Massa und Carrara, Fürst von Correggio und Carpi, Markgraf von Concordia, Graf v. Habsburg und Rivolo, Ritter des goldenen Vließes, Großkreuz des kön. ungr. St. Stephans-Ordens, Ritter des russ. kais. St. Andreas-, St. Alexander-Newski- und des St. Annen-Ordens 1ter Classe, Großkreuz des kön. sicil. St. Ferdinands- und Verdienst-Ordens, k. k. General der Cavallerie, Inhaber des 2ten österr. Cürassier-Regim., geb. 6. Oct. 1779, folgt seinem Herrn Vater, dem Erzh. Ferdinand (Carl Ant.), 24. Dec. 1806 in seinen Rechten und Ansprüchen, gelangt im März 1814 zum Besitze des verlornen Herzogthums Modena und wird 9. Jul. 1815 durch den Wiener Congreß darin bestätigt. Vermählt zu Cagliari auf Sardinien 20. Junius 1812 mit Maria Beatrix (Vict. Jos.), ältesten Tochter des Königs Victor Emanuel von Sardinien, Sternkreuz-Ordens-Dame, geb. 6. Dec. 1792. Residirt in Modena.

Kinder.

a) Erzh. Maria Theresia (Beatrix), geb. 14. Julius 1817. In Modena.
b) Erzh. Franz (Ferd. Geminian,) geb. 1. Junius 1819. In Modena.
c) Erzh. Ferdinand, geb. 19. Julius 1821. In Modena.
d) Erzh. Maria Beatrix (Anna Francisca), geb. 13. Febr. 1824. In Modena.

Mutter und Geschwister. S. C. Nebenlinie von Massa-Carrara.

## E. Nebenlinie von Parma, Piacenza und Guastalla.

a) Jetzt regierendes Haus.

Maria Ludovica (Leopold. Franc. Theres. Jos. Luc.), Majestät, kais. Prinzessinn und Erzherzoginn v. Oesterreich, Herzoginn v. Parma, Piacenza und Guastalla, Großmeisterinn des constantinischen St. Georgs-Ordens, Sternkreuz-Ordens-Dame ꝛc., geb. zu Wien 12. Dec. 1791, vermählt durch Procuration zu Wien 11. März, dann zu Paris 1. April 1810 mit Napoleon Buonaparte, vormahl. Kaiser der Franzosen, Witwe seit 5. May 1821, wird Herzoginn von Parma 11. April 1814, und übernimmt die Regierung von Kaiser Franz dem I. 7. März 1816. Residirt in Parma.

Sohn.

(Herzogliche Durchlaucht.)

Prinz Franz (Jos. Carl), Herzog von Reichstadt, Großkreuz des k. ungr. St. Stephans-Ordens und des

constantinischen St. Georgs-Ordens von Parma, k. k. Hauptmann, geb. zu Paris 20. März 1811. In Wien.

b) Vormahls und künftig (nach dem Tode der Herzoginn Maria Ludovica) regierendes Haus ist die hinterlassene Familie des letzten Herzogs Ferdinand des I. Infanten von Spanien † 6. Oct. 1802 und seiner Gemahlinn, der Erzh. Maria Amalia († 18. Junius 1804). Des Erbprinzen und nachherigen Königs von Etrurien, Ludwigs des I. († 27. May 1803) Sohn ist bis zur Nachfolge in Parma, Herzog von Lucca. (S. Lucca.)

Noch lebende Töchter des Herzogs Ferdinand und der Erzh. Maria Amalia.

1. Maria Antonia (Jos.), Infantinn von Parma, Sternkreuz-Ordens-Dame, auch Dame des span. Ordens der Königinn Mar. Louise, geb. zu Parma 28. Nov. 1774. Lebt zu Parma b. d. Ursulinerinnen.
2. Charlotte (Mar. Ferd.), Infant. von Parma, Sternkreuz-Ordens-Dame, auch Dame des span. Ordens der Königinn Mar. Louise, geb. 7. Sept. 1777. Legte 1798 in einem Kloster zu Parma die Gelübde ab, und lebte seit 1804 zu Rom.

# Uebersicht der übrigen souveränen Häupter in Europa.

## Weltliche Souveräne.

### A. Kaiser.

1. Rußland. (Griech. Rel.)

(Ältere Linie von Holstein-Gottorp, aus dem Oldenburgischen Stamme.)

Kaiser Nikolaus Paulowitsch der I., geb. 7. Julius 1796, folgt seinem Hrn. Bruder, Kaiser Alexander dem I. 1. Dec. 1825. Residirt zu Petersburg und Moskau.

2. Türkisches Reich (Muhamedischer Rel.)

(Aus der Familie Osmans.)

Kaiser (Padischah) oder Groß-Sultan Mahmud der II. Han, geb. 20. Julius 1785, Neffe des Kaisers Semlin des III., auf den Thron erhoben 28. Julius 1808, mit Muhameds Schwert umgürtet 11. Aug. 1808. Res. zu Constantinopel.

### B. Königliche Souveräne.

1. Bayern. (Kath. Rel.)

(Dritter oder Birkenfeldischer Ast der Zweybrückenschen Linie aus dem Wittelsbachischen Stamme.)

König Ludwig (Carl August) der I., geb. den 25. Aug. 1786, folgte seinem Hrn. Vater, Könige Maximilian Joseph dem I., 13. Oct. 1825. Res. zu München.

Herzogliche Nebenlinien von Bayern sind: 1) die Birkenfeldische Nebenlinie der Pfalz-Zweybrückenschen Hauptlinie; die Sulzbacher Nebenlinie der vormahligen Neuburger Hauptlinie (vormahliges Churhaus).

2. Dänemark (Luth. Rel.)

(Aus dem Oldenburgischen oder Holsteinischen Stamme.)

König Frederik der VI., geb. 28. Jan. 1768, erklärt zum Mitregenten seines Vaters Christian des VII. 14. April 1784, folgt demselben 13. März 1808, gekrönt und gesalbt 30. Jul. 1815. Residirt zu Kopenhagen.

3. Frankreich (Kathol. Rel.)

(Aus der Familie Bourbon des Capetingischen Stammes.)

König Carl der X. (Philipp) von Frankreich und Navarra, geb 9. Oct. 1757, folgt seinem Bruder Ludwig dem XVIII. 16. Sept. 1824, gekrönt 29. May 1825. Res. zu Paris.

4. Großbritannien und Hannover. (Religion der englischen oder Hochkirche der reform. Confession.)

(Das Haus Braunschweig-Lüneburg, aus dem Stamme Azzo's von Este.)

König Georg der IV. (Friedr. Aug.), auch König von Hannover, geb. 12. Aug. 1762, folgt seinem Hrn. Vater König Georg dem III. 29. Jan. 1820. Residirt zu London.

5. Niederlande. (Ref. Rel.)

(Aus der jüngern oder Ottonischen Hauptlinie des Hauses Nassau, oder der Linie Nassau-Dietz oder Neu-Oranien.)

König Wilhelm (Friedrich) der I., Fürst von Oranien-Nassau und Großherzog von Luxemburg, geb. 24. Aug. 1772, folgt seinem Hrn. Vater Wilhelm dem V. als Fürst von Nassau-Oranien 9. April 1806, beschwört 30. März 1814 die neue Constitution von Holland, übernimmt 31. Julius 1814 die Regierung und nimmt die kön. Würde an 15. März 1815. Residirt abwechselnd zu Haag und Brüssel.

6. Portugal. (Kath. Rel.)

(Jüngere Burgundische Linie der Capetinger.)

Königinn Donna Maria da Gloria (Joh. Carol. Leopold. Isidora), geb. zu Rio-Janeiro 4. April 1819, erhielt das Recht auf den Thron durch Cession ihres Hrn. Vaters, Don Pedro de Alcantara I. (Ant. Jos.), Kaisers von Brasilien, welcher denselben durch den Tod seines Hrn. Vaters, des Kaisers und Königs Johann VI. 10. März 1826, erlangt hatte. Die Regierung wird von einer Regentschaft geführt.

7. Preußen. (Ref. Rel.)

(Aus dem Hohenzollernschen Stamme.)

König Friedrich Wilhelm der III., geb. 3. Aug. 1770, folgt seinem Hrn. Vater, König Friedrich Wilhelm dem II. 16. Nov. 1797. Res. zu Berlin.

8. Sachsen. (Kath. Rel.)

(Jüngere oder Albertinische Linie des Wettinischen Stammes.)

König Anton Clemens Theodor der I., geboren 27. Dec. 1755, folgt seinem Hrn. Bruder, Könige Friedrich August 5. May 1827. Res. zu Dresden.

9. Sardinien. (Kath. Religion.)
(Aus dem Savoyischen Stamme.)

König Carl Felix Jos. der I., geb. 6. April 1765, erlangt als vormahliger Herzog von Geneve die Krone durch Cession seines Bruders, Königs Victor Emanuel des I, 13. März 1821. Res. zu Turin.

Nebenlinie des kön. Sardinischen Hauses ist die Linie Savoyen-Carignan, welcher die Wiener Congreß-Acte auf den Fall, daß die Hauptlinie erlöschen sollte, die Erbfolge auf dem kön. Throne zusichert.

10. Schweden und Norwegen. (Luth. Rel.)
(Aus der Familie Bernadotte. Die entthronte kön. Familie war der erste Ast der jüngern Linie von Holstein-Gottorp-Oldenburg.)

König Carl Johann der XIV., geb. zu Pau. in Frankreich 26. Jan. 1764, zum Kronprinzen von Schweden gewählt 21. Aug. 1810, folgt seinem Adoptiv-Vater König Carl dem XIII. 5. Februar 1818. Res. zu Stockholm.

11. Beyde Sicilien. (Kath. Rel.)
(Aus dem Hause Bourbon.)

König Franz (Januar) der I., Infant von Spanien, geb. 19. Aug. 1777, folgt seinem Hrn. Vater Ferdinand dem I. 4. Jan. 1825. Res. zu Neapel.

12. Spanien. (Kath. Rel.)
(Spanische Linie des Hauses Bourbon aus dem Capetingischen Stamme.)

König Ferdinand der VII., geb. 14. Oct. 1784, erhält die Regierung durch Resignation seines Hrn. Vaters, Königs Carl des IV. 10. März 1808, tritt dieselbe wirklich an 2. May 1814. Res. zu Madrit.

13. Würtemberg. (Luth. Rel.)
(Stuttgardische Hauptlinie des alten Geschlechtes Beutelsbach.)

König Wilhelm, geb. 27. Sept. 1781, folgt seinem Hrn. Vater Kön. Friedr. dem I. 30. Oct. 1816. Res. zu Stuttg.

---

## C. Souveräne von königlichem Range.

1. Baden. (Lutherischer Rel.)
(Aus dem uralten Hause Zähringen, das mit dem habsburgischen und lothringischen gleichen Ursprung hat.)

Großherzog Ludwig (Wilhelm August), geb. 9. Febr. 1763, folgt seinem Neffen, dem Großherzoge Carl Ludwig, 8. Dec. 1818. Res. zu Carlsruhe.

2. Hessen-Cassel. (Ref. Rel.)
(Casselsche Hauptlinie des Hessischen Hauses, auch Churlinie genannt.)

Churfürst Wilhelm der II., geb. 28. Julius 1777, folgt seinem Hrn. Vater, Churfürsten Wilhelm dem I., 27. Febr. 1821. Res. zu Cassel.

Nebenlinien der Churlinie sind: 2) ältere Nebenlinie von Hessen-Philippsthal (ref. Rel.); 2) jüngere Nebenlinie zu Hessen-Philippsthal-Barchfeld (ref. Rel.); 3) Linie zu Hessen-Rheinfels-Rothenburg (kath. Rel.)

3. Hessen-Darmstadt. (Luth. Rel.)
(Darmstädtische Hauptlinie des hessischen Hauses.)

Großherzog Ludwig der X., geb. 14. Junius 1753, folgt seinem Herrn Vater, Landgrafen Ludwig dem IX., 6. April 1790, nimmt den großherzoglichen Titel an 13. Aug. 1806. Res zu Darmstadt.

Nebenlinie von Hessen-Darmstadt ist Hessen-Homburg.

4. Mecklenburg-Schwerin (Luth. Rel.)
(Erste Mecklenburgische Hauptlinie des slavisch-obotritischen Stammes des Niklot.)

Großherzog Friedrich Franz, geb. 10. Dec. 1756, folgt seines Vaters Bruder, dem Herzoge Friedrich 24. April 1785. Res. zu Schwerin.

5. Mecklenburg-Strelitz. (Luth. Rel.)
(Zweyte Mecklenburgische Hauptlinie des slavisch-obotritischen Stammes des Niklot.)

Großherzog Georg (Friedrich Carl Joseph), geb. 12. Aug. 1779, folgt seinem Hrn. Vater, Großherzoge Carl Ludwig Friedrich, 6. Nov. 1816. Res. zu Strelitz.

6. Holstein-Gottorp-Oldenburg. (Luth. Rel.)
(Jüngere Linie des Hauses Holstein-Gottorp, aus dem Oldenburgischen Stamme. Die ältere s. b. Rußland.)

Großherzog August (Paul Friedrich), geb. 13. Julius 1783, folgt seinem Vater Peter d. 21. May 1829. Zu Plön.

7. Sachsen-Weimar und Eisenach, (Luth. Rel.)
(Aus der ältern oder Ernestinischen Linie des sächsischen Stammes Wettin.)

Großherzog Carl Friedrich, geb. 2. Febr. 1783, folgt seinem Hrn. Vater, Großh. Carl August 14. Junius 1828. Residirt zu Weimar.

---

## D. Herzogliche Souveräne.

1. Anhalt-Bernburg. (Luth. Rel.)
(Zweyte Linie des Anhaltischen Hauses.)

Herzog Alexius Friedrich Christian, geb. 12. Julius 1767, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Friedrich Albert, 9. April 1796, wird vom Kaiser Franz zum Herzoge erhoben 18. April 1806. Senior der Anhaltischen Häuser. Res. zu Ballenstädt.

Eine Seitenlinie von Anhalt-Bernburg war: Anhalt-Bernburg-Schaumburg.

2. Anhalt-Dessau. (Ref. Rel.)
(Erste oder ältere Linie des Anhaltischen Hauses.)

Herzog Leopold Friedrich, geb. 1. Oct. 1794, folgt seinem Großvater, Herzoge Leopold Friedr. Franz, 9. Aug. 1817. Residenz in Dessau.

3. Anhalt-Köthen und Pleß. (Kath. Rel.)
(Dritte Linie des Anhaltischen Hauses.)

Herzog Friedrich Ferdinand, geb 25. Junius 1769, folgt dem letzten Herzoge aus der bisherigen Hauptlinie von Anhalt-Köthen, Ludw. Aug. Carl, 19. Dec. 1818. Res. zu Köthen.

4. Braunschweig-Wolfenbüttel. (Luth. Rel.)
(Seitenlinie von Braunschweig-Lüneburg, aus dem Stamme Azzo's von Este.)

Herzog Carl Friedrich (August Wilh.), geb. 30. Oct. 1804, folgt seinem Hrn. Vater, Herzog Wilhelm Friedrich, 16. Junius 1815, unter Vormundschaft des Königs von Großbritannien, die 30. Aug. 1823 zu Ende ging. Residenzst. Braunschweig.

5. Lucca. (Kathol. Rel.)
(Aus der spanischen Linie des Hauses Bourbon.)
Herzog Don Carl Aloys, Infant von Spanien, vermahls König von Etrurien, geb. 23. Dec. 1799, folgt seiner Frau Mutter, der Herzoginn Maria Louise 13. März 1824. Ref. in Lucca.

6. Nassau. (Evangel. Rel.)
(Aus der ältern oder Wallramschen Hauptlinie des Hauses Nassau, bisher Nassau-Weilburg genannt.)
Herzog Wilhelm Georg (Aug. Heinr. Belg.), geb. 14. Junius 1792, folgt seinem Hrn. Vater, dem Fürsten Friedrich Wilhelm von Nassau-Weilburg, 9. Jan. 1816 in Weilburg, vereinigt das Gesammthaus Nassau nach dem Tode seines Vetters, des Herzogs Friedrich August von Nassau-Usingen 24. März 1816. Ref. abwechselnd zu Bieberich u. Weilburg.
Die Nassau-Usingen'sche Nebenlinie (Luth.) Rel.) ist 24. März 1816. im Mannsstamme erloschen.
Die jüngere oder Ottonische Linie s. b. d. Niederlanden.

7. Sachsen-Coburg-Gotha. (Luth. Rel.)
(Coburgische Speciallinie der ältern oder Ernestinischen Linie des Wettinischen Stammes.)
Herzog Ernst (Carl Ludwig Anton), geb. 2. Jan. 1784, folgt seinem Herrn Vater, Herzoge Franz 9. Dec. 1806. Residirt zu Gotha.

8. Sachsen-Coburg-Meiningen. (Luth. Rel.)
(Meiningensche Speciallinie der ältern oder Ernestinischen Linie des Wettinischen Stammes.)
Herzog Bernhard (Erich Freund), geb. 17. Dec. 1800, folgt seinem Hrn. Vater, Herzoge Georg 24. Dec. 1803, unter Vormundschaft seiner Mutter, tritt die Reg. an 17. Dec. 1821. Ref. zu Meiningen.

9. Sachsen-Altenburg. (Luth. Rel.)
(Altenburgische Speciallinie der ältern oder Ernestinischen Linie des Wettinischen Stammes.)
Herzog Friedrich, geb. 29. April 1763, folgt seinem Hrn. Vater Herzoge Ernst Friedrich Carl von Hildburghausen 22. Sept. 1780. Residirt zu Altenburg.

## E. Landgräflicher Souverän.

Hessen-Homburg. (Ref. Rel.)
(Nebenlinie von Hessen-Darmstadt.)
Landgraf Ludwig Wilhelm, geb. 29. Aug. 1770, folgt seinem Hrn. Bruder Friedrich Jos. 2. April 1829.

## F. Fürstliche Souveräne.

1. Hohenzollern-Hechingen. (Kath. Rel.)
(Hechingensche Linie des Hauses Hohenzollern.)
Fürst Friedr. Hermann (Otto), geb. 22. Julius 1776, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Hermann Friedr. Otto 2. Nov. 1810. Ref. zu Hechingen.

2. Hohenzollern-Sigmaringen. (Kath. Rel.)
(Sigmaringensche Linie des Hauses Hohenzollern.)
Fürst Anton Aloys (Meinrad Franz), geb. 20 Junius 1762, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Carl Friedrich 26. Dec. 1785. Ref. zu Sigmaringen.

3. Liechtenstein. (Kath. Rel.)
(Aus dem Stamme Azzo's von Este.)
Fürst Johann Nep. Joseph, geb. 26. Jun. 1760, folgt seinem Hrn. Bruder, Fürsten Aloys Jos. 24. März 1805. In Wien und Eisgrub in Mähren.

4. Lippe-Detmold. (Ref. Rel.)
(Ältere Linie des Hauses Lippe.)
Fürst Paul Alexander Leopold, geb. 6. Nov. 1796, folgt seinem Hrn. Vater 4. April 1802, unter Vormundschaft seiner Frau Mutter, der Fürstinn Pauline Christ. Wilh., tritt die Regierung an 5. Julius 1820. Ref. zu Detmold.

5. Lippe-Schauenburg od. Lippe-Alverdissen. (Ref. Rel.)
(Jüngere Linie des Hauses Lippe.)
Fürst Georg Wilhelm, geb. 20. Dec. 1784, folgt seinem Hrn. Vater 13. Febr. 1787 unter Vormundschaft, erhält die fürstl. Würde 18. April 1807, tritt die Regierung an 1809. Ref. zu Bückeburg.

6. Reuß zu Plauen. (Luth. Rel.)
1) Ältere Linie oder Reuß-Greitz.
Fürst Heinrich der XIX., geb. 1. März 1790, folgt seinem Hrn. Vater Fürsten Heinrich dem XIII. 29. Jan. 1817. Ref. zu Greitz.
2) Jüngere Linie in 2 regierenden Zweigen.
a) Zweig zu Reuß-Schleitz.
Fürst Heinrich der LXII., geb. 31. May 1785, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Heinrich dem LXII. 17. April 1818. Ref. zu Schleitz.
Nebenzweig v. Reuß-Schleitz ist Reuß-Köstritz.
b) Reuß-Lobenstein-Ebersdorf.
Fürst Heinrich der LXXII., geb. 27. März 1797, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Heinrich dem LII., 10. Julius 1822. in Ebersdorf, und im May 1824 dem Fürsten Heinrich dem LIV. in Lobenstein. Residirt zu Ebersdorf.

7. Schwarzburg-Rudolstadt (Luth. Rel.)
(Jüngere Linie des Schwarzburgischen Hauses.)
Fürst Friedrich Günther, geb. 6. Nov. 1793, folgt seinem Herrn Vater, Fürsten Ludwig Friedrich 28. April 1807, tritt die Reg. an 6. Nov. 1814. Ref. zu Rudolstadt.

8. Schwarzburg-Sondershausen. (Luth. Rel.)
(Ältere Linie des Schwarzburgischen Hauses.)
Fürst Günther (Friedrich Carl), Senior des Hauses Schwarzburg, geb. 5. Dec. 1760, folgt seinem Hrn. Vater Fürsten Christian Günther 14. Oct. 1794. Ref. zu Sondershausen.

9. Waldeck. (Luth. Rel.)
(Aus dem Stamme des Grafen Wittekind von Hwetigau.)
Fürst Georg Friedrich (Heinrich), geb. 20. Sept 1789, folgt seinem Hrn. Vater, Fürsten Georg 9. Sept. 1813, Residirt zu Arolsen.
Die gräfliche Nebenlinie residirt zu Bergheim im Wald.

## Geistlicher Souverän.

Papst Pius der VIII., vorher Franz Xaver Castiglioni, geb. zu Cingoli 20. Nov. 1761, Cardinalbischof seit 1816, zum Papste erwählt 31. März 1829, gekrönt 5. April 1829. Ref. zu Rom.

# Statistische Uebersichtstafel der europäischen Staaten.

| Staaten. (Nach der Einwohnerzahl geordnet.) | Größe in geogr. □ Meilen. | Einwohner-Zahl. | Armeen. | Flotten. | Einkünfte. | Schulden. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. Russisches Kaiserthum mit dem Kön. Polen in Europa | 75155¾ | 31,600000 | 500000 M. im K. 1039000 | 406 Schiffe, wovon 32 Linienschiffe, 18 Freg. rc., m. 32046 M. | 8,333333⅓ fl. | 75 Mill. fl. |
| Königreich Polen allein . . . | 2293¾ | 3,704306 | | | | |
| Mit allen außereuropäischen Besitzungen . . . . . | 374936 | 60,266100 | | | 140 Mill. fl. | 505,132340 |
| 2. Teutschland im Ganzen . | 11451 | 34,631500 | 301637 M. | — | 222 Mill. fl. | 500 Mill. fl. |
| Teutsch. Bund ohne österr., pr., dän. u. niederländ. Besitzungen | 4431 | 13,694700 | 121120 M. | — | 77,029084 | 312 Mill. fl. |
| 3. Kaiserthum Oesterreich . | 12153⅓ | 33,425000 | 271404 M. im K. 750000 | 8 Lin., 8 Freg., 4 Corv., 3 Briggs, 6 Goeletten rc. | 150 Mill. fl. | 450 Mill. fl. |
| Mit den Besitzungen der Nebenlinien in Italien . . . . | 12752⅓ | 35,542530 | 277584 M. | | 158,800000 | 500 Mill. fl. |
| 4. Königreich Frankreich . | 10087 | 32,058741 | 200000 M. im K. 514468 | 45 Lin., 37 Freg. 162 kl. Schiffe. | 980,000000 Franken. | 1416 Mill. Gulden. |
| Mit allen außereuropäischen Besitzungen . . . . . | 11653⅓ | 32,510661 | | | | |
| 5. Königr. Großbritannien u. Irland . . . . . | 5556 | 22,297621 | 102083 M. | 610 Kriegs-Schiffe, wov. 131 Lin, 149 Freg., 172 Corv., 155 Briggs, mit 30000 Matrosen. | 472 Mill. fl. | 8067 Mill. fl. |
| Mit allen übrigen europ. und außereurop. Besitzungen . . | 83252 | 136,998000 | | | | |
| 6. Königr. Spanien . . . | 8447 | 13,651000 | 83000 M. | 3. Lin., 8 Freg., 20 kl. Schiffe. | 44,850000 fl. | 1402 Mill. fl. |
| Mit allen außereuropäischen Besitzungen (jetzt noch) . . . | 13584 | 17,814000 | | | | |
| 7. Königr. Preußen . . . | 5028⅓ | 12,552278 | 111880 M., im K. 530000 | — | 66,910987 fl. | 294 Mill. fl. |
| 8. Türkisches Kaiserthum . | 8441⅓ | 9,476000 | 250000 M. | 80 Schiffe mit 2200 Kanonen. | 30 Mill. fl. | 80 Mill. fl. |
| Mit den außereurop. Besitzungen | 47444 | 23,647000 | | | | |
| 9. Königr. beyder Sicilien | 1947 | 7,414717 | 30000 M. | 1 Lin., 2 Freg., 1 Corv., 99 kl. Schiffe | 31⅓ Mill. fl. | 210 Mill. fl. |
| 10. Königr. der Niederlande | 1197 | 6,115935 | 43297 M. im K. 69472 | 76 Schiffe. | 50,000000 fl. | 1400¼ Mill. fl. |
| Mit den außereurop. Besitzungen | 5931 | 12,783605 | | | | |
| 11. Sardinisches Königreich | 1317 | 4,168414 | 28000 M. | 8 Schiffe. | 21,800000 fl. | 60 Mill. fl. |
| 12. Königreiche Schweden und Norwegen . . . . . | 13734 | 3,801714 | 45201 M., u. 95308 Mil. | 372 Schiffe. | 17,500000 fl. | 43,200000 fl. |
| 13. Königr. Portugal . . | 1722 | 3,013000 | 23528 M. u. | 3 Lin., 6 Freg., 8 Corv., 2 Briggs. | 18,000000 fl. | 155 Mill. fl. |
| Mit den außereurop. Besitzungen | 30524 | 4,646850 | 52151 Miliz. | | | |
| Kaiserthum Brasilien . . | 140625 | 6,000000 | 94000 M. | 3 Lin., 10 Freg. | 17½ Mill. fl. | 75½ Mill. fl. |
| 14. Kirchenstaat . . . . | 811¾ | 2,483940 | 9100 M. | 6 kleine Schiffe. | 10 Mill. fl. | 120 Mill. fl. |
| 15. Schweiz . . . . . | 696 | 2,037030 | 33578 M. | — | 63773 fl. | — |
| 16. Königr. Dänemark . . | 2465⅓ | 1,984665 | 38819 M. | 97 Schiffe. | 10,200000 fl. | 100 Mill. fl. |
| 17. Großherzogth. Toscana . | 396 | 1,300330 | 3000 M. | — | 5½ Mill. fl. | 45 Mill. fl. |
| 18. Herzogth. Parma . . . | 104 | 438000 | 1320 M. | — | 1,800000 fl. | 5 Mill. fl. |
| 19. Herzogth. Modena . . . | 99 | 379000 | 1860 M. | — | 1½ Mill. fl. | 1 Mill. fl. |
| 20. Jonischer Inselstaat . . | 47 | 175000 | 1600 M. | Englische Schiffe | 1,414000 fl. | — |
| 21. Herzogth. Lucca . . . . | 19⅓ | 145000 | 800 | 3 Schiffe. | 720000 fl. | 1½ Mill. fl. |
| 22. Freyer Staat Krakau . . | 23¾ | 128100 | keine | keine. | 333120 fl. | 25000 fl. |
| 23. Republ. San Marino . | 1⅓ | 7500 | 50. M. | — | 30000 fl. | — |

# Statistische Uebersicht der teutschen Bundesstaaten.

| Staaten. | Flächeninhalt in geogr. □ Meilen. | Einwohner-Zahl. | Militärmacht. Gesammte. | Militärmacht. Contingent. | Einkünfte. fl. | Staatsschulden. fl. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. Oesterreich . . . . | 3541½ | 10,883000 | oben. | 94822 | 70,500000 | 300,000000 |
| 2. Preußen . . . . | 3307½ | 9 528015 | oben. | 79234 | 50,000090 | 200,000000 |
| 3. Königr. Bayern . . . | 1477 | 3,881000 | 50524 | 35600 | 32,640012 | 111,000000 |
| 4. „ Sachsen . . . | 273 | 1,400000 | 15000 | 12000 | 9,000000 | 32,330256 |
| 5. „ Hannover . . . | 700¼ | 1,568300 | 12940 | 13054 | 11,700000 | 30,000000 |
| 6. „ Würtemberg . . | 359 | 1,535403 | 16824 | 13955 | 8,357000 | 27,356000 |
| 7. Großh. Baden . . . | 280 | 1,141727 | 10979 | 10000 | 9,381280 | 15,981000 |
| 8. Churfürst. Hessen . . . | 209 | 602700 | 8204 | 5679 | 4,500000 | 1,945725 |
| 9. Großh. Hessen . . . | 185 | 739000 | 8609 | 6195 | 5,875000 | 13,000000 |
| 10. Herzogth. Holstein u. Lauenburg | 172¼ | 440900 | oben. | 3900 | 2,080000 | oben. |
| 11. Großh. Luxemburg . . . | 103 | 296500 | oben. | 2556 | 1,800000 | oben. |
| 12. „ Sachsen-Weimar-Eisenach | 66⅔ | 225947 | 2279 | 2010 | 1,875000 | 6,296000 |
| 13. Herzogth. Sachs.-Meiningen . | 43 | 130500 | 1150 | 1150 | 750000 | 2,500000 |
| 14. „ Sachsen-Altenburg . | 24 | 108000 | 982 | 982 | 687667 | 1,905820 |
| 15. „ Sachs.-Coburg-Gotha . | 47⅔ | 145500 | 1416 | 1416 | 900000 | 3,000000 |
| 16. „ Braunschweig . . | 70⅓ | 244200 | 2432 | 2096 | 2,377000 | 3,500000 |
| 17. Großh. Mecklenburg-Schwerin . | 224 | 435091 | 3137 | 3580 | 2,300000 | 9,500000 |
| 18. „ „ „ Strelitz . | 36 | 79400 | 742 | 717 | 500000 | 500000 |
| 19. „ Oldenburg . . | 114 | 235200 | 1650 | 2178 | 1,500000 | — |
| 20. Herzogth. Nassau . . . | 82¾ | 337327 | 4036 | 3028 | 1,810000 | 5,000000 |
| 22. „ Anhalt-Dessau . . | 16¾ | 57500 | 600 | 529 | 710000 | 500000 |
| 22. „ Anhalt-Bernburg . | 15¾ | 38900 | 120 | 370 | 450000 | 600000 |
| 23. „ Anhalt-Köthen . . | 15 | 34900 | 324 | 324 | 230000 | 1,600000 |
| 24. Fürstenth. Schwarzburg-Sondershausen . . . | 17 | 49000 | 451 | 451 | 300000 | 90000 |
| 25. „ Schwarzb.-Rudolstadt . | 19 | 60000 | 539 | 539 | 260000 | 365000 |
| 26. „ Hohenzollern-Hechingen | 5 | 14900 | 145 | 145 | 120000 | 200000 |
| 27. „ Hohenzoll.-Sigmaringen | 18¼ | 38000 | 370 | 370 | 300000 | 600000 |
| 28. „ Liechtenstein . . | 2⅓ | 5546 | 55 | 55 | 17000 | — |
| 29. „ Reuß, ältere Linie Greiz | 7 | 23000 | 223 | 223 | 140000 | 200000 |
| 30. „ Reuß, jüngere Linie . | 21 | 53800 | 522 | 522 | 400000 | 700000 |
| 31. „ Lippe-Detmold . | 20⅔ | 71200 | 930 | 690 | 490000 | 700000 |
| 32. „ Lippe-Schauenburg . | 9¾ | 25500 | 240 | 240 | 215000 | 400000 |
| 33. „ Waldeck . . . | 22 | 54000 | 518 | 518 | 400000 | 1,200000 |
| 34. Landgr. Hessen-Homburg . . | 7⅔ | 21350 | — | 200 | 200000 | 450000 |
| 35. Freye Städte. Frankfurt am Main . | 4⅓ | 52200 | 600 | 473 | 270000 | 3,000000 |
| 36. Freye Städte. Lübeck . . . | 5⅓ | 40700 | 406 | 406 | 400000 | 3,000000 |
| 37. Freye Städte. Bremen . . . | 3⅓ | 48500 | 385 | 385 | 400000 | 4,500000 |
| 38. Freye Städte. Hamburg . . . | | 134500 | 1450 | 1298 | 1,500000 | 13,500000 |

# Verzeichniß der vorzüglichsten Messen, Jahr- und Wochenmärkte im österreichischen Kaiserstaate.

(Vermöge Allerhöchster Verordnung sollen an Sonn- und gebothenen Feyertagen an keinem Orte des österr. Kaiserstaates Jahr- und Wochenmärkte gehalten, sondern auf den zunächst vorhergehenden oder den nachfolgenden Tag verlegt werden.)

1. Märkte im Erzherzogthume Oesterreich unter der Ens.

Allendsteig, 1. Freyt. n. Mar. Heimf., 2. Freyt. n. Aegidi. Altenmarkt, n. Miseric. Amstätten, 1. Steph. Erfind., 2. n. Steph. Mart. St. Andrä, Charfreyt. St. Andrä vorm Hagenthal, Andreas. Aspern, 1. Donnerst. v. Quadrages., 2. n. Pet. u. Pauli, 3. Sebald, 4. Mont. n. Martini.

Baden, 1. d. 1. May, 2. zu Barthol. Alle Freyt. Wochenm. Baumgarten, n. Exaudi. Berchtoldsdorf (Petersdorf), 1. Augustus (d. 23. Aug.), 2. Leonh. (d. 6. Nov.) Alle Mont. Körnerm. Bockflüß, 1. n. Quadrag., 2. Dienst. n. Jac. Ap. Böckstall, Dienst. n. Jac. Ap. Bodensee, 1. Mont. n. Lätare, 2. Magdal., 3. n. M. Himmelf., 4. n. M. Geb. Böheimkirchen, 1. Mont. n. Jubil., 2. Dienst. n. Jac. Ap. Brandhof, Mont. n. Apostelthei. Bruck an der Leytha, 1. Urban., 2. Mont. n. Aegidi. Brunn, Mont. n. Apostelthei. Brunn hint. d. Wienerberg, Phil. u. Jac. Burgstall, n. Peter u. Paul.

Dobersberg, Mont. v. Pfingst. Draßdorf, n. Pet. u. Paul. Drosendorf, 1. Dienst. n. Judica, 2. Donn. n. Fronleichn., 3. Matthäus, 4. Thom. Vorher allezeit Pferd- u. Viehm. Drösing, Mont. n. Laurenz. Dürrenkrut, 1. Mont. n. d. 3. Sonnt. n. Pfingst., 2. Barbara. Dürrenstein, Mont. n. Miseric.

Ebenfurt b. Neustadt, Mont. n. Udalrici. Egenburg, 1. Dienst. n. Lätare, Tags zuv. Roß- und Viehm., 2. Dienst. n. Trinit., Tags zuv. Roß- u. Viehm., 3. d. 5. August (Oswald), 4. Dienst. v. Matthäus Ap., zugl. Faß- u. Holzm., zuvor Roß- u. Viehm., 5. d. 3. Dienst. im Advent, Tags zuvor Roß- u. Viehm. Alle Mittw. Wochenm. Enzersdorf (Groß-), 1. Mont. n. Jubilate, 2. Barthol. Alle Mittw. Wochenm. Ernstbrunn, 1. Mont. v. Lichtm., 2. Magdal., 3. Mart. Etsdorf, Mont. v. Pfingstsonntag.

Falkenstein, 1. Mont. n. Laurenz, 2. v. u. n. Simon, 14 Tage. Feldsberg, 1. Thom., 2. Mont. n. Palmf., 3. Mont. n. h. Dreyfalt., 4. n. † Erhöh., 5. Mart. Fellabrunn, 1. Mont. n. Lätare, 2. Barthol. Fischament, 1. Mont. n. Quasimod., Tags vorh. Roß- und Viehm., 2. Matthäus. Alle Dienst. u. Donn. Wochenm. Friedersbach, Mont. n. Mart. Furt bey Göttweig, 1. Margar., 2. Margareth.

Gansbach, 1. Mont. n. Jubil., 2. d. 5. Aug. (Oswald), 3. Barthol. Gars, 1. Dienst. n. Pfingst., 2. Barthol. Gaunersdorf, 1. Mont. n. Georg, 2. Mont. v. Barthol. St. Georg bey Mannersdorf, Georg. St. Georg in der Grünau, 1. Georg, 2. Mont. n. Aegidi. Gerungs (Groß-), 1. Samst. v. Lätare, 2. Georg, 3. Joh. Täuf., 4. Barthol.; alle Samst. Viehm. Gföhl, 1. Phil. u. Jac., 2. Veit, 3. Barthol., 4. Andreas. Glocknitz, 1. Barthol. (24. Aug.), 2. Sebast. (20. Jan.) Gmünd, 1. d. 5. Aug., 2. Elisab. Gobelsburg, Aegidi Holzm., Tags darauf Hauptm. St. Gotthard ob. Texing, Gotth. Göllersdorf, Matthäus. Göttweig, Dienst. n. Pfingst. Götzendorf, 1. Vitus, 2. Woche v. Simon. Grafensdorf, Mont. n. Augustin. Grafenschlag, Mont. n. Mart. Grafenwörth, Mont. v. Barthol. Gresten, Nikolaus. Gumpoldskirchen, 1. 24. April, 2. 21. Octob. Guntersdorf, 1. Dienst. n. Oculi, 2. Dienst. n. Mar. Geb.

Haag bey Steyr, Michael. Hadersdorf, n. Pet. u. Paul. Hagendorf b. Staats, n. Chr. Himmelf. Hainburg, 1. Andreas, 2. Mart. Hainfeld, n. Quasimod. Hassendorf, Mont. n. Margareth. Haugsdorf, 1. n. Chr. Himmelf., 2. n. Pet. u. Paul, 3. d. 9. Sept., Jahr- u. Faßm., 4. n. Leonh. (6. Nov.) Hausleiten, Mont. n. Fronleichn. Heidenreichstein, 1. Margar., 2. Michael. Alle Mont. Vieh- u. Körnerm. Heiligenaich, 1. Charfr., 2. Phil. u. Jac. Heiligenblut, 1. Mont. n. Lätare, 2. Mont. n. Fronleichn., 3. Andreas. Heiligenkreuz, n. Neuj. Heinrichschlag, Joh. Täuf. Herzogenburg, 1. St. Blasius im ob. Markt, 2. n. Trinit., 3. Martini im unt. Markt. Himberg, Laurenz. Hirm, d. 5. Aug. (Oswald). Hochenau, 1. n. Chr. Himmelf., 2. Joh. Täuf., 3. Martin. Hohenruppersdorf, 1. n. Cant., 2. Matthäus, 3. Thomas. Hollabrunn (Ober-), Mont. n. Udalrici. Hollabrunn (Unter-), 1. Mont. n. Lätare, 2. Michael, 3. Andreas. Horn, 1. Dienst. v. Pauli Bekehr., 2. n. Osterdienst., 3. Joh. Täuf., 4. Martin. Allezeit zuvor Roß- und Viehm.

*) Wenn einige Ortschaften ihre Jahr- und Wochenmärkte in diesen Kalender eingetragen wünschen, so ist hiervon die Anzeige an die Armbruster'sche Buchhandlung nach Wien zu schicken. Mit gleicher Gefälligkeit werden allfällige Berichtigungen angenommen. Insbesondere ersucht man diejenigen Herren Buchhändler und Buchbinder in Oesterreich unter der Ens, welche sich mit dem Verkaufe dieses Kalenders befassen, die in ihrer Gegend Statt findenden und irrig angegebenen Märkte uns unter obiger Adresse angeben zu wollen.

Ips, 1. Mont. n. Reminisc., 2. n. Cant., 3. Mont. n. Laur. Ispern, 1. Mont. n. Miseric., 2. Mont. vor Sim. Judenau, Rupert.

Karlstätten, Margar. Kilb, 1. in der † Woche, 2. n. Fronleichn., 3 Sim. Kirchberg, Charfreytag. Kirchberg hint. Kilb, 1. n. Palmsonnt., 2. n. Cant. Kirchberg am Wagram, 1. Dienst. v. Fastn. Tags zuv. Roß- u. Viehm., 2. Dienst. v. M. Himmelf. Kirchberg hint. Neust., 1. M. Verkünd., 2. Thom. Kirchschlag, 1. Michael, 2. Thom. Klosterneuburg, 1. Mont. n. Fronleichn., 2. n. Leop. Königstätten, 1. n. Cant., 2. Jac. Ap., 3. Mart. Korneuburg, 1. Dienst. n. Oculi, 2. Mont. n. Apostelheil. (zugl. Binderm.), 3. Ursula, 4. n. Allerh. Wöchentl. Getreidem.; d. 1. Oct. allgem. Viehm. Kottis, Mont. n. Barthol. Krems, 1. 8 Tage v. u. 8 Tage n. Jacobi, 2 8 Tage v. u. 8 Tage n. Sim. u. Jud. Jährl. 2 Pferdm. 1. Donn. n. Ostern, 2. Donn. v. Simon. Alle Samst. Haferm.

Laa, 1. Mittw. n. h. 3 König, 2. d. 2. Dienst. n. Ostern, 3. Vitus, 4. Augustin, 5. Elisab. Allezeit vorh. Roßm. Nach Michaelis wird alle Dienst. Wochenm. gehalten. Laab, Mar. Heims. Lach, Mont. n. Augustin. Langenlois, 1. Donnerst. n. Doroth., 2 Dienst. n. Steph. Erfind., 3. Donnerst. n. Leonh. Alle Mont. Körnerm. Laxenburg, † Erhöh. Lengbach (Neuen-), 1. Dienst. n. d. Sonnt. v. Pauli Bek., 2. Mont. n. Apostelheil., 3. Dienst. n. d. Sonnt. n. Coloman. Auch Wochenm. m. Getreide. St. Leonhard am Forst, 1. Joh. Täuf., 2. Leonh. Litschau, 1. Georg, 2. Coloman. Alle Donnerst. Vieh- u. Körnerm. Losdorf, 1. Mont. v. Joh. Täuf., 2. Mont. v. Bartholom.

Mailberg, 1. n. Exaudi, 2. n. Allerh. Mank, 1. M. Verkünd., 2. n. M. Himmelf. Marbach, 1. Mont. n. Udalrici, 2. Kathar. Marcheck, 1. Joh. Täuf., 2. Aegidi. Markgrafen-Neusiedl, alle Mont. Körnerm. Mautern, Rupert. Medling, 1. Mont. n. Fronleichn., 2. Aegidi, 3. Nikol. Wöchentl. Getreidem. Meissau, 1. Dienst. n. Exaudi, Tags zuv. Roß- und Viehm., 2. n. Leopold. Melk, 1. n. † Erfind., 2. Dienst. n. Pfingst., 3. Coloman; auch Wochenm. St. Michael bey Spitz, Mont. n. Quasimod. Mistelbach, 1. Mont. n. Invocav., 2. Mont. in d. † Woche, 3. Michaeli, Tags zuv. Vieh- u. Holzm., 4. am 3. Adventmont., 1 od. 2 Tage vorh. Roß- u. Viehm., zu Mich. auch Holzm. Alle Samst. Getreidem.

Neudorf bey Staats, Mont. n. Lätare. Neukirchen bey Böckstall, M. Verkünd. Neukirchen bey Horn, Andreas. Neunkirchen hint. Neustadt, 1. Charfreyt., 2. Marcus, 3. Portiuncula, 4. Sim. u. Jud. Viehmärkte: 1. Marc., 2. Sim. u. Jud. Neupölla, 1. Margar., 2. Kathar. Neustadt (Wiener-), 1. d. 1. Mont. n. M. Himmelf., 2. Mont. n. Mathias; alle Samst. Wochenm., alle Mittw. Viehmarkt; d. 27. Sept. Pferdemarkt.

Obermarkersdorf, Nikol.; Tags zuvor Roß- und Viehm. Oberwalpersdorf, Dienst. n. Jac. Ap. Ochsenburg, Dienst. n. Jac. Ap. Orth, Michael. Ottenschlag, 1. n. Cantate, 2. Jac. Apost.

Pechlarn, 1. Mont. n. Lätare, 2. Mont. n. Fronleichn., 3. Mar. Opfer. Persenbeug, Barthol. Petronel, Mont. n. Aegidi. Petzenkirchen, 1. Steph. Erfind., 2. Thom. Pfaffstätten, 2. Jul. Pira, 1. am 2. Mont. n. Udalrici, 2. Mont. n. Margar. St. Pölten, 1. Dienst. n. Reminisc., 2. n. Mar. Geb. Alle Samst. Körnerm. Pottendorf, 1. Mont. n. Jubil., 2. Jac. Ap., 3. Mont. n. August., 4. Rupert, 5. n. Allerh. Poysdorf, 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Georg, 3. Margar., 4. Joh. Täuf., 5. Mont. n. Aegidi. Alle Freyt. Wochenm. Pulkau, 1. Tag v. Lichtmeß. Viehm., Blasitag Markt, 2. Dienst. n. Exaudi, 3 Mar. Magd., 4. Michael; vorh. immer Roß- u. Viehm.

Rabenstein, n. Jubil. Radlbrunn, 1. Dienst. n. Oculi, 2. Dienst. n. Allerh. Ragendorf, Mont. v. Simon. Ranna, Dienst. n. Jac. Ap. Rapoltenstein, M. Heims. Raps, 1. n. Oculi, 2. Donnerst. n. Exaudi, 3. Laurenz, 4. Sim. Rastenfeld, 1. Mont. n. Trinit., 2. Dienst. n. Aegidi, Tags vorh. Roß- u. Viehm. Ravelsbach, n. Quadrag. od. Invoc. Retz, 1. Dienst. n. Neujahr, 2. Jos., 3. Phil. u. Jac., 4. Laur., 5. Dienst. n. Rosenkranzf., d. Tag vorh. Roß- u. Viehm. Röschitz, 1. Joh. u. Paul, 2. Franz. Ser. Ruprechtsdorf, n. Jubil. Ruprechtshofen, 1. n. Valent., 2. Mont. n. Apostelheil., 3. Steph. Erfind. Rußbach, 1. Mont. n. Valent., 2. Mont. n. Apostelth., 3. d. 5. Aug. (Oswald).

Säusenstein, Mont. n. Margar. Scheibs, 1. Magdal., 2. Dienst. n. Invoc. (gr. Erchtag). Den Tag v. letzterem Vieh- u. Pferdem.; alle Wochen Getreidem. Schönbach im V. O. M. B., hat vom 1. Mittw. n. Mittfasten angefangen bis n. Allerh. jeden Mittw. Viehm. Schöngrabern, n. Chr. Himmelf. Schottwien, 1. Vitus, 2. Mich., auch Viehm., 3. Osterdienst., a. Viehm. Schratenthal, Matthäus. Schwallenbach bey Spitz, Phil. u. Jac. Schwechat, 1. d. 1. May 1 Tag, 2. d. 25. Jul. 2 Tage; d. Tag vorh. jederz. Viehm. Alle Mont. Körnerm. Schweigers, 1. Gründonn., 2. Joh. u. Paul, 3. Aegidi, 4. Donn. v. Weihn.; alle Donn. Garn- und Viehm. Sebenstein, Freyt. v. Mittfast. Seefeld, 1. Jac. Ap., 2. Mont. v. Mar. Geb., auch Faß- u. Reifm. Sieghartskirchen, 1. Mont. v. Joh. Täuf., 2. Marg. Sieghards (Groß-), 1. Matth., Tags zuv. Roß- u. Viehm., 2. Mont. n. Vitus, 3. Mont. n. Barthol., 4. n. Allerheil. Sierendorf, Phil. u. Jac. Sittendorf bey Schweinsteig, Phil. u. Jac. Sitzendorf, 1. Donn. v. Ostern, 2. Pfingstdienst., 3. Mont. v. Barthol., 4. Donn. v. Weihn.; Tags vorh. Holz-, Haar- u. Viehm. Sommerein, Barthol. Spitz, 1. n. Palms., 2. Mont. n. Mich. Stätteldorf, 1. St. Vitus (15. Jun.), 2. Mär.

Geb., 3. Kathar., d. Tag vorh. allzeit Pferdm. Stein, n. Leop. Steinakirchen, 1. 14 T. n. Ostern, 2. Mich. Stinkenbrunn, 1. n. Judica, 2. n. Laur. Stockerau, 1. Mont. n. Palms., 2. Joh. Täuf., 3. Mont. n. Mich.; alle Samst. Wochenm.; alle Mittw. Viehm. Stransdorf, 1. Pauli Bekehr., 2. n. Mar. Himmelf., 3. Gallus; an beyden letzteren ist Vieh- u. Holzm.

Texing b. Mank, 1. Mont. n. Lätare, 2. Phil. u. Jac. Thaya, Mont. v. Fastn. Transdorf, Lucia. Trasmauer, n. Cant. Trautmannsdorf, Magdal. Tulbing, 1. Mont. n. Quasim., 2. Mont. n. Fronleichn. Tuln, 1. Georg, 2. Laurenz, 3. Simon.

Ulrichskirchen, 1. Phil. u. Jac., 2. Mont. n. Udalrici, 3. n. Mar. Empf.

Vites, 1. Mont. n. Fronleichn., 2. Mont. n. Augustin.

Waidhofen an d. Thaya, 1. d. 25. Jan., 2. Phil. u. Jac., 3. Mont. n. Matthäus. Alle Samst. Wochen- u. Viehm. Waidhofen an d. Ips, 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Mont. n. Jac., jed. 14 Tage. Viehm. 1. Dienst. n. d. weiß. Sonnt., 2. Dienst. in d. Octoberw. Alle Dienst. Körnerm. Wallsee (Nieder-) 1. 25. Jul., 2. 25. Nov. Am Gründonn. Viehm. Walpersdorf, Mont. vor Joh. Täuf. Weikardsschlag, 1. Mont. v. Barthol., 2. v. Mart. Weikersdorf, 1. n. Elisab., 2. Donn. n. Exaudi. Weißkirchen, Mont. n. Gallus. Weiten, 1. Aschermittw., 2. 5. Aug. Weitersfeld, 1. Pauli Bekehr., 2. Elis. Weitra, 1. n. Judica, 2. n. Pet. u. Paul, 3. Nikol.

Wien, 1. Mont. n. Jubilate, 2. d. Tag n. Allerheil., jeder d. 4 Wochen, seit 1816 auch Wollm. Alle Dienst. u. Samstag Wochenm. Leopoldst. zu Wien: 1. Marg. im Julius d. 14 Tage. Roßau zu Wien: Töpferm. im Jul., Holzm. d. 27. Sept. — Wieselburg, Udalrici. Wilhelmsburg, 1. Mont. n. Jubil., 2. 5. Aug. Alle Mont. Körnerm., Roß- u. Viehm.: 1. d. 3. Febr., 2. d. 1. May, 3. d. 9. Aug., 4. d. 28. Oct. Wolkersdorf, 1. Pauli Bekehr., 2. Mont. n. Lichtm., 3. Mont. n. Georg, Tags vorh. Roß- u. Viehm., 4. Mont. n. Apostelth., 5. Mont. n. Mich. Wullersdorf, Mont. n. Aegidi. Würmla, 1. Joh. Täuf., 2. Mich. Würnsdorf b. Böckstall, Dienst. n. Oculi.

Zeiselmauer, n. Exaudi. Zistersdorf, 1. Mont. n. Miseric., 2. Jacobi, 3. n. Mar. Geb., 4. Nikol.; allezeit zuv. Roß- u. Viehm. Zwettel, 1. Mont. v. Fastn., 2. n. Exaudi, 3. † Erhöh. Pferdm.: 1. Faschingm., 2. d. 13. Sept. Alle Mont. Getreide- u. Viehmarkt.

## 2. Märkte im Erzherzogthume Oesterreich ob der Ens.

Abtenau, 1. d. 2. u. 3. Febr., 2. d. 1. Sonnt. im May, 3. d. 3. Sonnt. im May, 4. d. 10. Oct., 5. d. Sonnt. n. d. 10. Oct. Ach, 1. d. 1. May d. 8 T., 2. d. 25. Jul. d. 8 T., 3. d. 16. Oct. d. 8 T., 4. d. 29. Dec., 5. Freyt. in d. 4. Fastenw. Altheim, 1. d. 3. Mont. n. Pfingst., 2. Laurenz, 3. Mont. v. Thom., 4. Unschuld. Kind. Aschach im Hausruckviertel, 1. Mont. v. Chr. Himmelfahrt, 2. d. 13. Octob., 3. Joh. Evang.

Braunau, 1. Pfingstm. d. 8 T., 2. Jac. d. 8 T., 3. d. 1. Mittw. im Oct., 4. Mart.; am 14. Sept. Pferdm., u. am Donn. n. Mich. ordin. Wochenm.

Ebelsberg, 1. Georg, 2. Joh. Täuf., 3. Kathar. Efferding, 1. 24. Jun., 2. 29. Sept., 3. 29. Nov., 4. 19. März (der sogenannte Josephs-Bretzen-Kirchtag). Ens, 1. Dienst. v. Ostern d. 14 Tage, 2. Aegidi, 3. Mart. B. d. 6 Tage.

St. Florian, 1. Gründonn., 2. Florian, 3. Pfingstdienst., 4. Magdal., 5. Thomas. Freystadt, 1. Pauli Bekehr., 2. Mont. v. Pfingst.

Gmunden, 1. Dienst. n. Barthol., 2. Dienst. n. Leopoldi. Alle Dienst. Wochenm. Grein, 1. Phil. u. Jac., 2. Aegidi. Grieskirchen, 1. d. 3. Mont. in d. Fast., 2. Pfingstdienst., 3. d. 10. Aug., 4. d. 11. Nov. Guttau, 1. d. 2. Sonnt. n. Pfingst., 2. Sonnt. n. Aegidi, 3. Sonnt. n. Martini.

Haag im Hausruckv. 1. Faschingmont., 2. d. 15. Jun., 3. d. 25. Jul., 4. d. 28. Oct., 5. d. 21. Dec. Hall, 1. Laurenz, 2. Mich., 3. Kathar. Hallein, 1. d. 17. Jan. Hallstatt, 1. d. 30. April, 2. d. 24. Jul. 3. d. 30. Octob., 4. d. 6. Nov.

Kirchdorf an d. Krems, 1. d. 2. Mont. in d. Fast., 2. d. 24. Jun., 3. d. 6. Dec. Kremsmünster, 1. Pfingstdienst., 2. Barthol.

Lambach, 1. Jos., 2. Joh. T., 3. Matth., 4. Andreas; alle Mont. Wochenm. Leonfelden, 1. 2. Jul., 2. Sim. u. Jud. Linz, 1. 8 T. n. Ostern, 2. d. 16. Aug., jeder 14 Tage. Den 20. Oct. Pferdem. Alle Dienst. Getreidem.

St. Marienkirchen, 1. d. 1. Werkt. n. Lichtm., 2. d. 1. Dienst. n. Ostern, 3. d. 24. Aug., 4. d. 21. Sept. Mattighofen, 1. Sim. u. Jud., 2. Thom., 3. Donn. v. d. Faschings. Mauerkirchen, 1. Sonnt. v. Lichtm., 2. Faschingm., 3. 1. May, 4. Magdal., 5. 21. Nov., 6. Joh. Evang. Mauthausen, 1. am 1. Mont. in der Fast., 2. d. 22. Jul., 3. d. 15. Oct., 4. d. 6. Sept.; Pferdem.: 1. d. 1. Mont. in d. Fast., 2. Magdal., 3. d. 8. Oct. Mondsee, 1. Osterd., 2. Mich., 3. d. 21 Dec.

Obernberg, 1. d. 3. Mont. in d. Fast., 2. Joh. Bapt., 3. Kath. Oberneukirchen, Jac. Offenhausen, 1. Magdal., 2. Laurenz, 3. d. Tag n. Steph M.

Radstadt, 1. d. 10. May, 2. Sonnt. n. Fronleichn., 3. d. 13. Oct. Markt Ried, 1. n. Sonnt. Lätare d. 4 T., 2. n. Pet. u. Paul d. 8 T., 3. Aegidi d. 6 T., 4. d. 1. Adventf. d. 8. T. Pferdm. d. 21. Sept. Rohrbach, 1. Jacob, 2. Mathias. Alle Montag stark besuchter Wochenm.

Saalfelden, 1. d. 2. Fastens., 2. d. 15. Oct. Salzburg, 1. am Vorabend d. Faschings., 2. d. 21. Sept. Schärding, 1. Florian, 2. Jac., 3. Mart., 4. d. 1.

May, 5. d. 28. Oct. Schwanenstadt, 1. d. 25. Jän., 2. d. 1. May, 3. d. 15. Jun., 4. d. 29. Sept. Schwertberg, 1. Mont. v. Fastn., 2. Mont. v. Pfingst., 3. Mont. v. Laurenz, 4. Mont. n. Gallus. Steyr, 1. Donn. n. Jubil., 2. Mont. n. Pfingst.; alle Donn. Wochenm. Steyreck, 1. d. 3. Febr., 2. d. 1. May, 3. d. 10. Aug.

Vöcklabruck, 1. d. 25. Febr., 2. d. 1. May, 3. d. 24. Junius, 4. d. 24. Aug., 5. d. 30. Nov.

Wels, 1. Samst. in d. Bitt- od. Kreuzw., 2. Samst. n. M. Geb., jed. 8 Tage. Alle Samst. Vieh- und Wochenm. Windischgarsten, 1. d. 1. May, 2. d. 25. Jul.

Zell im Inn v., 1. Osterd., 2. Dienst. n. Pfingst., 3. Joh. Täuf., 4. Sim. u. Jud.

### 3. Märkte in Steyrmark und Illyrien.

Bruck an d. Mur, 1. d. 1. Mont. in d. Fast., 2. d. 2. Mont. n. Ostern, 3. Mont. n. Martini.

Cilli, 1. d. 20. März, 2. Augustin, 3. Andr. Ap.

Feistritz (Windisch-), 1. Pauli Bekehr., 2. Laurenz, 3. Sim. u. Jud. Feistritz an d. Mur, 1. d. 6. Mont. n. Ostern, 2. Mart. St. Florian, 1. Mont. n. d. 1. Quat., 2. T. n. Palms., 3. Floriani, 4. Mont. n. Dreyfalt., 5. Mont. n. Quatemberf. Friedberg, 1. d. 3. Mont. in d. Fast., 2. d. 2. Mont. n. Ostern, 3. Jac., 4. Leop. Fürstenfeld, 1. am 2. Mont. n. Weihn., 2. am 6. Mont. n. Ostern, 3. Joh. T., 4. Augustin, 5. Mont. v. Allerh., 6. Mont. n. Nikol.

Grätz, 1. Dienst. v. Lätare, 2. Aegidi, jed. 3 Woch., voraus Viehm.; wöchentl. 2 gr. Wochenm; Gurkfeld, 1. d. 4. Febr., 2. d. 24. May, 3. d. 4. Aug., 4. d. 29. Nov.

Hartberg, 1. d. 3. Mont. v. Ostern, 2. Pfingstdienst., 3. Mont. n. Mar. Geburt, 4. Leopold.

Ilz, 1. d. 2. Mont. in d. Fast., 2. d. 2. Mont. n. Ostern, 3. Mont. n. Jac., 4. Mont. in d. Herbstquatemberw., 5. Mont. n. d. Winterquatemberw. Judenburg, 1. Tag n. Chr. Himmelf., 2. Ursula.

Klagenfurt, 1. Phil. Jac., 2. d. 14. Sept., jed. 3 Woch. Knittelfeld, 1. T. n. Fronleichn., 2. Mont. n. Barthol., 3. Mont. v. Martini.

Laibach, 1. d. 25. Jan. d. 3 T., auch Roß- u. Viehm., 2. d. 1. May d. 14 T., 3. d. 1. T. n. Pet. u. Paul, 4. † Erhöh., 5. Elisab. d. 14 T. Leoben, 1. Jacobi, 2. Andreas, Tags vorher Viehm.

Marburg, 1. Samst. v. Lichtm., 2. Ulrich, 3. 22. Oct. Maria-Zell, 1. Freyt. v. Pfingst., 2. Rochus; Dienst. v. Michaelis Viehm. Möttling, 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Mont. n. M. Lichtm., 3. Mittw. n. Ostern, 4. Dienst. n. Pfingst., 5. Margar., 6. Dienst. n. M. Himmelf., 7. Dienst. n. Mar. Geb., 8. Mart., 9. Nik. Murau, 1. d. 21. Sept., 2. d. 6. Nov.

Neumarktl, 1. Mont. n. Dreyfaltigkeitss., 2. Mont. n. d. Scapulirfest, 3. Andreas.

Oberwölls, 1. d. 4. Freyt. in d. Fasten, 2. d. 1. May, 3. d. 22. Jul., 4. d. 11. Nov.

Pettau, 1. am Tage n. h. 3 Kön., 2. Georgi, Viehm., 3. d. 5. Aug., 4. Katharina.

Radkersburg, 1. am 3. Mont. v. Fastn., 2. Dienst. n. Pfingst., 3. Leop. Radmannsdorf, 1. d. 1. Mont. n. d. Quatemberf. in d. Fast., 2. d. 19. Apr., 3. Mont. n. Exaudi, 4. d. 11. Oct., 3. d. 15. Dec. Reifnitz im Neustädtler Kreise, Viehm.: 1. d. 24. Jun., 2. n. d. 21. Sept. Rothenmann, 1. Georgi, 2. d. 2. Mont. n. Mich.

Seisenburg im Neustädtler Kreise, 1. Blasius, 2. Gertrud, 3. Samst. v. Palms., 4. Georg, 5. Primus, 6. † Erhöh., 7. Mont. n. Chr. Himmelf., 8. d. T. n. Sim. Jud., 9. Nikol. Stainz, 1. d. 2. Mont. n. Ostern, 2. d. 6. Mont. n. Ostern, 3. Pfingstdienst., 4. Joh. Täuf., 5. Augustin, 6. Kothar.

Triest, Messe v. 1. bis 20. Aug. Uebrigens Freyhafen.

Villach, 1. h. 3 Kön., 2. d. 10. Sept. Voitsberg, 1. Dienst. in d. Fast., 2. Mont. v. Jacob, 3. Michael, 4. Sim. u. Jud.

Weixelburg, 1. Mont. n. M. Lichtm., 2. Mont. n. d. Quatemberf. in d. Fast., 3. Mont. n. d. Dreyfaltigkeitss., 4. Mont. n. d. 2. Sonnt. n. Fronleichn., 5. Mont. n. Anna, 6. Mont. n. Aegidi, 7. d. 15. Sept., 8. Dienst. n. Allerh., 9. d. 15. Dec. Weiz, 1. d. 2. Mont. n. Ostern, 2. d. 6. Mont. n. Ostern, 3. Mont. v. Kathar. Wildon, 1. T. n. Jos., 2. d. 2. Mont. n. Ostern, 3. T. v. od. n. Pet. u. Paul., 4. Magdal., 5. Mont. v. Mich., 6. Kath. Windischgrätz, 1. Pauli Bek., 2. Dienst. n. Pfingst., 3. Jacobi.

### 4. Märkte in Tyrol und Vorarlberg.

Borgo, 1. d. 11. Aug., 2. d. 21. Sept., 3. d. 25. Nov. Viehm. d. 1. Mont. jed. Monaths. Botzen hat 4 berühmte Messen: 1. La fiera di Quadragesima oder Mittfastenm., am 1. Werktag n. d. Sonntag Oculi; 2. la fiera di Corpus Domini od. Fronleichnamsm.; 3. la fiera d'Egidio, Bartholomäi- od. Aegidim., d. 1. Werktag n. Mar. Geb.; 4. la fiera di S. Andrea, Andreasm., d. 1. Dec. Jede dieser Messen dauert 15 T.; v. 6. bis 12. werden Wechsel acceptirt, vom 13. bis 15. ist die Riscontrozeit, u. sodann noch 14 Tage zu contant. Zahlungen. Bregenz, 1. Jacob, 2. d. 17. Oct., 3. d. 1. Freyt. n. Allerh., 4. d. 5. Dec. Brixen, 1. d. 3. Febr., 2. d. 29. Apr., 3. d. 14. Jun., 4. d. 31. Jul., 5. d. 9. Oct., 6. d. 11. Nov., 7. d. 9. Dec., 8. d. 21. Dec.

Hall, 1. (Hauptm.) d. 3. Mont. n. Georgi, 2. am Rosari-Samst., 3. (Hauptm.) d. 3. Mont. n. Galli. Alle Samst. Wochenm.

Imst, 1. d. 3. Febr., 2. Mont. v. Pfingst., 3. d. 30. Sept., 4. d. 6. Dec. Innsbruck, 1. d. 1. Dienst. in d. Fast., 2. d. 25. Jul., 3. d. 8. Oct., 4. Thomas n. d. Quatemberw. Alle Samst. Wochenm.

Kitzbühel, 1. d. 1. Mont. in d. Fast., 2. Mittwoch n. Rosari. Kufstein, 1. Mont. n. Lätare, 2. d. 14. Jun., 3. d. 21. Sept.

Landeck, 1. Mont. n. Lätare, 2. d. 2. May, 3. Pfingstd., 4. Mont. v. Rosari, 5. Mont. n. Mart. Lienz, 1. d. 1. Mont. in d. Fast., 2. d. 1. May, 3. d. 24. un., 4. d. 25. Jul., 5. d. 29. Sept., 6. d. 6. Nov., 7. d. 30. Nov., 8. d. 2. Dec., 9. d. 27. Dec.

Roveredo, 1. Mont. n. Oculi, 2. d. 25. Apr., 3. d. Tag n. Chr. Himmelf., 4. d. 16. Jul., 5. d. 26. Jul., 6. d. 25. Nov. In d. Vorst. d. 3. Mont. im Oct. Alle Dienst. u. Samst. Wochenm.

Schwatz, 1. Mont. n. Georgi, 2. d. 1. May, 3. d. 16. Aug., 4. d. 24. Oct. Stams, 1. d. 24. Jun., 2. d. 11. Nov. Steinach, 1. Mont. n. Judica, 2. d. 2. Jun., 3. d. 21. Sept. Sterzing, 1. d. 24. Apr., 2. d. 30. Apr., 3. d. 12. Jun., 4. d. 12. Sept., 5. d. 16. Oct., 6. d. 11. Nov., 7. d. 21. Dec.

Trient, 1. d. 21. Febr., 2. d. 21. Sept., 3. d. 29. Sept., 4. d. 18. Nov. Den 3. jed. Monaths ist Vieh. n. Alle Samst. Wochenm.

## 5. Märkte in Böhmen, Mähren und Schlesien.

Altbrünn, 1. Dienst. n. Quasim., 2. Dienst. n. Magdal., 3. Dienst. n. Sim. u. Jud. Auspitz, 1. Prokopi, 2. Nikodem., 3. Gallus, jeder 4 T. Große Wochenm.: 1. Donn. v. M. Lichtm., 2. Gründ., 3. Donn. v. Fronl., 4. Donn. v. Weihn. Roß- u. Viehm. alle Donn., dann Viehm. alle Mont., Dienst. u. Mittw. Austerlitz, 1. Mont. n. Pauli Bek., 2. Mont. n. Miseric., 3. Mont. n. Jac. major, 4. Mont. n. Matth., 5. Mont. n. Elisab., jeder 4 T. Alle Dienst. u. Freyt. Wochenm.

Bielitz, 1. Mont. n. Reminisc., 2. Mont. n. Joh. Bapt., 3. d. 15. Sept., 4. Nikol. Viehm.: 1. Mont. n. h. Dreyfalt., 2. Joh. Bapt., 3. Jac., 4. d. 15. Sept. Brod (Ungarisch-), 1. Dienst. n. h. 3 Kön., 2. Donn. n. Judica, 3. Dienst. n. Exaudi, 4. Dienst. n. Verkl. Chr., 5. Dienst. n. Sim. u. Jud., jeder 4 T., allezeit vorh. Viehm.; alle Donn. Wochenm.

Brünn, 1. am 1. Mont. in d. Fast., 2. d. 4. Mont. n. Pfingst., 3. Mont. n. Mar. Geb., 4. Mont. n. M. Empfängn., jeder 14 T. Wollm.: d. 3. Dienst. im Jun. durch 8 Tage. Roßm.: 1. d. 1. Mont. in d. Fast., 2. d. 2. Mont. n. M. Geb. Viehm. allezeit d. 3 T. v. jed. Jahrm. Alle Mittw., Freyt. u. Samst. Wochenm. Budweis (Böhmisch-), 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Mont. n. Fronl., 3. Mont. n. M. Geb., 4. Mart. Budwitz (Mährisch-), 1. Dienst. n. h. 3 Kön., 2. Dienst. v. Chr. Himmelf., 3. Dienst. n. Aegidi, 4. Dienst. n. Gallus, d. T. vorh. immer Viehm. Alle Donn. Wochenm.

Chrudim, 1. d. 2. Samst. in d. Fast., 2. Mittw. n. † Erfind., 3. d. T. n. M. Himmelf., 4. Barbar. Czaslau, 1. Mont. v. Mittf., 2. Sonnt. n. Jubil., 3. d. T. n. Pet. Paul.

Datschitz, 1. Donn. n. Reminisc., 2. Dienst. n. Laurenz, 3. Dienst. n. Fr. Ser., 4. Dienst. v. Nikol., 5. Dienst. v. Chr. Himmelf. Alle Samst. Wochenm. Dürnholz, 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Mont. n. Oculi, 3. Mont. n. Jubil., 4. Mont. n. Barthol., 5. Mont. v. Brigitta; Roßm. d. Samst. v. d. 1. Jahrm., alle Mittw. Wochenm.

Eger, 1. Mont. n. Reminisc., 2. Mont. n. Fronleichn., 3. Mont. n. Matth. Eibenschütz, 1. Fastnachtsm., 2. Mont. n. Urbani, 3. 30. Aug., 4. Donn. n. d. Rosenkranzf., 5. d. 1. Mont. im Advent, jeder 4 Tage. Alle Dienst. u. Freyt. Wochenm.

Frain, 1. Aschermittw., 2. Florian, 3. Anna, 4. Mont. n. Pauli Bekehr., 5. Allerseel. Roßm. d. Samst. v. Pauli Bekehr.; Viehm.: 1. Samst. n. Phil. Jac., 2. Samst. n. Anna, 3. Samst. n. Mich., 4. d. Werkt. v. Allerh. Fulnek, 1. Mont. v. Fab. Seb., 2. Dienst. v. Palms., 3. Mont. n. M. Heims., 4. Mont. n. Fr. Ser., 5. Mont. v. Barb., jeder 4 T. Wollm.: 1. d. 1. Jun., 2. d. 6. Oct.; Flachs- u. Garnm. an jedem Jahrm. u. Wochenm.; Roß- u. Viehm.: 1. Dienst. v. Palms., 2. Mont. n. Fr. Ser. Alle Samst. Wochenmarkt.

Gaya, 1. Dienst. n. Palms., 2. Pfingstd., 3. Dienst. n. Schutzengelf., 4. d. 1. Dienst. im Adv., 5. Donn. n. M. Lichtm., jeder 8 T. Roßm.: 1. Donn. v. Judica, 2. Donn. v. Pfingst., 3. d. T. v. jedem Jahrm. Wochenm. alle Dienst. u. Freyt. Großbitesch, 1. Dienst. n. Lichtm., 2. Dienst. n. Fr. Ser., jeder 4 T.; Wochenm.: 1. Gründonn., 2. T. v. Chr. Himmelf., 3. T. v. Fronl., 4. Donn. v. Weihn.

Hradisch, 1. Dienst. v. d. 2. Faschings., 2. Dienst. n. Jubil., 3. Dienst. n. Margar., 4. Dienst. n. M. Himmelf., 5. Dienst. n. Mart., jed. 8 T. Wollm. u. Vorm.: 1. Mont. v. d. Faschings., 2. Mont. n. Jubil., 3. Mont. n. M. Himmelf. Alle Mittw. u. Samst. Wochenm.

Jägerndorf, 1. Mont. n. Oculi, 2. Mont. n. Exaudi, 3. Mont. n. M. Heims., 4. Mont. n. M. Geb., 5. Mont. n. M. Opfer. Roß- u. Viehm.: 1. Mont. n. Palms., 2. Mont. n. Margar., 3. Mont. n. Barthol., 4. Mont. n. Nikol. Jamnitz, 1. St. Apoll., 2. Mont. n. Jubil., 3. Mont. n. Fronl., 4. Jac., 5. Mich., 6. Mont. n. Andrä; vorh. allezeit Roß- und Viehm., so wie an jed. Dienst. in d. 1. Woche jed. Monaths; alle Dienst. u. Samst. Wochenm. Jaypitz, 1. Dienst. n. Math., 2. d. 1. Mont. n. Jac., 3. Mont. n. M. Geb., 4. d. 1. Adventm., zugl. Viehm. Iglau, 1. Donn. n. Math., 2. Donn. v. Joh. Täuf., 3. Donn. n. Ludmilla, 4. Donn. n. Kathar., jed. 8 T.; am Mittw. v. Kathar. für Roß u. allerley Vieh; Wochenm. alle Donn. Jarmeritz, 1. Valent., 2. Margar., 3. Matth. Ev., 4. Mart., d. T. vorh. allezeit Roß- u. Viehm. Alle Samst. v. 15. Sept. bis 1. April Wochenm.

Königgratz, 1. Dienst. n. h. 3 Kön., 2. Dienst. n. Remin., 3. Dienst. n. h. Dreyfalt., 4. Dienst. n. M. Geb., jeder 8 T. Kremsier, 1. d. 2. Mont. in d. Fast., 2.

Mont. n. Cant., 3. d. 5. Mont. n. Pfingst., 4. Dienst. v. Math., 5. Dienst. n. Lucia, 6. Dienst. n. Dominik, jeder 4 Tage. Vorm.: 1. d. 4. Samst. n. Pfingst., 2. T. v. Matth., 3. T. v. Lucia; Wollm.: Mittw. n. Cant., Roß- u. Viehm.: 1. 8 T. v. d. 1. Jahrm., 2. Mittw. n. Cant., 3. d. T. v. Lucia. Alle Samst. Wochen-, Flachs- u. Garnm.

Leipnik (Mährisch-), 1. Dienst. n. P. Bekehr., 2. Donn. v. Lätare, 3. Donn. n. Fronl., 4. d. 2. Dienst. n. Jac. u. Anna, 5. Dienst. v. Allerh., jeder 4 T., d. T. zuvor Vorm. m. Flachs, Garn, Wolle u. Vieh; Roßm. 1. 2 Woch. vom Mittw. in d. Fast. b. Freyt. in d. folg. Woche, 2. d. andere Woche n. Reminisc., auch 2 Woch. v. Mittw. b. a. d. 2. Freyt. Alle Mont. Wochenm. Leippa (Böhmisch-), alle Donn. gr. Wochenm. Leitmeritz, 1. Mont. n. Sexag., 2. Mont. n. Cant., 3. Mont. n. M. Himmelf., 4. Mont. v. Kath. Alle Samst. Wochenm. Leutomischl, 1. Chrysost., 2. Stanisl., 3. Victor, 4. Leonh. Alle Samst. Wochenm. Littau, 1. Dienst. n. P. Bekehr., 2. Dienst. n. Judica, 3. Pfingstd., 4. Jac. u. Anna, 5. Nikol., jeder 4 T., zugl. sämmtlich Flachs-, Garn-, Roß- und Viehm., jed. Samst. vorher Vorm. Alle Mont. u. Freyt. Wochen-, Flachs- und Garnmarkt.

Meseritsch (Groß-) 1. Dienst. n. Fab. Seb., 2. Dienst. n. Quasim., 3. Dienst. n. Prokopi, 4. Dienst. n. Maxim., 5. Dienst. n. Andrä, jed. 4 T. Alle Mittw. u. Samst. Wochenm.; gr. Wochenm.: 1. Charf., 2. Thom. Ap.

Neustadt (Mährisch-), 1. Dienst. n. Nah. Jesu, 2. d. 2. Dienst. im May, 3. d. 2. Dienst. n. Pet. u. Pauli, 4. d. 1. Dienst. im Sept., 5. Dienst. v. Mart., jed. 8 T. Alle Dienst. u. Freyt. Wochenm. Nikolsburg, 1. Dienst. n. Fab. Seb., 2. Dienst. n. Lätare, 3. Pfingstd., 4. Dienst. n. Margar., 5. Dienst. n. M. Himmelf., 6. Dienst. n. Wenzesl., 7. Dienst. n. Mart., jed. 4 Tage.

Olmütz, 1. Mont n. d. Sonnt. in d. Octave d. heil. 3 Kön., 2. Mont. v. Georg, 3. Mont. n. Joh. Täuf., 4. Mont. n. Michaelis, jed. 5 Tage. Große Wochenm. d. Tag vor jed. Jahrm.; Flachs- u. Garnm. an d. Vor- und wirkl. Jahrm., auch alle Mittw. u. Samst. an d. gewöhnl. Wochenm. Wollmärkte: 1. Mittw. n. Pfingst., 2. d. Tag v. Allerheil. Roß- u. Viehm. allezeit 8 Tage v. jed. Jahrm.

Pardubitz, 1. Mittw. n. Lichtm., 2. Mont. in d. Kreuzw., 3. d. T. n. Victor, 4. Dienst. n. M. Empf. Pilsen, 1. Mont. n. Remin., 2. Peter u. Paul, 3. Mont. n. Barthol., 4. Mont. n. Mart.; Wollm. Pet. u. Paul d. 8 Tage. Prag, Märkte für Commerzialwaaren: 1. Wenzesl., a. d. Altstädter Ringe, 2. M. Lichtm., a. d. Roßm. in d. Neust., 3. St. Veit, a. d. Kleinstädter Ring. Für Holz- u. Töpferw.: 1. Wenzesl., mit d. Holzw. a. d. Graben, mit d. Töpferw. a. d. Kapuzinerplatz in d. Neust., 2. M. Lichtm., a. denselb. Plätzen, 3. Mittfast. a. denselb. Plätzen, 4. d. 2. Freyt. n. Ostern a. denselb. Plätzen, 5. St. Veit, mit d. Holzw. a. d. Graben, mit d. Töpferw. a. d. Insel Campa in d. Kleinseite, 6. St. Margar. mit d. Holzw. a. d. Graben, mit d. Töpferw. a. d. Kapuzinerplatz in d. Neust. Alle diese Märkte dauern 14 T., nebst 3 T. zum Auspacken u. 3 T. zum Einpacken, also 20 T. Für die Pferdh.: 1. in d. 1. Woche n. Ostern a. d. Viehm. in d. Neust., 2. 8 T. v. Mich. daselbst. Mollm. d. 2. Mont. im Jul. durch 8 Tage auf d. Viehm. Proßnitz, 1. Dienst. n. Mittf., 2. Dienst. v. Chr. Himmelf., 3. Dienst. n. Abdon, 4. Dienst. v. Sim. Jud. Flachs- u. Garnm.: 1. Mont. n. Mittf., 2. Mont. v. Abdon, 3. Mont. v. Sim. Jud., 4. Mont. v. M. Empf., jeder 4 T. Roß- u. Viehm.: 1. Mont. v. Mittf., 2. Mont. in d. Charw., 3. Mont. v. Chr. Himmelf., 4. d. T. vor Fronleichn. Alle Mont. u. Donn. Wochenm.

Rümburg, 1. Mont. n. Pauli Bek., 2. d. 3. Mont. v. Barthol., 3. Mont. n. Galli. Alle Mittw. Wochenm.

Schönberg (Mährisch-), 1. Pauli Bek., 2. Mont. n. Palms., 3. Freytag n. Fronl., 4. d. 4. Aug., 5. Gallus, jed. 4 T. Roß- u. Viehm.: 1. Freyt. v. Pauli Bek., 2. Mont. n. Palms.; alle Mittw. u. Samst. Wochenm. Sternberg, 1. Dienst. n. Lichtm., 2. Dienst. n. Ostern, 3. Dienst. n. Laurenzi, 4. Dienst. n. Gallus, jed. 4 T.; alle Mont. u. Freyt. Wochenm.

Teltsch, 1. Dienst. n. Pauli Bek., 1. Dienst. n. Lätare, 3. Pfingstd., 4. Dienst. v. Schutzengelf., 5. Dienst. n. Mart., jed. 4 T. (vorh. allezeit Viehm.); alle Dienst. Wochenm.; gr. Wochenm. am Gründon. Teschen, 1. d. T. n. Lichtmeß, 2. Pfingstdienst., 3. Mont. v. Magdal., 4. Mar. Geb., 5. Andreas. Wollm.: 1. d. 28. May, 2. d. 2. Oct. Alle Freyt. Viehm. Trautenau, 1. Pauli Bek., 2. Jos., 3. Donn. v. Pfingst., 4. Jac., 5. Mich., 6. Elisab. Alle Mont. u. Donn. Leinwand-, Garn- u. Getreidm. Trebitsch, 1. Mittf., 2. Barthol., jed. 4 T. Alle Mont. Wochenm., gr. Wochenm. am Annatag. Troppau, 1. d. 1. Febr. (d. 8 T.), 2. d. 1. May (14 T.), 3. d. 1. Aug. (8 T.), 4. d. 1. Nov. (14 T.). Große Viehmärkte: 1. 8 T. n. h. Dreyf., 2. 8 T. n. Joh. Täuf., 3. 8 T. n. Jac., 4. 8 T. n. M. Geb. Wollm.: 1. d. 27. May, 2. d. 29. Sept., jed. 8 T.; alle Mittw. u. Samst. Wochenmarkt.

Wischau, 1. Mont. n. h. 3 Kön., 2. Mittw. n. Cyr Meth., 3. Mont. n. Phil. u. Jac., 4. Mont. n. Margar., 5. Mont. n. †Erhöh., 6. Mont. n. Allerh.; 8 T. vorh. Vorm. u. Roß- u. Viehm. Alle Mittw. u. Samst. Wochenm.

Znaym, 1. Doroth., 2. Dienst. n. d. Sonnt. Oculi, 3. Georgi, 4. J. Täuf., 5. Donn. n. M. Geb., 6. Sim. u. Jud., 7. Donn. v. M. Empfäng., jed. 8 T. Flachs- u. Garnmärkte: 1. Sim. Jud., 2. Samst. v. d. 2. Adventsonnt. Wollm.: 1. T. v. Joh. T., 2. T. v. Sim. Jud. Roßm.: 1. 8 T. v. Doroth., 2. 8 T. v. Georgi, 3. 8 T. v. Joh. T., 4. 8 T. v. Mar. Geb., 5. 8 T. vor Sim. Jud. Alle Samst. Wochenm.

6 Märkte in Galizien.

Bojan, 6 Viehm. Brody. Freystadt, 1. Mittw. v. heil. 3 Kön., 2. Lucas. Busk, † Erfind.

Chyrow, 1. d. 6. Aug., 2. d. 7. Jan. Czernowitz, 1. griech. h. 3 Kön., 2. griech. St. Pet. u. Paul, jeder durch 14 Tage.
Dobromil, 1. Anna, 2. Michael.
Grodek, 1. Mont. n. Fronl., 2. † Erhöh.
Janow, 1. russ. Neujahrst., 2. russ. Chr. Himmelf., 3. russ. Michaeli, jed. 8 T. Jaroslaw, 1. d. 12. Jan., 2. d. 10. März, 3. d. 13. Jun., 4. d. 2. Sept., 5. And.
Kalusz, 1. d. 18. Jan., 2. d. 6. Jun. (d. 8 T.), 3. d. 19. Jul. (d. 8 T.), 4. d. 27. Sept.
Lemberg, gr. Dreykönigsmesse u. zwar Mont. n. heil. 3 Kön. d. 4 Woch., dann 1. Agnes, 2. d. 24. May d, 4 Woch., 3. d. 12. Oct. d. 2 Wochen.
Milowka, d. 1. Mont. jeden Monaths.
Podbiedz, 1. Mittw. n. M. Lichtm., 2. d. 1. Mittw. n. Albert, 3. Mittw. n. J. Täuf., 4. d. 1. Mittw. n. Mar. Himmelf., 5. Mittw. n. Mich., 6. Mittw. n. Lucia.
Radymno, 1. Dreyfalt., 2. d. 20. Aug., 3. d. 20. Sept., 4. d. 20. Dec. Rohatyn, 1. d. 9. Jan., 2. d. 3. Febr., 3. d. 26. Jul., 4. d. 1. Oct.
Sambor, 1. Dienst. v. M. Lichtm., 2. Andr., 3. d. 3. Febr., 4. d. 1. May, 5. d. 21. Sept., 6. d. 30. Nov. jed. d. 14 T. Samborstary, 1. d. 12. März, 2. d. 24. Jun., 3. d. 10. Sept., 4. d. 12. Nov., jed. d. 8 T. Sieniawa, 1. d. 2. Jan., 2. d. 4. Apr., 3. d. 24. Jun., 4. d. 2. Nov., jed. d. 8 T. Stanislawow, 1. Mittw. v. M. Geb., 2. Andr. Stry, 1. Stanisl. d. 8 T., 2. M. Himmelf. d. 8 T., 3. d. 7. Aug. d. 14 T., 4. Nikol. d. 8 T., jed. zugl. Jahr- und Viehm.
Tarnow, 1. T. n. M. Lichtm., 2. n. Cant., 3. M. Magd., 4. † Erhöh., jed. d. 14 T. Turka, 1. d. 30. Jan., 2. d. 15. Apr., 3. d. 15. Jul., 4. d. 15. Oct., jed. d. 8 T.
Zolkiew, 1. Mittw. v. 3 Kön., 2. Dienst. v. Pet. u. Paul.

## 7. Märkte in Ungarn und Siebenbürgen.

Altsohl, 1. 1. Sonnt. n. h. 3 Kön, 2. 15. Febr., 3. 2. Sonnt. n. Trinit., 4. 8. Sept., 5. 19. Nov. Arad 1. d. 1. März, 2. Pet. u. Paul, 3. Pet. Kettf., 4. d. 4. Nov.
Bartfeld, 1. Pet. Stuhlf., 2. Jos., 3. Joh. T., 4. Aegidi, 5. Theres., 6. Thom. Ap. Békes, gr. Viehm.: 1. 24. März, 2. 20. Jun., 3. d. 29. Sept., sonst alle Samst. Viehm. Bistritz in Siebenb., 1. d. 10. Apr., 2. Mittw. n. Barthol., zugl. Viehm. Bödsim Preßb. Com., 1. Nahm. Jesuf., 2. Gabriel, 3. Phil. Jac., 4. Verkl. Chr., 5. Sim. Jud., 1 T. vorh. immer Viehm.
Carlsburg, 1. Dienst. n. Palms., 2. Hieronym.
Debreczin, 1. h. 3 Kön., 2. Georg, 3. Laur., 4. Dion.
Eisenstadt, 1. Mont. n. Oculi, 2. Mont. n. Exaudi, 3. Pet. Kettf., 4. Mont. n. Matth. Eperies, 1. 27. Jan., 2. h. Dreyf., 3. Laur., 4. And. Erlau, 1. 10. Jan., 2. 12. May, 3. 29. Jun., 4. 7. Jul., 5. Aegidi, 6. Mich.
Fünfkirchen, 1. Mar. Lichtm., Tags vorh. Viehm., 2. Pfingstf., 2 T. vorh. Viehm., 3. Steph. Kön., 2 T. vorh. Viehm., 4. v. Kathar., 6 T. vorh. Viehm.
Freystädtl, 1. Pauli Bek., 2. Lätare, 3. n. d. Sonnt. Quadrag., 4. Phil. Jac., 5. Pfingstf., 6. Laur., 7. Michaelis, 8. Allerheil.
Gran, 1. d. 12. März, 2. d. 25. May, 3. d. 10. Aug., 4. d. 1. Nov. Groß-Wardein, 1. d. 6. Jan., 2. d. 4. T. in d. Woche n. h. 3 Kön., 3. Mittw. in d. Woche Quadragef., 4. d. 4. T. n. Fronl., 5. Mittw. in d. Woche M. Heims., 6. Mittw. in d. Woche Aegidi, 7. Mittw. in d. Woche Franz Seraph. Güns, 1. Pauli Bek., 2. Invoc., 3. Lätare, 4. Sonnt. n. h. Dreyfalt., 5. M. Heims., 6. Jac., 7. Laur., 8. Ursula. Alle Mittw. Viehm.
Hermannstadt, 1. Mont n. h. 3. Kön., 2. † Erf. d. 8. T., 3. † Erhöh. (Herbstjahrm., zugl. Faßm.) Holitsch 1. 15. an., 2. 25. März, 3. Dreyfaltigkf., 4. 15. Jul., 5. 20. Aug., 6. 1. Sept., 7. 25. Nov.
Kanisa, 1. Lichtm., 2. Mont. v. Ost., 3. Sonnt. v. Pfingst., 4. d. 14. Aug., 5. Mont. v. Theres., 6. d. 8. Dec. Kaschau, 1. Fab. Seb., 2. d. 1. May, 3. Fronl., 4. M. Himmelf., 5. Elisab. Kesmark, 1. Invoc., 2. d. 1. Sonnt. n. Trinit., 3. d. 3. May, 4. d. 14. Sept., 5. d. 13. Dec. Klausenburg, 1. Georg, 2. Ant. Pad., 3. Laur., 4. n. Allerh. Pferdem. d. 7. Aug. Komorn, 1. Phil. Jac., 2. Pet. Paul, 3. Franz Ser., 4. Andr. Kremnitz, 1. d. 4. May, 2. d. 2. Aug., 3. Donn. n. Mich. Kronstadt, 1. n. Fronl., 2. n. Allerheil.
Leutschau, 1. Neujahr, 2. Sonnt. n. Rogate, 3. d. 25. Jul., 4. d. 16. Oct.
Marosvasarhely, 1. d. 17. Jan., 2. Donn. v. Palms., 3. d. 9. May (Flachs- u. Garnm.), 4. d. 1. Sonnt. n. Trinit., 5. Martini. Pferdem. d. 1. Jul.
Neusohl, 1. Pauli Bek., 2. Stanisl., 3. Andreas.
Oedenburg, 1. Dienst. n. Invoc., 2. Phil. Jac., 3. Margareth, 4. Verkl. Chr., 5. Elisab. Ofen, 1. d. 1. März, 2. d. 27. Jun., 3. d. 14. Sept., 4. d. 30. Novemb.
Pesth, 1. Josephimesse, 2. Medardimesse, 3. Joh. Enthauptungsmesse, 4. Leopoldimesse. Preßburg, 1. d. 20. Jan., 2. n. Lätare, 3. Chr. Himmelf., 4. d. 2. Jul., 5. d. 10. Aug., 6. d. 29. Sept., 7. d. 6. Dec. Pösing, 1. d. 6. Febr., 2. Osterd., 3. Pfingstm., 4. Magdal., 5. Augustus, 6. Franz Seraph., 7. Kath.
Raab, 1. n. Remin., 2. Mittw. n. Palms., 3. d. T. v. Fronl., 4. Magdal., 5. Mar. Geb., 6. Elisab.
Schäßburg, 1. Mont. n. Invoc., 2. d. 2. Sonnt. n. Trinitas, 3. C. Borrom. Stuhlweißenburg, 1. Invoc., 2. am 1. Sonnt. Quadrag., 3. Georg, 4. J. Täuf., 5. Barthol., 5. Demetr., immer am Dienst. jeder Woche.
Temesvár, 1. Jos., 2. d. 1. Jun., 3. Mich., 4. Lazarus.
Tyrnau, 1. Vinz., 2. Invoc., 3. Georg, 4. Vitus, 5. Jac.
Weßprim, 1. d. 6. Jan., 2. d. 12. März, 3. d. 10. Aug., 4. d. 6. Dec. Waizen, 1. Math., 2. Samst. v. d. Palms., 3. M. Heims., 4. Gallus, 5. 1. Woche v. d. Christfest.
Zombor, 1. d. 25. März, 2. Chr. Himmelf. alt. Styls, 3. M. Himmelf. alt. St., 4. d. 1. Nov.

### 8. Märkte in Croatien, Slavonien und Sirmien.

Agram, 1. Donn. v. Palms., 2. n. Mart., 3. d. 13. Jul., 4. n. Steph., 5. Sim. u. Jud., 6. n. M. Empf. Babskin, 1. n. Fronleichn., 2. d. 9. Sept. Belicz (Unter-), 1. Georg, 2. Pfingstd., 3. Ladisl., 4. Mar. Heimsuch., 5. Mich., 6. Kathar., 7. n. Maria Schnee. Berdowetz bey St. Veit, 1. Osterdienst., 2. Pfingstdienst., 3. n. St. Veit, 4. d. 30. Jun., 5. Sonnt. n. Schutzengelf., 6. d. 4. Dec. Berczkovijan (Ober-Boschakovina), 1. Fronl., 2. Mar. Heims., 3. Mich., 4. Briccius, 5. d. 13. Nov. Biskupaz, 1. n. Mar. Himmelf., 2. d. 9. Sept. Bistra, 1. Anna, 2. d. 9. Sept. Bresovicza, 1. Mont. n. Quadrag., 2. Barnab., 3. Donatus. Bohgevchihj, Pfingstf. Brood, 1. d. 10. Jan., 2. d. 14. Apr., 3. d. 10. Jul., 4. d. 8. Oct. Czernek (Czerneföld), Leonhard.

Desnik, 1. d. 24. Apr., 2. d. 26. Jul. Diakovár, 1. d. 25. März, 2. d. 1. May, 3. d. 26. Jul., 4. d. 2. Sept., 5. d. 31. Octob. Dragalich, Joh. Bapt. Dubovecz, 1. Franz Xav., 2. Mont. n. Rogate, 3. Mont. n. d. 8. Sonnt. n. Pfingst. Dubrawa, 1. d. 26. Jul., 2. d. 16. Aug., 3. d. 9. Sept., 4. d. 29. Sept., 5. d. 6. Dec.

St. Elisabeth, 1. Mont. v. Pfingst., 2. d. 16. Aug., 3. d. 19. Nov. Essek, 1. d. 20. Jan., 2. d. 24. Apr., 3. d. 20. Jul., 4. d. 18. Oct.

Fatsád, 1. d. 17. Jan., 2. d. 19. Febr., 3. Palms. alt. Styls, 4. Chr. Himmelf. alten Styls, 5. Pet. u. Paul alt. Styls, 6. Mar. Himmelf. alt. Styls, 7. Demetr. alt. St., 8. Michael alt. St. Fericsancze, 1. d. 19. März, 2. Pfingstf., 3. d. 20. Aug., 4. d. 1. Nov. Fiume, Freyhafen. Franjova, 1. May alt. Styls.

Goricah Gradiska, d. 15. Jun. Goricza, 1. Mont. n. Mar. Reinig., 2. d. 1. May, 3. Mont. n. Fronl., 4. d. 10. Aug., 5. Mont. n. Mar. Geb., 6. d. 21. Sept. Gradisca (Alt-) d. 29. Sept. Gradisca (Neu-) 1. Mar. Geb. alt. Styls, 2. d. 15. Oct.

Jark, Pet. u. Paul alt. Styls. Jaska, Pfingstdienst. Jeremie, d. 1. May alt. Styls. Illok (Ujlak), 1. d. 13. Jun., 2. d. 2. Aug., 3. d. 23. Oct. Ireg, 1. d. 3. Febr., 2. d. 24. Apr., 3. d. 8. Sept., 4. d. 25. Nov. Ivanitsch, 1. d. 7. Jan., 2. d. 3. Febr., 3. d. 26. März, 4. d. 16. Aug., 5. d. 9. Sept. Ivankovicz, d. 24. Jun.

Kaptol, Pet. u. Paul. Karlstadt, 1. d. 8. May, 2. d. 25. Jun., 3. d. 25. Jul., 4. d. 29. Sept., 5. d. 21. Dec. Klanyecz, 1. d. 7. Jan., 2. Mont. v. d. Faschingsonnt., 3. Mont. n. d. 1. Quatembersonnt., 4. Mont. n. d. Palms., 5. Mont. n. Rogate, 6. d. 24. Jun., 7. d. 10. Aug., 8. d. 6. Sept., 9. die Montage nach d. übrigen 3 Quatemberf. Klenovnik, 1. Mont. n. Dreyfalt., 2. Ant. v. Padua. Koppanitza d. 20. Jul. Kopreinitz, 1. d. 3. Febr., 2. d. 25. März, 3. d. 4. May, 4. d. 2. Jul., 5. d. 28. Oct., 6. d. 7. Dec. Kostainicza, 1. d. 12. März, 2. d. 26. Jul., 3. d. 14. Nov. Krapina, 1. Jos., 2. Florian, 3. d. 16. May, 4. Ladislaus, 5. Sonnt. n. Scapulirfest, 6. Mont. n. Chr. Himmelf., 7. Mont. n. Nahmen Mariä, 8. Michaelis, 9. Martin, 10. Nikol. Kreitz, 1. d. 20. Jan., 2. Dienst. n. Palmsonnt., 3. d. 3. May, 4. Pfingstmont., 5. d. 27. Jun., 6. d. 2. Aug., 7. d. 4. Sept., 8. d. 18. Oct., 9. d. 11. Nov., 10. Sonnt. v. d. Christf. Kreßtopel, 1. M. Himmelf. alt. Styls, 2. Nikol. alt. Styls. Kuttyevo, 1. n. M. Himmelf., 2. n. M. Geb.

Lipoljanak, 1. d. 19. März, 2. d. 20. Jul., 3. d. 8. Dec. Lippa, 1. d. 1. May, 2. d. 31. Jul., 3. d. 20. Aug., 4. d. 25. Nov. Lohor, Mont. n. Quasimodog., 2. d. 30. Jun., 3. d. 9. Sept. Ludbregh, 1. d. 30. Apr., 2. d. 16. Jul., 3. Mont. v. Mar. Geb., 4. d. 21. Dec. Luxanich, Margaretha.

Megjurich, 1. d. 21. März, 2. d. 8. Sept., 3. d. 6. Dec. Miholácz (Rácz-) 1. d. 6. Apr., 2. n. Mar. Verkün. alt. Styls, 3. Pfingstf. Miholyácz, d. 2. Aug. Mitrovicz, 1. Palms. alt. Styls, 2. Fronl. alt. Styls, 3. Pet. u. Paul alt. Styls, 4. d. 29. Sept.; alle Mont., Donn. u. Samst. Wochenm. Moßlavina, d. 10. Apr.

Nassicze, 1. d. 10. März, 2. d. 13. Jun., 3. d. 15. Aug., 4. d. 30. Nov. Novski, 1. d. 25. März, 2. d. 16. May, 3. d. 18. Oct. Nushtru, 1. Pfingstdienst., 2. d. 25. Jul., 3. d. 28. Oct.

Orachovicz, 1. d. 2. Febr., 2. d. 3. May, 3. d. 19. Sept., 4. d. 25. Nov. Oriovca, 1. d. 5. Nov., 2. d. 21. Dec. Orovicz, 1. d. 3. May, 2. d. 14. Sept., 3. d. 25. Nov. Otlok, 1. d. 13. Jun., 2. d. 6. Dec.

Pakracz, d. Tag n. Mar. Himmelf. Petrianecz, 1. Rosalia, 2. d. Tag n. Pet. u. Paul. Petrievcich, d. 6. Dec. Peterwardein, 1. d. 25. Febr., 2. d. 30. Jun., 3. d. 21. Sept., 4. d. 11. Nov. Petrinia, 1. Charfr., 2. n. Fronl., 3. d. 10. Aug., 4. d. 21. Dec. Podvinju, 1. d. 26. März, 2. d. 13. Jun., 3. d. 16. Aug., 4. d. 21. Dec. Pokupsko, 1. d. Tag n. Ladisl. K., 2. Mont. v. Jacobi. Posega, 1. d. 17. Jan., 2. n. Palmsonnt., 3. n. d. Pfingstf., 4. d. 24. Jun., 5. d. 10. Aug., 6. d. 15. Oct.

Rakovca, 1. Verklär. Chr. alt. Styls, 2. d. 27. Sept. alt. Styls. Ravnagora, 1. n. h. 3 Kön., 2. d. 7. Febr., 3. Mont. n. Steph. K., 4. Theresia, 5. 19. Nov. Recsicze, 1. 22. May, 2. Joh. d. T., 3. Joh. Enthpt. Ruma, 1. n. Palms. alt. Styls, 2. n. Chr. Himmelf., 3. 29. Jun., 4. 29. Sept., alle alten Styls.

Schamcu, 1. d. 19. Jun., 2. Sonnt. n. M. Empf. Schid, 1. Jos., 2. Laurenz, 3. Allerh., allez. Viehm. Semlin, d. 25. Febr. Svilaj 25. März. Szamobor, 1. Thomas, 2. Cha f., 3. Samst. n. Laurenz. Szella, 1. n. Kathar., 2. Mont. n. Quasimodog. Szlatina, 1. Pet. u. Paul alt. Styls, 2. Nikol. alt. Styls, vorh. Viehm.

Tabor (Groß-), 1. Joh. T., 2. d. 30. Jun.

Valpo, 24. Febr. Veliko, 25. Apr. Verbitz, 2. Jul. Verdnik, 1. d. 15. Jun., 2. Lazarus. Verovitz, 1. d. 6. Jan., 2. d. 1. May. Vinkovcze, 1. d. 22. Jan., 2. d. 22. Jul.

## Gesetzliche Scala über den Curs der Banco-Zetteln, nach welcher die Zahlungen, zu Folge des Paragraphs 13 und 14 des Patents vom 20. Hornung 1811, zu leisten sind.

| Monathe. | Jahre. | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1799 | 1800 | 1801 | 1802 | 1803 | 1804 | 1805 | 1806 | 1807 | 1808 | 1809 | 1810 | 1811 |
| Januar . Curs zu | 103 | 113 | 116 | 119 | 130 | 134 | 133 | 147 | 190 | 204 | 221 | 469 | 500 |
| Februar . „ . | 103 | 113 | 115 | 119 | 129 | 135 | 132 | 148 | 203 | 209 | 254 | 398 | 500 |
| März . . „ . | 105 | 114 | 114 | 118 | 127 | 134 | 129 | 149 | 206 | 210 | 248 | 331 | 500 |
| April . . „ . | 108 | 114 | 115 | 118 | 129 | 135 | 129 | 152 | 208 | 212 | 252 | 347 | — |
| May . . „ . | 107 | 116 | 115 | 118 | 130 | 135 | 129 | 160 | 206 | 216 | 276 | 375 | — |
| Junius . „ . | 107 | 115 | 115 | 119 | 131 | 134 | 130 | 163 | 203 | 238 | 333 | 395 | — |
| Julius . . „ . | 106 | 115 | 116 | 120 | 132 | 135 | 132 | 184 | 197 | 242 | 315 | 405 | — |
| August . . „ . | 108 | 115 | 116 | 122 | 133 | 135 | 135 | 160 | 194 | 236 | 299 | 448 | — |
| September . „ . | 110 | 115 | 116 | 125 | 132 | 134 | 136 | 170 | 201 | 233 | 310 | 490 | — |
| October . „ . | 111 | 115 | 117 | 126 | 131 | 132 | 144 | 176 | 203 | 231 | 314 | 500 | — |
| November . „ . | 113 | 115 | 117 | 128 | 132 | 131 | 145 | 175 | 202 | 220 | 346 | 500 | — |
| December . „ . | 113 | 118 | 117 | 128 | 133 | 132 | 149 | 184 | 203 | 222 | 405 | 500 | |

## Uebersicht der Stämpelgebühren, welche vom 1. Januar 1818 angefangen, in Conventions-Münze oder Banknoten zu entrichten sind.

| | | Erster Bogen. | | Einl. Bogen. | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | fl. | kr. | fl. | kr. |
| | Urkunden von 2 fl. oder einem geringern Betrage sind stämpelfrey. | | | | |
| I. | — von mehr als 2 fl. bis 20 fl. . . . . | — | 3 | — | 3 |
| II. | — von mehr als 20 „ bis 50 „ . . . . . | — | 6 | — | 3 |
| III. | — von mehr als 50 „ bis 125 „ . . . . . | — | 15 | — | 3 |
| IV. | — von mehr als 125 „ bis 250 „ . . . . . | — | 50 | — | 3 |
| V. | — von mehr als 250 „ bis 500 „ . . . . . | 1 | — | — | 3 |
| VI. | — von mehr als 500 „ bis 1000 „ . . . . . | 2 | — | — | 6 |
| VII. | — von mehr als 1000 „ bis 2000 „ . . . . . | 4 | — | — | 15 |
| VIII. | — von mehr als 2000 „ bis 4000 „ . . . . . | 7 | — | — | 30 |
| IX. | — von mehr als 4000 „ bis 8000 „ . . . . . | 10 | — | 1 | — |
| X. | — von mehr als 8000 „ bis 16000 „ . . . . . | 20 | — | 2 | — |
| XI. | — von mehr als 16000 „ bis 32000 „ . . . . . | 40 | — | 4 | — |
| XII. | — von mehr als 32000 „ bis 64000 „ . . . . . | 80 | — | 7 | — |
| XIII. | — für jeden Betrag, der 64000 fl. übersteigt, ohne Unterschied . . | 100 | — | 10 | — |
| | Die inländischen Wechselbriefe, Wechselproteste, Assegni, und andere dergleichen dem Wechselrechte unterstehende Geldverschreibungen, trifft bey dem Betrage bis 100 fl. der Stämpel der zweyten Classe, mit . . . . . | — | 6 | — | — |
| | und für alle höheren Summen der dritten Classe mit . . . . . | — | 15 | — | — |
| | Wechselproteste ohne Ausnahme mit . . . . . | 1 | — | — | — |
| | Jeder Bogen oder zwey Blätter der Hauptbücher: | | | | |
| | Bey Großhändlern, Niederlägern, Banquiers und Landesfabrikanten erhält den Stämpel von . . . . . | — | 15 | — | — |
| | Bey anderen Handelsleuten in der Residenz- und allen Haupt- und anderen Städten einer jeden Provinz, wie auch die Bücher aller Gewerbsleute und Professionisten ohne Ausnahme in der Residenzstadt Wien, und in den Hauptstädten einer jeden Provinz von . . . . . | — | 6 | — | — |
| | Die Bücher der Gewerbsleute und Professionisten außer den Hauptstädten und auf dem offenen Lande, so wie auch aller Handelsleute oder Krämer außer den Städten, auf dem platten Lande von . . . . . | — | 6 | — | — |

***

# Entfernung d. vorzügl. europäisch. u. einiger außereurop. Städte v. Wien in teutsch. Meilen.

Die meisten Entfernungen sind wirkliche Postmeilen, nur bey einigen ist die Entfernung in der Luftlinie zu verstehen.

| Von Wien nach | Meil. | Von Wien nach | Meil. | Von Wien nach | Meil. | Von Wien nach | Meil. | Von Wien nach | Meil. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Aachen | 125 | Carlsburg | 109½ | Hallein | 45 | Maynz | 100 | Schärding | 36 |
| Adelsberg | 64¾ | Carlstadt | 48 | Hamburg (124) | 116 | Mecheln | 150 | Schemnitz | 34 |
| Adrianopel | 161 | Cassel | 99 | Hanau | 100 | Mehadia | 96½ | Schlan | 46½ |
| Agram (36) | 41 | Eberson | 208 | Hannover | 115 | Meissen | 61½ | Schwatz | 63¾ |
| Ala | 102 | Ehrudim (31) | 36¼ | Heidelberg | 98 | Messina | 290 | Schweidnitz | 52 |
| Aleppo | 380 | Chur | 99¾ | Hermannstadt | 114 | Modena | 116 | Scutari | 173 |
| Alessandria | 158¼ | Ciliy | 44¾ | Horn | 11 | Mons | 150 | Semlin (88½) | 105½ |
| Altenburg | 71 | Coblenz | 115 | Jägerndorf | 40½ | Moskau | 279 | Serajewo | 86½ |
| Altona | 117 | Cöln | 117 | Jassy (158) | 160 | Mostar | 90½ | Siena | 155 |
| Amberg | 63 | Como | 105 | Jena | 73 | München (60) | 59 | Smyrna | 250 |
| Amiens | 190 | Constantinopel | 186 | Iglau (30) | 22½ | Munkacs | 82 | Spaa | 131 |
| Amsterdam (150 | 142 | Constanz | 77 | Ingolstadt | 65 | Münster | 117 | Speyer | 100 |
| Ancona | 161 | Cremona | 116¾ | Innsbruck | 67¾ | Namur | 140 | Stanislaw | 122½ |
| Anspach | 74 | Czaslau | 32¼ | Judenburg | 28¼ | Neapel | 228 | Sternberg | 30½ |
| Antwerpen (139) | 151 | Czernowitz | 145 | Kaschau (68¾) | 72 | Neuhaus | 31 | Steyr | 26 |
| Appenzell | 90 | Danzig (125) | 116 | Kiow (173) | 172¾ | Neusatz | 62 | Stockholm | 229 |
| Arad (Alt-) | 72 | Darmstadt | 98 | Klagenfurt | 43 | Neustadt (Wiener) | 6 | Stralsund | 120 |
| Aschaffenburg | 91 | Debreczin | 70¾ | Klattau | 42 | Neutra | 22¾ | Straßburg | 102 |
| Augsbg. (67¾)(71½) | 79¾ | Dresden | 60¾ | Klausenburg (122¾) | 100 | Nikolsburg | 12 | Straubing | 49½ |
| Baden | 74 | Dublin | 280 | Koburg | 73 | Nissa | 122 | Stuttgard | 88½ |
| Bamberg | 74½ | Düsseldorf | 136 | Kollin | 34¾ | Nürnberg | 67 | Szegedin | 60¼ |
| Barcellona | 248 | Edimburg | 230 | Komorn | 25 | Oedenburg | 9¾ | Tabor | 32 |
| Basel | 104 | Eger (65) | 60 | Königgratz | 40½ | Ofen | 36½ | Tarnow | 74½ |
| Bauzen | 59 | Elba, Insel | 160 | Königsberg | 143 | Olmütz | 28¾ | Temeswar | 77 |
| Bayreuth | 69 | Ens | 23 | Kopenhagen | 172 | Orleans | 260 | Teplitz | 54½ |
| Belgrad | 90 | Eperjes | 63¼ | Krakau | 62¾ | Osnabrück | 125 | Teschen | 44 |
| Bergamo | 118¾ | Erfurt | 77 | Kremnitz | 42 | Ostende | 178 | Thorn | 96 |
| Berlin (78¼)(84¾) | 89¼ | Erlangen | 70 | Krems | 11 | Padua (91) | 103 | Tokay | 68½ |
| Bern | 112¾ | Erlau | 54¾ | Kronstadt in Sieb. | 132 | Palermo | 270 | Toulon | 185 |
| Bielitz | 49 | Essek (60) | 74¼ | Laibach (54¾) | 55¾ | Paris (198) | 158 | Trautenau | 46½ |
| Bihach (73) | 64¾ | Ferrara | 104 | Lambach | 32 | Parma (132) | 117 | Trawnik | 76½ |
| Bistritz | 116 | Fiume (74¾) | 82¾ | Landshut | 54 | Passau | 38½ | Treviso | 28 |
| Bochnia | 68¾ | Florenz (148) | 129 | Leiden | 140 | Pavia | 125 | Trient | 96½ |
| Bologna (104. 111) | 120 | Frankfurt am M. | 96 | Leipzig (70) | 73¼ | Pesth | 36½ | Trier | 125 |
| Bonn (120) | 130 | Frankf. a. d. O. (74) | 78¾ | Lemberg (107) | 110¾ | Petersburg | 311 | Triest (70½) | 71½ |
| Bordeaux | 263 | Freyburg | 96 | Leoben | 22 | Peterwardein (92½) | 78 | Troppau | 37½ |
| Botzen (75) | 86¼ | Fünfkirchen | 47 | Leutschau | 56 | Philadelphia | 1000 | Turin 147¼. 153¾ | 159¾ |
| Braunau am Inn | 45 | Gastein | 59 | Lienz | 62¾ | Pilsen | 47 | Tyrnau | 16¾ |
| Braunschweig (104) | 96 | Genf | 138¾ | Linz | 25¾ | Pisa | 145 | Udine (79½) | 66 |
| Bregenz | 98 | Gent | 154 | Lissabon | 632 | Pleß | 52 | Ulm | 77½ |
| Bremen (124) | 116 | Genua | 149¾ | Livorno | 143 | Podgorze | 62 | Utrecht | 139 |
| Brescia | 108¾ | Gibraltar | 637 | Lodi | 119¾ | St. Pölten | 9 | Venedig (87) | 99 |
| Breslau (55) | 59 | Glatz (44) | 50 | London | 212 | Posen | 75¾ | Verona (99. 109½) | 113¾ |
| Brest | 262 | Glogau (Groß-) | 61¾ | Loretto | 165 | Potsdam | 84 | Versailles | 210 |
| Brieg | 60 | Gmunden | 35 | Löwen | 144 | Prag | 42½ | Vicenza | 90 |
| Brixen (71) | 79¾ | Görlitz | 56 | Lübeck | 112 | Preßburg (10) | 11 | Villach | 48 |
| Brody (118) | 124¾ | Görz | 72¾ | Lucca | 142 | Przemysl | 97½ | Warasdin (44½) | 31 |
| Bruck a. d. Mur | 20 | Goslar | 93 | Lüttich | 113 | Raab | 19 | Warschau | 92½ |
| Brügge | 160 | Gotha | 81 | Luxemburg | 119 | Rattenberg | 51 | Weimar | 75¼ |
| Brünn | 19 | Göttingen | 92 | Lyon | 140 | Regensburg | 53½ | Wels | 30 |
| Brüssel | 145 | Grätz | 27¼ | Madrid | 506 | Reichenberg | 56¼ | Widdin | 122 |
| Budweis | 28 | Großwardein | 80¾ | Magdeburg | 85 | Riga | 209 | Wilna | 170 |
| Bukarest | 150 | Guastalla (126) | 111 | Mailand 125. 131¼ | 137 | Rom | 173 | Wittenberg | 78 |
| Bunzlau (Jung-) | 49¾ | Güns | 14 | Mannheim | 94 | Rotterdam | 151 | Würzburg | 77½ |
| Cadix | 620 | Günzburg | 76 | Mantua 105. 115½ | 120 | Roveredo | 100 | Zara | 86 |
| Cairo | 430 | Haag | 146 | Marburg | 36¼ | Rzeszow | 85½ | Zittau | 59½ |
| Calais | 189 | Hainburg | 8 | Mariazell | 20 | Rumburg | 61¾ | Znaym | 12¾ |
| Carlowitz | 79¼ | Häll | 66¾ | Marseille | 258 | Salzburg (50¼) | 44 | Zürich | 93½ |
| Carlsbad | 59 | Halle | 78 | Mastricht | 131 | Schafhausen | 91¾ | Zwettel | 20 |

# Abgang und Ankunft der k. k. Postwägen in Wien.

| Von Wien nach | Wagen. | Tag der Abfahrt. | Zeit der Abfahrt. | Rückfahrt. | Zurückfahrt nach Wien |
|---|---|---|---|---|---|
| Brixen über Klagenfurt | Brancard-W. | Dienstag u. Freyt. | 8 Uhr Ab. | Mont. und Freyt. | Dienst. u. Sonnt. |
| Brünn, Olmütz, Troppau | Eilwagen | Mittw. u. Samst. | 6 Uhr Mor. | Mont. und Freyt. | Montag u. Freyt. |
| — über Nikolsburg | Postwagen | Sonntag | 8 Uhr Ab. | Montag | Montag |
| Budweis, Pilsen, Eger | Postwagen | Mittwoch | 6 Uhr Mor. | Montag | Dienstag |
| Carlsbad in der Curzeit | Eilwagen | Dienstag | 6 Uhr Mor. | Sonntag | Montag |
| Carlstadt über Oedenb. und Agram | Postwagen | Dienstag | 8 Uhr Mor. | Dienstag | Samstag |
| Eger und Budweis | Postwagen | Mittwoch | 8 Uhr Mor. | Freytag | Dienstag |
| Grätz über Bruck an der Mur | Eilwagen | Mittw. u. Samst. | 10 Uhr Ab. | Mittw. u. Samst. | Donn. u. Sonnt. |
| detto detto detto | Brancard-W. | Dienst. und Freyt. | 8 Uhr Ab. | Samst. u. Mont. | Mont. und Freyt. |
| Hermannstadt und Kronstadt | Postwagen | Sonnt. alle 14 T. | 8 Uhr Ab. | Dienstag | Montag |
| Jägerndorf über Brünn | Postwagen | Freytag | 8 Uhr Ab. | Samstag | Dienstag |
| Innsbruck und Bregenz | Postwagen | Dienstag | 7 Uhr Mor. | Dienstag | Sonntag |
| Kaschau über Ofen und Erlau | Brancard-W. | Mittw. alle 14 T. | 8 Uhr Ab. | Samstag | Donnerstag |
| Klagenfurt über Judenburg | Postwagen | Sonntag | 8 Uhr Ab. | Freytag | Montag. |
| Laibach über Grätz | Eilwagen | Mittw. u. Samst. | 10 Uhr Ab. | Dienst. u. Freyt. | Donner u. Sonnt. |
| — — | Brancard-W. | Dienst. und Freyt. | 8 Uhr Ab. | Mont. u. Donner. | Freytag u. Montag |
| Lambach und Braunau | Postwagen | Dienstag | 7 Uhr Mor. | Donnerstag | Samstag |
| Lemberg | Eilwagen. | Mittwoch | 10 Uhr Ab. | Freytag | Mittwoch |
| — und Brody | Postwagen. | Dienstag | 8 Uhr Ab. | Donnerstag | Sonntag |
| Linz | Eilwagen | Dienst. u. Samst. | 9½ Uhr Ab. | Donner. u. Samst. | Freytag u. Sonnt. |
| — und Steyr | Postwagen | Dienst. u. Sonnt. | 7 U. M. u 8 A. | Freyt. u. Samstag | Samst. u. Sonnt. |
| Mantua und Botzen | Postwagen | Dienstag | 7 U. M. u 8 A. | Donnerstag | Samstag |
| Ofen über Raab | Eilwagen | Mnt., Do., Samst. | 6 U. M. u 8 A. | Mitt., Frey., Sam. | Don., Sam., Mo. |
| — — | Brancard-W. | Sonnt. u. Mittw. | 8 Uhr Ab. | Dienst. u. Samst. | Donn. und Mittw. |
| Prag über Znaym, Czaslau | Eilwagen | Dienst. u. Freytag | 6 Uhr Mor. | Dienst. u. Freytag | Samst. u. Dienst. |
| — — — | Eilwagen | Mont. und Samst. | 10 Uhr Ab. | Donn. u. Sonnt. | Samst. u. Dienst. |
| — — — | Brancard-W. | Mont. u. Donner. | 8 Uhr Ab. | Montag u. Samst. | Donn. u. Dienst. |
| Preßburg und Hainburg | Eilwagen | täglich | 6 Uhr Mor. | täglich 6 Uhr M. | täglich Mittag |
| — — — | Brancard-W. | täglich | 9 Uhr Ab. | täglich | täglich |
| Pystian in der Curzeit | Eilwagen | Samstag | 6 Uhr Mor. | Mittwoch | Donnerstag |
| Salzburg über Linz | Postwagen | Dienstag | 7 Uhr Ab. | Mittwoch | Samstag |
| Schärding und Passau | Postwagen | Samstag | 8 Uhr Ab. | Freytag | Sonntag Abends |
| Semlin über Ofen | Postwagen | Sonnt. alle 14 T. | 8 Uhr Ab. | Samstag | Montag |
| Triest über Laibach | Eilwagen | Mittw. u. Samst. | 10 Uhr Ab. | Mont. u. Donner. | Donn. u. Sonnt. |
| — — | Brancard-W. | Dienstag u. Freyt. | 8 Uhr Ab. | Sonnt. u. Mittw. | Freytag u. Mont. |
| Verona über Botzen | Postwagen | Dienstag | 7 Uhr Mor. | Donnerstag | Freytag |
| Zwettel über Gföhl | Postwagen | d. 5. jed. Monaths | Morgens | d. 1. jed. Monaths | g. 3. jed. Monaths |

Eine ausführliche Tabelle lieferten die Jahrgänge 1826 und 1827 dieses Kalenders.

Anmerkungen: I. Für Reisende mit Extra-Post. Wer mit Extra-Post zu reisen wünscht, muß sich mit einem Erlaubnißscheine, Postzettel rc. von der vorgesetzten Polizey- oder Militärbehörde, und nach Umständen überdieß mit einem Reisepasse versehen, um sich damit bey dem Postmeister oder Posthalter gehörig zu legitimiren, widrigens ihm keine Pferde erfolgt werden dürfen. Die Reisenden haben sich sowohl bey dem Antritte ihrer Reise, als während derselben den bestehenden Mauth- und Zollgesetzen zu fügen, daher auch unverweigerlich die tarifmäßigen Weg-, Pflaster-, Brückengelder, Ueberfuhrsgebühren rc zu entrichten.— Die Bespannung hängt von der Anzahl der Reisenden, von der Schwere des Wagens, von der Menge und dem Gewichte des Gepäckes, welches sie mitnehmen, ab. Der Regel nach ist der Wagen mit der nähmlichen Pferdezahl, womit er zur Poststation hingebracht wird, von dieser weiter zu befördern. Davon machen jedoch eine Ausnahme: a) jene Poststrecken, für welche wegen Bergen oder wegen anderer Oertlichkeiten eine Vorspannsgebühr gesetz-

lich besteht; b) außerordentliche Naturereignisse, mit tiefem Schnee bedeckte, durch anhaltenden Regen sehr verdorbene, nicht chaussirte Straßen u. s. w., besonders wenn der Reisende in einem ungewöhnlich schweren Wagen fährt. — Der Reisende darf eben so wenig, als seine Dienerschaft, die Pferde selbst antreiben, noch weniger die Postillone mißhandeln. Dagegen ist es die Pflicht des Postmeisters (Posthalters), gleich nach der Ankunft des Reisenden auf seiner Station, ohne Verzug die Pferde wechseln, und ihn durch tuchtige und nüchterne Postillone mit thunlichster Beschleunigung weiter befördern zu lassen. Ist die Anzahl Postpferde, welche dem Postmeister zu halten obliegt, bereits sämmtlich im Dienste abwesend, so hat derselbe Sorge zu tragen, in möglichst kurzer Frist Aushülfspferde aufzubringen. Hat der Reisende durch einen Laufzettel die nöthigen Postpferde voraus bestellt, und er verzögert seine Reise in der Art, daß er auffallend später bey den Poststationen eintrifft, als es sich nach dem Laufzettel erwarten ließ: so sind die Postmeister berechtiget, das gesetzliche Wartgeld anzusprechen.—Anstände und Beschwerden können, im Falle sie nicht durch ein gegenseitig gefälliges Benehmen zwischen dem Reisenden und Postmeister sich beylegen lassen, entweder bey dem Oberpostamte, zu dessen Verwaltungsbezirk die beschuldigte Poststation gehört, oder unmittelbar bey der betreffenden k. k. Landesstelle eingeleitet werden. — Mit der Briefpost darf kein Reisender befördert werden, wenn er nicht hierzu eine eigene Bewilligung, und zwar in Wien von der k. k. allgem. Hofkammer, in den Provinzen aber von der k. k. Landesstelle erwirkt. Im Bewilligungsfalle hat derselbe nebst dem gesetzlichen Ritt- und Trinkgelde für ein Pferd auf jeder Poststation das halbe Wagen- und Schmiergeld zu entrichten, weil die Mitnahme eines eigenen Wagens nicht gestattet wird.

II. Für Reisende mit dem k. k. ärarischen Postwagen. Jene Personen, welche mit dem k. k. ärarischen Postwagen abzureisen gedenken, haben, wie bey der Reise mit Extra-Post, die nöthigen Erlaubnißscheine, allenfalls auch Reisepässe rc. beyzubringen, und sich damit bey den k. k. Postwagensämtern, Poststationen u. s. w. auszuweisen. Die Vormerkung zur Mitfahrt muß einige Tage vor der festgesetzten Absendung des Postwagens, und zwar in Wien bey dem Postwagens-Aufgabsamte, in den Provinzen aber bey den Postwagens-Expeditionen, oder unterwegs bey den Poststationen geschehen. Die dafür entfallende Gebühr ist vorhinein zu entrichten, worüber der Reisende einen gedruckten Vormerkschein erhält. Dieser Vormerkschein, in welchem zugleich das Gepäcke, welches der Reisende mitnimmt, specifisch verzeichnet wird, muß um so sorgsamer aufbewahret werden, als nach zurückgelegter Reise nur gegen Rückgabe des Scheines das mitgeführte Gepäcke ausgefolgt werden kann. Deßwegen ist auch jedes einzelne Stück, welches dazu gehört, mit der Adresse und Angabe des Abgabsortes zu versehen, und in der gehörigen Zeit zur Aufgabe und Packung in das Amt zu bringen. An Gepäcke übernimmt die Postwagensanstalt zur unentgeltlichen Beförderung: a) von demjenigen, welcher einen Sitz im Innern des Wagens gelöset hat, 50 Pfund; b) von demjenigen, welcher einen Platz am vordern Theile des Wagens erstehet, 35 Pfund; c) für ein Kind zwischen zwey Personen 15 Pfund; d) für ein Kind auf dem Schoße 10 Pfund. Das Mehrgewicht des Gepäckes unterliegt der tarifmäßigen Gebühr, wie gewöhnliche Frachtstücke. Von dem Inhalte und Werthe des Gepäckes nimmt die Postwagensanstalt weder Kenntniß, noch haftet sie dafür, da jeder Reisende von der guten Packung desselben im Wagen sich selbst überzeugen und auch unterwegs darauf Obacht geben kann. Dieses Gepäcke darf jedoch weder in Waaren, noch Geld, noch Prätiosen bestehen; denn für dergleichen Gegenstände übernimmt die Anstalt gegen Entrichtung der gesetzlichen Gebühr die Haftung, und sie müssen daher abgesondert gepackt und eigens angegeben werden. — Der Reisende hat sich vor der zur Abfahrt festgesetzten Zeit im Posthause, aus welchem der Wagen abfährt, einzufinden. Durch Versäumniß der zur Abfahrt bestimmten Zeit verliert er den bestellten Platz und den Anspruch auf die Zurückzahlung des dafür erlegten Passagiers-Betrages.—Die Sitze im Innern des Wagens werden in der Regel gewechselt. Tabak zu rauchen und große Hunde in den Wagen mitzunehmen, wird nicht gestattet.—Dem Conducteur ist insbesondere aufgetragen, jedem Reisenden, ohne Unterschied des Standes, mit Anstand, Bescheidenheit und Höflichkeit zu begegnen; dagegen wird aber auch mit Zuversicht erwartet, daß der Conducteur, welchem die Aufmerksamkeit auf jeden einzelnen Reisenden eben so, wie auf die ihm anvertrauten Effecten obliegt, mit der seinem Dienste angemessenen Rücksicht behandelt, und seinem Ansuchen, welches er allenfalls zur Erhaltung der Dienstordnung an den einen oder andern Mitreisenden zu stellen veranlaßt würde, bereitwillig entsprochen werde.— Beschwerden über Aufenthalt des Wagens, gegen den Conducteur und gegen die Postillone u. s. w. können entweder bey der Poststation, oder unmittelbar bey der k. k. Postwagens-Direction in Wien anhängig gemacht werden.

## Postgebühren für Reisende mit dem Postwagen.

1) In Oesterreich ob und unter der Ens mit Salzburg, in Böhmen, Mähren und Schlesien, in Steyrmark, Illyrien, Dalmatien: Rittgeld *) für ein Pferd und 1 einfache Post 56 kr.; Postillons-Trinkgeld **) für ein Pferd und 1 einfache Post 12 kr.; gedeckte Kalesche für 1 einfache Post 28 kr.; offene Kalesche 14 kr.; Schmiergeld, wenn der Postmeister das Fett gibt, 8 kr., im entgegengesetzten Falle 4 kr. C. M.

2) In Tyrol, Vorarlberg und im Küstenlande: Rittgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 1 fl.; Postillons-Trinkgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 15 kr.; gedeckte Kalesche für 1 einfache Post 30 kr.; offene Kalesche für 1 einfache Post 15 kr., Schmiergeld 8 kr. oder 4 kr. C. M., wie oben.

---

*) Das Rittgeld wird von Zeit zu Zeit nach Maßgabe der Fütterungspreise festgesetzt, und hiernach auch das Kaleschgeld, nähmlich für eine gedeckte Kalesche mit der Hälfte, und für eine offene Kalesche mit einem Viertel des jedesmahligen Rittgeldes für ein Pferd bemessen.

**) In Illyrien und Dalmatien ist das Trinkgeld 15 kr. für 1 Pferd und eine einfache Post.

3) In den galizischen Kreisen Wadowice, Bochnia, Tarnow, Sandec, Rzeszow und Jaslo: Rittgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 45 kr.; Postillons-Trinkgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 9 kr.; gedeckte Kalesche für 1 einfache Post 22½ kr.; offene Kalesche für 1 einfache Post 11¼ kr.; Schmiergeld 8 kr. oder 4 kr. C. M., wie oben.

4) In den übrigen Kreisen Galiziens: Rittgeld für ein Pferd und 1 einfache Post 40 kr.; Postillons-Trinkgeld für 1 Pferd und eine einfache Post 9 kr.; gedeckte Kalesche für 1 einfache Post 20 kr.; offene Kalesche für 1 einfache Post 10 kr.; Schmiergeld 8 kr. oder 4 kr. C. M., wie oben.

5) In Ungarn, Slavonien, Croatien, Siebenbürgen und der ganzen Militärgränze, wie bey Nr. 4, nur ist das Rittgeld 45 kr.

6) Im lombardisch-venezianischen Königreiche: Rittgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 3 Lire 16 Cent. d'Austria; Postillons-Trinkgeld für 1 Pferd und 1 einfache Post 86 Cent.; gedeckte Kalesche für 1 einfache Post 92 Cent.; offene Kalesche für 1 einfache Post 46 Cent. d'Austria; übrigens ist, wenn auch nicht gesetzlich, doch allgemein üblich, dem Stalliere für das Umspannen 25 Centesimi oder 5 kr. C. M. zu erfolgen.

In Oesterreich ob und unter der Ens nebst Salzburg, in Böhmen, Mähren und Schlesien, Steyrmark und Illyrien: für einen Sitz im Innern des Wagens für 1 einfache Post 37 kr., für einen Sitz am Vordertheile des Wagens 28 kr., für ein Kind, welches zwischen zwey Personen Raum zum Sitzen hat, 10 kr., für ein Kind, welches auf den Schooß genommen wird, 8 kr. C. M.

In Tyrol und dem Küstenlande wird für die einfache Post, für einen Sitz im Innern des Wagens 32 kr., am Vordertheile des Wagens 24 kr., für ein Kind, welches zwischen zwey Personen Raum zum Sitzen hat, 8 kr., und auf dem Schooße 6½ kr. bezahlt.

In Ungarn sammt Civil-Slavonien und Croatien, in Siebenbürgen und den Militärgränzen: für einen Sitz im Innern des Wagens für 1 einfache Post 30 kr., für einen Sitz am Vordertheile des Wagens 25 kr., für ein Kind, welches zwischen zwey Personen Raum zum Sitzen hat, 10 kr., für ein Kind, welches auf den Schooß genommen wird, 8 kr. C. M.

In Galizien, und zwar zwischen Lemberg und Brody: für einen Sitz im Innern des Wagens für 1 einfache Post 24 kr., für einen Sitz am Vordertheile des Wagens 18 kr., für ein Kind, welches zwischen zwey Personen Raum zum Sitzen hat, 6 kr., auf dem Schooße 5 kr. C. M.

Dem Postillon ist in allen Provinzen ohne Unterschied, von jedem Reisenden ein Trinkgeld von 3 kr. C. M. für 1 einfache Post zu geben.

## Tarif der k. k. Eil- und Passagierswägen
seit 1. Januar 1828.

| Von | Nach | Entfernung in Meilen. | Mit dem Eilwagen: im Innern des Wagens oder im Cabriolete | | Mit dem Eilwagen: auf dem äußern unbedeckten Sitze | | Mit Bey-Kalesche oder Separatfahrt | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | für die Person mit Inbegriff d. Einschreibgebühr | | | | | |
| | | | fl. | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. |
| Wien | Brünn | 19 | 7 | 46 | 3 | 58 | 9 | 2 |
| — | Budweis | 28 | 11 | 22 | — | — | 13 | 14 |
| — | Grätz | 27½ | 11 | 10 | — | — | 13 | — |
| — | Klagenfurt | 43 | — | — | — | — | 20 | 14 |
| — | Laibach | 55½ | 23 | 18 | — | — | 26 | 4 |
| — | Lemberg | 110½ | 42 | 58 | — | — | 46 | 52 |
| — | Linz | 25½ | 10 | 22 | — | — | 12 | 4 |
| — | Ofen (Pesth) | 36½ | 13 | 52 | — | — | 14 | 47 |
| — | Olmütz | 28½ | 11 | 44 | — | — | 13 | 28 |
| — | Podgorze (Krakau) | 62 | 25 | 11 | — | — | 28 | 16 |
| — | Prag | 42½ | 17 | 53 | 9 | 1¼ | 20 | — |
| — | Preßburg | 10 | 3 | — | 1 | 50 | 4 | 50 |
| — | Rumburg | 61½ | 25 | 29 | — | — | 28 | 52 |
| — | Triest | 71½ | 30 | 14 | — | — | 33 | 32 |
| — | Troppau | 37½ | 15 | 29 | — | — | 17 | 40 |
| — | Udine | 66 | 27 | 32 | — | — | 30 | 56 |
| — | Venedig | 87 | 35 | 56 | — | — | 40 | 17 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Brünn | Lemberg | 91¼ | 35 | 22 | — | — | 38 | — |
| — | Olmütz | 9½ | 4 | 8 | — | — | 4 | 36 |
| — | Prag | 31½ | — | — | — | — | 14 | 52 |
| — | Troppau | 18½ | 7 | 53 | — | — | 8 | 48 |
| Grätz | Laibach | 28 | 12 | 18 | — | — | 13 | 14 |
| — | Triest | 44 | 19 | 14 | — | — | 20 | 42 |
| Laibach | Triest | 16 | 7 | 6 | — | — | 7 | 38 |
| Lemberg | Podgorze | 48½ | 17 | 57 | — | — | 18 | 46 |
| Mantua | Ferrara | 16 | 6 | 34 | — | — | 7 | 22 |
| Olmütz | Lemberg | 82 | 31 | 24 | — | — | 33 | 24 |
| — | Troppau | 9 | 3 | 55 | — | — | 4 | 22 |
| Prag | Peterswalde (Dresden) | 16 | 7 | 38 | — | — | 7 | 38 |
| — | Pilsen | 13 | — | — | — | — | 6 | 14 |
| — | Rumburg | 19 | 7 | 46 | — | — | 9 | 2 |
| — | Lemberg | 123 | — | — | — | — | 52 | 42 |
| Triest | Görz | 7 | — | — | — | — | 3 | 19 |
| Venedig | Ferrara | 19½ | 7 | 58 | — | — | 8 | 57 |
| — | Triest | 31 | 12 | 10 | — | — | 13 | 40 |
| — | Verona | 19½ | 7 | 58 | — | — | 8 | 57 |

Bey den Eilwägen zahlt jede Person für die einfache Post, mit Einschluß des Postillons-Trinkgeldes, und zwar:

1) Bey den Eilfahrten zwischen Wien und Brünn, zwischen Wien und Grätz, zwischen Wien und Linz, zwischen Wien und Budweis, zwischen Prag und Rumburg, für einen Sitz im Innern des Eilwagens oder im Cabriolete 48 kr., und für den äußern Sitz ohne Bedachung, wo es deren noch auf den Eilwägen gibt, 24 kr.

2) Bey den Eilfahrten zwischen Wien und Prag, zwischen Brünn und Troppau, bey der Eilfahrt zwischen Wien und Lemberg, und zwar zwischen Brünn und Kenty, bey den Eilfahrten zwischen Wien, Udine und Venedig, und zwar zwischen Wien und Resciutta für einen Platz im Innern des Eilwagens oder im Cabriolete 50 kr., und für einen äußern Sitz ohne Bedachung, wo es deren noch auf den Eilwägen gibt, 25 kr. C. M.

3) Bey der Eilfahrt zwischen Wien und Lemberg, und zwar zwischen Kenty und Lemberg 44 kr. C. M.

4) Bey der Eilfahrt zwischen Wien und Preßburg, für einen Platz im Innern des Wagens oder im Cabriolete 34 kr., und für einen äußern ungedeckten Sitz 20 kr. C. M.

5) Bey der Eilfahrt zwischen Wien und Triest, und zwar zwischen Grätz und Triest, für einen Sitz im Innern des Eilwagens oder im Cabriolete 52 kr. C. M.

6) Bey der Eilfahrt zwischen Wien u. Ofen (Pesth) für einen Platz im Innern des Eilwagens od. im Cabriolete 45 kr. C. M.

7) Bey der Eilfahrt zwischen Prag und Dresden, und zwar zwischen Prag und Peterswalde, seit 7. Januar 1828 angefangen, 56 kr. C. M.

Außer diesem Fahrtgelde hat jede Person noch 10 kr. C. M. an Einschreibgebühr zu entrichten.

Bey den Beycaleschen und Separatfahrten ist die Passagiers-Taxe auf allen unter Nr. 1, 2, 4 und 5 angeführten Poststraßen, sodann bey den Separatfahrten zwischen Brünn und Prag über Iglau, zwischen Prag und Pilsen, endlich zwischen Wien und Ofen auf der Wegesstrecke zwischen Wien und Kittsee für den Platz und eine einfache Post auf 56 kr., und in Galizien, d. i. bey der Eilfahrt zwischen Wien und Lemberg, und zwar zwischen Kenty und Lemberg auf 46 kr. C. M. festgesetzt.

Das Personengeld bey der Eilfahrt zwischen Wien und Ofen, bey der Eilfahrt zwischen Wien und Udine und Venedig, und zwar zwischen Resciutta und Venedig, sodann bey den Eilfahrten zwischen Triest und Venedig, zwischen Venedig und Verona, zwischen Padua und Vicenza, zwischen Venedig und Ferrara, dann Mantua und Ferrara bleibt beym frühern Ausmaße.

Die Eilwägen sind sämmtlich gedeckt und mit bequemen Sitzen für 9 Personen eingerichtet. Der Passagier kann 20 Pf. an Gepäcke, worunter jedoch nicht Koffer, sondern lediglich Mantelsäcke, oder solchen ähnliche Packete verstanden werden, portofrey mit sich nehmen, wie auch noch 50 Pfund, oder aber das ganze Gepäcke pr. 50 Pf. sich mittels der Brancardwägen zahlungsfrey voraus- oder nachsenden lassen. Für Ueberfracht, d. i. wenn das Gepäcke mehr als das hier angegebene portofreye Gewicht enthält, wird das Porto nach dem Postwagens-Tarif entrichtet, das Gepäcke aber gegen Rückgabe des bey der Aufgabe erhaltenen Aufgabs-Recepisses ausgefolgt werden. — Jedes einzelne Stück der Bagage muß mit der Adresse und der Angabe des Bestimmungsortes versehen seyn, wie auch keine Waaren, sondern nur Passagiers-Gepäcke enthalten.

Auf einigen Eilwägen befinden sich überdieß noch 2 Plätze, auf welchen 2 Personen ohne Bedachung Sitze einnehmen können, und dieß sind die oben erwähnten äußeren Sitze um beynahe den halben Preis. Die Person kann aber nur 20 Pfund an Gepäcke zahlungsfrey mitnehmen. Unterwegs ist an die Postillone gar kein Trinkgeld abzugeben; sie erhalten solches aus der Postcasse, und haben gar keinen Anspruch auf eine Bezahlung von Seite der Reisenden.

Mit diesen Eil- oder Passagierswägen können und werden auch noch geldbeschwerte Briefe, oder kleine Geld-Gropi befördert, und es ist hierbey die Einleitung getroffen worden, daß die von Wien in Prag, Brünn und Grätz, oder von dort in Wien einlangenden beschwerten Briefe sogleich am folgenden Tage, jene aber, die mit dem Eilwagen von Wien nach Preßburg, oder von hier nach Wien gesendet werden, jedesmahl am nähmlichen Tage von eigenen beeideten Briefträgern an die Adressaten bestellt werden.

Die Vormerkung zur Mitfahrt muß einige Tage vor der Abfahrt bey der k. k. Hauptpostwagens-Expedition in Wien, am Dominicaner-Platze Nr. 666, oder bey den Haupt-Postwagens-Expeditionen der genannten Städte, dann unterwegs bey den k. k. Poststationen geschehen, und jedesmahl in Wien der gewöhnliche Passirschein von der k. k. Polizey-Oberdirection, oder vom k. k. Platz-Commando, so wie in den genannten Städten von den dortigen Behörden beygebracht werden, da der Reisende ohne dessen Beybringung zur Fahrt nicht angenommen wird. Diese Passirscheine müssen vor der Abfahrt in dem Post-Bureau verläßlich abgegeben werden, widrigens sich der Reisende die Schuld zuschreiben müßte, wenn ihm die Mitfahrt aus Abgang des Scheines verweigert werden würde.

Sollten übrigens an den bestimmten Abfahrtstagen so viele Reisende vorkommen, daß sie in dem gewöhnlichen Eilwagen keinen Platz mehr fänden, oder aber einige Personen, wenigstens 4 an der Zahl, an Tagen, wo kein Eilwagen abgeht, für sich allein, ohne Begleitung eines Conducteurs, von Wien nach Prag, Brünn, Preßburg oder Grätz rc., oder von dort nach Wien reisen wollen: so werden für erstere eigene Bey-Caleschen beygegeben; die letzteren Personen aber mittels einer Separatfahrt, und mit Beygebung eigener Stundenpässe, in leichten, sehr bequemen 4- oder 6sitzigen Wägen in dem festgesetzten Zeitausmaß befördert werden. Bey solchen Separatfahrten bleibt es den Reisenden überlassen, nach ihrer Willkühr nicht allein den Tag und die Stunde der Abfahrt zu bestimmen, sondern auch nach Gefallen unterwegs auf Poststationen zu verweilen oder zu übernachten; jedoch muß a) die Bestellung dieser Separatfahrt immer einen oder mehrere Tage vor der Abreise bey der Haupt-Postwagens-Expedition geschehen, und b) der Ort der Poststation, wo der Aufenthalt Statt findet, oder wo übernachtet wird, angegeben werden, um nach diesen Bestimmungen die nöthigen Einleitungen bey den Poststationen treffen zu können. Der Reisende kann gleichfalls entweder an Gepäcke 20 Pfund mitnehmen, und 30 Pfund oder aber im Ganzen 50 Pfund portofrey sich mittels der Brancard- oder Postwägen nachsenden lassen.

## Tarife einiger ausländischer Eilwägen.

| | | | | Meil. | C. M. fl. kr. | | | | | Meil. | C. M. fl. kr. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Von | Achen | nach | Cöln | 9 1/2 | 4 21 | Von | London | nach | Edinburg | 104 | 30 — |
| — | Berlin | — | Breslau | 43 1/2 | 15 24 | — | London | — | Glasgow | 118 | 34 12 |
| — | Berlin | — | Halle | 22 1/4 | 7 53 | — | London | — | Portsmouth | 19 | 5 42 |
| — | Berlin | — | Hamburg | 39 3/4 | 20 52 | — | Maynz | — | Coblenz | 11 1/2 | 5 26 |
| — | Carlsruhe | — | Manheim | 8 1/4 | 4 30 | — | Paris | — | Bayonne | 105 | 65 — |
| — | Coblenz | — | Cöln | 10 1/2 | 4 58 | — | Paris | — | Bordeaux | 76 | 44 51 |
| — | Cöln | — | Düsseldorf | 4 1/2 | 2 8 | — | Paris | — | Calais | 34 | 20 8 |
| — | Dresden | — | Leipzig | 12 1/2 | 7 6 | — | Paris | — | Marseille | 98 | 56 21 |
| — | Dower | — | London | 19 | 5 42 | — | Paris | — | Toulouse | 88 | 52 3 |
| — | Leipzig | — | Berlin | 20 | 9 12 | — | Straßburg | — | Paris | 58 | 34 40 |
| — | London | — | Bristol | 35 | 10 2 | | | | | | |

Von Ferrara über Sinigaglia, Bologna, Ancona und Loretto nach Rom (in 4 1/2 Tagen) zahlt die Person auf dem päpstlichen Eilwagen 30 fl. 27 kr. C. M.

## Abgang und Ankunft der reitenden oder Briefposten in Wien.

### Abgang von Wien. Abends.

Täglich: Nach Augsburg, Brünn, Frankfurt, Grätz, Klagenfurt, Laibach, Lemberg, Linz, Mailand, München, Nürnberg, Ofen, Olmütz, Pesth, Prag, Preßburg, Raab, Regensburg, Teschen, Triest, Ulm, Venedig, Verona.

Sonntags: Die täglichen; dann nach Brody, Iglau, Krems, Steyr.

Montags: Die täglichen; dann nach Botzen, Bregenz, Dresden, Eger, Hüningen, Iglau, Innsbruck, Krems, Leipzig, München, Paris, Podgorze, Salzburg, St. Gallen, Troppau, Zürich.

Dienstags: Die täglichen; dann nach Agram, Berlin, Bregenz, Budweis, Carlstadt, Debreczin, Eger, Essek, Görlitz, Güns, Hermannstadt, Hüningen, Innsbruck, Kaschau, Klattau, Klausenburg, Körmend, Oedenburg, Paris, Peterwardein, Pilsen, Pisek, Salzburg, Semlin, St. Gallen, Strakonitz, Tabor, Temeswar, Warasdin, Wessely, Zara, Zürich.

Mittwoch: Die täglichen; dann nach Berlin, Breslau, Brody, Budweis, Dresden, Eger, Görz, Hamburg, Iglau, Klattau, Königgrätz, Krems, Leipzig, Neiße, Neuhaus, Pilsen, Pisek, Podgorze, Schleitz, Strakonitz, Tabor, Troppau, Wessely.

Donnerstags: Die täglichen; dann nach Bregenz, Dresden, Eger, Hüningen, Iglau, Innsbruck, Leipzig, Paris, Salzburg, Schleitz, St. Gallen, Zürich.

Freytags: Die täglichen; dann nach Agram, Berlin, Carlstadt, Debreczin, Essek, Görlitz, Hermannstadt, Kaschau, Klattau, Klausenburg, Körmend, Oedenburg, Peterwardein, Pisek, Semlin, Strakonitz, Tabor, Temeswar, Warasdin, Wessely, Zara.

Samstags: Die täglichen; dann nach Berlin, Breslau, Budweis, Dresden, Eger, Hamburg, Hüningen, Iglau, Innsbruck, Klattau, Königgrätz, Krems, Leipzig, Neiße, Neuhaus, Paris, Pilsen, Pisek, Podgorze, Salzburg, St. Gallen, Schleitz, Wessely, Zürich.

### Ankunft in Wien.

Täglich: Von Augsburg, Brünn, Frankfurt, Grätz, Hamburg, Klagenfurt, Laibach, Lemberg, Linz, Mailand, München, Nürnberg, Ofen, Olmütz, Pesth, Preßburg, Prag, Raab, Regensburg, Teschen, Triest, Ulm, Venedig, Verona.

Sonntags: Die täglichen; dann von Agram, Bregenz, Brody, Carlstadt, Dresden, Eger, Erfurt, Essek, Güns, Hermannstadt, Innsbruck, Klattau, Krems, Leipzig, Oedenburg, Paris, Salzburg, Schleitz, Steyr, Szegedin, Tabor, Temeswar, Warasdin, Wels, Zara.

**Montags:** die täglichen; dann von Botzen, Bregenz, Breslau, Debreczin, Dresden, Görz, Hüningen, Innsbruck, Kaschau, Klausenburg, Königgrätz, Leipzig, Neiße, Paris, Podgorze, Salzburg, St. Gallen, Troppau, Zürich.

**Dienstags:** die täglichen; dann von Berlin, Bregenz Budweis, Eger, Görlitz, Hamburg, Innsbruck, Krems, Peterwardein, Salzburg, St. Gallen, Semlin, Schleitz, Strakonitz, Tabor, Wessely, Zürich.

**Mittwoch:** die täglichen; dann von Berlin, Budweis, Dresden, Eger, Görlitz, Hamburg, Klattau, Leipzig, Neuhaus, Pilsen, Podgorze, Schleitz.

**Donnerstags:** die täglichen; dann von Agram, Berlin, Bregenz, Brody, Carlstadt, Essek, Görlitz, Güns, Hermannstadt, Hüningen, Iglau, Innsbruck, Körmend, Krems, Leipzig, Oedenburg, Paris, Salzburg, St. Gallen, Temesvar, Warasdin, Zara, Zürich.

**Freytags:** die täglichen; dann von Berlin, Breslau, Debreczin, Eger, Görz, Hamburg, Kaschau, Klausenburg, Neiße, Schleitz, Tabor, Troppau, Wessely.

**Samstags:** die täglichen; dann von Bregenz, Budweis, Dresden, Eger, Hamburg, Hüningen, Iglau, Innsbruck, Klattau, Königgrätz, Leipzig, Neuhaus, Paris, Pilsen, Podgorze, Salzburg, St. Gallen, Schleitz, Wessely, Zürich.

Anmerkung. Die türkische Post nach Constantinopel geht Dienstags oder Freytags als den 1. ungrischen Posttag in jedem Monathe und den 1. ungrischen Posttag nach dem 15 jedes Monaths von Wien ab, und kommt so zweymahl des Monaths an den gleichen Tagen in Wien an.

## Oesterreichischer Briefposten-Tarif

seit 1. Junius 1817, in Conventions-Geld.

| Nach dem Gewichte für Briefe und Pakete. | A. Gebühren in Conventions-Münze für Briefe, welche bloß im Innern der k. k. Länder befördert werden. | | | | | | | | | | | | | | B. Gebühren für Briefe, welche in fremde Staaten zu befördern, oder aus denselben gekommen sind. | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | von 1—3 Post. | | von 5—6 Post. | | von 6—9 Post. | | von 9—12 Post | | von 12-15 Post. | | von 15-18 Post. | | über 18 Post. | | von 1—3 Post | | von 3—6 Post. | | von 6—9 Post. | | von 9—12 Post. | | über 12 Post. | |
| | fl. | kr. | fl | kr | fl. | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. | fl | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. | fl | kr. | fl. | kr | fl. | kr. | fl. | kr. |
| Vom einf. Brief b. einf. ½ Lth | — | 2 | — | 4 | — | 6 | — | 8 | — | 10 | — | 12 | — | 14 | — | 2 | — | 8 | — | 10 | — | 12 | — | 14 |
| üb ½ Lth. b. einschließig 1 Lth. | — | 4 | — | 8 | — | 12 | — | 16 | — | 20 | — | 24 | — | 28 | — | 4 | — | 16 | — | 20 | — | 24 | — | 28 |
| — 1 — 1 1/2 — | — | 6 | — | 12 | — | 18 | — | 24 | — | 30 | — | 36 | — | 42 | — | 6 | — | 24 | — | 30 | — | 36 | — | 42 |
| — 1 1/2 — 2 — | — | 8 | — | 16 | — | 24 | — | 32 | — | 40 | — | 48 | — | 56 | — | 8 | — | 32 | — | 40 | — | 48 | — | 56 |
| — 2 — 2 1/2 — | — | 10 | — | 20 | — | 30 | — | 40 | — | 50 | 1 | — | 1 | 10 | — | 10 | — | 40 | — | 50 | 1 | — | 1 | 10 |
| — 2 1/2 — 3 — | — | 12 | — | 24 | — | 36 | — | 48 | 1 | — | 1 | 12 | 1 | 24 | — | 12 | — | 48 | 1 | — | 1 | 12 | 1 | 24 |
| — 3 — 3 1/2 — | — | 14 | — | 28 | — | 42 | — | 56 | 1 | 10 | 1 | 24 | 1 | 38 | — | 14 | — | 56 | 1 | 10 | 1 | 24 | 1 | 38 |
| — 3 1/2 — 4 — | — | 16 | — | 32 | — | 48 | 1 | 4 | 1 | 20 | 1 | 36 | 1 | 52 | — | 16 | 1 | 4 | 1 | 20 | 1 | 36 | 1 | 52 |
| — 4 — 4 1/2 — | — | 18 | — | 36 | — | 54 | 1 | 12 | 1 | 30 | 1 | 48 | 2 | 6 | — | 18 | 1 | 12 | 1 | 30 | 1 | 48 | 2 | 6 |
| — 4 1/2 — 5 — | — | 20 | — | 40 | 1 | — | 1 | 20 | 1 | 40 | 2 | — | 2 | 20 | — | 20 | 1 | 20 | 1 | 40 | 2 | — | 2 | 20 |
| — 5 — 5 1/2 — | — | 22 | — | 44 | 1 | 6 | 1 | 28 | 1 | 50 | 2 | 12 | 2 | 34 | — | 22 | 1 | 28 | 1 | 50 | 2 | 12 | 2 | 34 |

Die schwereren Briefe steigen in demselb. Verhältnisse fort. Die ausführliche Tabelle lieferte d. Jahrg. 1827 dies. Kalenders.

## Tarif über die Transito-Taxen für Postbriefe aus fremden Staaten.

1) Für Briefe aus Spanien, Portugal, Gibraltar, und aus allen spanischen, portugiesischen, französischen und anderen Kolonien 36 kr. — 2) Für Briefe aus England, Schottland, Irland und Nordamerika 24 kr. — 3) Für Briefe aus Frankreich, den Niederlanden, Luxemburg und aus den preußischen Rhein- und westphälischen Provinzen 14 kr. — 4) Für Briefe aus Schweden, Norwegen und den teutschen Bundesstaaten, wenn sie von den fürstlich Thurn- und Taxischen Postämtern zu Schleitz oder Lobenstein über Eger einlaufen, 6 kr.; und wenn sie für die Küstenländer und Dalmatien ihren Lauf über Frankfurt am Mayn durch die Schweiz und über Mailand genommen hätten, 8 kr. — 5) Für Briefe, welche aus der Schweiz und durch die Schweiz aus anderen, als unter 1, 2, 5 genannten Ländern über Bregenz bezogen werden, 6 kr. — 6) Für Briefe aus dem Kirchenstaate, Neapel, Sicilien, den Inseln des mittelländischen und adriatischen Meeres, dem Archipelagus und den Barbaresken-Staaten, wenn sie zu Lande aus dem Kirchenstaate bezogen werden, 6 kr. — 7) Für Briefe aus Toscana 4 kr C. M.

Diese Transito-Gebühren gelten für jeden einfachen Brief bis einschließig 1½ W. Loth; für schwerere Briefe steigt die Taxe im gleichen Verhältnisse von ½ zu ½ Loth, bis einschließig 16 Loth. Von 16 Loth angefangen wird für jedes weitere halbe Loth bloß die halbe Taxe für den einfachen Brief zugerechnet. Briefe über 32 Loth werden nur lothweise taxirt, jeder Bruchtheil des Lothes also dem Briefempfänger zu gute gelassen.

## Prämienvertheilung für Pferdzüchter.

Die Vertheilung der Prämien für die von den k. k. Beschellern erzeugten, und im Lande erzogenen acht schönsten Hengstfollen, und zwar für jedes mit 20 Ducaten in Gold, und für die drey schönsten Mutterfollen, für jedes mit 5 Ducaten in Gold, wird in Korneuburg den 1., in Traiskirchen den 5., und in St. Pölten den 10. October jedes Jahr vorgenommen; daher die Concurrenten zur Prämien-Vertheilung an diesen Tagen in den benannten Concursstationen jedesmahl um 8 Uhr früh zu erscheinen haben.

Wenn an diesen bestimmten Tagen ein Sonntag einfällt, so geschieht die Vertheilung der Prämien an dem darauf folgenden Wochentage.

# Interesse-Tafeln.

| Capital. fl. | zu 2½ Procent. Für 1 Jahr fl. kr. pf. | Für 1 Monath fl. kr. pf. | Für 1 Tag kr. pf. | zu 4 Procent. Für 1 Jahr fl. kr. pf. | Für 1 Monath fl. kr. pf | Für 1 Tag kr. pf. | zu 5 Procent. Für 1 Jahr fl. kr. | Für 1 Monath fl. kr. pf. | Für 1 Tag kr. pf. | zu 6 Procent. Für 1 Jahr fl. kr. pf. | Für 1 Monath fl. kr. pf. | Für 1 Tag kr. pf. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5000 | 125 — — | 10 25 — | 20 3 | 200 — — | 16 40 — | 33 1 | 250 — | 20 50 — | 41 2 | 300 — — | 25 — — | 50 — |
| 4000 | 100 — — | 8 20 — | 16 2 | 160 — — | 13 20 — | 26 2 | 200 — | 16 40 — | 33 — | 240 — — | 20 — — | 40 — |
| 3000 | 75 — — | 6 15 — | 12 2 | 120 — — | 10 — — | 20 — | 150 — | 12 30 — | 24 3 | 180 — — | 15 — — | 30 — |
| 2000 | 50 — — | 4 10 — | 8 1 | 80 — — | 6 40 — | 13 1 | 100 — | 8 20 — | 16 2 | 120 — — | 10 — — | 20 — |
| 1000 | 25 — — | 2 5 — | 4 — | 40 — — | 3 20 — | 6 2 | 50 — | 4 10 — | 8 1 | 60 — — | 5 — — | 10 — |
| 500 | 12 30 — | 1 2 2 | 2 — | 20 — — | 1 40 — | 3 1 | 25 — | 2 5 — | 4 — | 30 — — | 2 30 — | 5 — |
| 400 | 10 — — | — 50 — | 1 2 | 16 — — | 1 20 — | 2 2 | 20 — | 1 40 — | 3 1 | 24 — — | 2 — — | 4 — |
| 300 | 7 30 — | — 37 2 | 1 1 | 12 — — | 1 — — | 2 — | 15 — | 1 15 — | 2 2 | 18 — — | 1 30 — | 3 — |
| 200 | 5 — — | — 25 — | — 3 | 8 — — | — 40 — | 1 1 | 10 — | — 50 — | 1 2 | 12 — — | 1 — — | 2 — |
| 100 | 2 30 — | — 12 2 | — 1 | 4 — — | — 20 — | — 2 | 5 — | — 25 — | — 3 | 6 — — | — 30 — | 1 — |
| 90 | 2 15 — | — 11 1 | — — | 3 36 — | — 18 — | — 2 | 4 30 | — 22 2 | — 3 | 5 24 — | — 27 — | — 3 |
| 80 | 2 — — | — 10 — | — — | 3 12 — | — 16 — | — 2 | 4 — | — 20 — | — 3 | 4 48 — | — 24 — | — 3 |
| 70 | 1 45 — | — 8 3 | — — | 2 48 — | — 14 — | — 1 | 3 30 | — 17 2 | — 2 | 4 12 — | — 21 — | — 2 |
| 60 | 1 30 — | — 7 2 | — — | 2 24 — | — 12 — | — 1 | 3 — | — 15 — | — 2 | 3 36 — | — 18 — | — 2 |
| 50 | 1 15 — | — 6 1 | — — | 2 — — | — 10 — | — 1 | 2 30 | — 12 2 | — 2 | 3 — — | — 15 — | — 2 |
| 40 | 1 — — | — 5 — | — — | 1 36 — | — 8 — | — 1 | 1 — | — 10 — | — 1 | 2 24 — | — 12 — | — 1 |
| 30 | — 45 — | — 3 3 | — — | 1 12 — | — 6 — | — — | 1 30 | — 7 2 | — 1 | 1 48 — | — 9 — | — 1 |
| 20 | — 30 — | — 2 2 | — — | — 48 — | — 4 — | — — | 1 — | — 5 — | — — | 1 12 — | — 6 — | — — |
| 10 | — 15 — | — 1 1 | — — | — 24 — | — 2 — | — — | — 30 | — 2 2 | — — | — 36 — | — 3 — | — — |
| 9 | — 13 2 | — 1 — | — — | — 21 2 | — 1 3 | — — | — 27 | — 2 1 | — — | — 32 1 | — 2 2 | — — |
| 8 | — 12 — | — 1 — | — — | — 19 — | — 1 2 | — — | — 24 | — 2 — | — — | — 28 3 | — 2 1 | — — |
| 7 | — 10 2 | — — 3 | — — | — 16 3 | — 1 1 | — — | — 21 | — 1 3 | — — | — 25 — | — 2 — | — — |
| 6 | — 9 — | — — 3 | — — | — 14 1 | — 1 — | — — | — 18 | — 1 2 | — — | — 21 2 | — 1 3 | — — |
| 5 | — 7 2 | — — 2 | — — | — 12 — | — 1 — | — — | — 15 | — 1 1 | — — | — 18 — | — 1 2 | — — |
| 4 | — 6 — | — — 2 | — — | — 9 2 | — — 3 | — — | — 12 | — 1 — | — — | — 14 1 | — 1 — | — — |
| 3 | — 4 2 | — — 1 | — — | — 7 — | — — 2 | — — | — 9 | — — 3 | — — | — 10 3 | — — 3 | — — |
| 2 | — 3 — | — — 1 | — — | — 4 3 | — — 1 | — — | — 6 | — — 2 | — — | — 7 — | — — 2 | — — |
| 1 | — 1 2 | — — — | — — | — 2 1 | — — — | — — | — 3 | — — 1 | — — | — 3 2 | — — 1 | — — |

## Die Procente der Classensteuer nach den jährlichen Einkünften in Conventions-Münze.

| Jährliche Einkünfte. | Steuer | Jährliche Einkünfte. | Steuer. |
|---|---|---|---|
| 100 bis 300 fl. | 2½ Procent. | 40001 bis 45000 fl. | 11½ Procent. |
| 301 „ 500 „ | 3 „ | 45001 „ 50000 „ | 12 „ |
| 501 „ 800 „ | 3½ „ | 50001 „ 55000 „ | 12½ „ |
| 801 „ 1200 „ | 4 „ | 55001 „ 60000 „ | 13 „ |
| 1201 „ 1600 „ | 4½ „ | 60001 „ 65000 „ | 13½ „ |
| 1601 „ 2000 „ | 5 „ | 65001 „ 70000 „ | 14 „ |
| 2001 „ 3000 „ | 5½ „ | 70001 „ 75000 „ | 14½ „ |
| 3001 „ 5000 „ | 6 „ | 75001 „ 80000 „ | 15 „ |
| 5001 „ 6500 „ | 6½ „ | 80001 „ 85000 „ | 15½ „ |
| 6501 „ 8000 „ | 7 „ | 85001 „ 90000 „ | 16 „ |
| 8001 „ 10000 „ | 7½ „ | 90001 „ 95000 „ | 16½ „ |
| 10001 „ 12000 „ | 8 „ | 95001 „ 100000 „ | 17 „ |
| 12001 „ 16000 „ | 8½ „ | 100001 „ 105000 „ | 17½ „ |
| 16001 „ 20000 „ | 9 „ | 105001 „ 110000 „ | 18 „ |
| 20001 „ 25000 „ | 9½ „ | 110001 „ 120000 „ | 18½ „ |
| 25001 „ 30000 „ | 10 „ | 120001 „ 130000 „ | 19 „ |
| 30001 „ 35000 „ | 10½ „ | 130001 „ 140000 „ | 19½ „ |
| 35001 „ 40000 „ | 11 „ | 140001 „ 150000 „ | 20 |

****

Da die Fassionen vom jährlichen Einkommen ,edes Jahr neu zu verfassen und einzureichen sind, und größtentheils nicht ordnungsmäßig gemacht sind, so dürfte es nicht am unrechten Platze seyn, die Hauptvorschriften, welche dabey zur Richtschnur zu dienen haben, hier in Kürze aufzuführen.

1) Jedermann ohne Ausnahme hat eine Classensteuer-Fassion unter eigener Fertigung abzugeben.

2) Jede Classensteuer-Fassion muß nach der Eigenschaft der Person entweder an Eidesstatt, oder unter adelicher oder priesterlicher Treue ausgestellt seyn.

3) Im Innern der Stadt Wien sind diese Fassionen von sämmtlichen, sowohl Zins- als After-Parteyen, an den Eigenthümer oder den Besorger des Hauses, wo sie wohnen, offen oder verschlossen abzugeben. In den Wiener Vorstädten und auf dem Lande sind diese Erklärungen von sämmtlichen Parteyen in der Regel in die bisher üblichen Verzeichnisse einzutragen. Jedoch müssen sie immer unter der, beym zweyten Puncte bemerkten Clausel ausgestellt und von der Partey eigenhändig unterschrieben seyn. Jeder Partey ist es aber auch unbenommen, anstatt solcher offenen Erklärungen, verschlossene Fassionen dem Verzeichnisse beyzulegen. Alle verschlossenen Eingaben dürfen erst bey der Landesstelle eröffnet werden.

4) Die Classensteuer ist keine Vermögenssteuer, sondern ist von den jährlichen Einkünften zu entrichten. Jede Fassion, die lediglich vom Vermögen spricht, ist daher unbrauchbar.

5) Jede Fassion muß unter obiger Clausel entweder die bestimmte Erklärung, daß der Fatent kein der Classensteuer unterliegendes Einkommen beziehe, oder aber den reinen Betrag seiner Jahreseinkünfte enthalten.

6) Zur Bestimmung dieses reinen Betrages dürfen von den sämmtlichen jährlichen Einkünften, sie mögen aus dem Inlande oder aus dem Auslande bezogen werden, einzig und allein nur folgende Posten abgeschlagen werden.

A. Bey den Einkünften: a. Alle Besoldungen, Gagen, Quartiergelder, Pensionen, Provisionen, Löhnungen und Gnadengehalte, welche aus dem Allerhöchsten Cameral- oder Militär-Aerarium bezogen werden. Dergleichen Genüsse aus anderen öffentlichen Fonds sind an und für sich noch nicht befreyt, daher es nicht genüget, wenn sich Jemand bloß darauf beruft, daß er ein k. k. Beamter oder Pensionist sey, sondern es muß der Fond bemerkt werden, woraus ein solches Einkommen bezogen wird. b. Die Interessen der noch nicht verlosten Wiener-Stadt-Banco-Obligationen, der Banco-Lotto-Obligationen, und der niederösterr. ständischen Lotto-Obligationen. Die Interessen aller übrigen öffentlichen und Privat-Obligationen unterliegen der Classensteuer. c. Die Nutzungen von Realitäten, welche der Grund- und Häusersteuer unterliegen. Hingegen die Interessen, die Jemand von Satzposten bezieht, und die Nutzungen, welche aus einem auf einer Realität betriebenen Gewerbe entspringen, sind keineswegs von der Classensteuer befreyt. d. Einkünfte, welche aus dem unmittelbaren eigenen Genusse der in den ungarischen Provinzen, oder in fremden Staaten liegenden eigenthümlichen Realitäten entspringen. Alle übrigen wie immer gearteten Einkünfte unterliegen der Classensteuer.

B. Bey den Ausgaben dürfen von dem Gesammtbetrage der, der Classensteuer unterliegenden Einkünfte nur folgende abgezogen werden: e. Die Interessen der Passiv-Capitalien, und alles, was Jemand in Folge eingegangener oder auferlegter rechtlicher Verbindlichkeiten, und insbesondere in Folge förmlicher Verträge an einen Dritten verabreicht. Alles, was nur aus freyer Willkühr abgereicht wird, darf nicht abgezogen werden. f. Alle Auslagen, welche zum Betriebe eines Erwerbes gemacht werden, dürfen von dem Ertrage dieses Erwerbes abgeschlagen werden, keineswegs aber diejenigen Auslagen, welche durch eine Realität verursacht werden. Die Auslagen, die Jemand für seinen eigenen und seiner Familie Unterhalt, z. B. für Kost, Wohnung, Bekleidung, Unterhaltung der Dienerschaft u. dergl. verwendet, dürfen unter keinem Titel in Abzug gebracht werden.

7) Auch ungewisse und unbestimmte Einkünfte unterliegen der Classensteuer, und der wahrscheinliche beyläufige Betrag derselben ist zu fatiren.

8) Von der Classensteuer sind nur folgende Personen befreyt: a) diejenigen Familienhäupter oder selbstständigen Personen, deren sämmtliches, der Classensteuer unterliegendes Einkommen des ganzen Jahres den Betrag von 100 fl. C. M. nicht erreicht. b) Das Personale und die Dienerschaft der auswärtigen Gesandtschaften. Diejenigen jedoch, welche k. k. Unterthanen sind, und aus dem Inlande ein der Classensteuer unterliegendes Einkommen besitzen, sind von derselben in Ansehung dieses letztern Einkommens nicht befreyt. c) Die förmlich protokollirten türkischen Unterthanen. d) Fremde, die weder durch den zehnjährigen ununterbrochenen Aufenthalt, noch auf anderem Wege die österreichische Staatsbürgerschaft erlangt haben. Wenn jedoch Fremde von inländischen Privaten Besoldungen oder Pensionen beziehen, oder sich hier Landes einen wie immer gearteten Erwerb verschaffen, so unterliegt der Betrag dieser Einkünfte allerdings der Classensteuer.

9) Jeder Dienst- und Arbeitgeber, er mag für seine Person der Classensteuer unterliegen oder nicht, hat die sämmtlichen, unter was immer für einer Benennung bey ihm in Dienst oder Verdienst stehenden Individuen mit Nahmen, Wohnort und mit dem wochentlichen, monathlichen oder jährlichen Betrage des Gehaltes, Lohnes, Kostgeldes oder Verdienstes eines jeden Einzelnen in seiner Classensteuer-Fassion anzusetzen. Bey denjenigen derselben, deren sämmtliche jährliche Geldgenüsse 100 fl. C. M. nicht erreichen, genügt es, wenn solches ausdrücklich

in der Fassion angegeben wird. Den für jedes solche Individuum entfallenden Steuerbetrag hat immer der Dienst- oder Arbeitgeber zugleich mit seiner eigenen Classensteuer zu berichtigen, wobey ihm jedoch der Regreß an das Individuum unbenommen bleibt.

10) Wenn bey Eheleuten der eine Theil keine der Classensteuer unterliegenden Einkünfte genießt, so ist solches in der Fassion des andern Theils ausdrücklich anzugeben. Hat jeder Theil für sich ein abgesondertes Einkommen, so ist es nicht verwehrt, den Betrag desselben auch abgesondert zu fatiren.

11) Vormünder und Curatoren sind unter eigener Haftung verpflichtet, für ihre Mündel und Curanden Classensteuer-Fassionen abzugeben.

12) Die Einkünfte sind in C. M. zu fatiren. Ist keine Währung angegeben, so wird das fatirte Einkommen bey Aufrechnung der Classensteuer ohne weiters als C. M. angenommen.

13) Das bloße Anerbiethen, den vorjährigen Steuerbetrag entrichten zu wollen, oder die bloße Angabe, es habe sich in dem Stande des Einkommens nichts geändert, ist nicht zulässig, sondern es soll jedes Jahr ein bestimmter Betrag der Einkünfte auf die angegebene Art fatirt werden.

14) Hat Jemand in einem andern Hause, als wo er wohnt, seine Fassion bereits abgegeben, wird seine Classensteuer anderswo bezahlt, oder wohnt der Eigenthümer oder Besorger des Hauses anderswo, so ist solcher ausdrücklich zu bemerken, und der Ort mit Haus-Nummer anzugeben. (Wiener Zeitung 1827, Amtsblatt Nr. 298.)

## Gerichtsferien.

1. An den Sonn- und gebothenen Feyertagen.
2. Vom Weihnachtstage bis an den Tag heil. 3 Könige.
3. Vom Palmsonntage bis an den Ostermontag.
4. An den 3 Bethtagen in der Kreuzwoche.
5. Vom Fronleichnamstage bis an den folgenden Donnerstag.

Bey Berggerichten nur an den Sonn- und gebothenen Feyertagen, und den öffentlichen Bethtagen.

## Normatage,

an welchen alle Schauspiele, Tänze, öffentliche Belustigungen ꝛc. in den k. k. Staaten untersagt sind.

Aschermittwoch.
19. Febr. (Joseph des II. Sterbetag.)
28. Febr. (Leopold des II. Sterbetag.)
Maria Verkündigung.
Vom Palmsonntage bis einschließig Ostersonntag.
Pfingstsonntag.
Fronleichnamstag.
Maria Geburt.
Leopoldstag im Erzherzogthume Oesterreich.
Vom 22. bis 25. December.

Im lombardisch-venezianischen Königreiche führen die Almanache noch auf:

7. April. (Sterbetag der Kaiserinn Maria Ludovica.)
12. April. (Sterbetag der Kaiserinn Maria Theresia.)
14. May. (Sterbetag der Kaiserinn Ludovica, Mutter Sr. Majestät des Kaisers.)

Anmerkung, Das sogenannte tempus sacrum vom Advent bis zum Feste der h. 3 Könige einschließig und vom Anfange der Fasten bis zum 1. Sonntage nach Ostern muß strenge gehalten werden. Weder Bälle, noch Tanzmusiken haben an allen gebothenen Fasttagen, als Quatembertagen, an den strengen Vigilien vor den höchsten Festtagen des Jahrs, und an den Freytagen und Samstagen Statt zu finden. Bälle mit Masken und Redouten dürfen in der Regel nur in der Residenz und in den Provinzial-Hauptstädten, und nur vom 7. Januar bis einschließig Faschingdienstag, und nur ausnahmsweise und mit besonderer Erlaubniß in einer oder der andern großen Stadt, an einem oder dem andern Tage außer jener Zeit Statt finden. Tanzmusik, und sowohl öffentliche als Privatbälle bleiben untersagt: In der ganzen Adventzeit und in den darauf folgenden Wochen bis einschließig h. 3 Könige; in der ganzen Fastenzeit und der darauf folgenden Woche bis einschließig den 1. Sonntag nach Ostern, an allen kirchlichen Fasttagen, und an den Freytagen und Samstagen des ganzen Jahrs. — Tanzmusiken und Schauspiele dürfen nur eine Stunde nach geendigtem nachmittägigen Gottesdienste beginnen; jene dürfen an den Vorabenden der Freytage, der Festtage und gebothenen Feyertage nicht über 12 Uhr Mitternacht dauern. Wie lange sich ihre Dauer außer diesen Tagen erstrecken dürfe, wird von der betreffenden Obrigkeit besonders bestimmt, und in dem hierzu ausgefertigten Erlaubnißscheine ausgedrückt.

---

## Innerer Werth des verarbeiteten Goldes und Silbers.

Eine Mark reinen Goldes oder 16 Loth *) kosten 366 fl. 54 kr. C. M. (im Handel, nicht im Münz-Einlösungsamte), also das Loth 22 fl. 55$\frac{7}{8}$ kr. Jede Mark enthält 24 Karat, jeder Karat 12 Grän. Der Karat gilt also 15 fl. 17$\frac{1}{4}$ kr. und jeder Grän 1 fl. 16$\frac{1}{3}$ kr. Nun ist aber das Gold bey uns immer mit Kupfer legirt, und darnach unterscheidet man es in 23 karatiges, 22 karatiges ꝛc., jenachdem unter 24 Karat des Ganzen nur

*) Die Mark ist zwar etwas schwerer als 16 Loth des Wiener Handelsgewichtes, nähmlich um 149 Richtpfennige oder fast $\frac{1}{453}$, was aber bey kleineren Quantitäten nicht in besondern Anschlag gebracht wird.

23 oder 22 Karat reines Gold, und 1 oder 2 Karat Kupfer enthalten sind. Hier werden also nur so viel Karat bezahlt, als wirkliches Gold in der Mark vorhanden ist, da das Kupfer bey alter Waare und bey Bruchgold nicht in Anschlag gebracht wird. In den teutschen und ungarischen Provinzen des österr. Staates sind dreyerley Legirungsarten für die Goldarbeiten vorgeschrieben, die feinste oder Nr. 3 hält 18 Karat 5 Grän fein Gold in der Mark, das übrige Kupfer; Mittelgold oder Nr. 2 hält 13 Karat 1 Grän fein Gold in der Mark, das übrige Kupfer; das ordinäre oder Nr. 1 hält bloß 7 Karat 10 Grän fein Gold in der Mark. Es gilt also die Mark

| | | |
|---|---|---|
| Nr. 3 nach innerm Werthe (ohne Kupferzusatz) | „ „ „ „ „ „ | 281 fl. 32 ¾ kr. |
| „ 2 „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ | | 200 „ — ¾ „ |
| „ 1 „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ | | 119 „ 45 ¾ „ |

Das Gewicht der meisten Geräthe und Galanteriewaaren aus Gold wird im gemeinen Leben nach der Ducatenschwere bestimmt. Auf eine Mark gehen 80⅔ Ducaten, und jeder Ducaten zerfällt in 60 Gran. Vom ganz feinen oder 24karatigen Golde gilt also die Ducatenschwere

| | | |
|---|---|---|
| „ „ „ „ „ „ | | 4 fl. 33 ¾ kr. |
| von Nr. 3 „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ | | 3 „ 30 „ |
| „ Nr. 2 „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ | | 2 „ 30 „ |
| „ Nr. 1 „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ „ | | 1 „ 30 „ |

Eine alte Dose, welche 20 Ducaten Nr. 2 wiegt, gilt daher in runder Summe, ohne Arbeitslohn, wofür in der Regel nichts mehr bezahlt wird, 50 fl. C. M.

Die Mark reinen Silbers gilt im Handel 24 fl. 12 kr., folglich das Loth 1 fl. 30¾ kr. Will man nun eine Mark 13löthigen Silbers kaufen, wobey die Legirung nicht eingerechnet wird, so darf man eine ganze Mark nur 13 Loth schwer annehmen, weil 3 Loth Kupfer dabey sind, also die Mark nicht theurer bezahlen, als mit 19 fl. 39¾ kr. Das Loth 13löthigen Silbers gilt daher nicht mehr als 1 fl. 13¾ kr.

Im lombardisch-venezianischen Königreiche ist eine andere Legirung des Goldes und Silbers eingeführt.

Beym Golde hat man ebenfalls dreyerley Feinheitsgrade, nahmentlich: 1) 0. 920 fein, d. i. zu 22 $\frac{2}{32}$. ½ Karat, mit $\frac{82}{100}$ Kupferzusatz; 2) 0. 840 fein, d. i. 20 $\frac{5}{32}$. ⅛ Karat, mit $\frac{160}{100}$ Kupferzusatz, 3) 0. 750 fein, d. i. 18 Karat, mit 6 Karat oder ¼ Mark Kupferzusatz. Die sonstigen Venezianer Ketten aus der Stadt Venedig selbst waren 0. 906 fein und hatten daher unter 1000 Theilen nur 94 Theile Kupfer.

Beym Silber sind daselbst zwey gesetzliche Legirungen: 1) 0. 950 fein, d. i. 11 Deniers 9 $\frac{1}{10}$ Grains, mit $\frac{1}{20}$ Kupferzusatz, 2) 0. 800 fein, d. i. 9 Deniers 14 $\frac{1}{10}$ Grains mit ⅕ Kupferzusatz.

---

## Geldwesen in den k. k. Staaten.

Goldmünzen, welche gesetzlichen Umlauf haben. K. K. österr. und Kremnitzer einfache Ducaten 4 fl. 30 kr., doppelte 9 fl., niederländische ganze Souverainsd'or 13 fl. 20 kr., halbe 6 fl. 40 kr., alte holländische Ducaten gerändert und vollwichtig 4 fl. 30 kr. C. M.

Die Schwere der vorstehenden Geldsorten nach dem ordinären 60 Grän schweren Ducaten-Gewichte ist: der einfache Ducaten, so wie der alte Holländer zu 4½ fl. = 60 Grän. Doppelducaten 120 Grän. Ganzer Souverain'or 3 Ducaten 11 Grän, halber 1 Ducaten 35½ Grän. Alle diese Goldmünzen müssen vollwichtig seyn. Als vollwichtig werden die k. k. österr. und Kremnitzer einfachen und doppelten Ducaten, dann die k. k. österr. niederländ. ganzen und halben Souverainsd'or angenommen, wenn in der Abwägung mit einem dem Goldstücke angehängten Ducatengrän das bestimmte Gewicht nicht vorschlägt, mithin wenigstens instehet; bey den angeführten alten Holländer-Ducaten aber, wenn sie gerändert sind, und in der Abwägung mit einem dem Goldstücke angehängten Ducatengrän das Goldstück vorschlägt. Ungewichtige Goldmünzen werden bey öffentlichen Cassen gar nicht, sondern nur bey den Münz- und Einlösungsämtern als Material angenommen und behandelt.

Silbermünzen. K. K. österr. und andere nach dem Conventions-Fuß ausgemünzte Speciesthaler 2 fl., halbe Thaler oder Gulden 1 fl., Viertel-Thaler oder halbe Gulden 30 kr., Kopfstücke oder sogenannte Zwanziger 20 kr., alte Siebenzehner 15 kr., halbe Kopfstücke oder Zehner 10 kr., alte Siebener 6 kr., dann Fünfer und Groschen. K. K. niederländ. ganze Kronenthaler 2 fl. 12 kr., halbe Kronen 1 fl. 6 kr., Viertel-Kronen 33 kr.

Ferner gelten in Oesterreich: Venezianische Zecchinen 4 fl. 32 kr., italienische 20 Lirestücke 7 fl. 35 kr., französische 20 Frankenstücke 7 fl. 35 kr., bayrische ganze Kronenthaler 2 fl. 12 kr., Mailänder ganze Scudi 1 fl. 45½ kr., spanische Matten oder Säulenthaler 2 fl. 3 kr. C. M. Beschädigte und beschnittene Münzen werden bey öffentlichen Cassen nicht angenommen, sondern von den Münz- und Einlösungsämtern gegen den festgesetzten Preis übernommen.

Neues Münzwesen im lombardisch-venezianischen Königreiche. Nach dem Patente vom 1. November 1823 ist der österr. Conventions-Fuß als Grundlage zur Ausprägung und Werthsbestimmung der Münzen im lomb. venez. Königreiche bestimmt, und zum Behufe der Anwendung dieses Münzfußes auf das

metrische Gewicht, welches für die Ausprägung im lomb. venez. Königreiche beybehalten wird, folgendes Decimal-Verhältniß festgestellt:

1 metrisches Pfund = 3 Mark 9 Loth 48 Richtpfennigtheile des Wiener Markgewichtes; und 1 Wiener Mark = 2 Oncien 8 Grossi 6 Gran und 44 Hunderttheile eines Grans des metrischen Gewichtes. Diesem gemäß wird das metrische Pfund fein Gold zu 1307 fl. 20 kr. oder 3922 neuen österr. Liren (Lire austriache), fein Silber zu 85 fl. 31 kr., oder 256. 55. österr. Liren, Kupfer zu 1 fl. 54. 248 kr. oder 5 Liren 71. 42 Centesimi ausgeprägt. Die Einheit der auszuprägenden Münzen ist die österreichische Lira (Lira austriaca), welche ein metrisches Gewicht von 4 Denar 3 Gran und 30 $\frac{25}{27}$ Hunderttheilen eines Grans enthält, und aus 9 Zehntheilen feinen Silbers und 1 Zehntheile Kupferzusatz besteht. Die Lira wird in 100 Theile (Centesimi) getheilt, und ihr verglichener Werth ist nach dem Conventions-Fuße 20 kr. und nach der frühern italienischen oder französischen Währung 87 Centesimi.

Die neu ausgeprägten Goldmünzen sind: die Sovrana oder das 40 Lirestück zu 13 fl. 20 kr., und die Mezza Sovrana oder das 20 Lirestück zu 6 fl. 30 kr.

Silbermünzen. Scudo 2 fl., halber Scudo 1 fl., ganze Lira 20 kr., halbe 10 kr., Viertel 5 kr. oder 25 Centesimi.

Kupfermünzen. Soldo zu 5 Centesimi, gilt 1 kr., das 3 Centesimistück $\frac{3}{4}$ kr., 1 Centesimo $\frac{1}{5}$ kr.

100 österreichische Lire gelten 87 italienische Lire oder französische Franken, oder 113 $\frac{9}{32}$ mailändische Lire, oder 169 $\frac{52}{63}$ venezianische Lire.

Werth des österreichischen Geldes im Auslande. 1 österr. Gulden C. M. (zu 3 Zwanzigern) gilt nach innerm Werthe (also nicht nach seinem Curse oder Preise), in Frankreich 2 Franken 58 Centimes, — in England 2 Schilling, 1½ Pence, — in Bayern 1 fl. 12 kr., — in Dänemark 27 $\frac{3}{10}$ Current-Schilling, — in Danzig 86 $\frac{2}{10}$ Groschen, — in Spanien 5 $\frac{3}{8}$ Realen de plata, — in Fredonia 49 Centimen oder fast einen halben Dollar, — in Hannover 21 $\frac{3}{8}$ Mariengroschen, — in Holland 48½ Groote, — in Hamburg 22 $\frac{1}{8}$ Schilling, — in Königsberg 2 fl. 2 Groschen, — in Lübeck 27 $\frac{3}{10}$ Schilling, — in Portugal 430 Rees, — in Preußen 16 $\frac{7}{10}$ Groschen Cour., — in Sachsen 15 $\frac{8}{10}$ Groschen, — in Schweden 21 $\frac{7}{10}$ Schilling, — in der Schweiz 34 $\frac{8}{10}$ Sols, — in der Türkey 1 Piaster 40 Asper, — in Westphalen 25 $\frac{1}{2}$ Albus.

Werth des auswärtigen Geldes in Oesterreich in C. M. 1 französ. Frank gilt 23 kr., — 1 Pf. Sterling in England 9 fl. 22 $\frac{3}{10}$ kr., — 1 bayr. Gulden 50 kr., — 1 dänischer Rthlr. Cour. 1 fl. 45 kr., 1 Rthlr. Species 2 fl. 10 kr., — 1 Danziger Gulden 21 $\frac{3}{10}$ kr., — 1 span. Piaster 2 fl. 2 kr., 1 span. Wechselpiaster 1 fl. 33 $\frac{7}{10}$ kr., — 1 nordamerikanischer Dollar 2 fl. 4½ kr., — 1 hannövrischer Thaler 1 fl. 39 kr., — 1 holländ. Gulden 49 $\frac{4}{10}$ kr., — 1 hamburgische Mark Banco 43 $\frac{3}{10}$ kr., — 1 Königsberger-Gulden 28 $\frac{2}{3}$ kr., — 1 lübeckische Mark Cour. 35 kr., — 1 neapolitanischer Ducato 1 fl. 37 kr., — 1 portugiesische Wechsel-Crusade 55 $\frac{6}{10}$ kr., — 1 preuß. Thlr. 1 fl. 25 kr., — 1 sächsischer Thlr. 1 fl. 30 kr., — 1 schwedischer Rthlr. 2 fl. 12 kr., — 1 Schweizer Frank 34 $\frac{2}{3}$ kr., — 1 türkischer Piaster 32 $\frac{2}{10}$ kr., — 1 westphälischer Thlr. 1 fl. 15 kr.

5 Gulden Wiener Silbergeld machen 6 fl. Reichsgeld nach dem 24 Guldenfuß, und 3 fl. Wiener Silbergeld sind 2 Rthlr. sächsisches Geld (zu 24 Groschen), folglich 1 fl. Wiener Silbergeld gleich 16 Groschen sächsisch. 5 sächsische Thaler machen 9 fl. in Reichsgeld; 3 Thaler gelten einen österreichischen Ducaten.

## Vergleichung der vorzüglichsten Handelsgewichte.

| Es betragen | Breslauer Pfund. | Londoner Pfund. | Spanische Pfund. | Leipziger Pfund. | Berliner Pfund. | Hamburger Pfund. | Augsburger Pfund. | Amsterdamer Pfund. | Kopenhagner Pfund. | Frankfurter Pfund. | Nürnberger Pfund. | Bayrische Pfund. | Wiener Pfund. | Franz. Kilogramm |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1000 Breslauer Pfund | 1000 | 894 | 882 | 867 | 865 | 837 | 826 | 821 | 812 | 802 | 795 | 725 | 724 | 406 |
| " Londoner — | 1119 | 1000 | 967 | 971 | 969 | 936 | 924 | 918 | 908 | 898 | 890 | 811 | 810 | 454 |
| " Spanische — | 1135 | 1014 | 1000 | 983 | 981 | 949 | 936 | 931 | 921 | 910 | 902 | 822 | 821 | 460 |
| " Leipziger — | 1155 | 1031 | 1017 | 1000 | 998 | 965 | 952 | 947 | 937 | 925 | 917 | 836 | 835 | 468 |
| " Berliner — | 1157 | 1034 | 1019 | 1002 | 1000 | 967 | 955 | 949 | 939 | 927 | 919 | 838 | 837 | 469 |
| " Hamburger — | 1195 | 1068 | 1054 | 1036 | 1034 | 1000 | 987 | 981 | 970 | 958 | 950 | 866 | 865 | 485 |
| " Augsburger — | 1212 | 1083 | 1068 | 1050 | 1048 | 1014 | 1000 | 993 | 984 | 972 | 963 | 878 | 877 | 491 |
| " Amsterdamer — | 1219 | 1089 | 1075 | 1057 | 1054 | 1020 | 1006 | 1000 | 989 | 978 | 969 | 883 | 882 | 494 |
| " Kopenhagener — | 1233 | 1101 | 1087 | 1068 | 1066 | 1031 | 1015 | 1011 | 1000 | 988 | 980 | 893 | 892 | 500 |
| " Frankfurter — | 1247 | 1114 | 1099 | 1081 | 1078 | 1043 | 1029 | 1023 | 1012 | 1000 | 991 | 903 | 902 | 505 |
| " Nürnberger — | 1258 | 1124 | 1109 | 1091 | 1088 | 1053 | 1038 | 1032 | 1020 | 1009 | 1000 | 911 | 910 | 510 |
| " Bayrische — | 1379 | 1234 | 1217 | 1197 | 1194 | 1156 | 1139 | 1133 | 1121 | 1108 | 1098 | 1000 | 999 | 560 |
| " Wiener — | 1382 | 1235 | 1218 | 1198 | 1195 | 1157 | 1141 | 1134 | 1122 | 1109 | 1099 | 1001 | 1000 | 560 |
| " Französ. Kilogrammes | 2468 | 2205 | 2176 | 2139 | 2134 | 2065 | 2037 | 2025 | 2003 | 1979 | 1962 | 1786 | 1787 | 1000 |

## Vergleichung der gebräuchlichsten Ellen.

| Es betragen | Wiener Fuß. | Frankf. Ellen | Leipzig. Ellen | Augsb. Ellen | Berlin. Ellen | Amsterd. Ellen | Brabant Ellen | Russische Arschin. | Wiener Ellen | London. Yards | Pariser Meter. | Pariser Ellen. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1000 Wiener Fuß | 1000 | 577 | 559 | 518 | 473 | 458 | 457 | 440 | 406 | 346 | 316 | 266 |
| " Frankfurter Ellen | 1739 | 1000 | 968 | 898 | 820 | 793 | 792 | 762 | 702 | 599 | 547 | 461 |
| " Leipziger — | 1788 | 1033 | 1000 | 927 | 847 | 819 | 818 | 787 | 726 | 618 | 565 | 476 |
| " Augsburger — | 1928 | 1114 | 1078 | 1000 | 913 | 883 | 882 | 849 | 782 | 667 | 609 | 513 |
| " Berliner — | 2112 | 1220 | 1181 | 1095 | 1000 | 967 | 966 | 930 | 857 | 730 | 668 | 562 |
| " Amsterdamer — | 2184 | 1261 | 1221 | 1132 | 1034 | 1000 | 998 | 962 | 886 | 755 | 690 | 581 |
| " Brabanter — | 2186 | 1263 | 1223 | 1134 | 1035 | 1002 | 1000 | 963 | 887 | 756 | 691 | 582 |
| " Russische Arschinen | 2271 | 1312 | 1270 | 1177 | 1075 | 1040 | 1038 | 1000 | 921 | 785 | 718 | 604 |
| " Wiener Ellen | 2465 | 1424 | 1378 | 1278 | 1167 | 1129 | 1127 | 1085 | 1000 | 852 | 779 | 656 |
| " Londoner Yards | 2894 | 1671 | 1617 | 1500 | 1369 | 1325 | 1322 | 1274 | 1174 | 1000 | 915 | 769 |
| " Pariser Meter | 3163 | 1827 | 1769 | 1641 | 1498 | 1449 | 1447 | 1393 | 1283 | 1092 | 1000 | 841 |
| " Pariser Ellen | 3759 | 2172 | 2102 | 1949 | 1780 | 1722 | 1719 | 1655 | 1525 | 1300 | 1188 | 1000 |

## Vergleichung der vorzüglichsten Frucht- oder Getreidemaße.

| Es betragen | Franz. Litres | Frankf. Simmer | London. Bushel | Berlin. Scheffel | Wiener Metzen | Triester Staro | Böhm. Strich | Hamb. Scheffel | Dresdn. Scheffel | Warsch Korzec | Russische Tschetw | Bayr. Scheffel. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1000 Französische Litres | 1000 | $34\frac{2}{10}$ | 28 | 18.3 | 16.3 | 13.5 | 10.7 | 9.5 | 9.3 | 8.5 | 5.1 | 4.5 |
| " Frankfurter Simmer | 28683 | 1000 | 803 | 524 | 466 | 387 | 306 | 272 | 267 | 244 | 147 | 129 |
| " Londoner Bushel | 35725 | 1245 | 1000 | 653 | 581 | 482 | 382 | 339 | 333 | 304 | 184 | 161 |
| " Berliner Scheffel | 54727 | 1908 | 1532 | 1000 | 890 | 738 | 585 | 519 | 509 | 465 | 281 | 246 |
| " Wiener Metzen | 61493 | 2144 | 1721 | 1124 | 1000 | 830 | 657 | 584 | 572 | 523 | 316 | 276 |
| " Triester Staro | 74089 | 2583 | 2074 | 1354 | 1205 | 1000 | 792 | 703 | 690 | 630 | 381 | 333 |
| " Böhmische Strich | 93602 | 3263 | 2620 | 1710 | 1522 | 1263 | 1000 | 888 | 871 | 796 | 481 | 421 |
| " Hamburger Scheffel | 105371 | 3674 | 2950 | 1925 | 1714 | 1422 | 1126 | 1000 | 981 | 896 | 542 | 474 |
| " Dresdner Scheffel | 107434 | 3745 | 3007 | 1963 | 1747 | 1450 | 1148 | 1020 | 1000 | 914 | 552 | 483 |
| " Warschauer Korzec | 117598 | 4100 | 3292 | 2149 | 1912 | 1587 | 1256 | 1116 | 1095 | 1000 | 604 | 529 |
| " Russische Tschetwert | 194555 | 6783 | 5446 | 3555 | 3164 | 2626 | 2079 | 1846 | 1811 | 1655 | 1000 | 875 |
| " Bayrische Scheffel | 222358 | 7752 | 6224 | 4063 | 3616 | 3001 | 2376 | 2110 | 2070 | 1891 | 1143 | 1000 |

## Vergleichung der vorzüglichsten Getränkmaße.

## Vergleichung der vorzüglichsten Getränkmaße.

| Es betragen | Rheinländ. Schop. | Breslauer Quart | Hamburger Quart | Dresdner Kann. | Französische Litres. | Bayrische Kan. | Berliner Quart. | Leipziger Kan. | Wiener Maß. | Russ. Osmuschk | Triester Boccal. | Böhm. Pinten. | Lond. Bier-Gall. | Wiener Eimer. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1000 Rheinländ. Schoppen | 1000 | 664 | 509 | 495 | 461 | 432 | 394 | 383 | 326 | 291 | 253 | 242 | 100 | 8.15 |
| " Breslauer Quart | 1508 | 1000 | 768 | 742 | 695 | 650 | 594 | 577 | 491 | 438 | 381 | 364 | 150 | 12.28 |
| " Hamburger — | 1963 | 1303 | 1000 | 967 | 905 | 847 | 773 | 752 | 640 | 571 | 496 | 474 | 196 | 16 |
| " Dresdner Kannen | 2031 | 1347 | 1035 | 1000 | 936 | 876 | 800 | 778 | 662 | 590 | 513 | 491 | 203 | 16.54 |
| " französische Litres | 2169 | 1439 | 1105 | 1068 | 1000 | 936 | 854 | 831 | 707 | 630 | 548 | 524 | 216 | 17.67 |
| " bayrische Kannen | 2319 | 1538 | 1181 | 1142 | 1069 | 1000 | 913 | 888 | 755 | 673 | 586 | 560 | 231 | 18.34 |
| " Berliner Quart | 2539 | 1684 | 1293 | 1250 | 1170 | 1095 | 1000 | 972 | 827 | 737 | 641 | 613 | 253 | 20.67 |
| " Leipziger Kannen | 2612 | 1732 | 1330 | 1286 | 1204 | 1126 | 1029 | 1000 | 851 | 759 | 659 | 631 | 261 | 21.27 |
| " Wiener Maß | 3070 | 2036 | 1563 | 1511 | 1415 | 1324 | 1209 | 1175 | 1000 | 892 | 775 | 741 | 306 | 25 |
| " russische Osmuschken | 3443 | 2281 | 1753 | 1694 | 1587 | 1484 | 1356 | 1318 | 1121 | 1000 | 869 | 831 | 343 | 28.04 |
| " Triester Boccali | 3959 | 2626 | 2016 | 1950 | 1825 | 1707 | 1559 | 1516 | 1290 | 1150 | 1000 | 956 | 395 | 32.24 |
| " böhmische Pinten | 4142 | 2747 | 2110 | 2039 | 1909 | 1786 | 1631 | 1586 | 1349 | 1203 | 1046 | 1000 | 413 | 33.73 |
| " Londoner Bier-Gallons | 10027 | 6650 | 5107 | 4936 | 4622 | 4323 | 3949 | 3839 | 3266 | 2912 | 2533 | 2421 | 1000 | 81.63 |
| " Wiener Eimer | 122792 | 81433 | 62540 | 60450 | 56600 | 52946 | 48362 | 47008 | 40000 | 35667 | 31015 | 29645 | 12246 | 1000 |

## Vergleichung der vorzüglichsten Fußmaße.

| Es betragen | Madr. Palmos. | Münchner Fuß. | Stockholm. Fuß. | Englische Fuß. | Rheinländ. Fuß. | Wiener Fuß. | Pariser Fuß. | Russische Fuß. | Russi. Arschinen. | Wiener Ellen | Englische Yards. | Französische Meter. | Geometrische Schrit. | Wiener Klafter |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1000 Madrider Palmos | 1000 | 953 | 714 | 696 | 676 | 671 | 653 | 394 | 295 | 272 | 232 | 213 | 114 | 112 |
| " Münchner Fuß, | 1049 | 1000 | 749 | 730 | 709 | 704 | 685 | 413 | 310 | 285 | 243 | 222 | 120 | 117 |
| " Stockholmer — | 1400 | 1335 | 1000 | 975 | 946 | 931 | 914 | 552 | 414 | 381 | 325 | 297 | 160 | 157 |
| " Englische — | 1436 | 1369 | 1026 | 1000 | 970 | 963 | 937 | 566 | 424 | 391 | 333 | 305 | 164 | 161 |
| " rheinländische— | 1480 | 1411 | 1057 | 1031 | 1000 | 993 | 966 | 584 | 437 | 403 | 343 | 314 | 169 | 166 |
| " Wiener — | 1491 | 1421 | 1065 | 1038 | 1007 | 1000 | 973 | 587 | 440 | 406 | 346 | 316 | 171 | 167 |
| " Pariser — | 1532 | 1460 | 1094 | 1067 | 1035 | 1028 | 1000 | 604 | 452 | 417 | 355 | 325 | 175 | 171 |
| " russische — | 2538 | 2420 | 1813 | 1767 | 1715 | 1703 | 1657 | 1000 | 750 | 691 | 588 | 538 | 290 | 284 |
| " russische Arschinen | 3386 | 3228 | 2418 | 2357 | 2287 | 2271 | 2210 | 1334 | 1000 | 921 | 785 | 718 | 387 | 379 |
| " Wiener Ellen | 3675 | 3503 | 2626 | 2559 | 2483 | 2465 | 2399 | 1448 | 1085 | 1000 | 852 | 779 | 420 | 411 |
| " englische Yards | 4314 | 4113 | 3081 | 3004 | 2915 | 2804 | 2816 | 1699 | 1204 | 1174 | 1000 | 915 | 493 | 482 |
| " französische Meter | 4716 | 4496 | 3369 | 3284 | 3186 | 3163 | 3078 | 1858 | 1393 | 1283 | 1092 | 1000 | 539 | 527 |
| " geometrische Schritt | 8743 | 8335 | 6245 | 6088 | 5907 | 5865 | 5707 | 3444 | 2582 | 2379 | 2027 | 1854 | 1000 | 975 |
| " Wiener Klafter | 8944 | 8526 | 6390 | 6227 | 6043 | 6000 | 5839 | 3524 | 2642 | 2434 | 2073 | 1897 | 1025 | 1000 |

# Tabellarische Uebersicht zur Berechnung der Einnahmen und Ausgaben, der Besoldungen, Ersparungen u. s. w., von 1 bis 10,000 fl.

| Summe. | Für ¾ Jahr | | Für ½ Jahr | | Für ¼ Jahr | | Für 1 Monath | | Für eine Woche | | | Für einen Tag | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| fl. | fl. | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. | fl. | kr. | pf. | fl. | kr. | pf. |
| 10000 | 7500 | — | 5000 | — | 2500 | — | 833 | 20 | 192 | 20 | — | 27 | 46 | 3 |
| 9000 | 6750 | | 4500 | | 2250 | | 750 | — | 172 | 30 | | 25 | — | — |
| 8000 | 6000 | | 4000 | | 2000 | | 666 | 40 | 153 | 20 | | 22 | 13 | 1 |
| 7000 | 5250 | | 3500 | | 1750 | | 583 | 20 | 134 | 10 | | 19 | 26 | 3 |
| 6000 | 4500 | | 3000 | | 1500 | | 500 | — | 115 | — | | 16 | 40 | — |
| 5000 | 3750 | | 2500 | | 1250 | | 416 | 40 | 95 | 50 | | 13 | 53 | 1 |
| 4000 | 3000 | | 2000 | | 1000 | | 333 | 20 | 76 | 40 | | 11 | 6 | 3 |
| 3000 | 2230 | | 1500 | | 750 | | 250 | — | 57 | 39 | | 8 | 20 | — |
| 2000 | 1500 | | 1000 | | 500 | | 166 | 40 | 28 | 20 | | 5 | 33 | 1 |
| 1000 | 750 | | 500 | | 250 | | 83 | 20 | 19 | 10 | — | 2 | 46 | 3 |
| 900 | 675 | | 450 | | 225 | | 75 | — | 17 | 15 | 2 | 2 | 30 | — |
| 800 | 600 | | 400 | | 200 | | 66 | 40 | 15 | 20 | 2 | 2 | 13 | 1 |
| 700 | 525 | | 350 | | 175 | | 58 | 20 | 13 | 25 | — | 1 | 56 | 3 |
| 600 | 450 | | 300 | | 150 | | 50 | — | 11 | 30 | 1 | 1 | 40 | — |
| 500 | 375 | | 250 | | 125 | | 41 | 40 | 9 | 35 | 1 | 1 | 23 | 1 |
| 400 | 300 | | 200 | | 100 | | 33 | 20 | 7 | 40 | 1 | 1 | 6 | 3 |
| 300 | 225 | | 150 | | 75 | | 25 | — | 5 | 45 | 1 | — | 50 | — |
| 200 | 150 | | 100 | | 50 | | 16 | 40 | 3 | 50 | 1 | | 33 | 1 |
| 100 | 75 | — | 50 | | 25 | — | 8 | 20 | 1 | 55 | — | | 16 | 3 |
| 90 | 67 | 30 | 45 | | 22 | 30 | 7 | 30 | 1 | 43 | 2 | | 15 | — |
| 80 | 60 | — | 40 | | 20 | — | 6 | 40 | 1 | 32 | — | | 13 | 1 |
| 70 | 52 | 30 | 35 | | 17 | 30 | 5 | 50 | 1 | 20 | 2 | | 11 | 3 |
| 60 | 45 | — | 30 | | 15 | — | 5 | — | 1 | 9 | — | | 9 | 3 |
| 50 | 37 | 30 | 25 | | 12 | 30 | 4 | 10 | — | 57 | 2 | | 8 | 1 |
| 40 | 30 | — | 20 | | 10 | — | 3 | 20 | | 46 | — | | 6 | 3 |
| 30 | 22 | 30 | 15 | | 7 | 30 | 2 | 30 | | 34 | 2 | | 4 | 3 |
| 26 | 19 | 30 | 13 | | 6 | 30 | 2 | 10 | | 29 | 3 | | 4 | 1 |
| 24 | 18 | — | 12 | | 6 | — | 2 | — | | 27 | 2 | | 3 | 3 |
| 20 | 15 | — | 10 | | 5 | — | 1 | 40 | | 23 | — | | 3 | 1 |
| 18 | 13 | 30 | 9 | | 4 | 30 | 1 | 30 | | 20 | 3 | | 2 | 3 |
| 16 | 12 | — | 8 | | 4 | — | 1 | 20 | | 18 | 2 | | 2 | 2 |
| 14 | 10 | 30 | 7 | | 3 | 30 | 1 | 10 | | 16 | — | | 2 | 1 |
| 12 | 9 | — | 6 | | 3 | — | 1 | — | | 14 | — | | 2 | — |
| 10 | 7 | 30 | 5 | — | 2 | 30 | — | 50 | | 1 | 2 | | 1 | 3 |
| 9 | 6 | 45 | 4 | 30 | 2 | 15 | | 45 | | 10 | 1 | | 1 | 2 |
| 8 | 6 | — | 4 | — | 2 | — | | 40 | | 9 | 1 | | 1 | 1 |
| 7 | 5 | 15 | 3 | 30 | 1 | 45 | | 35 | | 8 | — | | 1 | 1 |
| 6 | 4 | 30 | 3 | — | 1 | 30 | | 30 | | 6 | 3 | | 1 | — |
| 5 | 3 | 45 | 2 | 30 | 1 | 15 | | 25 | | 5 | 3 | | | — |
| 4 | 3 | — | 2 | — | 1 | — | | 20 | | 4 | 2 | | | 3 |
| 3 | 2 | 15 | 1 | 30 | — | 45 | | 15 | | 3 | 2 | | | 3 |
| 2 | 1 | 30 | 1 | — | — | 30 | | 10 | | 2 | 1 | | | 2 |
| 1 | — | 45 | — | 30 | — | 15 | | 5 | | 1 | 1 | | | 1 |

Durch diese tabellarische Uebersicht kann man 1) die fixe jährliche Einnahme mit der täglichen Ausgabe in Vergleichung bringen; 2) das jährliche Einkommen für jeden einzelnen Tag berechnen; 3) die Besoldungen, Dienstbothen- und Liedlohne für kleinere Zeiträume eintheilen; 4) bey Zinsungen kann man berechnen, wie viel man täglich zurück zu legen habe. 5) Wer jährlich eine gewisse Summe ersparen will, ersieht daraus, wie viel er täglich bey Seite legen muß. 6) Wer mehr ausgibt, als er einnimmt, ersieht daraus, wie weit seine Wirthschaft zurückgeht, und um wie viel seine Schulden wachsen müssen.

Stephan Conrad, Blechmacherpartie Nro. [illegible] grosse Altengasse No. 177. 2 Pad. 1 Schuh lang.

Fr. Hacheder Maler Spitzgasse No. 69 1 Pad.

Joseph Braun Inwohner Lichthändler goldenen Bären Vorstadt No. 20. – Leg. A. D. Simpelhofer Gasse No. 85. 3 Pads.

H. Alois Wagenhofer Kurz Wollwaaren Buchhalter Spandengasse No. 58.

Hr. Gabriel v. Horvath, Rechnungsf. No. 902. 3 Pad.